मस्जिद की
आबादी की
मेहनत
हज़रत मौलाना मुहम्मद सआ़द साहब कान्धलवी

मस्जिद की आबादी की मेहनत

हज़रत मौलाना मुहम्मद सअ़द साहब कान्धलवी

तर्तीब

मौलाना मुहम्मद अली

"अस्बाब पर निगाह करके, अल्लाह से उम्मीद रखना, कुफ्र का रास्ता है।"

(हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब रह०)

फ़रीद बुक डिपो (प्रा०) लि०

मस्जिद की आबादी की मेहनत

हज़रत मौलाना मुहम्मद सअद साहब कान्धलवी

तर्तीब

हज़रत मौलाना मुहम्मद अली

प्रकाशक

فرید بُک ڈپو (پرائیویٹ) لمٹیڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.

Corp. Off : 2158, M.P. Street, Pataudi House, DaryaGanj, New Delhi-2
Phone : (011) 23289786, 23289159 Fax : +91-11-23279998
E-mail : faridexport@gmail.com - Website : www.faridexport.com

Masjid ki Aabadi ki Mehnat

Hazrat Maulana Muhammad Sa'ad Sahab Kandhlavi

Compiled by:
Maulana Muhammad Ali

Edition: **2015**

Pages: **224**

Our Branches:

Delhi : Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
422, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-6
Ph.: 23256590

Mumbai : Farid Book Depot (Pvt.) Ltd.
216-218, Sardar Patel Road, Near Khoja Qabristan,
Dongri, Mumbai-400009
Ph.: 022-23731786, 23774786

Printed at : Farid Enterprises, Delhi-2

मुहतरम अज़ीज़ो! मुसलमानों की एक चूक (गलती) ने हम मुसलमान को नाकाम बना रखा है। हम सबकी वह चूक दुरूस्त (सही) हो जाए, यह किताब इसलिए लिखी गई है।

अब रही बात यह कि आख़िर मुसलमानों से क्या चूक हो गई? तो चूक यह हो गई, कि हम मुसलमानों के अंदर से ईमान के सीखने और ईमान के सिखलाने का रिवाज ख़त्म हो गया है। आज मुसलमानों ने सब कुछ सीखा, पर ईमान को नहीं सीखा। सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन फ़रमाते हैं कि हमने सबसे पहले ईमान सीखा फिर कुरआन को सीखा। आज उम्मत ईमान को सीखे बग़ैर, नमाज़ों से और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाले आमालों से फ़ायदा हासिल करना चाह रही है। जो कि ना–मुम्किन है। किताब में लिखे हुए वाक़िआत और हदीसों को मुसलमान दावत में और अपने ग़ौर व फ़िक्र में लाकर अपने अंदर अल्लाह से होने का गुमान पैदा कर लें, ताकि मुसलमानों के काम दुआओं के रास्ते से बनने लगें। इसलिए कि अल्लाह तआला से काम बनवाने का रास्ता गुमान है–

أنا عند ظن عبدي بي

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: कि मेरा बंदा मुझसे जैसा गुमान करेगा, मैं उसके साथ वैसा ही मामला करूंगा। अगर इंसान के अंदर माल से होने का गुमान है तो उसका काम माल से होगा और अगर दुनिया में फैली हुई चीज़ों और सामान से काम होने का गुमान है तो उस रास्ते से होगा। इस गुमान का नुक़सान यह है कि आदमी के अन्दर जिस चीज़ से होने का गुमान होगा, वह उसी चीज़ का मुहताज होगा।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन के अन्दर सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह ही से होने का गुमान पैदा कराया था। जिसकी वजह से सहाबा रज़ि० के अंदर अल्लाह की मुहताजगी थी कि हर वक़्त हर

आज हर लम्हा वह अपने आप को अल्लाह का मुहताज समझते थे। वह सहाबा रज़ि० वाली बात और सहाबा रज़ि० वाला गुमान, हम मुसलमानों के अंदर पैदा हो जाए, इसके लिए जिस तरह से हज़रात सहाबा किराम ने मस्जिद को आबाद करने वाली मेहनत की थी। हम मुसलमानों को भी *"मस्जिद की आबादी की मेहनत"* में सबसे पहले ईमान को सीखना पड़ेगा। वह भी इस तरह से जिस तरह से हज़रत मौलाना मुहम्मद सअ़द साहब फ़रमा रहे हैं। इसलिए हज़रत मौलाना का बयान जो किताब में लिखा गया है यह ईमान को सीखने में हमारी मदद करेगा, मस्जिद को आबाद करने वाली मेहनत के साथ हम सबको किताबों में लिखी हुई बातों को अपनी रोज़ाना की बातचीत में लाना पड़ेगा। हर जगह नुसरत के वाक़िआ़त और ग़ैबी निज़ाम की बातें सुनानी हैं और इतनी सुनानी है कि यह चीज़ रिवाज में आ जाए।

इसलिए कि मेरे दोस्तो! ईमान न सीखने की वजह से, इंसान इम्तिहान की चीज़ों से इत्मिनान हासिल करना चाहता है। जब कि इत्मिनान का हासिल होना अल्लाह तआ़ला ने जिस्म के सही इस्तेमाल पर रखा है। हमारे जिस्म के आज़ा (हिस्से) अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी पर उनके हुक्मों पर इस्तेमाल होने लगें, कि आंख, कान, ज़ुबान, दिमाग़, हाथ, पैर और शर्मगाह हराम से बच जाए। इसके लिए मस्जिदों में ईमान के हल्क़े लगाकर अल्लाह की ज़ात और उसकी सिफ़ात का यक़ीन पैदा करना पड़ेगा।

मेरे दोस्तो! आज मुसलमान हलाल कमाने के बावुजूद, हलाल खाने के बावुजूद और हलाल पहनने के बावुजूद हराम बोल रहा है, हराम देख रहा है, हराम सुन रहा है और हराम सोच रहा है। ईमान को न सीखने ही कि यह वजह है कि आज हम अपने ईमान से बे-परवाह हैं अगर हमें ईमान की परवाह होती, तो हम हराम से बच रहे होते। इसलिए कि मुस्लिम शरीफ़ की हदीस है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया : 'कि जब किसी मोमिन से गुनाह कबीरा हो जाता है, तो ईमान का नूर उसके दिल से निकलकर उसके सर पर साया कर लेता है, जब तक वह तौबा नहीं करता, वह नूर उसके जिस्म में वापस नहीं आता है।'

अब हमें यह कैसे पता चले कि गुनाह कबीरा क्या है? इसलिए कि गुनाह कबीरा की फ़हरिस्त (सूची) किताब के आख़िर में लिखी गई है। आप हज़रात उसे देखकर अमल में लाएं।

रिज़वान ज़हीर खान

(बयान)

हज़रत मौलाना मुहम्मद सअ़द साहब

6 दिसम्बर 2009 ई० दिन इतवार सुबह 10 बजे

जगह : ईंट खेड़ा, (भोपाल)

﴿إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسَاجِدَ اللَّهِ مَنْ آمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَلَمْ يَخْشَ إِلَّا اللَّهَ فَعَسَىٰ أُولَٰئِكَ أَنْ يَكُونُوا مِنَ الْمُهْتَدِينَ﴾ (توبہ:١٨)

"हां अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करना उन लोगों का काम है, जो अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर ईमान लाएं, और नमाज़ की पाबन्दी करें और ज़कात दें और बजुज़ अल्लाह के किसी से न डरें, सो ऐसे लोगों की निस्बत तौक़ेअ (यानी वायदा) है कि अपने मक़्सूद तक पहुंच जाएंगे।"   सूरः तौबा, 18

कहीं ऐसा न हो कि यह इज्तिमआ मेला बनकर रह जाए

मेरे मुहतर्म दोस्तों बुज़ुर्गों! हर साल के इज्तिमआ का यहां (भोपाल में) एक मामूल बन गया है, ऐसा न हो कि कहीं हम रिवाज की तरफ़ जा रहे हों। मौलाना इलयास साहब रह० फ़रमाते थे कि इस काम में लगने वालों की अगर ज़ुहर और असर की नमाज़ों के दर्मियान कोई फ़र्क़ नहीं है तो फिर काम करने वाला तजल्ली पर है, तरक़्क़ी पर नहीं। अगर ज़ुहर और असर के दर्मियान फ़र्क़ है तो इस काम में चलने वाला तरक़्क़ी कर रहा है। ज़ुहर, असर की नमाज़ का फ़र्क़ इस काम में सिर्फ़ नमाज़ ही में नहीं देखना है बल्कि पूरी ज़िंदगी में देखना है कि ज़ुहर के बाद असर पढ़ने के दर्मियान ज़िंदगी कैसे गुज़री? इसलिए यह ग़ौर करो, कि—

हमने इस काम से अब तक क्या कमाया है? और
हमारे अन्दर क्या तब्दीली आई?
कहीं ऐसा न हो, कि यह इज्तिमआ मेला बनकर रह जाए।

हमारा जमा होना, नुबूवत और दावत की निस्बत पर है

मेरे दोस्तो! हमारा जमा होना तो बड़ी आली निस्बत पर है, कि दावत नुबूवत की निस्बत है, इससे बड़ी कोई निस्बत अल्लाह ने पैदा ही नहीं की है। कि जिस काम के लिए नबियों का इंतिख़ाब (चुना) किया जाए, इस काम से बड़ा कोई नहीं हो सकता। तो हमारा जमा होना बड़ी ऊंची निस्बत पर है। जिस निस्बत पर हम जमा हुए हैं उसी निस्बत पर हमारा बिखरना भी हो। अगर हमारा बिखरना इस निस्बत के अलावा है तो हमारा जुड़ना भी इस निस्बत पर नहीं होगा कि हमारा जमा होना नुबूवत और दावत की निस्बत पर है। यह हमारे जुड़ने और जमा होने की वजह है। इसलिए यह बात सबके ख़्याल में रहे कि यह इबादत की और ज़िक्र की वह मज्लिस है, जिसको फ़रिश्तों ने अपने परों से आसमान तक ख़ुदा की क़सम! घेरा हुआ है। हमें फ़रिश्ते नज़र नहीं आ रहे है पर यह बात सच्ची और पक्की है इसलिए कि यह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़बर है। बात सिर्फ़ इतनी है कि अल्लाह ने हमारा इम्तिहान के लिए इन फ़रिश्तों को हमारी नज़र से छुपाया हुआ है। वरना यह बात बिल्कुल हक़ है कि इस वक़्त फ़रिश्तों ने आसमान तक हम सबको अपने परों से ढका हुआ है। यह ज़िक्र की मज्लिस है इस मज्लिस में बैठने का इस तरह एहतिराम होना चाहिए, जिस तरह नमाज़ में तशहहुद (अत्तीहयात) में बैठने वालों की कैफ़ियत होती है।

दावत हो।
तब्लीग़ हो।
तालीम हो।

ये सब ज़िक्र की मज्लिसें हैं और ज़िक्र की मज्लिस की ख़ुसूसियत यह है कि अगर ज़िक्र इज्तिमाई किया जाए, तो अल्लाह तआला अपने बंदों का ज़िक्र फ़रिश्तों के इज्तिमाई माहौल में करते हैं और अगर अल्लाह तआला का ज़िक्र तंहाई में किया जाए तो अल्लाह तआला इस बंदे को ख़ुद याद करते हैं।

बैठकर बात का सुनना किसी तब्दीली का ज़रिया बने, वरना तक़रीरें और बयान, यह दावत का मिज़ाज ही नहीं है

इसलिए मेरे अज़ीज़ दोस्तो! मुझे अर्ज़ करना है कि पूरा मज्मा मुतावज्जेह

(ध्यान लगाकर) होकर यकसूई से और एहतिराम से अपने आपको इबादत में यक़ीन करते हुए बैठे। ताकि बैठकर बात का सुनना किसी तब्दीली का ज़रिया बने, वरना तक़रीरें और बयान, यह दावत का मिज़ाज ही नहीं है। कि दावत का तक़ाज़ा यह है कि इस्लाम की निस्बत पर जमा होना और इस्लाम की निस्बत पर बिखरना। इसलिए बात को बहुत ध्यान के साथ सुनना। जो बात सुनो वह अमल के इरादे से हो और फिर इसकी दावत दो। क्योंकि इसमें कोई शक नहीं है कि जो दावत और अमल दोनों काम बराबर करेगा, उससे अच्छा इस्लाम किसी का नहीं होगा।

﴿وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّن دَعَا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَقَالَ إِنَّنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ﴾

उलमा ने लिखा है कि दावत और अमल दोनों का इकट्ठा जमा करना दीन को सबसे अच्छा बना देता है। मेरी बात समझना आप हज़रात के लिए थोड़ा मुश्किल काम होगा, पर मुझे यह इसलिए कहना पड़ा है कि हमारे मज्मे के अंदर दावत के एतबार से क़ुव्वत आए पुख़्तगी आए। कि—

क्यों दावत दी जाए?
क्यों तालीम की जाए?
क्यों नक़ल व हरकत को उम्मत में ज़िंदा किया जाए?
क्या वजह है इस काम के करने की?

इसलिए मैं यह बात अर्ज़ कर रहा हूं कि इस्लाम में हुस्न लाने का रास्ता ही यही है, क्योंकि अल्लाह तआला ख़ुद फ़रमा रहे हैं कि उससे अच्छा इस्लाम किसी का हो ही नहीं सकता जो दावत देते हुए अमल करे। हमारे दावत देने की बुनियाद यही है, सिर्फ़ दूसरों की इस्लाह मक़सूद नहीं है बल्कि दावत के ज़रिए अपना ताल्लुक़ अल्लाह के साथ बढ़ाना और अपनी इबादत में कमाल पैदा करना है, यह दावत देने की वजह है।

इसलिए मेरे दोस्तों, बुज़ुर्गों, अज़ीज़ो! यह बुनियाद जितनी पुख़्ता और मज़बूत होगी, उतनी अस्बाबे तर्बीयत, अस्बाबे हिदायत, उम्मत में आम होगी, क्योंकि दीन पर इस्तिक़ामत (जमे रहना) और हर क़िस्म के बातिल से टकराकर दीन की

हिफ़ाज़त का सिर्फ़ यही रास्ता है कि उम्मते मुस्लिमा सौ फ़िसद अपने दीन की दावत में कायम हो जाए। अगर उम्मत ने दूसरों को दावत देनी छोड़ दी, तो उम्मत बहुत क़रीब इस ख़तरे में है, इंफ़िरादी तौर पर भी और इज्तिमाई तौर पर भी कि उम्मत अपने दीन की दावत को छोड़ने से बातिल की मदद हो जाए।

उम्मत दावत छोड़ देगी तो फिर यह बातिल की मदद होने लगेगी।

मैं आप हज़रात से हज़रत रह० की बातें नक़ल कर रहा हूं। हज़रत रह० फ़रमाते थे, कि जब यह उम्मत दावत छोड़ देगी तो फिर यह उम्मत बातिल (गुनाहों) की तरफ़ मदद होने लगेगी। क्योंकि उम्मत दो हाल में से एक को इख़्तियार करेगी कि या तो दाई (दावत देगी) होगी या मदद होगी यानी या कोई हमें दावत दे रहा होगा या हम किसी को दावत दे रहे होंगे। अपने दीन पर इस्तिक़ामत का और अपने दीन की हिफ़ाज़त का, इसके इस्तेदाद उम्मत में इस वक़्त तक रही जब तक यह अपने दीन की दावत पर मुज्तमआ (इकट्ठी) थी।

इसलिए दिल की गहराइयों से इस बात को समझना होगा कि उम्मत के किसी भी ज़माने में, किसी भी क़िस्म के ख़सारे (नुक़सान) से निकलने का दावत के सिवा कोई रास्ता नहीं है कि उम्मत का आख़िर उस वक़्त नहीं सुधरेगा, जब तक उम्मत वह न करे जो उम्मत के पहलों ने किया था। अगर हम उम्मत के ख़सारे से निकलने और हालात के हल के लिए, उस काम से हटकर कोई भी रास्ता सोचे तो यह हमारे सोच, नुबूवत की सोच से अलग होगी। और यह हमारी सोच अलग ही नहीं होगी बल्कि हमारा रास्ता ही बदल देगी, हम यह समझेंगे कि सहाबा रज़ि० ने जो काम अपने ज़माने में किया था और वह और काम था और हम जो यह काम कर रहे है यह वह काम है।

इसलिए बहुत ही ध्यान और तवज्जोह से मेरी बात सुनो! मेरा दिल यह चाहता है, अगर तीन दिन लगाने वाला भी इस काम के साथ हो तो इस काम के साथ उसके दिल का यक़ीन यह हो कि–

तर्बीयत का

तवज्जोह का

हिदायत का

और अल्लाह की ज़ात के साथ ताल्लुक़ के पैदा करने का यही रास्ता है। अगर उस यक़ीन में ज़रा भी कमी आई, तो दावत वाले आमाल की तासीर और दावत वाले आमाल से फ़ायदा नहीं उठा सकेगा। हज़रत रह० फ़रमाते थे कि इस काम से ताल्लुक़ की निशानी यह है कि जिस दिन कोई दावत का अमल छूट जाए, उस दिन उसको अपनी इबादत में ऐसी कमी महसूस हो, ऐसी कमज़ोरी महसूस हो, जिस तरह दावत की ग़िज़ा न मिलने से जिसमानी कमज़ोरी महसूस होती है। कि दावत वाले आमाल, इबादत के लिए इस तरह ताक़त का ज़रिया हैं, जिस तरह जिसमानी गिज़ा जिस्म में कुव्वत पहुंचाने का ज़रिया है। यह हमारे दिल का यक़ीन होना चाहिए और यही बात हम अपने सारे–

बयान करने वालों से।
गश्त करने वालों से।
मश्विरा करने वालों से।
मुलाक़ातें करने वालों से।
मुज़ाकरा करने वालों से।

यह बात हम उन सब से कहलवाना चाहते हैं कि–

हमारा इस काम के साथ यक़ीन क्या है?
हमारा गश्त किस यक़ीन पर हो रहा है?
मेरा तालीम में बैठना किस यक़ीन पर हो रहा है?
कि तब्लीग़ के प्रोगराम की बुनियाद पर है या तर्बीयत या हिदायत के यक़ीन पर है।

"उम्मत" या तो उम्मते अजाबत (दावत क़बूल करने वाली) होगी या उम्मते दावत (दावत देने वाली) होगी।

जब यह उम्मत दावत छोड़ देगी तो फिर यह उम्मत बातिल की तरफ़ मदद होने लगेगी इसलिए मेरे अज़ीज़ो और दोस्तो! मैं यहां पर बहुत सी बुनियादी बातें अर्ज़ करना चाहता हूं कि हमारे दिल की गहराइयों में यह बात उतरी हुई हो कि चाहे उम्मते अजाबत हो या उम्मते दावत हो (यानी मुसलमान हो या मुसलमान के

अलावा सारी कौमें हों) इस सब के हर किस्म के खसारे (नुकसान) निकलने में सिवा दावते इल्ल-लाह (अल्लाह की तरफ बुलाना) के कोई रास्ता नहीं है। अल्लाह तआला ने कुरआन में यह बात कसम खाकर फरमा दी–

﴿وَالْعَصْرِ إِنَّ الْإِنسَانَ لَفِي خُسْرٍ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ﴾

"कसम है ज़माने की (जिसमें नफ़ा और नुक़्सान वाकेअ होता है) कि इंसान बड़े खसारे में है, मगर जो लोग ईमान लाए और इन्होंने अच्छे काम किए (कि यह कमाल है) और एक दूसरे को एतिकादे हक़ (पर क़ायम रहने) की फ़हमाइश करते रहे और एक दूसरे को (आमाल की) पाबन्दी की फ़हमाइश करते रहे"

"कि सारी की सारी इंसानियत (तमाम इंसान) खसारे में है खसारे से बचने और खसारे से निकलने के सिर्फ़ चार अस्बाब है। यह चार अस्बाब आपस में बराबर की अहमियत रखते हैं, यह नहीं कहा जाएगा कि उन खसारों से निकलने के लिए कौन-सा सबब ज़्यादा ज़रूरी है, कौन-सा सबब कम ज़रूरी है। यह चारों अस्बाब खसारे से निकलने के लिए, बिल्कुल ऐसे हैं, जिस तरह इंसान के लिए–

आग,
हवा,
पानी, और
गिज़ा (खाना) ज़रूरी हैं।

निजात के अस्बाब चार चीज़ें हैं

इससे कहीं ज़्यादा ज़रूरी खसारे से निकलने के लिए, यह चारों अस्बाब हैं कि उनके बग़ैर ज़िंदगी की कोई गाड़ी नहीं चलेगी। इस बात को अल्लाह ने कसम खाकर फरमा दिया कि सारी की सारी इंसानियत खसारे में है सिवाए उन लोगों के जो चार काम करें।

﴿إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ﴾

"जो लोग ईमान लाए और इन्होंने अच्छे काम किए (कि यह कमाल है) और एक दूसरे को एतिकादे हक़ (पर कायम रहने) की फहमाइश करते रहे और एक दूसरे को (आमाल की) पाबन्दी की फहमाइश करते रहे"

(1) ईमान लाए, यह पहला काम।

(2) आमाले सालेह (नेक काम) करें।

(3) दूसरे को ईमान पर आमादा करें।

(4) दूसरों को आमाले सालेह (नेक आमाल) पर आमादा (राज़ी) करें।

यह चारों काम करने वाले ही निजात पाएंगे, कि ईमान लाए, आमाले सालेह करें, और दूसरों को ईमान और आमाले सालेह पर आमादा भी करें। निजात के अस्बाब सिर्फ़ दो नहीं है कि ईमान लाए और आमाले सालेह करें, बल्कि निजात के अस्बाब चार चीज़ें हैं

﴿إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ﴾

(1) ईमान।

(2) आमाले सालेह नेक आमाल)।

(3) تَوَاصَوْا بِالْحَقِّ

(4) تَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ

यह चार चीज़ें मिलकर निजात के अस्बाब हैं।

तमाम शक्लों को लात मारी सिर्फ़ अपने दीन की हिफ़ाज़त के लिए

मेरे अज़ीज़ दोस्तों और बुज़ुर्गो! हम उम्मत के हर फ़र्द (इंसान) को दावत पर इसलिए लाना चाहते हैं, ताकि यह अपने दीन की दावत से अपने दीन पर क़ायम रहें। क्योंकि दीन पर इस्तिक़ामत, दीन की दावत से बाक़ी रहती है। हमें यह अंदाज़ा हो कि सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हु उस ज़माने में जो चीज़ें पेश की गई, वही चीज़ें आज पूरी दुनिया में मुसलमानों को पेश की जाती हैं। इन तमाम शक्लों को लात मारी सिर्फ़ अपने दीन की हिफ़ाज़त के लिए और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के किसी भी एक तरीक़े से हटने के लिए तैयार न हुए। हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ैफ़ा रज़ियल्लाहु अन्हु को क़ैद किया गया और रू म के बादशाह ने उन्हें नसरानियत (इसाइयत) की दावत दी कि आप ईसाई हो जाएं तो मैं अपनी आधी बादशाही आपको दे दूंगा। हज़रत अब्दुल्लाह बिन हुज़ैफ़ा

रज़ि० ने फ़रमाया कि तुम्हारी आधी बादशाहत नहीं तेरी पूरी बादशाहत और उसके अलावा की सारी बादशाहत भी मुझे अगर मिले तो मैं पलक झपकने के बराबर भी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के किसी एक तरीक़े को छोड़ने के लिए तैयार नहीं। तो रूम के बादशाह ने उन्हें गर्म पानी में डालने की तदबीर की, तो हज़रत अब्दुल्लह बिन हुज़ैफ़ा रज़ि० पानी देखकर रोए। बादशाह ने यह समझा कि यह घबरा गए, तो बादशाह ने फिर उनसे कहा कि नसरानी हो जाओ, यह सुनकर उन्होंने फिर इंकार कर दिया और फ़रमाया कि मेरे रोने की वजह यह है कि मैं अल्लाह को एक जान क्या पेश करूं, मैं तो अपनी जान की हिकारत (कमी पर) पर रो रहा हूं न कि जान की मुहब्बत में रो रहा हूं। अगर मेरे पास मेरे जिस्म के बालों के बराबर जानें होतीं तो मैं एक-एक करके सब अल्लाह के लिए क़ुरबान करता।

यह वाक़िआत तो हम सुनते हैं, लेकिन हमने कभी यह ग़ौर नहीं किया कि सहाबा रज़ि० के अंदर यह इस्तेदाद (ताक़त) कैसे पैदा हुई? आज उम्मत की यह सलाहियत कैसे ख़त्म हो गई इसकी क्या वजह है? मेरे अज़ीज़ों दोस्तों और बुज़ुर्गो!

यह वह दावत है जो इस उम्मत के ज़िम्मे फ़र्ज़ ऐन है

मैं मुग़ालते के तौर पर नहीं अर्ज़ कर रहा हूं बल्कि तारीख़ इसकी गवाह है कि जब उम्मत अल्लाह की तरफ़ बुलाना छोड़ देगी तो सबसे पहली जो मुसलमानों को कमज़ोरी पैदा होगी, वह यह कि अपने दीन को हल्का समझने और अपने दीन को दुनिया के बदले बेच देगी, यह सिर्फ़ दावत को छोड़ने का नतीजा होता है, कि जब उम्मत इज्तिमाई (एक साथ इकट्ठे होकर) तौर पर दावते इल्ललाह (अल्लाह की तरफ़ बुलाना) को छोड़ देती है कि ऐसा होता है इसलिए यह बात भी हमें समझनी चाहिए कि दावत इल्लल्लाह उम्मत का इज्तिमाई फ़रिज़ा है, जिस तरह नमाज़ इज्तिमाई फ़रिज़ा है, यह इंफ़िरादी (अकेले का) फ़रिज़ा नहीं है। यह वह दावत है जो इस उम्मत के ज़िम्मे फ़र्ज़ ऐन (बहुत ज़्यादा ज़रूरी, जिसको ख़ुद ही करना पड़ता है) है, फ़र्ज़ किफ़ाया (जिसको दूसरे कर दे तो अदा हो जाता है) नहीं है। मेरा यह बात कहना आपको अजीब सा लग रहा हो, क्योंकि यह ज़ेहनों मे यह बात बैठी हुई है कि यह तब्लीग़ी जमाअत, जो उम्मत की इस्लाह का काम कर रही है, पर ऐसा नहीं है। इस काम में लोगों का इज्तिमाई तौर पर शरीक न होना,

और इस काम का न करना इसकी बुनियादी वजह यह है कि उम्मत इस काम को फ़र्ज़ किफ़ाया समझती है। कि भलाई का हुक्म करना और बुराई से रोकना, बेशक अच्छा काम है, अगर उसे एक जमाअत कर ले तो बाक़ी की तरफ़ से ज़िम्मेदारी अदा हो जाती है। लेकिन ऐसा नहीं है, बल्कि दावत फ़र्ज़ ऐन है, फ़र्ज़ किफ़ाया नहीं है फ़र्ज़ किफ़ाया वह दावत होती है जो दूसरों के लिए की जाए। जैसे–

(1) जनाज़े की तकफ़ीन,

(2) इसकी तदफ़ीन,

(3) इसकी नमाज़

वह फ़र्ज़ किफ़ाया है कि मामला दूसरे का है। दूसरों की इस्लाह के लिए दावत देना भी फ़र्ज़ किफ़ाया है कि अगर कोई जमाअत ऐसी हो जो लोगों को भलाई का हुक्म करें और बुराई से रोके, तो यह फ़रीज़ा अदा हो जाएगा, यह मैं फ़र्ज़ किफ़ाया की बात कर रहा हूं। लेकिन यह काम फ़र्ज़ किफ़ाया नहीं है बल्कि फ़र्ज़ ऐन है क्योंकि दावत ख़ुद अपनी ज़ात के लिए है। हां दूसरों को भी इससे नफ़ा हो जाएगा, पर यहां हर एक की मेहनत ख़ुद उसकी अपनी ज़ात के लिए है।

﴿وَمَنْ جَاهَدَ فَإِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهِ إِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ﴾

"और जो शख़्स मेहनत करता है वह अपने ही (नफ़े के) लिए मेहनत करता है (वरना) ख़ुदा तआला को (तो) तमाम जहान वालों में किसी की हाजत नहीं।

यक़ीन के बनने का रास्ता दावत ही है

कि हर एक की दीन की मेहनत ख़ुद उसकी अपनी ज़ात के लिए पहले है। कि ईमान का सीखना फ़र्ज़ किफ़ाया नहीं है बल्कि ईमान का सीखना फ़र्ज़ ऐन है, जब ईमान का सीखना फ़र्ज़ ऐन है तो इसकी दावत देना फ़र्ज़ ऐन है। हज़रत रह० फ़रमाते थे कि यक़ीन के बनने का रास्ता, दावत ही है, इसके अलावा यक़ीन के बनने का कोई रास्ता नहीं है। यह मैं (मौलाना सअ़द साहब) हज़रत की बातें (बमानहु) अर्ज़ कर रहा हूं, क्योंकि मेरे दोस्तो अज़ीज़ो! हाए! हाए! हाए! अब हमारे मज्मे का हाल यह है कि वह सुन सुनकर मौलाना युसूफ़ रह० के बयानात को नहीं पढ़ता, इसी तरह हयातुस्सहाबा के पढ़ने का भी कोई जज़्बा और शौक़ इसके

अंदर नहीं है, कि आख़िर मौलाना इलयास साहब रह० और मौलाना युसूफ़ साहब रह० अपने मज्मे से क्या चाहते थे? यह हज़रात अपने मज्मे को किस बुनियाद पर उठाना चाहते थे। अब हमारे मज्मे का हाल यह है कि वे हर क़िस्म की किताबों का मुताला (पढ़ते हैं) करते हैं, जिससे उसका ज़ेहन और उनकी फ़िक्रें उनकी सोच, वह हज़रत मौलाना इलयास रह० और हज़रत मौलाना युसूफ़ साहब रह० की सोच से अलग हुई जा रही हैं। मैं तो सोचता हूं कि सिवाए मसाइल की किताबों के कि वे तो ज़रूर पढ़ा करो लेकिन बाक़ी इन हज़रात के बयानात का पढ़ना भी निहायत ज़रूरी है। ताकि हमें अंदाज़ा हो कि यह हज़रात इस मेहनत को किस बुनियाद पर पेश कर रहे थे, कि आख़िर दावत है कि किस लिए? कि दावत अपनी ज़ात के लिए असल है। हज़रत रह० फ़रमाते थे कि *"जिस चीज़ को तुम अपने अंदर पैदा करना चाहो, उसको बे–सिफ़त तब्लीग़ करो"* कि अपने अंदर उतारने की ग़रज़ से दूसरों को दावत दो, तो यह अल्लाह का ज़ाब्ता (क़ानून) है, इसका वायदा है कि जो हमारे वास्ते मेहनत करेंगे हम दूसरों से पहले इनको नवाज़ देंगे कि जो हमारे बंदों को हमारी तरफ़ बुलाएंगे हम उनसे पहले उन्हें नवाज़ेंगे।

﴿وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا وَإِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ﴾ [العنكبوت-٦٩]

"और जो लोग हमारी राह में मुशक़्क़तें बर्दाश्त करते हैं, हम उनको अपने (क़ुर्ब व सवाब यानी जन्नत के) रास्ते ज़रूर दिखा देंगे और बेशक अल्लाह तआला (की रज़ा और रहमत) ऐसे ख़ुलूस वालों के साथ है।"

इसलिए मेरे दोस्तों बुज़ुर्गों! ईमान का सीखना फ़र्ज़ ऐन है, और इतना ईमान सीखना फ़र्ज़ ऐन है, जो मोमिन को हराम से रोक दे, यह दावत की पहली चीज़ है। ईमान की दावत तमाम नबियों को मुशतरक (एक जैसी) दी गई हैं, शरीअत तो अलग अलग हैं कि किसी नबी की इबादत का कोई तरीक़ा है और किसी का कोई तरीक़ा है। लेकिन दावत सारे नबियों की मुशतरक (एक जैसी) है।

﴿وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ﴾ [الانبياء، ٢٥]

"और हमने आपसे पहले कोई ऐसा पैग़म्बर नहीं भेजा जिसके पास हमने यह वही न भेजी हो"

"ईमान की दावत" खुद मोमिन की लिए है

ये सारे नबियों की मुशतरक (एक जैसी) दावत है, मौलाना इलयास साहब रह० फरमाते थे कि अगर मैं इस काम का कोई नाम रखता तो इस काम का नाम *"तहरीके ईमान"* रखता। कि ईमान का सीखना फ़र्ज़ ऐन है चूंकि उम्मत के अंदर से ईमान के सीखने का रिवाज ख़त्म हो गया तो मुसलमानों के अंदर यह बात आ गई कि ईमान की दावत तो गैरों के लिए है कि हम तो ईमान वाले हैं, हम को ईमान की दावत की ज़रूरत नहीं है। अब यह सोच हो गई है, हालांकि ईमान की दावत ख़ुद मोमिन के लिए है, अल्लाह का हुक्म भी है कि–

﴿يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا آمِنُوا﴾

कि ईमान वालो! तुम ईमान लाओ, अल्लाह हुक्म दे रहे हैं, ईमान वालों को ईमान लाने का। उलमा ने इसकी तफ़सीर की है। कि ईमान वालो! मुसलमान बनकर रहो। इसलिए ईमान की दावत खुद मोमिन के लिए है, एक ख़्याल यह पैदा हो गया है, इस ज़माने में कि दावत तो गैरों के लिए है, हम तो है ही ईमान वाले है, हमें दावत की ज़रूरत नहीं है। हालांकि आप अंदाज़ा करें तो सहाबा किराम रज़ि० जिनका ईमान इनके दिलों में पहाड़ों की तरह जमा हुआ था, उनको हुक्म है कि अपने ईमान की तज्दीद करते रहा करो, वरना पुराने कपड़े की तरह पुराना हो जाएगा। सहाबा जो–

> वही (हज़रत जिब्रील अलै० का हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास अल्लाह का पैग़ाम लाना) भी उतरती हुई देख रहे हैं।
> फ़रिश्तों का नज़ूल (आना–जाना) भी देख रहे हैं।
> गैबी मदद भी देख रहे हैं।
> अल्लाह के वायदे भी पूरे हो रहे हैं।
> इनके ईमान में तरक़्क़ी भी हो रही है।

मेरे दोस्तो! सहाबा के सामने जितने भी ईमान को बढ़ाने के मनाज़िर (बहुत ज़्यादा बातें और चीज़ें) थे, हमारे सामने इनमें से कोई भी मनाज़िर नहीं हैं।

और सहाबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु अजमईन–

> जो गैबी मदद भी देख रहे हैं,

फ़रिश्तों का नज़ूल भी देख रहे हैं,
चीज़ों में बरकतें भी देख रहे हैं,

फिर इनको यह हुक्म दिया जा रहा है कि अपने ईमान की तज्दीद करते रहो, क्योंकि ईमान इस तरह पुराना हो जाता है, जिस तरह कपड़ा पुराना हो जाता है। इस बात पर बहुत ज़्यादा गौर करना पड़ेगा, कि आज मुसलमानों का यह कहना है कि हमें क्या जरूरत है ईमान की दावत की या हमें क्या ज़रूरत है ईमान की तज्दीद करने की, तो यह बात कहना आसान नहीं है, तो मैंने अर्ज़ किया कि वे सहाबा रज़ि०, जिनका ईमान उम्मत के लिए नमूना है–

﴿آمِنُوا كَمَا آمَنَ النَّاسُ﴾[بقرہ-١٣]

"कि ईमान सीखो सहाबा की तरह"

सहाबा का ईमान नमूना है, उन्हें हुक्म है अपने ईमान की तज्दीद करने का कि अपने ईमान को नया किया करो।

सहाबा रज़ि० ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा भी कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! हम अपने ईमान को कैसे नया करें? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि–'ला इलाह इल्लल्लाहु' "لا إله إلا الله" की कसरत से अपने ईमान को नया किया करो।

जो अल्लाह के ग़ैर से उम्मीद रखेगा अल्लाह उसे ग़ैर के हवाले कर देंगे

अब सवाल यह पैदा होता है कि क्या मतलब है कलिमे की कसरत का?

कसरत का मतलब सिर्फ़ इसका ज़िक्र नहीं है, बल्कि कलिमे की कसरत से ईमान नया होने का मतलब यह है कि जिस तरह ब–कसरत दुनिया में अल्लाह के ग़ैर से होने को बोला जाता है, तुम ब–कसरत अल्लाह की ज़ात से होने को बोलो, यह है कलिमे की कसरत से ईमान के नया होने का मतलब।

मैं तो यह सोचता हूं कि पांच मिनट तो यह तस्बीह लेकर कलिमे का ज़िक्र करता है और सुबह से लेकर शाम तक इसकी ज़बान पर–

हुकूमत ये करेगी,
ताजिर ये करेंगे,

वज़ीर ये करेंगे,

सदर ये करेंगे,

फ़्लां मुल्क ये करेगा, फ़्लां मुल्क ये करेगा,

उसने फ़्लां हथियार बनाया हुआ है, वह ये करेगा,

कि सारा दिन शिर्क को बोला करते हैं, अख़बार को आंखें फाड़ फाड़कर पढ़ते हैं और हैरत से दूसरों को सुनाते हैं, क्योंकि क़ुरआन की ख़बरों का यक़ीन है नहीं, और अख़बारों की ख़बरों का यक़ीन है, इसलिए उसे पढ़कर सुनाते हैं। अल्लाह तो इंसानों के दिलों का हाल देखते हैं, अल्लाह तआला का निज़ाम यह है और इनका ज़ाब्ता (क़ानून) यह है कि जो हमारे ग़ैर से मुतास्सिर होते हैं, हम उन पर अपने ग़ैरों को मुसल्लत ज़रूर करते हैं। मुसलमान के अल्लाह के ग़ैर के मुतास्सिर होने की सज़ा में इन पर ग़ैरों का क़ब्ज़ा है। हां, यह मैं अपको हदीस की बातें अर्ज़ कर रहा हूं, रिवायत में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः कि जो अल्लाह के ग़ैर से उम्मीद रखेगा अल्लाह उसे ग़ैर की हवाले कर देंगे।

तो कलिमा 'ला इलाह इल्लल्लाहु' की कसरत से ईमान की ताज़गी का मतलब क्या है?

इस पर ग़ौर करना पढ़ेगा सिर्फ़ इससे कलिमा 'ला इलाह इल्लल्लाहु' का ज़िक्र मुराद नहीं है, बेशक! इसमें ख़ुदा की क़सम! कि ज़िक्र के फ़ज़ाइल, इसके अनवारात इसकी बरकात, इसके फ़ायदे अपनी जगह पर मुसल्लम हैं, कि बंदा अपनी ज़बान से कलिमे की अलफ़ाज़ कहे, तो–

इसके क्या फ़ज़ाइल हैं,

इसके क्या अनवारात हैं,

इसके क्या बरकात हैं,

इस पर क्या वायदें हैं,

ये सब अपनी जगह पर मुसल्लम हैं, लेकिन अल्लाह के ग़ैर का असर दिलों से निकलने और अल्लाह की ज़ात और उसकी क़ुदरत, उसकी अज़मत, उसकी बड़ाई को दिल में बढ़ाने के लिए, यह ज़रूरी है कि जहां कलिमे का ज़िक्र करो, वहां इस कलिमे का मतलब और इसके मफ़हूम की दावत भी दो। क्योंकि हदीस में आता है

कि तुम कलिमा 'ला इलाह इल्लल्लाह' का इतना ज़िक्र करो, कि लोग पागल कहें। मैंने इस हदीस पर गौर किया कि ज़िक्र करने वालों को पागल कहलाए जाने का क्या मतलब है? तो समझ में यह आया कि नबियों को इसलिए पागल कहा जाता था कि नबी इस कलिमे को क़ौम के अक़ीदे और क़ौम के यक़ीनों के ख़िलाफ़ कहते थे। इसलिए क़ौम उन्हें पागल कहती थी।

क़ौमे शुऐब का यह ख़्याल था कि तिजारत से होता है।

क़ौमें सबा का गुमान था कि खेती–बाड़ी से होता है।

क़ौमे सालेह का यक़ीन यह था कि कारखानों से होता है।

फ़िरऔन का ख़्याल था कि बादशाहत से होता है।

नमरूद का ख़्याल था कि माल से होता है।

पर नबी इन सारे कलिमों के ख़िलाफ़ अपना कलिमा 'ला इलाह इल्लल्लाह' लेकर आए तो उन सब ने नबियों को पागल कहा, कि कोई नबी ऐसा नहीं है जिसको क़ौम ने पागल न कहा हो। आप हज़रात को बात समझ में आ रही है? क्यों भाई! देखो! मैं यह तक़रीर नहीं कर रहा हूं।

ईमान को नया करो

मैं तो यह सोचता हूं कि आख़िर मेरा मज्मा रोज़ाना अल्लाह की तौहीद को, इसकी कुदरत को बोलने की ज़रूरत क्यों नहीं महसूस कर रहा है? मुझे तो इसकी उलझन है कि यह उसे बोलने की ज़रूरत महसूस नहीं कर रहा है? असल में हमें यह नहीं मालूम कि सहाबा किराम रज़ि० को ईमान की तज्दीद का जो हुक्म दिया गया तो उसके लिए सहाबा किराम क्या करते थे? ये हमें मालूम नहीं है।

इमाम बुख़ारी ने तो ईमान की तक्वीयत (मज़बूती) के बाब में जो तर्जुमा अल–बाब बांधा है, ईमान की तक्वीयत (मज़बूती) के लिए जो बाब तय किया गया है। इसमें खुद इमाम बुख़ारी ने हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० का वाक़िआ नक़ल किया है कि मुआज़ बिन जबल रज़ि० लोगों को मस्जिद में लाकर उन्हें तौहीद सुनाते, गैब के तज़्किरे करते और लोगों से कहते कि आओ आओ थोड़ी देर बैठो ईमान सीख लें। मगर हम तो दावत से इतने दूर हो चुके हैं कि वह काम जो सहाबा रज़ि० ने किया है, इस पर हमें अश्काल (शक) होने लगा है। खूब गौर करो! कि

कहां सहाबा के ईमान कि हज़रत उस्मान रज़ि० के ईमान को किसी एक लश्कर पर बांट दिया जाए, तो उसके लिए इतना–इतना काफ़ी हो, जितना–जितना ईमान होना चाहिए। एक मर्तबा हज़रत उस्मान रज़ि० के पास से हज़रत उमर रज़ि० का गुज़र हुआ तो उनके साथ बैठे हुए लोगों से हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया, कि तुम्हारी मज्लिस में यह जो उस्मान रज़ि० जो बैठे हैं ना, यह वह शख़्स, कि उनके ईमान को एक बड़े लश्कर पर बांट दिया जाए, तो यह ईमान सब के लिए काफ़ी हो जाए। ऐसा ईमान सहाबा रज़ि० का, फिर उनको हुक्म यह कि अपने ईमान को नया करो।

मुझे तुमसे यह कहना था मेरे अज़ीज़ों और दोस्तो! कि हमारा रोज़ाना का काम यह है कि हम मस्जिदों में ईमान के हल्क़े क़ायम करें, यह मस्जिद को आबाद करने का पहला अमल है, यह सहाबा रज़ि० की सुन्नत है!

मस्जिद में ईमान का हल्क़ा

कि आओ भाई बैठो थोड़ी देर थोड़ी देर ईमान सीख लें। हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि०, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन रवाहा रज़ि० वग़ैरह बड़े जलीलुल क़द्र सहाबी हैं। पर उनका रोज़ाना का मामूल था कि लोगों को लेकर मस्जिद में ईमान का हल्क़ा क़ायम करते थे। अब दावत और ईमान उम्मत में ख़त्म हो गई, कि ईमान की मज़बूती के अस्बाब ख़त्म हो गए तो उसका सारा असर पड़ा दीन पर। क्योंकि इस्लाम ईमान के ब–क़द्र होगा कि जितना ईमान उतना इस्लाम, अल्लाह की इताअत ईमान की ब–क़द्र होगी। इसलिए हदीस में फ़रमाया है कि मोमिन अल्लाह की इताअत में नकेल पड़ी ऊंट की तरह हैं। मुसलमानों का यह सोचना कि हम तो हैं ही ईमान वाले, हमें क्या ज़रूरत है ईमान को सीखने की? यह बड़ी ना–समझी की बात है। सुनो जितनी देर बदन से कुरता उतारने में लगता हैं ना, इससे कम देर में ईमान दिलों से निकल जाता है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जब किसी मुसलमान से कबीरा गुनाह हो जाता है तो ईमान के अनवार इसके दिल से निकलकर उसके सर पर साया कर लेता हैं। फिर जब तक वह तौबा नहीं करता, ईमान का नूर वापस नहीं आता। हमें तो कबीरा गुनाह की भी ख़बर नहीं कि कबीरा गुनाह क्या क्या हैं।

अहकामात (हुक्मों) का इल्म अमल के लिए है

इसलिए मेरे दोस्तों अज़ीज़ो और बुज़ुर्गो! पहला काम हमारा यह है कि कलिमा 'ला इलाह इल्लल्लाहु' को दावत में लाओ, इसको दावत में लाने का सबसे पहला काम यह है कि रोज़ाना—

अल्लाह की तौहीद को,
उसकी क़ुदरत को,
उसके रब होने को,
उसकी अज़्मत को और

उसके ग़ैर से कुछ नहीं हो रहा, उसको बोला करो। हमारे मश्त का यह बुनियादी मक़सद, उलमा ने लिखा है अहकामात (हुक्मों) का इल्म अमल के लिए है, इससे अमल सीखना मक़सूद है, कि उससे तो फ़राग़त हो जाएगी। कि

नमाज़ का इल्म हासिल हो गया, तो नमाज़ के इल्म से फ़राग़त हो गई कि नमाज़ ऐसी पढ़ी जाएगी।

ज़कात का इल्म हासिल हो गया, तो ज़कात के इल्म से फ़राग़त हो गई कि ज़कात ऐसे दी जाएगी।

हज का इल्म हासिल हो गया, तो हज के इल्म से फ़राग़त हो गई कि हज इस तरह किया जाएगा।

रोज़े का इल्म हासिल हो गया, तो रोज़े के इल्म से फ़राग़त हो गई कि रोज़ा ऐसे रखा जाएगा।

सारी नेकियों का मिदार तौहीद पर है

उलमा ने लिखा है कि अहकामात (हुक्मों) का इल्म अमल के लिए है तो अमल के लिए इल्म से फ़राग़त हो जाएगी, लेकिन मोमिन को अल्लाह की तौहीद से फ़राग़त नहीं है कि इतना कहना काफ़ी नहीं है कि हम जानते हैं कि अल्लाह एक है, बल्कि रोज़ाना अल्लाह की तौहीद को बयान करो, उसका हुक्म है।

"يَاأَيُّهَا النَّاسُ! وَحِّدُوا اللهَ فَإِنَّ التَّوْحِيْدَ رَأْسُ الطَّاعَاتِ"

कि अल्लाह की तौहीद को बोला करो क्योंकि सारी नेकियों का मिदार तौहीद

पर है। कि–

आमाल में इख़्लास (जो भी अमल हो अल्लाह के लिए हो),
आमाल में इस्तिक़ामत (जमना),
आमाल पर वायदों का पूरा होना,
आमाल पर इजरा (अज्र यानी सवाब) का मिलना,

हर आमाल के साथ ये चार बुनियादी चीज़ें हैं, ये चारों ईमान के बग़ैर हासिल नहीं होती।

वायदे यक़ीन से पूरे होंगे।
इस्तिक़ामत (जमे रहना) यक़ीन से होगी।
अज्र भी यक़ीन से मिलेगा।
इख़्लास भी ईमान के ब–क़द्र होगा।

ईमान की तक़्वीयत (मज़बूती) के चार अस्बाब

इसलिए ईमान की तक़्वीयत (मज़बूती) का पहला सबब यह है कि अल्लाह की तौहीद को रोज़ाना बोला करो, कि करने वाली ज़ात सिर्फ़ अल्लाह की है, अल्लाह के ग़ैर से तो कुछ होता ही नहीं। कि क़ुदरत कहां है? क़ुदरत कायनात में नहीं, क़ुदरत तो अल्लाह की ज़ात में है, कि जिब्रील अलै० में या नबियों में या वलियों में इन किसी में क़ुदरत नहीं है।

तो वह जब इंसान के अल्लाह के ग़ैर में क़ुदरत तसव्वुर करता है तो ख़्याल ही उसे अल्लाह के ग़ैर की तरफ़ ले जाता है।

वज़ीर से यह हो जाएगा,
सदर से यह हो जाएगा,

अब मैं आपको कैसे समझाऊं, मैं तो हज़रत रह० की बातें बता रहा हूं, हज़रत रह० फ़रमाते थे कि उनका अपना यक़ीन अपने आमाल से हटकर दूसरों के अमल पर जाएगा, वह यूं कहेगा कि फ़लां बुज़ुर्ग से यह हो जाएगा। यह होंगे वह, जो अपने अमल से फ़ारिग़ हो जाएंगे, अपनी हाजतों (ज़रूरतों) को अमल करने वालों के हवाले कर देंगे।

हालांकि करने वाली ज़ात सिर्फ़ अल्लाह तआला की है, अल्लाह के ग़ैर से कुछ

नहीं होता अगर नबी भी यह कहे कि यह कल करूंगा और इनशाअल्लाह कहना भूल जाएं, ऐसा नहीं है कि नऊज़ुबिल्लाह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जान-बूझकर ऐसा किया हो, कि जब आपसे पूछा गया कि अस्हाबे कहफ़ कौन थे तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि यह मैं कल बता दूंगा, बल्कि आपकी बात फ़रमाते हुए इनशाअल्लाह कहना भूल गए।

﴿وَلَا تَقُولَنَّ لِشَيْءٍ إِنِّي فَاعِلٌ ذَٰلِكَ غَدًا إِلَّا أَن يَشَاءَ اللَّهُ وَاذْكُر رَّبَّكَ إِذَا نَسِيتَ وَقُلْ عَسَىٰ أَن يَهْدِيَنِ رَبِّي لِأَقْرَبَ مِنْ هَٰذَا رَشَدًا﴾ [کہف ۲۳-۲۴]

"और आप किसी काम की निस्बत यूं न कहा कीजिए कि मैं इसको कल कर दूंगा, मगर खुदा के चाहने को मिला दिया कीजिए, और जब आप भूल जाएं, तो अपने रब का ज़िक्र कीजिए और कह दीजिए कि मुझको उम्मीद है कि मेरा रब मुझको (नुबुव्वत की) दलील बनने के एतबार से इससे भी नज़दीक तर बात बतला दे।"

हम तो गौर करें कि सुबह से शाम तक हमारी ज़ुबान पर कितने दावे आते हैं कि—

हम ये करेंगे,
हुकूमत ये करेगी,
ताजिर ये करेंगे,
डाक्टर ये करेंगे,

पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक मर्तबा फ़रमाया कि मैं कल बताऊंगा कि अस्हाबे कहफ़ कौन थे? और आप इनशाअल्लाह कहना भूल गए, तो उलमा ने लिखा है कि पंद्रह दिन तक वही नहीं आई, इतना लम्बा वक़्फ़ा (वक़्त) वही के बंद होने का कभी नहीं हुआ। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर ताने कसे जाने लगे कि कहां हैं मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) जो कहते थे कि आसमान से वही आती थी? कहां वह जिब्रील जो आसमान से वही लेकर आते थे? क्यों नहीं बोलते कि आप के पास गैब की खबर आती है। आप वही के बंद हो जाने से बहुत परेशान हो गए, सिर्फ़ बात इतनी थी कि मैं कल बताऊंगा कि अस्हाबे कहफ़ कौन थे? यह नहीं कहा कि अल्लाह चाहेंगे तो कल बताऊंगा। आप (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) को इस पर तंबीह हुई कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम ने क्यों कहा कि कल बताऊंगा। फिर पंद्रह दिन के बाद वही आई कि—

﴿وَلَا تَقُولَنَّ لِشَيْءٍ إِنِّي فَاعِلٌ ذَٰلِكَ غَدًا ۝ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ وَاذْكُرْ رَبَّكَ إِذَا نَسِيتَ
وَقُلْ عَسَىٰ أَنْ يَهْدِيَنِ رَبِّي لِأَقْرَبَ مِنْ هَٰذَا رَشَدًا﴾ [کہف ۲۳–۲۴]

"और आप किसी काम की निस्बत यूं न कहा कीजिए कि मैं इसको कल कर दूंगा, मगर खुदा के चाहने को मिला दिया कीजिए, और जब आप भूल जाएं, तो अपने रब का ज़िक्र कीजिए और कह दीजिए कि मुझको उम्मीद है कि मेरा रब मुझको (नुबूवत की) दलील बनने के एतबार से इससे भी नज़दीक तर बात बतला दे।"

नबी जी! आइन्दा कभी यह न कहिएगा कि यह काम मैं कल कर दूंगा कि जब तक आप अपने कहने को हमारी ज़ात पर मौक़ूफ़ न करें कि जब भी आप इनशाअल्लाह कहना भूल जाया करें तो इनशाअल्लाह ज़रूर कह लिया करें।

मैं बता रहा था कि मेरे दोस्तो! कि क़ुदरत अल्लाह की ज़ात में है, औलिया, अंबिया, फ़रिश्ते, जिब्रील सब के सब मुहताज हैं, नबी भी जिस काम के लिए भेजे गए हैं ना, इसमें भी वे मुहताज हैं, मुख़्तार नहीं हैं कि किसी को वह हिदायत दें दें। कि नबियों को हिदायत के लिए भेजा गया है, लेकिन वह खुद किसी को हिदायत नहीं दे सकते। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सारा ज़ोर लगा दिया अपने चचा अबू तालिब पर कि उनको हिदायत मिल जाए और दूसरे चचा हज़रत हमज़ा के क़ातिल वहशी को कोई क़त्ल कर दे, पर अल्लाह वहशी को हिदायत दे रहे हैं और अबू तालिब बग़ैर हिदायत दुनिया से जा रहे हैं।

हज़रत रह० फ़रमाते थे कि अंबिया और इंसान अपने इरादे में नाकाम किए जाते हैं, अल्लाह को पहचानने के लिए। हज़रत अली रज़ि० फ़रमाते थे कि मैंने अपने इरादे में नाकाम होकर ही अल्लाह को पहचाना है। जो लोग अस्बाब का यक़ीन रखते हैं ना, वे नाकामी में अस्बाब की कमी तालाश करते हैं और जो अल्लाह पर यक़ीन रखते हैं, वह अपनी नाकामियों में अल्लाह को पहचानते हैं कि चलो अल्लाह की तरफ़, इसलिए कि काम अल्लाह ने बिगाड़ा है, कि उनको अस्बाब की नाकमी अल्लाह की तरफ़ ले जाती है और जिनका यक़ीन अस्बाब की तरफ़ होता है कि वह तो बेचारे खुद–कुशी कर बैठे कि सारे अस्बाब होते हुए भी काम नहीं हुआ।

क़ुदरत अल्लाह की ज़ात में है कायनात में क़ुदरत नहीं है

इसलिए मेरे अज़ीज़ों दोस्तों और बुज़ुर्गो! क़ुदरत अल्लाह की ज़ात में है, कायनात में क़ुदरत नहीं है। कायनात तो क़ुदरत से बनकर क़ुदरत के ताबेअ है, यह जितनी ज़मीन और आसमान के बीच ख़ला में जो चीज़ें हैं, ये सब अल्लाह की पहचान के लिए हैं, कि अल्लाह ने ज़ाहिरी निज़ाम को बनाया बंदे के इम्तिहान के लिए कि देखना यह है कि निज़ामे आलम की तब्दीलियां तुम्हें हमारी तरफ़ लाती हैं या तुम्हें हमारे ग़ैर की तरफ़ ले जाती हैं।

अब क्या बताऊं मैं आपको, हाए! इस ज़माने में मुसलमान चलता है साइंस वालों को देखकर, कि साइंस क्या कह रही है। सबसे बड़ा शिर्क जो मुसलमान के लिए है वह साइंस का निज़ाम है, इसका आख़िर होगा दज्जाल पर।

अल्लाह के ग़ैर से दुनिया में कोई तब्दीली होना यह साइंस का ख़ुलासा है। साइंस में पढ़ाया ही यह जाता है कि इसकी वजह से यह हुआ और इसकी वजह से यह, ख़ुदा की क़सम! साइंस में अल्लाह के ग़ैर से होना ही पढ़ाया जाता है। ये बेचारे नहीं जानते कि–

अल्लाह कौन है?

इस कायनात का निज़ाम क्या है?

ख़िला का निज़ाम कैसे चल रहा है?

इसकी ख़बर ही नहीं, इन्होंने तो कायनात के निज़ाम से जोड़ा है, यही साइंस का ख़ुलासा है और यह सबसे बड़ा शिर्क है।

कायनात के निज़ाम को कायनात से जोड़ना शिर्क है

कायनात के निज़ाम को कायनात से जोड़ना, इसको शिर्क कहते हैं। और कायनात के निज़ाम को ख़ालिके कायनात से जोड़ना, इसको ईमान कहते हैं।

यह बात मेरी याद रखना! कि कायनात के निज़ाम को कायनात से जोड़ना इसको शिर्क कहते हैं और कायनात के निज़ाम को ख़ालिके कायनात से जोड़ना इसको ईमान कहते हैं। मैं कैसे अर्ज़ करूं!!! कि हमें रहम नहीं आता अपने छोटे छोटे बच्चों पर कि सारी क़ुव्वत हम लगा देते हैं कि उन्हें अल्लाह के ग़ैर को सिखलाने पर, शिर्कीयत सीखलाने पर, अब जब पूछोगे इन बच्चों से कि बारिश कब

होती है, तो वह साइंस में पढ़ा हुआ सबक़ बतलाएंगे कि बारिश ऐसे होती है।

हाए!!! मैं क्या अर्ज़ करूं।

हमारा मज्मा कहां जा रहा है?

हम कहां जा रहे हैं?

अगर रोज़ाना तौहीद को नहीं बोलेंगे, तो शिर्क ऐसी जड़ पकड़ लेगा कि तुम समझोगे कि हम तब्लीग़ का काम कर रहे हैं और अंदर शिर्क का माद्दा पैदा हो रहा होगा। इसलिए अल्लाह के ग़ैर से नहीं हो रहा, इसके बोलने की आदत डालो! क्योंकि अल्लाह से होने को तो ग़ैर भी बोल रहे हैं कि ऊपर वाला करता है, ऊपर वाला करेगा और ऊपर वाले ने किया। सिर्फ़ इसे बोलने को तौहीद नहीं कहते, बल्कि अल्लाह के ग़ैर से नहीं हो रहा, इसे बोलना तौहीद कहते हैं, यह नबियों की दावत है। कि अल्लाह के ग़ैर से तो कुछ हो ही नहीं रहा, करने वाली ज़ात सिर्फ़ अल्लाह की है। हमें तो रोज़ाना इसकी चोट मारनी पड़ेगी अपने दिल पर, तब कहीं जाकर इसकी हक़ीक़त खुलेगी वरना सबके दिलों पर चोर बैठा हुआ है, जितना यह कायनात से मुतास्सिर होंगे, उतना ही इन नक़्शों में चलने वाले ग़ैरों से मुतास्सिर होंगे।

सहाबी के लिए जेल की कोठरी में बादल का टुकड़ा आकर बरसा

अब कौन सिखलाए ऐसे लोगों को, कि बादल का टुकड़ा सहाबी के लिए जेल की कोठरी में आकर बरसा। कि हज़रत हुज्र बिन अदी रज़ियल्लाहु अन्हु को एक बार गुस्ल की हाजत हुई, उस वक़्त वह एक कोठरी में क़ैद थे। जो आदमी उनकी निगरानी में लगाया गया था, उससे उन्होंने गुस्ल के लिए पानी मांगा, तो उसने पानी देने से इंकार कर दिया, फिर इन्होंने आसमान की तरफ़ देखकर अल्लाह से पानी मांगा, उसी वक़्त एक बादल आया और कोठरी के अंदर घुसकर बरसने लगा, उन्होंने उससे गुस्ल किया और ज़रूरत भर का पानी भी पी लिया।

कौन साइंस वाला इसको क़बूल करेगा? तो यूं कहते हैं कि बादल वहां से उठता है इतनी बुलंदी पर जाता है वहां से बरसता है। इनका सारा निज़ाम साइंस का है, यह तो अल्लाह को जानते ही नहीं हैं बे-चारे, यह तो समझते हैं कि

अल्लाह दुनिया बनाकर फ़ारिग़ हो चुके हैं, अब दुनिया का निज़ाम ख़ुद चल रहा है। ख़ुदा की क़सम! यही दहरियत (अल्लाह को न मानना) है, दहरियत (अल्लाह को न मानना) इसी का नाम है कि जो कुछ कायनात में हो रहा है, ख़ुद–ब–ख़ुद हो रहा है, अपने बच्चे को भी यही पढ़ा रहे हैं और ख़ुद भी यही पढ़ रहे हैं।

बाज़ की सुबह ईमान के साथ बाज़ की सुबह कुफ़्र के साथ

हुज़ूर अक़्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसलिए यह बात पहले ही साफ़ कर दी कि सुलहे हुदैबिया की रात बारिश हुई, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पहले ही सहाबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु से फ़रमायाः कि सुन लो जब सुबह को सोकर उठोगे तो तुम में से बाज़ मोमिन होंगे और बाज़ काफ़िर होंगे। यह बात सुनकर सहाबा दहल (डर) गए कि यह बात कोई मामूली बात नहीं थी। इसीलिए कि वह लोग कुफ़्र से ही निकल कर ईमान में आए फिर आख़िर सुबह कैसे काफ़िर हो जाएंगे? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा रज़ि० से फ़रमायाः कि जब सब सोकर उठोगे तो तुममें से बाज़ काफ़िर होंगे और बाज़ मोमिन। तो सहाबा रज़ि० ने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! ऐसे कैसे हो जाएगा? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः जो सुबह उठकर यह कहेगा कि फ़्लां सितारे की वजह से बारिश हुई है तो वह अल्लाह का इंकार करने वाला है और सितारों पर ईमान रखने वाला है और जो यूं कहेगा कि बारिश अल्लाह के करने से हुई है वह अल्लाह पर ईमान रखने वाला है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबा को इस तरह ईमान सिखलाया है, यह बात जो सहाबा कहते हैं कि हमने सबसे पहले ईमान सीखा तो इस तरह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबा को ईमान सिखलाया है।

ख़ूब ग़ौर करो बात पर यह जितना ख़िला का निज़ाम है, यह तो मेरे दोस्तों सिर्फ़ इम्तिहान के लिए बनाया गया है, कि हम देखें तुम इस निज़ाम को देखकर क्या फ़ैसला करते हो, जिनके और अल्लाह के दर्मियान कायनात का निज़ाम हाइल हो जाएगा, न वह किसी को माबूद समझ बैठेंगे। इसको माबूद समझने का क्या मतलब है? कि कायनात के निज़ाम को वह माबूद इस तरह समझेंगे कि करने वाली

ज़ात तो सिर्फ़ अल्लाह ही की है, मगर करने के लिए अल्लाह ने ये चीज़ों और शक्लों वाला रास्ता बनाया है। बस समझ लो उन्होंने इतना कहते ही अल्लाह का इंकार कर दिया। क्योंकि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त किसी निज़ाम के पाबंद नहीं हैं। जैसे साइंस वाले कहते हैं कि जब यूं होगा तो यह होगा।

ज़लज़ले (भूकंप) ज़ीना की वजह से आते हैं

जब ज़लज़ले आते हैं ना, ज़लज़ले। तो लोग साइंस वालों से पूछते हैं कि ज़लज़ला क्यों आया? कि सौ साल से तो कभी ज़लज़ला नहीं आया अब यहां ज़लज़ला क्यों आया? तो वे तुम्हें लाखों पट्टियां पढ़ाएंगे। अगर तुम यह सोचो कि अल्लाह ने ज़मीन हिलाई है और अल्लाह तआला तब ही ज़मीन हिलाकर ज़लज़ले लाते हैं, जब इनकी ज़मीन पर ज़ीना किया जाता है। हां, ज़ीना होने की वजह से ज़लज़ले आते हैं, कि ज़मीन ज़ीना को बर्दाश्त नहीं कर सकती है कि मैं भी अल्लाह की मख़्लूक़ और तू भी अल्लाह की मख़्लूक़, मैं भी मामूर हूं और तू भी मामूर है, तो तूने अल्लाह का हुक्म क्यों तोड़ा? पर लोगों को अंदाज़ा नहीं है, क्योंकि जिन्होंने ख़िला के निज़ाम को कायनात से जोड़ा हुआ है उन्हें तो कभी इसका ख़्याल भी नहीं आएगा कि ज़लज़ले का ताल्लुक़ ज़ीना से है। वह तो साइंस वालों ने उन्हें पढ़ा दिया है, वही पढ़ता है, इनकी इसी एतबार से सोच बनी हुई है कि हमने साइंस में यह पढ़ा था।

खूब ध्यान से सुनो! हम सब के सब (अल्लाह हमें माफ़ फ़रमाए कि) ज़ाहिर परस्ती पर चल रहे हैं, हां सच्ची बात है यह कि हम बजाए ख़ुदा परस्ती के ज़ाहिर परस्ती पर चल रहे हैं। क्योंकि हम रोज़ाना अल्लाह की तौहीद को बोलने को काम नहीं समझते हैं, हम सब के ज़ेहनों में यह है कि तब्लीग़ के ज़रिए से कुछ आमाल हो जाते हैं, उन अमलों को करने की कोशिश है, फिर हिदायत तो अल्लाह के हाथ में है। जबकि मौलाना इलयास साहब रह० फ़रमाते थे कि अगर मैं इस काम का कोई नाम रखता तो इस काम का नाम *"तहरीके ईमान"* रखता। कि मुसलमानों के अंदर ईमान के सीखने का शौक पैदा किया जाए और हर मुसलमान अपने ईमान को लेकर फ़िक्रमंद हो जाए। अब ज़रा खुद सोचो जो आदमी कायनात के निज़ाम से मुतासिर है, वह अहकामात (हुक्मों) पर कैसे चलेगा? खूब समझ लो मैंने आपको

ईमान की तक्वीयत (मज़बूती) का पहला सबब अर्ज़ किया है कि अल्लाह की क़ुदरत को ख़ूब बोला करो। कि क़ुदरत अल्लाह की ज़ात में है, कायनात में क़ुदरत नहीं है। यह कायनात अल्लाह की क़ुदरत से बनी है और हर लम्हा क़ुदरत ही के ताबेअ है अल्लाह सूरज और चांद को सिर्फ़ इसलिए बे–नूर करते हैं कि वह बताना चाहते हैं कि उनकी रोशनी हमारे क़ब्ज़े में है जो यक़ीन नहीं करते वही सूरज के पूजारी हैं। क्योंकि ये लोग बे–चारे यह समझते हैं कि सूरज की रोशनी उसकी अपनी ज़ाती है।

इसलिए मेरे दोस्तों और अज़ीज़ो! हमारा रोज़ाना का पहला काम यह है देखो मैं बराबर बंगले वाली मस्जिद में अर्ज़ करता रहता हूं कि हमारे गश्तों का मक़सद मुसलमानों से मुलाक़ातें कर करके उन्हें मस्जिद के माहौल में लाना है। कि उनसे मुलाक़ातें करके यह कहना कि भाई मस्जिद में ईमान का हल्क़ा चल रहा है आप भी तशरीफ़ ले चलें, चाहे आप 10 मिनट के लिए ही चलें। ख़ूब समझ लो कि हमारी मुलाक़ातों का मक़सद मस्जिद में नक़द लाना है। कि सहाबा रज़ि० की पहली सुन्नत, मुलाक़ातें करके उन्हें ईमान की मज्लिस में बिठाओ, मस्जिद में बैठकर अल्लाह की क़ुदरत को, उसकी अज़मत को, उसके रब होने को, उसके एक होने को बैठकर सुनो और सुनाओ फिर यहां से इसी दावत को लेकर बाहर के तमाम कायनाती नक़्शों के ख़िलाफ़ सब निकलें कि सुनो करने वाली ज़ात सिर्फ़ अल्लाह की है, अल्लाह के ग़ैर से तो कुछ नहीं हो रहा है।

मस्जिद की आबादी की बुनियाद, मस्जिद में ईमान के हल्क़े का क़ायम होना है।

मैं तो अपने यहां निज़ामुद्दीन में सूबे वालों से यह पूछता हूं कि बताओ भाई! तुम्हारे यहां कितनी मस्जिदें मस्जिद नबूवी की तर्तीब पर आबाद हैं? कि तुम्हारे यहां मस्जिद में ईमान का हल्का लगा हुआ और तुम्हारे साथी मुलाक़ातें करके मस्जिद के माहौल में ला रहे हों। देखो मस्जिद की आबादी की बुनियाद है कि मस्जिद में ईमान के हल्क़े क़ायम हों।

एक तरफ़ तालीम का हल्क़ा लगा हुआ हो,
एक तरफ़ ईमान का हल्क़ा हो,
और मुलाक़ातें कर करके लोगों को मस्जिद में लाया जा रहा हो।

पर किसी मस्जिद में ईमान का हल्क़ा क़ायम नहीं। अगर काम करने वालों ने रोज़ाना ईमान को न बोला, तो बाहर के माहौल का असर उनके दिलों पर पढ़कर रहेगा।

इसलिए रोज़ाना तौहीद को बोलना ज़रूरी समझो कि हमारे यक़ीन अल्लाह की ज़ात की तरफ़ फिरें, वरना अल्लाह के ग़ैर का असर दिलों पर पढ़ेगा और सारी बे–दीनी की बुनियाद अल्लाह के ग़ैर का असर है।

कैसे अर्ज़ करूं मैं कि मुसलमान शरीअत के एक एक हुक्म के बारे में बैठा सोच रहा है ना, कि अगर इस हुक्म के ख़िलाफ़ क़ानून आया तो क्या होगा? शरीअत के ख़िलाफ़ किसी क़ानून को ज़ेहन में सोचने की जगह देना भी उसके ईमान के ख़िलाफ़ है। शरीअत के किसी एक हुक्म के ख़िलाफ़ किसी क़ानून के सोचने को ज़ेहन में जगह देना भी ईमान के ख़िलाफ़ है। अच्छा जी! तो अब मुसलमान क्या करेगा? एहतियात करेगा, स्ट्राइक से, उनकी भूख–हड़ताल से, दीन के उस अमल की हिफ़ाज़त इसलिए नहीं होगी क्योंकि यह ख़ुद पूरे दीन पर नहीं है। क्योंकि ग़ैर तो मुसलमानों के दीन को जब ही मिटाते हैं, जब मुसलमान अपने दीन को ख़ुद बिगाड़ चुका होता है। ग़ैर तो बिगड़े हुए दीन को मिटाते हैं वरना किसी की क्या मजाल हैं कि दीन को मिटाए। हां, अगर मुसलमान ख़ुद इस्लाम के अरकान (हुक्मों) का पाबंद हो तो क्या मजाल है किसी कि कोई मुसलमान का इस्लाम के अरकान की तरफ़ नज़र भी उठाकर देख ले।

मेरे दोस्तो और अज़ीज़ो! उम्मत की दावत को छोड़ने ही की वजह है कि आज अज़ान तक पर मसाइल (रूकावटें) खड़े हो रहे हैं। यह दावत के छोड़ने की वजह से, ख़ूब ग़ौर से सुनो! वह तो जितना अल्लाह के ग़ैर का असर दिलों में होगा, उतना ही अल्लाह के ग़ैर का असर तसल्लुत होगा। मैं हज़रत रह० की बात अर्ज़ कर रहा हूं, कि हमारा रोज़ाना का काम यह है कि हम लोगों को मस्जिद में लाकर अल्लाह की क़ुदरत को समझाए, यह सहाबा रज़ि० की सुन्नत है अब दूसरा सबब ईमान की तक़्वीयत (मज़बूती) का यह है कि अंबिया अलैहिस्सलाम के साथ जो ग़ैबी मदद हुई हैं, उनको बोला करो। क्योंकि अंबिया की ग़ैबी मदद को बोलना, यह ईमान की तक़्वीयत (मज़बूती) का दूसरा सबब है।

"कि नबी जी (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! हम आपके दिल को जमाने के लिए आप पर पिछले नबियों के वाक़िआत बहीं करते हैं" सूरः हूद, 120।

तो नबियों के ग़ैबी मदद के वाक़िआत को बयान करना, दिलों के जमाव का सबब है, एक ईमान की तक़्वीयत (मज़बूती) का यह सबब है।

तीसरा सबब ईमान की तक़्वीयत का यह है कि जितना सहाबा किराम रज़ि॰ के साथ–

गैबी मदद,
बरकतें,
नुसरतें और
ज़ाहिर के ख़िलाफ़ जो मदद के वाक़िआत हुए हैं,

उन्हें ख़ूब बयान किया करो और बयान करने में कभी यह न सोचना कि ऐसा हो सकता है या नहीं? क्योंकि अंबिया और सहाबा के वाक़िआत अल्लाह की मदद के ज़ाब्ते बताने के लिए हैं। वरना लोग यह समझेंगे कि अल्लाह ने दुनिया को दारूल अस्बाब बनाया है, ताकि अल्लाह अस्बाब के ज़रिए हमारी मदद करते हैं।

अस्बाब पर निगाह रखकर अल्लाह से उम्मीद रखना, यह कुफ़्र का रास्ता है

देखो मेरे दोस्तो और अज़ीज़ो! यही वजह है कि हम सब अल्लाह के सामने अपने अस्बाब रखकर दुआएं मांगते हैं। कहते भी हैं साथी, कि तुम ज़ाहिरी अस्बाब में कोशिश करो फिर अल्लाह पर भरोसा करो, हाए!!! सोचो तो सही कि कितनी उलटी बात है।

नहीं मेरे दोस्तों अज़ीज़ो! मुझे ख़ुद ही एतराफ़ है कि मेरी बात आपको मुश्किल से समझ में आएगी। क्योंकि जो आदमी चल रहा हो मश्रिक़ की तरफ़, उसे मग़्रिब की तरफ़ फिरना पड़ेगा। आज तो हम सबकी ज़बानों पर यह है कि ज़ाहिरी अस्बाब में तुम कोशिश करो और उम्मीद अल्लाह से रखो। मेरे दोस्तो! यह रास्ता नाकामी का है। हाए!!! मैं कैसे समझाऊं कि तुमने अल्लाह के लिए किया ही क्या है? जिससे तुम अल्लाह से उम्मीद रखो, मेहनत करते हैं अस्बाब पर और उम्मीद रखते हैं अल्लाह से।

हज़रत रह॰ फ़रमाते थे कि *"अस्बाब पर निगाह रखकर अल्लाह से उम्मीद*

करना कुफ्र का रास्ता है।"

कि अल्लाह से उम्मीद तो ग़ैर मुस्लिम भी रखते हैं, वह भी सही कहते हैं कि ज़ाहिरी अस्बाब हमारे ज़िम्मे हैं और करने वाली ज़ात अल्लाह की है। इतनी उम्मीद तो वे भी अल्लाह से रखते हैं। मैं हज़रत रह० की बात बता रहा हूं वह भी कहते हैं कि अल्लाह करेंगे मगर ज़ाहिरी अस्बाब बनाना हमारे ज़िम्मे है और मुसलमान भी यही कहते हैं कि अल्लाह करेंगे मगर ज़ाहिरी अस्बाब बनाना हमारे ज़िम्मे है। हज़रत रह० फ़रमाते थे कि तुम ज़रा बैठकर ग़ौर करो कि तुममें और उनमें क्या फ़र्क़ रह गया है?!

हमारे एक साथी को औलाद नहीं होती थी उसने एक ग़ैर–मुस्लिम डाक्टर से अपना इलाज कराया। उस डाक्टर ने सब देखभाल चैकअप वग़ैरह किए फिर उसने कहा कि कोई कमी नहीं है, मैंने तो अपना काम पूरा कर दिया है, अब सिर्फ़ ऊपर वाले के हुक्म की देर है। किसकी देर है? कि ऊपर वाले के हुक्म की देर है। जब उसने मुझे आकर यह बताया कि वह ग़ैर–मुस्लिम डाक्टर तो यह कह रहा था कि मैंने अपना काम पूरा कर दिया है, अब ऊपर वाले के हुक्म की देर है। तो मैं सोच में पड़ गया, कि हममें और उसमें क्या फ़र्क़ रह गया?!! वह भी यही कह रहे हैं कि अस्बाब मैंने बना दिए हैं, अब ऊपर वाला करेगा और हम भी यही कह रहे हैं कि अस्बाब हम बना लेते हैं अब करने वाली ज़ात अल्लाह की है। तो मैंने कहा कि हम मैं और उनमें फ़र्क़ ही क्या रह गया?!!!

मेरे दोस्तो अज़ीज़ो और बुज़ुर्गो! देखो हममें और उनमें फ़र्क़ यह है कि जो अल्लाह को करने वाला नहीं मानते, तो उनके और अल्लाह के दर्मियान अस्बाब ज़ाब्ता है और जो अल्लाह को करने वाला मानते हैं उनके और अल्लाह के दर्मियान अहकामात (हुक्मों) ज़ाब्ता (क़ानून) है, कि–

ऐ अल्लाह! मैंने नमाज़ पढ़ ली।
ऐ अल्लाह! मैंने सदक़ा दे दिया।
ऐ अल्लाह! मैंने सच बोल दिया।

अब करने वाली ज़ात तेरी है, मोमिन हुक्म पूरा करके उम्मीद करेगा और काफ़िर अस्बाब पूरे करके उम्मीद करेगा। ख़ूब समझ लो! उम्मीद दोनों अल्लाह ही

से करते हैं, बस इतना फ़र्क़ है कि एक मर्तबा हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक मुश्रिक को बुलाकर पूछा यह बताओ कि जब दुनिया में तुमको कोई नुक़सान हो जाता है तो तुम उस नुक़सान की तलाफ़ी (भरपाई) किससे कराते हो? इस मुश्रिक ने यह कहा जो अल्लाह आसमानों के ऊपर है, मैं इससे कहता हूं, तू वह मेरे नुक़सान की तलाफ़ी करता है। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: तब वह अल्लाह तुम्हारा काम बनाता है, तुम्हारे नुक़सान को दूर करता है, फिर भी तुम उसके साथ बुतों को शरीक करते हो।

नहीं मेरे दोस्तो बुज़ुर्गों और अज़ीज़ो! हमारे और अल्लाह के दर्मियान कायनात ज़रीया नहीं है। बल्कि हमारे और अल्लाह के दर्मियान अहकामात ज़रिया है। अब रही बात कि अल्लाह ने अस्बाब क्यों बनाया? तो अल्लाह तआला ने अस्बाब सिर्फ़ इम्तिहान के लिए बनाए हैं। अल्लाह तआला यह देखना चाहते हैं, कि अस्बाब से ज़ाहिर होने वाली हाजतों (ज़रूरतों) को तुम हमारी तरफ़ फेरते हुई अस्बाब की तरफ़ फेरते हो, सिर्फ़ इतना सा इम्तिहान है। इसलिए यह सारा अस्बाब इम्तिहान के लिए है, चाहे हमारी दुकान, या सुलैमान अलै० की बादशाहत हो यह सब इम्तिहान के लिए है।

ऐसी बादशाही, कि सारी मख़्लूक़ ताबेअ

क्या बादशाहत थी सुलैमान अलै० की।

﴿قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَهَبْ لِي مُلْكًا لَّا يَنبَغِي لِأَحَدٍ
مِّنْ بَعْدِي إِنَّكَ أَنتَ الْوَهَّابُ﴾

"ऐ अल्लाह! मुझे ऐसी बादशाही चाहिए जो मेरे बाद किसी को मयस्सर न हो"

ऐसी बादशाही कि सारी मख़्लूक़ ताबेअ जिससे चाहे जो काम ले। मगर किस के लिए? कि सिर्फ़ आज़माइश के लिए। अस्बाब किसी के पास हो, नबी के पास हो, या चाहे उम्मती के पास हो, आज़माइश के लिए हैं, अस्बाब में सबकी दो आज़माइश हैं।

एक आज़माइश इताअत की है।

और

एक आज़माइश गुमान की है।

कि तुमने अमल की निस्बत किधर की है। ये दो आज़माइशें हैं अस्बाब में, एक आज़माइश इताअत की है कि-जो अस्बाब हम तुमको देते हैं, तुम इनमें हमें भूल तो नहीं जाते।

सूरज का वापस निकलना

कि सुलैमान अलैहिस्सलाम घोड़ों का मुआना कर रहे थे, वैसे घोड़े इस वक्त दुनिया में नहीं हैं, सारे ख़त्म हो गए। ऐसे घोड़े जो दौड़ते भी थे, उड़ते भी थे और समुंद में तैरते भी थे, ऐसे उम्दा घोड़े। उन घोड़ों का सुलैमान अले० मुआना कर रहे थे, इसी में असर की नमाज़ क़ज़ा हो गई कि सूरज डूब गया। अस्बाब के देखने में ऐसे मश्गूल हो गए कि असर की-नमाज़ क़ज़ा हो गई। लेकिन बात यह है कि जिन्हें अमल के ज़ाया होने का ऐसा ग़म होता है, अल्लाह इनको ज़ाया नहीं करते। और फ़रमाया:

﴿رُدُّوهَا عَلَيَّ فَطَفِقَ مَسْحًا بِالسُّوقِ وَالْأَعْنَاقِ﴾

'ऐ अल्लाह! सूरज को वापस कर दे कि मेरी नमाज़ क़ज़ा हो गई है'

जिन्हें अमल के ज़ाया होने का सच्चा ग़म होता है, अल्लाह उनके अमल को ज़ाया नहीं करते। इसी लिए फ़रमाया कि सारी नेकियों का मिदार तक्वे पर है, चुनांचे सूरज वापस निकला।

मैं आपको बता रहा था कि अस्बाब में एक इम्तिहान इताअत का भी होगा, कि ऐसा तो नहीं कि तुम नमाज़ को ज़ाया कर दो। एक बात और दूसरी बात यह है कि तुम अस्बाब में मुदई (दावा करने वाले) हो, जिसकी वजह से तुम यह सोचो या ख़्याल करो कि इस सबब से हम यह कर लेंगे या फिर तुम अस्बाब की निस्बत हमारी तरफ़ करते हो, कि सबसे नहीं अल्लाह करेंगे। ये अस्बाब तो हमारा इम्तिहान है, कि इसी बात पर इनकी आज़माइश हुई।

गोश्त का लोथड़ा, सुलैमान अलैहिस्सलाम की शाही कुर्सी पर?!!

कि सुलैमान अले० ने बड़ा नेक इरादा किया, तैय किया आज मैं सौ (100) बीवियों पर चक्कर लगाऊंगा, क्योंकि मुझे अल्लाह के रास्ते के लिए 100 मुजाहिद

तैयार करने हैं। (सौ लड़के पैदा करूंगा) नेक इरादा किया कि अपनी सौ (100) बीवियों के पास चक्कर लगाऊंगा, कि मुझे सौ (100) बेटे चाहिए, जो अल्लाह के रास्ते में मुजाहदा करें, शैतान ने इनको भी यहां इनशाअल्लाह कहना भूला दिया। रिवायत में है, हालांकि ख़ैर का इरादा है, इसीलिए अल्लाह की मदद उसी काम में होगी, जो काम अल्लाह के हवाले किया गया है। इरादा चाहे दीन का हो या दुनिया का, तो सुलैमान अलै० ने नेक इरादा किया कि सौ मुजाहिद अल्लाह के रास्ते के लिए चाहिए और इस इरादे के साथ अपनी सौ (100) बीवियों से सोहबत की, पर सौ बीवियों में से सिर्फ़ एक बीवी को हमल ठहरा। और 99 बीवियों को कोई हमल नहीं ठहरा, सिर्फ़ एक बीवी को हमल ठहरा और उस बीवी से भी एक गोश्त का लोथड़ा पैदा हुआ, कि इस गोश्त के लोथड़े पर न कान, न हाथ, न पैर, न आंख और न मुंह, सिर्फ़ गोश्त का लोथड़ा और नीयत सुलैमान अलै० की थी मुजाहिद की। तो दाया ने इनकी बीवी से पैदा हुए उस गोश्त के लोथड़े को शाही कुर्सी पर लाकर रख दिया। कि यह पैदा हुआ है कुरआन में इसी तरह है–

﴿وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمَانَ وَأَلْقَيْنَا عَلَىٰ كُرْسِيِّهِ جَسَدًا ثُمَّ أَنَابَ﴾

दाया ने उस जने हुए गोश्त के लोथड़े को सुलैमान अलै० की शाही कुर्सी पर क्यों डाला? क्योंकि वह कुर्सी पर डालने वाली चीज़ तो नहीं थी, फिर क्यों डाला कुर्सी पर? कि कुर्सी पर इस लिए डाला गया है कि सुलैमान अलै० को यह पता चले कि तुम अपनी बादशाहत से यह न समझो कि कुछ कर लेंगे।

अस्बाब पर अल्लाह का कोई वायदा नहीं

ग़ौर करो इस पर कि जिनके ताबेअ सारी मख़्लूक़, लेकिन सौ (100) बच्चों को पैदा करने के इरादे को अल्लाह को सामने न रखा कि जब बंदा किसी काम के इरादा पर अल्लाह को भूल जाता है तो फिर अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त अपनी याद दिलाने के लिए इसको इसके काम में नाकाम करते हैं। जिन्हें अल्लाह तआला याद आ जाए ऐसे हालात में, तो फिर अल्लाह इनके लिए रास्ते खोल देते हैं और जिन्हें अल्लाह याद नहीं आते इन हालात में, तो फिर वे आगे बे–बरकती का परेशानियों और मुसीबतों का शिकार हो जाते हैं।

इसलिए मेरे दोस्तों अज़ीज़ो! अस्बाब की हैसियत इससे ज़्यादा नहीं है।

इसलिए कहते हैं कि अंबिया और सहाबा के ग़ैबी मदद के वाक़िआत ख़ूब बोला करो, कि अल्लाह ने इनके साथ जो भी किया है, वह अपने ज़ाब्ते (क़ानून) बताने के लिए और इनके दिलों में जमाने के लिए किया है। यह तीसरा सबब है ईमान की तक़्वीयत का, कि सहाबा रज़ि० के साथ अल्लाह की ग़ैब ताइद के वाक़िआत को ख़ूब बोला करो। इसलिए हज़रत युसूफ़ साहब रह० सारी "हयातुस्सहाबा" तर्तीब देकर आख़िर में ग़ैबी ताईद के वाक़िआत को जमा किया है। कि अल्लाह ने सहाबा की ताईद किस तरह की और किन आमाल पर की है। तो मैं बता रहा था कि अस्बाब की हैसियत यह है, अब चाहे वह अस्बाब चाहे नबी के पास हों, चाहे वह अस्बाब वली के पास हों और चाहे वह अस्बाब उम्मती के पास हों, अस्बाब की हैसियत यह है। अल्लाह का अस्बाब पर कोई वायदा नहीं है, यह पक्की बात है।

अल्लाह की कुदरत वायदों के साथ है। और
अल्लाह के वायदे हुक्मों के साथ हैं।

﴿إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِينُ﴾

यह सीधा और सही रास्ता है। अस्बाब के साथ वायदा भी नहीं और कुदरत भी नहीं, लोगों पर ताज्जुब है कि वह अल्लाह के सामने अपने अस्बाब रखकर दुआएं मांगते हैं। मेरे दोस्तो! अल्लाह के सामने आमाल रखकर दुआएं मांगो, कि–

ऐ अल्लाह! यह सदक़ा मैंने दिया है, इस पर तेरा वायदा है।
ऐ अल्लाह! मैंने नमाज़ पढ़ी है, इस पर तेरा वायदा है।
ऐ अल्लाह! मैंने सच बोला है इस पर तेरा वायदा है।

मशहूर वाक़िआ है कि तीन आदमियों का जो ग़ार में फंसे थे और चट्टान ने रास्ता बंद कर दिया था। यहां उनके लिए सिवाए मौत के और कोई रास्ता नहीं था, तो यहां हर एक ने अल्लाह के सामने अपना–अपना अमल पेश किया। हां, सबब नहीं बल्कि अमल पेश किया।

एक ने मुआशरे का अमल पेश किया एहसान का।
एक ने मामलात का अमल पेश किया एहसान का।
एक ने अख़्लाक़ का अमल पेश किया एहसान का।

किसी ने बैठकर यह दुआ नहीं मांगी कि ऐ अल्लाह! कोई ऐसी किरेन भेज

दीजिए जो इस चट्टान को हटा दे, या कोई ऐसा सेलाब हो जो चट्टान को बहा दे, या कोई ज़लज़ले का ऐसा झटका हो कि चट्टान को यहां से सरका दे। जी हां, यहां पर उन तीनों ने अल्लाह के सामने अपना-अपना अमल पेश किया।

एक ने अपना अमल पेश किया कि ऐ अल्लाह! मैं अपने वालिदैन से पहले अपने बच्चों को ख़ुराक नहीं देता था कभी दूध नहीं पिलाया था। जब भी मैं जंगल से आता तो सबसे पहले बकरी से दूध निकालकर अपने मां-बाप को पिलाता था। एक दिन मुझे वापसी में देर हो गई जिसकी वजह से मेरे वालदैन सो चुके थे, तो मैं सारी रात दूध का प्याला लेकर मां-बाप के पास खड़ा रहा। इधर मेरे बच्चे दूध की वजह से रोते-बिलकते रहे, पर मैंने उनको दूध नहीं दिया। बल्कि दूध का प्याला लिए हुए मैं अपने वालदैन के पास खड़ा रहा। कि उनको नींद से उठाना मैंने सही नहीं समझा और बच्चों को उनसे पहले दूध पिलाना ठीक नहीं समझा।

मां-बाप के साथ औलाद का मामला, जानवरों जैसा

अब तो अल्लाह माफ़ फ़रमाए कि अब तो मुसलमान का मामला अपने मां-बाप के साथ ऐसा है कि, जिस तरह जानवरों के बच्चों का मामला होता है। कि किसी जानवर का बच्चा बड़ा होकर अपने मां-बाप को नहीं पहचानता, हालांकि इंसान को इसकी वासियत की गई है कि तेरी पैदाइश के वक़्त तुझे पेट में रखने की उन्होंने तक्लीफ़ उठाई, तुझे दूध पिलाने की उन्होंने तक्लीफ़ उठाई, पर अब मां-बाप बोझ हो गए। मां-बाप की ख़िदमत न करना, आज मुसलमानों में सबसे बड़ी बे-बरकती की वजह है। लोग बरकतों की तावीज़ लेते हैं, हालांकि की मां-बाप की ख़िदमत से बढ़कर कोई चीज़ बरकत का सबब नहीं है, सारे आमाल एक तरफ़। इसलिए कि औलाद मां-बाप की कर्ज़दार है, कि उस पर हमल (मां का बच्चे को पेट में 9 महीने रखना) का क़र्ज़, उस पर दूध पिलाने का क़र्ज़ और उसको जनने का क़र्ज़, ये सारे क़र्ज़ है औलाद पर अपने मां-बाप के और अब अल्लाह माफ़ फ़रमाए कि आज औलाद से अपने मां-बाप का मामला जानवरों के जैसा है। कि बड़े हुए और मां-बाप को अकेले छोड़ा।

तो वहां ग़ार में उन्होंने अमल पेश किया तो चट्टान थोड़ी सी हट गई अपनी जगह से लेकिन किसी के निकलने का रास्ता न बना, ऐसा नहीं है कि तुम अमल

करो तो तुम्हारी निजात, और वे अमल करें तो उनकी निजात कि उम्मत का मामला इज्तिमाई है और दीन भी इज्तिमाई है। ऐसा नहीं है कि जो अमल कर ले उसकी निजात हो जाए बल्कि दीन मुज्तमा और उम्मत मज्मूआ है।

मैं तुझसे मज़ाक़ नहीं कर रहा हूं

तो दूसरे ने अमल पेश किया मामलात में एहसान का, कि मैंने एक मज़दूर से काम लिया पर वह अपनी मज़दूरी छोड़कर चला गया और मैंने उसकी मज़दूरी से बहुत से माल तैयार किया। और फिर काफ़ी वक़्त के बाद वह मेरे पास अपनी मज़दूरी लेने के लिए आया तो उस वक़्त सारी वादी जानवरों से भरी हुई थी। तो मैंने उससे कहा कि यह सब तेरी मज़दूरी है, तो इन्हें ले जा। क्योंकि इसने उसकी मज़दूरी ही से सारा माल बनाया था। और जितना माल इसकी मज़दूरी से बना, उसने उसको बचाकर रखा। और फिर उसके आने पर मैंने इसको सारा सामान ले जाने के लिए पेश किया, तो उस मज़दूर ने कहा कि ऐ अल्लाह के बंदे! मुझसे मज़ाक न कर बल्कि मेरी मज़दूरी दे दे। उसने कहा कि मैं तुझसे मज़ाक नहीं कर रहा हूं, ये सारे का सारा तेरा ही है, तू इसे ले जा। मामले में एहसान का अमल। जी हैं, अमल पेश करके कहा कि ऐ अल्लाह! अगर ये मैंने तेरे लिए किया है तो यहां से हमें निकाल दे। चट्टान फिर सरकी, लेकिन एक का भी निकलने का रास्ता नहीं हुआ कि दीन मज्मूआ है और उम्मत मज्मूआ है।

मामलात की वजह से आने वाले हालात, इबादत से ठीक नहीं होंगे

अब मैं कैसे समझाऊं दोस्तो! लोग लम्बी-लम्बी नमाज़ें, बड़ी-बड़ी इबादतें, हज पर हज करते हैं, ज़िक्र बहुत लम्बा-लम्बा, लेकिन मामलात, मुआशरत और अख़्लाक़ इन तीनों लाइनों में यह फ़ेल (नाकाम) है। हज़रत रह० फ़रमाते थे कि जो हालात मामलात की वजह से आएंगे, वह इबादत से ठीक नहीं होंगे, अगर यह चाहे की हमारी इबादतों से तंगी (परेशानी) दूर हो जाए, तो यह तंगियों से नहीं निकल पाएंगे। मेरे दोस्तो! मामलात बहुत अहम चीज़ है, अल्लाह मुझे माफ़ फ़रमाए कि हमारे माहौल में इस का एहतिमाम नहीं है। क्योंकि जिनकी नज़र अपनी इबादत पर होती है, उनके अंदर इतना फ़ख़ पैदा हो जाता है कि वे मामलात की परवाह

नहीं करते। हालांकि ख़ुदा की क़सम! मामलात को बिगाड़कर दुनिया में इबादतें करने वाले, अपनी सारी इबादतें सिर्फ़ दूसरों के लिए कर रहे हैं। ये अपनी इबादत से क़ियामत में ऐसे ख़ाली हो जाएंगे कि शायद उन्होंने दुनिया में कोई अमल किया ही नहीं है। कि क़ियामत में हक़ वालों (यानी जिनका दुनिया में हक़ मारा होगा) को उनकी इबादतें दी जाएंगी और जब इबादतों से वे ख़ाली हो जाएंगे, तो उन इबादत करने वालों पर हक़ वालों के गुनाह डाले जाएंगे, फिर उन इबादत करने वालों को जहन्नम में डाल दिया जाएगा। फिर यह कि वह इबादत करने वाला जिसने मामलात की परवाह न करके इबादतें की हैं मामलात के हुक्म तोड़कर।

यह बड़ी फ़िक्र की बात है कि कहीं हमारे मामलात की वजह से, हमारी इबादतों पर दूसरों का क़ब्ज़ा न हो जाए, कि हमारे मामलात पर इबादत का पर्दा न पड़ जाए, कि क़ियामत में अल्लाह इस पर्दे को उठाएंगे और मुतालबे करने वालों के मुतालबे को, इसकी इबादत से पूरा करेंगे। क्योंकि आख़िरत की करंसी (नोट) आमाल हैं। यह वहां की ज़रूरत है इसलिए अपनी इबादतों को महफ़ूज़ करो। वरना हक़ वाले सारे इबादतें ऐसे ले उड़ेंगे कि गोया उन इबादतों में आपका कोई हिस्सा नहीं।

मक़्बूल नमाज़ें (क़बूल हुई नमाज़ें),
मक़्बूल हज (क़बूल हुई हज),
मक़्बूल ज़िक्र—अज़्कार (क़बूल हुई ज़िक्र—अज़्कार),
मक़्बूल रोज़े (क़बूल हुई रोज़े),
सब नेकियां दूसरे ले उड़ेंगे।

फ़ाक़ा (भूख और प्यास) तो कुफ़्र तक पहुंचा देता है

मैं बता रहा था कि फिर तीसरे ने अमल पेश किया कि ऐ अल्लाह मेरे चचा की लड़की जो मुझे महबूब थी मैं उसके साथ ख़िलवत (तंहाई) चाहता था दुनिया में अगर मुझे किसी औरत से मुहब्बत थी तो मुझे उसी से थी, मैं उसके साथ ख़िलवत (तंहाई) चाहता था, मगर वह ख़िलवत (तंहाई) का मौक़ा नहीं देती थी फिर क़हत साली (सूखा) की वजह से उस पर तंगी आई, तो वह मुहताज होकर

मेरे पास आई। मैंने कहा कि मैं तुझे 120 दीनार दूंगा, मगर यह कि तू मेरे साथ खिलवत (तंहाई) इख़्तियार कर ले। वह इस बात पर राज़ी हो गई क्योंकि फ़ाक़ा तो कुफ़्र तक पहुंचा देता है, तो उसके फ़ाक़े ने बदकारी के लिए तैयार कर दिया। तो फिर ऐ अल्लाह! जब बदकारी के इरादे से उसकी टांगों के दर्मियान बैठ गया, तो वह मुझसे बोली कि अल्लाह से डर। ऐ अल्लाह! मैंने तुझसे डरकर यह काम नहीं किया। कि ऐ अल्लाह! मैंने तेरे डर से उससे ज़ीना नहीं किया वे 120 दीनार भी उसको दे दिए। ऐ अल्लाह! तू मेरे निकलने का यहां से इंतिज़ाम कर दे।

मदद के ज़ाब्ते

देखो भाई मेरे दोस्तों और बुज़ुर्गो! ये वाक़िआत मदद के ज़ाब्ते बताने के लिए हैं कि लोग ऐसे वाक़िआत सुनकर कहते हैं कि "सुब्हानअल्लाह" पर ज़िंदगी वहीं की वहीं। हज़रत रह० फ़रमाते थे कि जितने पिछलों के वाक़िआत हैं उनसे पिछलों को नहीं बतलाना है बल्कि वाक़िआत के क़ियामत तक अल्लाह की मदद के ज़ाब्ते बतलाना है कि ये मदद के ज़ाब्ते हैं। वे ऐसे थे, वे ऐसे थे बल्कि तो यह बताने के लिए थे अगर तुमने ऐसा किया तो तुम्हारे साथ भी ऐसा ही होगा। बल्कि जितना उनके साथ हुआ है, उससे 10 गुना ज़्यादा एक मोमिन के साथ होगा। हदीस में आता है, कि एक मोमिन की मदद 10 सहाबा की ब–क़द्र होगी और एक मोमिन को अमल पर अज्र 50 सहाबा के बराबर मिलेगा। देखो यह बहुत बड़ी बात है, सही रिवायत में है। "मुंतख़ब अहादीस" में हज़रत ने यह बात नक़ल की है। कि ऐसी हदीस हज़रत ने मुंतख़ब अहादीस में चुन–चुनकर जमा की हैं। ग़ौर किया करो उन हदीसों पर। तो ईमान के सीखने का यह तीसरा सबब है फिर सहाबा रज़ि० के साथ जो ग़ैबी मदद हुई हैं, उन्हें ख़ूब बोला करो।

और चौथा ईमान की तक़्वीयत (मज़बूती) का सबब यह है कि ईमान की अलामतों को ख़ूब बोला करो ताकि ईमान की कमज़ोरी का हमारे अंदर एहसास हो जाए कि कितनी बे–परवाही है ईमान से। कि जब तुम्हें नेकी ख़ुश करे और गुनाह ग़मगीन करे तो जान ले कि तू मोमिन है कि ईमान तो अपनी अलामतों के साथ है। नेकियों से ख़ुश होना यह अल्लाह का हुक्म पूरे करके ख़ुश हो रहे हो और गुनाह से ग़मगीन होना एक अदना (छोटी–सी) सुन्नत के छूटने पर हमें ग़म

हो रहा है, उसी को तौबा कहते हैं। जो गुनाह करके गमगीन नहीं होगा वे तौबा नहीं करेगा, यह ईमान की तक्वीयत (मजबूती) के अस्बाब।

ईमान की सबसे अहम अलामत (निशानी) "तक़्वा"

कि ईमान की सबसे अहम अलामत तक़्वा है, कि कुरआन में कलिमा 'ला इलाह इल्लल्लाहु' को तक़्वे का कलिमा फ़रमाया है। और मोमिन को इसका हक़दार बतलाया।

﴿إِذْ جَعَلَ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي قُلُوبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَأَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَى رَسُولِهِ وَعَلَى الْمُؤْمِنِينَ وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوَى وَكَانُوا أَحَقَّ بِهَا وَأَهْلَهَا وَكَانَ اللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمًا﴾(فتح:٢٦)

"जबकि इन काफ़िरों ने अपने दिलों में आर (इस आर से वह ज़िद मुराद है जो बिस्मिल्लाह और लफ़्ज़ रसूलुल्लाह लिखने में इन्होंने मुसलमानों से की थी) को जगह दी। और आर भी जाहिलियत की सो अल्लाह तआला ने अपने रसूल (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और मोमिनीन को अपनी तरफ़ से तहम्मुल अता किया और अल्लाह तआला ने मुसलमानों को तक़्वे की बात पर जमाए रखा और वे इसके ज़्यादा मुस्तहिक़ हैं और वे इसके अहल हैं और अल्लाह तआला हर चीज़ को ख़ूब जानता है।"

कि अल्लाह ने जमाया ईमान वालों को, तक़्वे के कलिमे पर क्योंकि ईमान की पहचान तक़्वा है इसलिए मेरे दोस्तो और बुज़ुर्गो! सबसे पहले हमें अपनी ज़िंदगी में तक़्वा लाना होगा। तक़्वा कहते हैं हराम से बचने को यह तक़्वा सबसे पहले मामलात में चाहिए, मामलात में सबसे पहले तक़्वा लाना सबसे ज़रूरी है कि जिस तरह बग़ैर वुज़ू के नमाज़ नहीं होती उसी तरह बग़ैर मामलात के इबादत नहीं होगी पहले तहारत (पाकी) फिर इबादत, पहले वुज़ू फिर नमाज़, बिल्कुल उसी तरह ख़ुदा की क़सम पहले मामलात, फिर इबादात, उस पर बहुत ग़ौर करना होगा, जिस्म में धौंकने वाला ख़ून अगर,

सूद से,
ग़बन (घोटाला) से,
झूठ से,

खियानत से,

रिश्वत से,

पाक नहीं है तो उसने अपने जिस्म को इबादत के लिए बनाया ही नहीं है, कि जिस्म में ख़ून दौड़ रहा है हराम और यह कर रहा है इबादत।

मामलात के गुनाह, इबादत से कैसे माफ़ हो जाएंगे

लोग बिचारे यह समझते हैं कि मामलात के गुनाह इबादत से पाक हो जाएंगे, लेकिन ऐसा नहीं होगा मामलात के गुनाह इबादत से कैसे माफ़ हो जाएंगे। कि उसने इबादत की जो पहली शर्त तहारत (पाकी) है उसी को पूरा नहीं किया, कि तहारत के बग़ैर तो इबादत ही नहीं है उलमा ने लिखा है जिस तरह मुसल्ले और कपड़े और बदन का ज़ाहिर (जो दिख रहा है) पाक है उसी तरह बदन का बातिन (यानी अंदर से) भी पाक हो, यह भी ज़ाहिरी तक़्वा है कि अपने ख़ून को पाक रखो। किस चीज़ के लिए? इबादत के लिए, अल्लाह मुझे माफ़ फ़रमाए कि ग़ैर तो ख़ूब जानते हैं इस बात को कि इनको सूद खिलाओ फिर उनकी बद–दुआओं से बचने की ज़रूरत नहीं, क्योंकि उनकी दुआओं से ख़ुद उनको कुछ मिलने वाला नहीं। क्योंकि अल्लाह की तरफ़ से हराम खाने वाले के लिए दुआ के जवाब में यही जुमला है। "اَنّٰى لَكَ الْاِجَابَةُ؟"

मैं तेरी दुआ क्यों क़बूल करूं?

खाना हराम का,

पीना हराम का,

पहनना हराम,

और फिर यह बड़ी अजिज़ी के साथ अल्लाह को पुकारे कि ऐ मेरे रब! ऐ मेरे रब! रो रोकर दुआएं मांगे। अपनी ज़रूरतों को अल्लाह के सामने रखे और अल्लाह कहे– "اَنّٰى لَكَ الْاِجَابَةُ"

कि मैं तेरी दुआ क्यों क़बूल करूं?

इसलिए मेरे दोस्तों अज़ीज़ों और बुज़ुर्गो! कि सबसे पहले मामलात में दीन

लाना होगा, यह ऐसा है कि जैसे नमाज़ के लिए तहारत की पहले तक़्वा मामलात में लाओ इसलिए कि सारी नेकियों का मिदार तक़्वे पर है, और अल्लाह का तक़्वे पर वादा है कि जो हराम से बचना चाहेगा हम उसे बचाकर निकालेंगे।

हम तो मुत्तक़ी (दीनदार) के लिए रास्ता ज़रूर निकालेंगे

कि हज़रत युसूफ़ अलै० निकलते चले गए और उनके लिए दरवाज़े खुलते चले गए, एक आदमी अगर हराम से बचना और अल्लाह उसके लिए रास्ते न बनाए ऐसा कैसे हो सकता है, कि हज़रत युसूफ़ अलै० निकलते चले गए और दरवाज़े खुलते चले गए, हां, देखो एक बात याद रखो कि जो आदमी तक़्वे की लाईन इख़्तियार करेगा तो अल्लाह तआला उसके तक़्वे का इम्तिहान ज़रूर लेंगे, कि यह अपने तक़्वे में मुख़लिस (पक्का) है या नहीं। तो हज़रत युसूफ़ अलै० बचकर निकले तक़्वे की वजह से लेकिन उन्हें जैल हो गई, लेकिन इसकी वजह यह है कि जब आदमी गुनाहों से बचता है कि अल्लाह यह देखना चाहता है कि कहीं यह गुनाह की तरफ़ वापस तो नहीं जा रहा है, क्योंकि आपने देखा होगा कि बहुत से लोग आपको ऐसे मिलेंगे कि जिन्होंने तक़्वे को इख़्तियार किया हराम कारोबार छोड़ दिया, फिर अल्लाह ने उन पर हालात डाले कि क़र्ज़ा आया और तंगी आई तो अल्लाह हमें माफ़ फ़रमाए और हिफ़ाज़त फ़रमाए कि बाज़ लोग उन हालात से तंग आकर हाराम की तरफ़ फिर वापस चले जाते हैं कि जबकि अल्लाह तआला ख़ुद फ़रमाते हैं कि हम हल्का सा तुम्हें आज़माएंगे कि–

﴿وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَالْاَنْفُسِ وَالثَّمَرَاتِ وَبَشِّرِ الصَّابِرِيْنَ﴾ [البقرة١٥٥–پ:٢]

"और (देखो) हम तुम्हारा इम्तिहान करेंगे, किस क़द्र ख़ौफ़ से और फ़ाक़े से और माल और जान और फ़लों की कमी से और आप ऐसे साबिरीन को बशारत सुना दीजिए।"

थोड़ी–सी भूख,
थोड़ा–सा नुक़्सान,
थोड़ा–सा ख़ौफ़

अगर इस पर जमा रह गए, तो फिर इसके बाद रास्ते खोल देंगे, यह आज़माइश

के लिए होता है पर लोग इन हालात के आने पर हराम की तरफ़ फिर वापस हो जाते हैं। जी हां, कि अल्लाह सच बोलने वालों को अज़माएंगे और सच्चाई में कि हज़रत काब बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह कि वह ग़ज़वा-ए-तबूक से पीछे रह गए थे तो सच बोल दें कि मेरे पास कोई उज़्र नहीं था क्योंकि मेरे पास माल भी था सवारी भी थी पर मैं अल्लाह के रास्ते में निकलने से पीछे रहा हूं। उज़्र कोई नहीं था मुझसे ग़लती हुई है साफ़-साफ़ बात। तो अल्लाह के नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नाराज़ हो गए क्योंकि काब बिन मालिक रज़ि० सच बात कह दी थी। कि जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास से बाहर निकले तो लोगों ने कहा कि ऐ काब! तुमने यह क्या किया? अगर तुम झूठा उज़्र कर देते तो जान भी बच जाती और अल्लाह के नबी तुम्हारे लिए इस्तिग़फ़ार भी करते और फिर इस इस्तिग़फ़ार से तुम्हारे झूठ बोलने का गुनाह माफ़ हो जाता। उन लोगों ने उनको यह मश्विरा दिया, तो उनको यह ख़्याल आया कि मैं वापस जाऊं और अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहूं कि मैंने जो कुछ आपको बताया है वह झूठ है और बात यह है। फिर मुझे ख़्याल आया कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ऊपर अल्लाह मौजूद है और वह देख रहा है, अगर मैंने झूठ बोलकर अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को राज़ी कर भी लिया तो अल्लाह अपने नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मुझसे नाराज़ कर देंगे। इसलिए अब सब्र करो।

दोस्तो! मुझे तो यह अर्ज़ करना था कि जब कोई आदमी हराम से हुक्म की तरफ़ आता है तो अल्लाह उसको आज़माते हैं कि तंगी में यह जमता है या नहीं जमता।

इसलिए मेरे दोस्तों और अज़ीज़ो! हज़रत यूसुफ़ अलै० तक़्वा इख़्तियार करके निकल कर भागे, लेकिन वहां से निकलने के बाद जैल हो गई। लेकिन जैल के अंदर भी दो काम करते रहे, कि जैल में आने वाले को दावत भी देते गए और इबादत भी करते रहे। यह नहीं कि अब हमारे हालात दावत देने के नहीं हैं।

हालात (परेशानी) में काम न करना, काम को छोड़कर इससे बड़े हालात को दावत देना है

कि ऐसे भी लोग हैं जो यह कहते मिल जाएंगे कि अभी हमारे हालात ज़रा ठीक नहीं हैं।

न साल का चिल्ला,
न महीने के तीन दिन,
न हफ़्ते के दो गश्त,

कि कुछ मुक़दमा वग़ैरह हो गया था, हम पर झूठा इल्ज़ाम लगा दिया गया था कि ज़रा उससे निपट जाएं, फिर इनशाअल्लाह काम करेंगे। हज़रत मौलाना यूसुफ़ रह० फ़रमाते थे "जो हालात में काम नहीं करेंगे, उन्होंने काम को छोड़कर, इससे बड़े हालात को दावत दे दी है"। अब आगे उन पर इससे बड़े हालात आएंगे, जिसे यह बर्दाश्त नहीं कर पाएंगे। क्योंकि जो अपने मौजूदा हाल में दावत नहीं देगा, वह उससे बड़े हालात में मुब्तला होगा। हज़रत यूसुफ़ अलै० जैल में दावत देते रहे और अल्लाह ने उसी दावत के ज़रिए से उन्हे जैल से निकाला।

इसलिए मेरे दोस्तों अज़ीज़ों और बुज़ुर्गो! देखो याद रखो कि अल्लाह तआला तक़्वा इख़्तियार करने वालों को आज़माएंगे। अगर तक़्वे पर जमे रहे तो अल्लाह हमेशा के लिए बरकतों के दरवाज़े खोल देते हैं। लेकिन एक ज़रूरी बात जो मुझे अर्ज़ करनी हैं कि तक़्वा और सब्र हज़रत यूसुफ़ अलै० ने ये दोनों चीज़ें बराबर इस्तेमाल की हैं। हमारी मुश्किल यह है कि हम सब्र को तो इख़्तियार करते, पर तक़्वा इख़्तियार नहीं करते। कुरआन में जहां भी मिलेगा सब्र और तक़्वा साथ ही मिलेगा।

कहीं सब्र आगे, कहीं तक़्वा आगे, कि कुरआन में दोनों साथ–साथ मिलेंगे, पर मुसलमान की मुश्किल यह है कि इस ज़माने में सब्र कर रहा है तक़्वा के बग़ैर, आज जितनी उनकी पिटाई हो रही है, धमाके हो रहे हैं, क़त्ल हो रहे हैं। सारे मुसलमान इस इंतिज़ार पर बैठें हैं कि अब अल्लाह की मदद आने वाली है, कि अब अल्लाह की मदद आने वाली है।

मेरी बात ध्यान से सुनो, दोस्तो! सब यह कह रहे हैं कि सब्र करो, यह ख़ून बेकार नहीं जाएगा, अल्लाह की मदद ज़रूर आएगी। एक बात याद रखो कि जब मुसलमान अल्लाह के हुक्मों को तोड़कर सब्र करता है, तो फिर अल्लाह तआला बातिल को इन पर मुसल्लत करता है अगर मुसलमान तक़्वे के साथ सब्र करता

है तो अल्लाह उनको अहले बातिल पर ग़ालिब करते हैं। सहाबा और नबियों के वाक़िआें का यह खुलासा है। इसलिए कि जो परेशानियां गुनाहों की वजह से आती हैं वह सब्र कर लेने से ठीक नहीं होते, कि आज मुसलमान सब्र तो कर रहा है, पर तक़्वा नहीं है। यह सब्र करना अल्लाह ने कुरआन में फ़रमा दिया।

﴿فَاصْبِرُوْٓا اَوْ لَا تَصْبِرُوْا سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ﴾

"कि तुम सब्र करो या न करो हमारे लिए दोनों बराबर हैं, इसलिए कि तुम्हे सब्र से कोई फ़ायदा नहीं होगा।

दोज़ख़ियों से कहा जाएगा—

﴿اِصْبِرُوْٓا اَوْ لَا تَصْبِرُوْا سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ﴾

"कि तुम सब्र करो या न करो, कि तुम्हें यह जो अज़ाब दिया जा रहा है अहानत (ज़िल्लत) का, ये तुम्हारे गुनाहो का है।"

याद रखो यह जितने हालात दुनिया में मुसलमानों पर इस वक़्त हैं यह सिर्फ़ सब्र से ख़त्म नहीं होंगे। क्योंकि इन परेशानियों के आने के जो सबब है, वह मुसलमानों का गैरों की तरीक़ों पर ज़िंदगी गुज़ारना है। तुम इन तरीक़ों से अलग हो जाओ, फिर तुम्हारे लिए दो चीज़ें होंगी।

पहली, अमन और

दूसरी, हिदायत

यह कुरआन की बात है। हिदायत का मतलब यह है कि जन्नत का रास्ता आख़िरत में और अमन का मतलब यह है कि सुकून की ज़िंदगी दुनिया में। यह वायदा उनसे है जो गैरों के तरीक़ों से पूरी तरह अलग हो जाएं, यह जो मैं अर्ज़ कर रहा हूं कि कुरआन की आयत का मफ़हूम है

﴿اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْٓا اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ﴾ [انعام/٨٢]

'कि रास्ता वे पाने वाले हैं और अमन भी उन्हें मिलेगा, जिनके ईमान में गैरों के तरीक़े की आमेज़िश (मिलावट) न हो"।

इसलिए मेरे दोस्तों बुज़ुर्गों और अज़ीज़ो! मुसलमान तक़्वा के बग़ैर गैरों से मुम्ताज़ नहीं हो सकता, कि मुसलमान की इम्तियाज़ी शान तक़्वे से है।

﴿إِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا﴾ [انفال ٢٩]

"तुम अल्लाह से डरते रहोगे वह (यानी अल्लाह तआला) तुमको एक फ़ैसले की चीज़ देगा।"

"अगर तुममें तक़्वा होगा तो तुम ग़ैरों से छांटे जाओगे और अगर तक़्वा नहीं है तो तुम और ग़ैरों में कोई फ़र्क़ नहीं है।"

इस्लाम सिर्फ़ इस्लामी झंडे का नाम

इसलिए मेरे दोस्तो, बुज़ुर्गों और अज़ीज़ो! इस्लाम सिर्फ़ इस्लामी झंडे का नाम नहीं है या इस्लाम इस्लामी हुकूमत का नाम नहीं है, बल्कि इस्लाम तो मुकम्मल तरीक़ा ज़िंदगी का नाम है। इस तरीक़े पर चलने वाला मुसलमान है, इस्लाम की बुनियाद पांच चीज़ें हैं। तो जब पांच चीज़ें इस्लाम की बुनियाद हैं फिर इस्लाम क्या है जिस तरह मकान की बुनियाद होती है या मस्जिद की बुनियाद, होटल की बुनियाद, कि ज़मीन के नीचे होती है, फिर उस बुनियाद पर मकान की तामीर की जाती है। तो जब इस्लाम की बुनियाद पांच चीज़ें हैं फिर इस्लाम क्या है? कि—

मामलात,
अख़्लाक़,
मुआशरत,

यह इस्लाम की इमारत है।

और सात चीज़ें ईमान की बुनियाद हैं।

अल्लाह पर ईमान रखना,
उसके फ़रिश्तों पर,
उसके किताबों पर,
उसके रसूलों पर,
मरने के बाद दोबारा उठाए जाने पर,
अच्छी, बुरी तक़्दीर पर,
आख़िरत के दिन पर,

ये ईमान की बुनियाद हैं यानी अक़ाइद है। कि अक़ाइद के बग़ैर इमारत न

क़ायम होगी और इमारत के बग़ैर बुनियाद काफ़ी न होगी, दोनों बातें बराबर हैं, कि कोई अक़ाइद के बग़ैर चाहे इमारत क़ायम हो जाए तो इमारत क़ायम न होगी।

इसी तरह पांच चीज़ें इस्लाम की बुनियाद हैं

कलिमा 'ला इलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' का इक़रार,
नमाज़,
रोज़ा,
हज और
ज़कात

और मामलात, अख़्लाक़ और मुआशरत, यह इस्लाम की इमारत है। सिर्फ़ बुनियाद काफ़ी नहीं है ज़रूरत पूरी करने के लिए और इमारत बनाना काफ़ी नहीं है बुनियाद के बग़ैर। इसलिए वह इमारत क़ायम ही नहीं रहेगी, जिसके नीचे बुनियाद ही न हो, कि लोग कहें कि हां, मियां नमाज़, रोज़ा अपनी जगह मगर मामलात ठीक होना चाहिए, कि मामलात, अख़्लाक़ और मुआशरत की इमारत क़ायम ही नहीं होगी कि जब तक बुनियाद न हो और सिर्फ़ बुनियाद ही काफ़ी न होगी जब तक उस पर इमारत न हो।

सुन्नत के बग़ैर कोई विलायत (वली बनना) और बुज़ुर्गी नहीं है

इसलिए मेरे अज़ीज़ों और दोस्तो! एक तो सुन्नतों का एहतिराम ज़्यादा किया करो, कि सुन्नत के बग़ैर कोई विलायत और बुज़ुर्गी नहीं है। मौलाना इलयास साहब रह० फ़रमाते थे कि "मेरे काम का मक़सद एहयाए सुन्नत (सुन्नत को ज़िंदा करना) है" कि मुसलमानों के अंदर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े पर अपनी ज़िंदगी की ज़रूरत को हासिल करने का रिवाज पड़ जाए। क्योंकि अल्लाह ने अपनी मदद और बरकतें हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ लाज़िम कर दी है। मुसलमानों की शान ही सुन्नतों के साथ है, वरना भाई साफ़–साफ़ बात यह है कि मुसलमान सुन्नतों को हल्का समझकर अगर छोड़ दे तो यह सबसे पहले मुआशरती इरतिदाद (फिर जाना) में पड़ेगा, कि सबसे पहले इसका मुआशरत मुर्तद होगा।

कि इसने सुन्नत को हल्का समझकर छोड़ दिया है। मुसलमान का अपना इम्तियाज़ सुन्नतों के एहतिराम में है। वरना आप ख़ुद देख लें कि कहीं ट्रेन टकरा जाए या कहीं ज़लज़ला आ जाए, तो लोगों में देखना पड़ता है कि इनमें मुसलमान कौन है?

हज़रत रह० फ़रमाते थे कि वे सारी अलामतें आज मुसलमानों के अंदर से ख़त्म हो गई, जिसकी वजह से मुसलमान को दूर से देखकर ही अल्लाह की याद आती थी। अब तो ख़त्ना देखकर मुसलमान की पहचान की जाती है। कहां मुसलमान सर से लेकर पांव तक इस्लाम की अलामतों से भरा हुआ था कि दूर से पता चल जाए। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा ऐसे थे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ।

मुसलमान के अलावा को सलाम करना जायज़ नहीं

जैसे काले रंग के बाल में चंद बाल सफ़ेद हों कि वह सफ़ेदी अलग ही नज़र आएगी। आज तो सलाम करने के लिए, पहले नाम पूछना पड़ता है, इसलिए चेहरा से लगता ही नहीं है कि कौन मुसलमान है, जिसको सलाम किया जाए.। क्योंकि मुसलमान के अलावा को सलाम करना जायज़ नहीं है। इसको कभी पता ही नहीं किया कि इस्लाम में दाढ़ी का क्या मक़ाम है? बस इतना जानते हैं दाढ़ी सुन्नत है, मुसलमान हल्का समझते हैं दाढ़ी को। अब हममें और सहाबा में यही फ़र्क़ है कि वह सुन्नत पर अमल करते थे, सुन्नत होने की वजह से। हम सुन्नत को छोड़ते हैं, सुन्नत होने की वजह से। हममें और सहाबा रज़ि० में यह फ़र्क़ है।

इसलिए मुहर्तम दोस्तों अज़ीज़ों और बुज़र्गो! इस काम से हमें अपने अंदर यह तब्दीलियां लानी है, क्योंकि—

दावत तो हिदायत के लिए है
दावत तो तर्बीयत के लिए है
दावत तो अपने आपको बदलने के लिए है

इसमें कोई शक नहीं कि अल्लाह तआला ने इस मेहनत में माहौल और यक़ीन को बदलने की ख़ासियत रखी है।

एक कश्ती चलाने वाली की दावत पर हिदायत

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हर फ़र्द को दावत वाला बनाया था कि अबू जहल के बेटे इक्रिमा को एक कश्ती चलाने वाले की दावत पर हिदायत हुई है। हज़रत इक्रिमा रज़ि० इस्लाम से भागे, यह यमन की तरफ़ जा रही कश्ती में यह सवार हुए तो तूफ़ान आया, कश्ती पलटने लगी।

हज़रत इक्रिमा रज़ि० ने कश्ती वाले से कहा कि क्या मेरे बचने का कोई सामान हो सकता है?

कश्ती वाले ने कहा कि हां, बचने का एक रास्ता है और वह यह कि तुम कलिमा इख़्लास कह लो।

हज़रत इक्रिमा रज़ि० ने पूछा कि यह कलिमा इख़्लास क्या है?

कश्ती वाले ने कहा! कि कहो 'ला इलाह इल्लल्लाहु'

हज़रत इक्रिमा रज़ि० ने कहा! कि मैं इससे बचकर ही यमन भाग रहा हू, अगर यह कलिमा ही कहना होता तो यमन क्यों भागता? इधर कश्ती वाले ने दावत दी उधर किनारे से उनकी बीवी ने कपड़ा हिलाकर उन्हें इशारा किया! फिर यह वापस आकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में गए।

मुझे इसमें यह अर्ज़ करना था कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हर फ़र्द को दाई बनाया था, सौ फ़ीसद सहाबा रज़ि० दावत वाले, तो इस दावत की उमूमियत ने लोगों के इस्लाम में आने का रास्ता खोला हुआ था, इस्लाम से निकलने का कोई रास्ता नहीं था।

इसलिए मेरे दोस्तों बुज़ुर्गों और अज़ीज़ो! यह इरादे करो कि नीयतों करो कि हमें इनशाअल्लाह तआला इस काम को मक़्सद बनाकर करना है और सारी उम्मत को इस पर जमा करना है। यह भी हमारी ज़िम्मेदारी है, क्योंकि हर उम्मती सारी उम्मत का ज़िम्मेदार है। हां, इतना ज़रूर है कि अल्लाह तआला यह काम उन्हीं लोगों से लेंगें, जो दीन के नुक़्सान को बर्दाश्त न करें। हज़रत अबूबक्र रज़ि० मदीने को खाली कराना चाहते थे, कि दीन का नुक़्सान न हो, कि लोग ज़कात में रस्सी देने से इंकार करें और तुम मदीने में रहो। कि चाहे मदीने में अज़्वाजे मुताहारात (हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बीवियां) की दफ़्न करने वाला

न हो, पर तुम सब चले जाओ और मुझे यहां अकेले छोड़ दो, मुझे यहां चाहे ख़त्म किया जाए और कोई मुझे भी दफ़्न करने वाला न हो, तब भी मैं मदीने को दीन के तक़ाज़े पर ख़ाली करूंगा। यह जज़्बा था दीन के साथ सहाबा रज़ि० का, अब यह जज़्बा ख़त्म हो गया, कि अल्लाह के दीन का नुक़्सान हो और हम घर बैठे। कि सारे मदीने को ख़ाली किया कि निकलो! याद रखो! जब तक उम्मत में नक़्ल व हरकत रहेगी, दीन की हयात बाक़ी रहेगी।

उम्मत दावत के बग़ैर निजात नहीं पा सकती

मैंने इसलिए शुरू में ही अर्ज़ कर दिया था कि उम्मत दावत के बग़ैर निजात नहीं पा सकती, यह बिल्कुल पक्की बात है, इसमें कोई शक नहीं है। इसलिए अल्लाह तआला यह ख़ुद फ़रमा रहे हैं।

﴿وَالْعَصْرِ إِنَّ الْإِنسَانَ لَفِي خُسْرٍ إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ﴾

'क़सम है ज़माने की (जिसमें नफ़ा और नुक़्सान वाक़ेअ होता है) कि इंसान बड़े ख़सारे में है, मगर जो लोग ईमान लाए और इन्होंने अच्छे काम किए (कि यह कमाल है) और एक दूसरे को एतिक़ादे हक़ (पर क़ायम रहने) की फ़हमाइश करते रहे और एक दूसरे को (आमाल की) पाबन्दी की फ़हमाइश करते रहे"

हर फ़र्द के ज़िम्मे यह काम है, चाहे वह अमल करता हो या अमल न करता हो। यह भी सुनो! कि अमल करना शर्त नहीं है दावत के लिए। हां यह बात सही है कि दावत देने वाले को अमल भी करना चाहिए, लेकिन यह बात सही नहीं है कि जो अमल न करे वह दावत न दे। अमल न करने वाला दावत ज़्यादा दे। हज़रत थानवी रह० फ़रमाते थे "कि मैं जिस चीज़ को अपने अंदर पैदा करना चाहता था, तो उसकी दावत दूसरों को देता था और जिस बुराई को अपने अंदर से निकलना चाहता था, उससे दूसरों को रोकता था" ये दोनों काम, ख़ुद अपनी ज़ात के लिए हैं, इसलिए अमल शर्त नहीं है दावत देने के लिए। हां, दावत देने वाले को चाहिए कि वह अमल भी करे कि कहीं इसकी दावत अमल से ख़ाली न हो जाए।

इसलिए यह याद रखो! कि दावत देना तो हर एक के ज़िम्मे है, वह अमल

करता हो या अमल न करता हो, जब तक दावत की निस्बत पर नक़्ल व हरकत बाक़ी रहेगी, उस वक़्त तक दीन ज़िंदा रहेगा और उम्मत पाक होती रहेगी कि यह रास्ता पाक होने का है। इसलिए कि हिजरत पिछले सारे गुनाहों से पाक करा देता है।

सौ क़त्ल करने वाले क़ातिल के लिए ज़मीन के सारे निज़ाम का बदलना

हदीस में है कि हिजरत पिछले सारे गुनाहों से पाक करा देती हे। एक आदमी सौ क़त्ल करके तौबा के लिए चला तो अल्लाह ने ज़मीन के सारे निज़ाम को बदल दिया कि मेरा बंदा इस्लाह के लिए चल रहा है। कि सौ क़त्ल करके इस्लाह के लिए चला तो मौत आ गई। कोई अमल नहीं किया।

न नमाज़ का,
न ज़िक्र का,
न तिलावत का,
न सच्चाई का,
न अमानतदारी का,

कि कोई अमल नहीं किया है, सिर्फ़ इस्लाह के लिए क़दम उठाया है कि बहुत गुनाह कर लिए हैं, अब चलो अल्लाह की तरफ़। कि अल्लाह अपने बंदे की तरफ़ दौड़कर आने का मतलब ही यही है कि अल्लाह ने सौ क़त्ल करने वाले क़ातिल के लिए ज़मीन के सारे निज़ाम को बदल दिया।

जी हां! इस ज़मीन से कहा कि तू फैल जा और इस ज़मीन से कहा कि तू सिकुड़ जा। ज़मीन के फ़रिश्तों ने नपाई कराई वरना इसका सफ़र अभी शुरू ही हुआ था, इसलिए मेरे दोस्तों याद रखो! कि इस रास्ते की नक़्ल व हरकत इस्लाम को फैलाएगी और मुसलमान को मुसलमान बाक़ी रखेगी, ग़ैरों के इस्लाम में आमद का और मुसलमान के मुसलमान बाक़ी रखने का यही एक रास्ता है। जब हज़रत उसामा रज़ि० की जमाअत रवाना हुई मदीना मनुव्वरा से तो जहां–जहां से हज़रत उस्मान रज़ि० की जमाअत गुज़री, वहां के इस्लाम से फिरे हुए इस्लाम में दाख़िल हो गए कि अगर मदीने से इस्लाम ख़त्म हो गया हो तो मदीने से मुसलमानों की

इतनी बड़ी जमाअत न आती।

तश्कील

मेरे बुजुर्गों और दोस्तो! अब इसके लिए इरादे फ़रमाओ और नीयतें फ़रमाओ कि इनशाअल्लाह हमें अपनी ज़ात से करना है और सारी उम्मत तक यह मेहनत और ज़िम्मेदारी पहुंचानी है इसके लिए हिम्मत करके चार–चार महीने के लिए खड़े हों, एक–दूसरे को राज़ी भी करो, तैयार भी करो कि यह सारा मज्मा ख़ास है यह जितने पुराने मज्मे के अंदर आए हुए हैं, यह सब यहीं से जमाअतें बना बनाकर कुरबानी के साथ निकल जाएं। असल कुरबानियां मक़सूद है और पुरानों को बुलाया ही इसलिए जाता है कि यह तक़ाज़ों पर कुरबानियां दे डालें। इसके लिए अफ़राद भी लिखाएं और जमाअतें भी लिखाएं, अब खड़े होकर अपने नामों का इज़्हार करो।

(बयान)

हज़रत मौलाना मुहम्मद सअद साहब

6 दिसम्बर 2009 ई० दिन इतवार सबुह 10 बजे

जगह : ईंट खेड़ा, (भोपाल)

मेरे मुहतर्म दोस्तों बुज़ुर्गों और अज़ीज़ो! इस वक़्त की बुनियादी बात है कि उम्मत ईमान और इस्लाम को बग़ैर मेहनत और कोशिश के हासिल करना चाहती है पर दुनिया को मेहनत के बग़ैर हासिल करना अक़्ल के ख़िलाफ़ समझते हैं। हां लोग कहते भी हैं कि दुनिया बग़ैर मेहनत के हासिल नहीं होती। तो जब दुनिया बग़ैर मेहनत के हासिल नहीं हो सकती, तो दीन सिर्फ़ दुआओं और अंदर की तलब से कैसे हासिल हो जाएगा? यह क़ायदा दुनिया का हर शख़्स जानता है, कि दुनिया बग़ैर मेहनत के हासिल नहीं हो सकती। इसलिए इंसान उसी चीज़ पर मेहनत करता है, जिस चीज़ से उसे अपनी परेशानियों का हल होने का यक़ीन होता है, जिस चीज़ से उसे अपनी परेशानियों का हल होने का यक़ीन नहीं होता, वह उस लाइन की मेहनत ही नहीं करता। मेरे दोस्तो! जिस लाइन की मेहनत की जाती है, उसी लाइन का यक़ीन दिल के अंदर पैदा हो जाता है और जिस लाइन की मेहनत छूट जाती है, तो उस लाइन का यक़ीन भी दिल से निकल जाता है।

मेरे दोस्तो! यह दुनिया, जो अल्लाह की नज़र में–

कमीनी है,

ज़लील है,

ख़त्म होने के लिए है,

जिस पर कोई वायदा नहीं,

जब यह मेहनत के बग़ैर नहीं हासिल होती, फिर वह दीन, वह तरीक़ा जो अल्लाह को महबूब व मतलूब है और हमेशा के लिए कामयाबी दिलाने वाला है, उसी पर सारे वायदे हैं, तो दीन बग़ैर मेहनत और बग़ैर कोशिश के कैसे हासिल हो जाएगा? अल्लाह तआला ने ताकीद दर ताकीद वायदा किया है, कि हम अपने रास्ते में मेहनत करने वालों को हिदायत ज़रूर देंगे, लेकिन जब तक मेहनत मुतय्यन (तैय) नहीं होगी रास्ता नहीं मुतय्यन होगा, उस वक़्त तक हिदायत हासिल नहीं होगी। इसलिए अंबिया अलैहिस्सलाम के ज़रिए सबसे पहले मेहनत का रूख़ क़ायम किया है पहले मेहनत का रूख़ तैय करो, उसके बाद उस मेहनत के नतीजों की मेहनत तो बाद में होगी, पहले मेहनत का रूख़ तैय करो, कि किस लाइन की मेहनत से हिदायत आती है, सलाहियत दुनिया पर लगती हो और हिदायत दीन की हो जाए, ऐसा मुम्किन नहीं है। अल्लाह तआला ने अंबिया अलैहिस्सलाम की मेहनत को क़ियामत तक के लिए हिदायत हासिल होने का रास्ता तैय कर दिया है इसलिए फ़रमाया है कि–

﴿قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْٓ اَدْعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ عَلٰى بَصِيْرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِيْ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ وَمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ﴾ (يوسف:١٠٨)

"आप फ़रमा दीजिए कि यह मेरा तरीक़ है मैं (लोगों को तौहीद) ख़ुदा की तरफ़ इस तौर पर बुलाता हूं कि मैं दलील पर क़ायम हूं मैं भी और मेरे साथ वाले भी और अल्लाह (शिर्क से) पाक है और मैं मुश्रिकों में से नहीं हूं।"

फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की दावत में जो रूकावटें और इंकार और आपको जो तक्लीफ़ें पहुंचाई गई हैं, इसके साथ–साथ अल्लाह की तरफ़ से भी फ़रमाया गया है कि–

﴿فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلَا يَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِيْنَ لَا يُوْقِنُوْنَ﴾ (روم:٦٠)

"सो आप सब्र कीजिए बेशक अल्लाह तआला का वायदा सच्चा है और यह बद यक़ीन लोग आपको बर्दाश्त न कर पाएंगे।"

नबी जी इस रास्ते की रूकावटें और लोगों को आपकी दावत का क़बूल न करना। यह कहीं आपको अपने रास्ते से हटा न दें।

मेरे अज़ीज़ो, दोस्तों और बुज़ुर्गो! हज़रत रह० फ़रमाते थे कि शैतान की सबसे ज़्यादा ताक़त दावत से रोकने पर लगती है। कि अगर उम्मत दावत पर आ गई तो फिर उम्मत को निजात से कोई ताक़त नहीं रोक सकती। लिहाज़ा शैतान सबसे ज़्यादा कोशिश दावत से रोकने पर करता है। आपने सुना होगा कि जब आज़ान दी जाती है, तो शैतान पीट फेरकर भागता है। हदीस में है कि भागते हुए उसकी इतनी बुरी हालत होती है, कि डर की वजह से रीहा ख़ारीज करते हुए पूरी ताक़त लगाकर दावत देने वाले से दूर भागता है। पर जैसे ही दावत देने वाला दावत ख़त्म करता है, अज़ान ख़त्म होती है, वैसे ही शैतान वापसी आ जाता है, जब इक़ामत ख़त्म हो जाती है, तो शैतान फिर आ जाता है। फिर इबादत में ख़राबी पैदा करता है, भूली हुई बातें नमाज़ में याद दिलाता है, कि अगर मेरे डालने वाले ख़्याल से उसकी नमाज़ बिगड़ गई, तो उसके सारे दीन को बिगाड़ने के लिए फिर मुझे किसी मेहनत की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि उसका सारा दीन ख़ुद-ब-ख़ुद बिगड़ेगा। हदीस में आता है, कि जो नमाज़ को बिगाड़ लेगा, वह अपने सारे दीन को बिगाड़ लेगा, शैतान इस कोशिश में नहीं रहता कि उनके मामलात, मुआशरत और अख़्लाक़ बिगाड़ो, शैतान की कोशिश यह होती है, कि उसकी नमाज़ बिगाड़ दूं ताकि यह दीन के किसी शोब्हे में हुक्म पर न चल सकें, क्योंकि सही रिवायतों में हैं कि जो नमाज़ को बिगाड़ लेगा वह सारे दीन को ढहा लेगा। सारे आमाल सही निकलेंगे अगर नमाज़ सही निकल जाए।

मैं अर्ज़ कर रहा था, मेरे अज़ीज़ों, दोस्तो! कि यहां शैतान की सबसे पहली कोशिश दावत से रोकने पर होती है, कि अगर उम्मत दावत पर जमा हो गई, तो यक़ीन की तब्दीली से उनके आमाल ऐसे क़ायम होंगे, कि फिर यह मेरे फंदे में नहीं फंस सकेंगे। इसलिए मेरे दोस्तो! इस बात को ख़ूब अच्छी तरह जान लो, कि दावत इल्लल्लाह, यह इबादत में कमाल पैदा करने के लिए है और सबसे ज़्यादा शैतान से जो मोर्चाबंदी (हिफ़ाज़त) का अमल है, वह दावत इल्लल्लाह का अमल है। इबादत में ख़लल डालने के लिए शैतान फिर हाज़िर हो जाता है, इसलिए दावत में तसलसुल

(लगातार दावत देना) रखा है, कि दावत और अमल को यानी दावत और इबादत को मुसलसल जमा रखो ताकि तुम शैतान के मकर व फरेब से बहक न जाओ।

मेरे बुजुर्गों, अज़ीज़ो! असल में दावत देने की वजह यह है कि उससे अपने दीन पर इस्तिक़ामत और अपने दीन पर हिदायत अल्लाह की तरफ़ से मिलती है, अल्लाह तआला ने दावत को हिदायत के लिए तैय किया है--

﴿وَإِنَّكَ عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ﴾ (زخرف:٤٣)

"आप सीधे रास्ते पर है,"

आप सीधे रास्ते की तरफ़ रहबरी (रास्ता दिखाने वाला) करने वाले हैं।
मेरा रब भी सीधे रास्ते पर है
जो सीधे रास्ते पर चलेगा वह रब तक पहुंच जाएगा।

"إِنَّ رَبِّي عَلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ"

कि उलमा ने यही तफ्सीर की है कि जो सीधे रास्ते पर चलेगा वह रब को पा लेगा।

इसलिए मुझे शुरू ही में यह अर्ज़ करना पड़ेगा, कि सारा मज्मा और सारी उम्मत, दिल की गहराइयों से यह तैय करे, जो मेहनत नबियों से आते-आते उम्मत तक पहुंची है। यही मेहनत क़ियामत तक उम्मत की हिदायत का ज़रिया है। जितने काम पर बसीरत (गहरी नज़र) होगी, उतनी ही इस्तिक़ामत (पुख़्तगी) होगी।

इसलिए मेरे अज़ीज़ों, दोस्तों और बुजुर्गों! इस मेहनत को पहले अपनी ज़ात से करने के लिए तैय करो। क्योंकि अल्लाह की ज़ात से ताल्लुक़ और उसके दीन का ज़िंदगी में आना इसी मेहनत से होगा। इसलिए ज़िंदगी का मक़सद बनाकर इस मेहनत को अपनी ज़ात से करना तैय करो।

यह पहली शर्त हैं कि अगर इस मेहनत से हमें
अपने तज़कीया (पाकी) का,
अपनी इस्लाह का,

अपनी तर्बीयत का,
अल्लाह की ज़ात के साथ ताल्लुक़ का,
दिल से यक़ीन नहीं है, तो दावत के आमाल को हल्का समझकर छोड़ दिया जाएगा।

हालांकि दावत के आमाल, आमाले नुबूवत है। जो हिदायत के लिए, तर्बीयत के लिए, तज़कीया के लिए, अल्लाह की तरफ़ से दिए गए हैं। इसलिए हज़रत रह० फ़रमाते थे, कि जिस चीज़ को अपने अंदर पैदा करना चाहते हो, उसको अल्लाह के रास्ते में निकलकर ज़्यादा करो क्योंकि दावत ख़ुद अपनी ज़ात के लिए हैं, दावत देने वाले के लिए हर हाल में फ़ायदेमंद हैं। इसलिए याद रखो! कि अल्लाह के अज़ाब से उसकी पकड़ से, डराना और अल्लाह की तरफ़ से सवाब की और उसके इनाम की उम्मीद दिलाना, इन दोनों का फ़ायदा दावत देने वालों को ज़रूर होता है। अल्लाह के अज़ाब से डराना अपने अंदर डर पैदा करने के लिए है, दावत दाई की ख़ुद अपनी ज़ात के लिए है अगर हमारा इस रास्ते में फिरना दूसरों की इस्लाह के लिए है तो हमें काम छोड़कर बैठना पड़ेगा कि काम छोड़कर बैठने वाले यूं कहेंगे कि हम बात पहुंचा चुकें हैं अब ज़रूरत नहीं है। क्योंकि बहुत कोशिश की यह लोग मानते ही नहीं हैं।

"दावत" ख़ुद दावत देने वाले के लिए है

मेरे बुज़ुर्गों, दोस्तों, अज़ीज़ो! दावत देना तो ख़ुद अपनी ज़ात के लिए है। आप देखते होंगे कि जितने ताजिर हैं चाहे फेरी लगाने वाले हों, या दुकान पर बैठने वाले हो, ये सब अपनी चीज़ को सिर्फ़ अपने नफ़े के लिए बेचते हैं। अपनी चीज़ की दावत अपने नफ़े के लिए देते हैं लोग उनकी दावत पर उनकी चीज़ को ख़रीदते हैं, जिससे उनको नफ़ा हासिल होता है। कोई तिजारत करने वाला दूसरों के लिए तिजारत नहीं करता। हर ताजिर अपने नफ़े के लिए तिजारत करता है।

बिल्कुल उसी तरह समझ लो कि यह दावत ख़ुद अपनी ज़ात के लिए है, अपने अंदर उतारने की ग़रज़ से दूसरों को दावत दो, क्योंकि दावत ख़स्सा उसकी तासीर यक़ीन पैदा करना है।

मेरे दोस्तों, बुज़ुर्गों और अज़ीज़ो! सबसे पहले इस मेहनत में कलिमे की दावत है। ऐसी मेहनत इस कलिमे पर करो, कि हमें इसका इख़्लास हासिल हो जाए।

इसलिए मेरे दोस्तो! अज़ीज़ो, बुज़ुर्गो! सबसे पहले इस मेहनत में कलिमे की दावत है। ऐसी मेहनत इस कलिमे पर करो कि हमें इसका इख़्लास हासिल हो जाए। इसका इख़्लास यह है कि कलिमा 'ला इलाह इल्लल्लाहु' अपने कहने वालों को हराम से रोक दें। पूछा गया हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से, कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि कलिमे का इख़्लास क्या है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: कि इसका इख़्लास यह है कि यह कलिमा अपने कहने वाले को हराम से रोक दें। इसलिए हमें कलिमे की दावत से कलिमे का इख़्लास हासिल करना है, इसके लिए कलिमे की दावत को एक माहौल बनाना पड़ेगा, वह यह है कि मस्जिद में ईमान के हल्के क़ायम करो। जिसमें ग़ैब के तज़्किरे हों। अल्लाह की कुदरत के तज़्किरे हों और मस्जिद के साथी लोगों से मुलाक़ातें करके नक़द मस्जिद में लेकर आने की मेहनत करो। और उन आने वालों को ईमान के हल्के में बिठाओ, एक–एक के पास जाकर मुलाक़ात करो और उससे कहो, भाई मस्जिद में ईमान का हल्क़ा क़ायम है, आप भी तशरीफ़ ले चलें।

मेरे बुज़ुर्गो, अज़ीज़ों, दोस्तो! असल में ईमान की बातें तब समझ में आती हैं, जब आदमी अस्बाब के कायनात के और अल्लाह के ग़ैर से होने के माहौल से निकलकर बाहर आता है। यह कलिमा 'ला इलाह इल्लल्लाहु' कि इख़्लास के हासिल करने का जो पहला सबब है, वह मैं आपसे अर्ज़ कर रहा हूं। क्योंकि हमारा हदफ़ और हमारा निशाना यह है, कि सारे आलम के सारी मस्जिदों को मस्जिदे नुबूवी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मामूल पर लाना है। क्योंकि मस्जिद नुबूवी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम में-सुबह से शाम तक और शाम से सुबह तक 24 घंटे ऐसे रूहानी आमाल लगातार चलते रहते थे। कि जिस वक़्त भी कोई मस्जिद में दाख़िल होता, उसको मस्जिद में अंदर कोई न कोई मिल जाता था। सहाबा रज़ि० खुद फ़रमाते हैं, कि मैं इस्लाम क़बूल करने के लिए आया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुद सहाबा रज़ि० के दर्मियान बैठे हुए अल्लाह के वायदे सुना रहे थे।

हज़रत वासला बिन अस्क़ा रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब मैं हिजरत करके इस्लाम में दाख़िल होने के इरादे से आया तो सीधे आकर नमाज़ ही में शरीक हो गया। मैं आख़िरी सफ़ में था, जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सलाम फेरकर हमको देखा, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम खुद मेरे पास तशरीफ़ ले आए।

देखो मेरी बात को ध्यान से सुनो! असल में हमारा मुज़ाकरा ही पुरानों से है, जो अब तक यह समझ रहे हैं, मस्जिद को खाली छोड़कर बस मुलाक़ातें कर लें और दीन की बातें बाज़ारों में करके अपने कारोबारों में चले जाएं या दीन की बात बाज़ारों में करें और अपने दफ़्तरों को चले जाएं।

मस्जिद की जमाअत को चाहिए कि मस्जिद वाला बनकर मस्जिद से निकले और एक–एक को मस्जिद वाला बनाने की ग़रज़ से मुलाक़ातें करें, ताकि मस्जिद में दावत वाले आमाल ज़िंदा हों और मुलाक़ातों के ज़रिए हर ईमान वालों को मस्जिद में लाया जाए। इससे मुलाक़ातें करके यह कहो कि मस्जिद में ईमान का यक़ीन का हल्क़ा चल रहा है, आप भी तशरीफ़ ले चलें। अगर वह दस मिनट के लिए भी तैयार हो, तो उसे मस्जिद के माहौल में ले आओ, बाज़ार के माहौल से मस्जिद का माहौल लाखों गुनाह बेहतर है क्योंकि चंद क़दम उसका मस्जिद की तरफ़ उठा लेना, यह अल्लाह की तरफ़ क़दम उठाना है उसका अपने माहौल में बैठकर बात सुनना, जहां अस्बाब और ग़फ़लत का माहौल हो, वहां से मस्जिद के माहौल में लाना कि मस्जिद में ईमान का हल्क़ा क़ायम करने वाला और तालीम का हल्क़ा क़ायम करने वाला हो।

उन हल्क़ों को चलाने वाले साथी तैय करके बाक़ी साथी मुलाक़ातों के ज़रिए सबको मस्जिद में लाएं कि मस्जिद में ईमान का हल्क़ा चल रहा है। और तालीम का हल्क़ा चल रहा है, चाहे 10 मिनट के लिए ही तशरीफ़ ले चलें। यह जो मस्जिद की तरफ़ उसके चंद क़दम उठे तो उन चंद क़दमों के उठाने पर अल्लाह तआला की रहमतें और बरकतें और मग़्फ़िरत उसकी तरफ़ दौड़कर आ रही है।

हदीस में आता है जो मेरी तरफ़ चलकर आता है मैं उसकी तरफ़ दौड़कर आता हूं, अगर हमनें मुलाक़ातों के ज़रिए ईमान वालों को मस्जिद की तरफ़ बुलाया तो समझ लो कि उसके लिए हिदायत का दरवाज़ा खुल गया। अल्लाह तआला जिसकी तरफ़ दौड़कर आ रहे हों अल्लाह तआला उसको हिदायत क्यों नहीं देंगे?!!

ईमान वालों को मस्जिद में लाकर मस्जिद आबाद करना है

देखो, मैं बहुत ही ज़रूरी बात अर्ज़ कर रहा हूं, कि यह पहले नम्बर का पहला अमल है। वे लोग जो दूसरे सूबों (शहर) से यहा (भोपाल) आए हुए हैं। वे

भी अच्छी तरह समझ लें कि हमारी मुलाक़ातों का मक़्सद ईमान वालों को मस्जिद में लाकर मस्जिद को आबाद करना है क्योंकि यह मस्जिद की आबादी की मेहनत है, अब तो आमतौर से साथियों का यह ज़ेहन होता जा रहा है, कि वह घरों पर मुलाक़ातें करते हैं और पूरी बात घर के माहौल में ही कर लेते हैं। मस्जिद में लाने की दावत और मस्जिद में लाने की कोशिश का जज़्बा उनमें नहीं है। एक घंटा आधा घंटा लोगों को घरों में जमा करके बात करते हैं अब तो लोगों का भी यह ज़ेहन बन चुका है कि हमसे हमारे माहौल में बात कर लो।

हज़रत रह० फ़रमाते थे कि जो अपने माहौल से निकलकर बाहर नहीं आया, वह ईमान के और यक़ीन के माहौल से कैसे असर अंदाज़ हो जाएगा। इसलिए उसको उसके माहौल से बाहर निकालो और हर एक से मुलाक़ात करो। यह नहीं कि तुम मुलाक़ातों में यह देखो! कि हमारे मुहल्ले में जमाअत के साथी कौन कौन हैं, जिनसे मुलाक़ातें करनी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बाइसत (दुनिया में आने का मक़्सद) इंसानियत की तरफ़ है अगर यह काम नुबूव्वत का है तो फिर यह काम उम्मत का है, अगर तुमने यह सोचकर मुलाक़ात की कि यह हमारी जमाअत का आदमी है तो उससे फ़िरका बनेगा उम्मत नहीं बनेगी, इसलिए यह बात याद रखो कि यह मस्जिद की आबादी की मेहनत है कि ईमान वालों के ज़रिए मस्जिद को आबाद करो, हर ईमान वाले से मुलाक़ातें करो। क्योंकि मस्जिद को आबाद रखना हर मोमिन का क़ाम है, अल्लाह ने यह नहीं फ़रमाया कि सिर्फ़ तब्लीग़ी जमाअत के लोग मस्जिद को आबाद करेंगे।

﴿إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسَاجِدَ اللّٰهِ مَنْ آمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَأَقَامَ الصَّلَاةَ وَآتَى الزَّكَاةَ وَلَمْ يَخْشَ إِلَّا اللّٰهَ فَعَسَىٰ أُولٰئِكَ أَنْ يَكُونُوا مِنَ الْمُهْتَدِينَ﴾ (توبہ:١٨)

"हां, अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करना उन लोगों का काम है, जो अल्लाह पर और क़ियामत के दिन पर ईमान लाएं, और नमाज़ की पाबन्दी करें और ज़कात दें और बजुज़ अल्लाह के किसी से न डरें, सो ऐसे लोगों की निस्बत तौक़ेअ (यानी वायदा) है, कि अपने मक़्सूद तक पहुंच जाएंगे।"

हर वह शख़्स जो अल्लाह पर ईमान रखता है वह मस्जिद को आबाद करने

वाला है कि 100 फ़ीसद ईमान वाले मस्जिद को आबाद करने वाले हैं। कभी यह ख़्याल न रहे कि मस्जिद की जमाअत, तब्लीग़ी जमाअत को कहते हैं नहीं, बल्कि 100 फ़ीसद ईमान वाले मस्जिद को आबाद करने वाले हैं।

इसलिए मेरे मुहतरम दोस्तों, बुज़ुर्गों और अज़ीज़ो! हर ईमान वाला हमें मतलूब है कि मुलाक़ातें करके इसको मस्जिद के माहौल में ले आओ क्योंकि मस्जिद का माहौल–

तर्बीयत के लिए,
हिदायत के लिए और,
दिल में बात उतारने के लिए है।

इसलिए हर एक से मुलाक़ातें करो, हर एक को मस्जिद में लाकर दावत दो, मुहल्ले में मुलाक़ातें करो, उनसे यह कहो कि मस्जिद में ईमान का हल्क़ा चल रहा है, आप तशरीफ़ लें चलें। यह पहली सिफ़त कलिमा 'ला इलाह इल्लल्लाहु' कि इसके साथ मस्जिद की आबादी का जो अमल है, वह ईमान का हल्क़ा है और मुलाक़ातें इसलिए हैं ताकि मुलाक़ातों के ज़रिए उनको मस्जिद के माहौल में लाया जाए। अब मस्जिद के माहौल में लाकर दावत दो ज़ेहन बनाओ, मैंने तफ़सील से कल रात अर्ज़ कर दिया था कि हमें ईमान के हल्क़े में ईमान किस तरह सिखलाना है? क्या बातें करनी हैं? ईमान की अलामातें बतलाई हैं, जिससे उम्मत के अंदर ईमान की कमज़ोरी का एहसास पैदा हो, यह है मस्जिद की आबादी का पहला काम। अल्लाह तआला ने फ़रमाया *'कि मस्जिद के आबाद करने वालों के दिलों से, मैं अपने ग़ैर का ख़ौफ़ निकाल दूंगा'* हदीस में आता है मस्जिद को आबाद करने वालों से अल्लाह का अज़ाब उठा लिया जाता है।

मस्जिद को आबाद करने वालों से पांच वायदे

हदीस में आता है कि मस्जिद के आबाद करने वालों से अल्लाह तआला के पांच वायदे हैं–

(1) इन पर रहमतें नाज़िल करते हैं,
(2) अल्लाह राहत देते हैं,
(3) अल्लाह राज़ी रहते हैं,

(4) इनको पुल–सिरात (एक पुल है जो जहन्नम पर बना हुआ है उस पर से हर फ़र्द को गुज़रना होगा यह पुल बाल से बारिक और तलवार से ज़्यादा तेज़ है) से बिजली की तरह गुज़ार देंगे।

(5) जन्नत में दाख़िल फ़रमा देंगे।

ये पांच वायदे अल्लाह तआला ने मस्जिद को आबाद करने वालों के लिए कहे हैं।

इसलिए मेरे दोस्तों, बुज़ुर्गों और अज़ीज़ो! इन सारी ख़ैरों को हासिल करने के लिए हममें से हर एक यह तैय करे कि रोज़ाना कम से कम ढाई घंटे तो कोई बात ही नहीं है, वरना चार–चार, छः–छः और आठ घंटे मस्जिद की आबादी के लिए फ़ारिग़ करेंगे। देखो मैं सारे मसाइल का हल आपको बता रहा हूं, कि उम्मत पर आने वाले अज़ाब को टालना चाहते हों, उसका यही रास्ता है, अल्लाह तआला मस्जिद के आबाद करने वालों से अपने आज़ाब को उठा लेतें हैं और अगर यह मस्जिद के आबाद करने वाले अपनी दुन्यावी किसी ज़रूरत को हासिल करने के लिए मस्जिद से बाहर निकलें, तो फ़रिश्तें उनकी दुन्यावी कामों में मदद करते हैं, पर हम तो यह सोचते हैं, कि–

अगर मस्जिद को वक़्त देंगे, तो हमारी दुकान का क्या होगा?
अगर मस्जिद को वक़्त देंगे, तो दफ़्तर का क्या होगा?
अगर मस्जिद को वक़्त देंगे, तो कारख़ाने का क्या होगा?

और अल्लाह तआला यह फ़रमा रहे हैं कि अगर मस्जिद को आबाद करने वाले दुन्यावी किसी काम के लिए मस्जिद से निकलेंगे, तो फ़रिश्ते दुन्यावी कामों में उनकी मदद करेंगे, दुन्यावी कामों में उनका साथ देंगे, कितनी बड़ी मदद होगी कि दुन्यावी काम हों और अल्लाह के फ़रिश्ते हमारे मददगार हों। बस इस तरह हमें मस्जिद के अंदर ईमान का हल्क़ा हमें क़ायम करना है, कि अल्लाह की क़ुदरत को, ग़ैब के तज़्किरे को ख़ूब करना है ताकि हमारा यक़ीन,

तमाम मुशाहेदात (निगाह) से,
तजुर्बों से,
दुनिया की चीज़ों से,

आमाल की तरफ़ फिरें।

इसलिए मेरे मुहतर्रम दोस्तों, बुजुर्गों! यह मस्जिद की आबादी का पहला अमल है। जब यह मस्जिद से निकलकर अल्लाह की तरफ़ दावत देंगे, तो ख़ुद दावत देने वाले का यक़ीन भी शक्लों से और चीज़ों से हटकर अल्लाह की तरफ़ आएगा। क्योंकि जब तक हम अस्बाब के मुक़ाबले में नमाज़ को नहीं पेश करेंगे, उस वक़्त तक वह नमाज़ पर नहीं आएगा। इसलिए कि जो धंधा वे लिए बैठे है वह उसके नज़दीक नमाज़ से ज़्यादा यक़ीनी हैं वह यक़ीनी चीज़ को, बग़ैर यक़ीनी के लिए कैसे छोड़ देगा?

आमाल से काम बनने की दावत

इसलिए मेरे बुजुर्गों, दोस्तों और अज़ीज़ो! हमारा यहां मुतलक़ (पूरे) आमाल की तरफ़ बुलाना नहीं है, बल्कि अमल की तरफ़ बुलाना अस्बाब के मुक़ाबले में अगर वह अमल पर आ गया तो हमें इसके अमल का अज्र मिलेगा और अगर वह अमल पर नहीं आया, तो हमारा अपने अमल पर यक़ीन आ जाएगा। हम आमाल की तरफ़ बुला रहे हैं, अपने अंदर आमाल से कामयाबी का यक़ीन पैदा करने के लिए।

इसलिए मेरे बुजुर्गों, दोस्तों और अज़ीज़ो! नमाज़ की तरफ़ बुलाओ तमाम कायनात के मुक़ाबले में नमाज़ से कामयाबी के यक़ीन की रोज़ाना दावत दो। हज़रत रह० फ़रमाते थे कि दो नमाज़ों के दर्मियान मुलाक़ातों के लिए वक़्त निकालना अगली नमाज़ में कमाल पैदा करने के लिए, कि मेरी नमाज़ में कमाल पैदा हो। इसलिए ख़ूब समझ लो कि हमें मुलाक़ातों में नमाज़ की तरफ़ दावत देनी है और अपनी नमाज़ से कामयाबी के यक़ीन की बुनियाद पर दावत देनी है।

मेरे बुजुर्गों, दोस्तों और अज़ीज़ो! देखो, दावत पर इस्तिक़ामत (जमना) जब होती है, जब अपनी नमाज़ को यक़ीनी बनाने के लिए, नमाज़ की तरफ़ बुलाया जाएगा, इसमें कोई शक नहीं कि दूसरे बे-नमाज़ी को नमाज़ पर लाना है, लेकिन उस काम पर उस मेहनत पर इस्तिक़ामत जब हो सकती है जब यह नमाज़ की तरफ़ बुला रहा हो, अपनी नमाज़ को यक़ीनी बनाने के लिए इसलिए इतना ज़रूर करो, कि जब नमाज़ की दावत दो, तो नमाज़ से कामयाबी के यक़ीन की दावत दो। अगर वह नमाज़ पर आ गया, तो हमें उसकी नमाज़ का भी अज्र मिलेगा। अगर वह

नमाज़ पर न आया, तो हम ख़ुद अपनी नमाज़ में तरक़्क़ी करेंगे। यह है नमाज़ की तरफ़ दावत देने का मक़सद कि नमाज़ को यक़ीनी बनाने के लिए नमाज़ की तरफ़ बुलाओ। दूसरा काम यह करो कि अपनी नमाज़ों पर ख़ूब मश्क़ करो। अल्लाह माफ़ फ़रमाए कि नमाज़ में उजलत (जल्दी) करने का आम मिज़ाज है, कि लोग नमाज़ में जल्दी करते हैं–

रुकूअ में,
सज्दे में,
क़ौमे में,
क़ायदे में,

जल्दी करने का आम रिवाज और आम मिज़ाज है। हमने अच्छे–अच्छे नमाज़ियों को पुराने नमाज़ियों को देखा है, कि जिनमें क़ौमा और जल्सा का एहतिमाम नहीं है। हालांकि सख़्त वईद है कि 'अल्लाह तआला ऐसे आदमी की नमाज़ की तरफ़ देखते ही नहीं, जो रुकूअ और सज्दे के दर्मियान, यानी क़ौमा में अपनी कमर को सीधा न करें"।

"لَا يَنْظُرُ اللّٰهُ إِلٰى صَلَاةِ رَجُلٍ لَا يُقِيْمُ صُلْبَهُ بَيْنَ رُكُوْعِهِ وَسُجُوْدِهِ"

'अल्लाह तआला ऐसे आदमी की नमाज़ की तरफ़ देखते ही नहीं, जो रुकूअ और सज्दे के दर्मियान, यानी क़ौमा में अपनी कमर को सीधा न करें"।

इसलिए मेरे बुज़ुर्गों, दोस्तों और अज़ीज़ो! हमें उस पर मश्क़ करनी पड़ेगी।

अगर इसी नमाज़ पर मर गए तो क़ियामत में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दीन पर नहीं उठाए जाओगे

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने दमिश्क़ की जामा मस्जिद में एक आदमी को नमाज़ पढ़ते हुए देखा, उसकी नमाज़ में जल्दी थी। देखकर फ़रमाया कि नमाज़ कब से पढ़ते हो?

उसने कहा, चालीस साल से नमाज़ पढ़ता हूं।

हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने देखकर फ़रमाया कि अगर तुम इसी नमाज़ पर मर गए और तुमने अपनी नमाज़ में इत्मिनान पैदा नहीं किया, तो तुम क़ियामत में

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दीन पर नहीं उठाए जाओगे, क्योंकि आपका दीन है.

"कि नमाज़ इस तरह पढ़ो, जिस तरह मुझे पढ़ता हुआ देख रहे हो"

यह फ़रमाया हज़रत हुज़ैफ़ा रज़ि० ने. किससे फ़रमाया है उससे जो चालीस साल से नमाज़ पढ़ता था. ज़ाहिर बात है कि जिसकी नमाज़ को एक सहाबी देख रहे हैं। यक़ीनन वह कम से कम ताबेअ (जिसने सहाबा रज़ि० को देखा और उसका खात्मा ईमान की हालत में हुआ) तो होगा। उसको देखकर फ़रमाया, इतनी बात तो यक़ीनी है कि वह ताबेअ होगा उस ज़माने की बात है यह देखकर फ़रमाया कि अगर तुम इस नमाज़ पर मर गए तो तुम क़ियामत में मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के लाए हुए दीन पर नहीं उठाए जाओगे।

इसलिए मेरे बुज़ुर्गो, दोस्तों और अज़ीज़ो! हदीस में नमाज़ में उजलत (जल्दी) करने और नमाज़ को बिगाड़ने की वईद देखा करो, हमें नहीं अंदाज़ा है, कि हमारे दुनिया में कितनी परेशानियां हैं,

नमाज़ को बिगाड़ने की वजह से बिगड़े हुए हैं।

कितनी बीमारियां हैं

नमाज़ को बिगाड़ने की वजह से पैदा होती हैं।

क्योंकि जो जिस्म इबादत के लिए बना है, अगर उस जिस्म से इबादत को बिगाड़ा जाएगा, तो जिस्म के अंदर बीमारी की लाइन से बिगाड़ पैदा होगा। हज़रत रह० फ़रमाते थे कि हर जिस्म के हिस्से की बीमारी का पहला सबब इस हिस्से का गलत इस्तेमाल है, कि आंख, ज़बान कान, आंख, हाथ, पैर और शर्मगाह वग़ैरह का इस्तेमाल, जब अल्लाह की मर्ज़ी के खिलाफ़ होता है तो उन्हें जिस्म के हिस्सों पर बीमारी भेजी जाती हैं।

हां मेरे दोस्तो! बीमारियों का ताल्लुक़ अमल से है, सबब से नहीं। यह जिस्म इबादत के लिए बना है इस जिस्म को इबादत से संवारो।

इसलिए मेरे बुज़ुर्गों, दोस्तों और अज़ीज़ो! हम अपनी नमाज़ों पर सबसे पहले मश्क़ करें,

लम्बे-लम्बे रुकूअ की,

लम्बे लम्बे सज्दों की,

अल्लाह के रास्ते में निकलकर ख़ूब मौक़ा मिलेगा, क्योंकि अल्लाह के रास्ते में उसका कारोबार, दुकान, बीवी बच्चे, दफ़्तर और कारख़ाना साथ नहीं है हम सारी दुनिया के कामों से निकलकर अल्लाह के रास्ते में निकल रहे हैं। इसलिए बेहतरीन मौक़ा है अपनी नमाज़ों पर मश्क़ करने का, जैसी नमाज़ अल्लाह के रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तरफ़ मतलूब है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः नमाज़ इस तरह पढ़ो जिस तरह मुझे पढ़ता हुआ देख रहे हो, बस यह एक ही नमाज़ है।

नमाज़ की तक़सीम

लोगों ने इस ज़माने में नमाज़ को तक़सीम कर लिया है।

यह मशाइख़ की नमाज़ है,
यह उलमा का नमाज़ है,
यह आम इंसानों की नमाज़ है,
यह एक ताजिर, दुकानदार की नमाज़ है,

चलो मियां जैसी पढ़ रहा है उसके लिए ठीक है वह शैख़, आलिम, मुहद्दिस, बड़े-बुज़ुर्ग, पीर साहब जैसे पढ़ रहे हैं, उनके एतबार से वह नमाज़ मुनासिब है। नहीं ख़ुदा की क़सम! अल्लाह के नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने नमाज़ को तक़सीम नहीं किया, मैं कैसे नमाज़ को तक़सीम कर दूं। मैं कैसे अर्ज़ कर दूं..............कैसे समझाऊं..............मैंने एक दिन नमाज़ पढ़ाई तो अगले दिन एक साहब कहने लगे कि हमें ज़रा जल्दी है कि इसलिए आज मुत्तक़ियों वाली नमाज़ न पढ़ाइए। मैंने कहा, क्या मैं तुम्हें फ़ाजिरों (गुनाहगारों) वाली नमाज़ पढ़ाऊं !! वह नमाज़ कौन-सी होती है मुझे बता दो। अक्सर पढ़े-लिखे लोग भी बिचारे उसमें मुब्तला है, कि वह नमाज़ में जल्दी करते हैं, सख़्त वईद है कि नमाज़ अल्लाह के यहां बद-दुआ करती हुई जाती है। कि

ऐ अल्लाह! तू इसको इस तरह बर्बाद कर, जिस तरह इसमें मुझे ज़ाया किया है।

नमाज़ी नमाज़ के बाद दुआ करें और नमाज़, नमाज़ी को बद-दुआ, कि नमाज़

की बद-दुआ उसकी दुआओं से पहले मक़बूल हो जाएगी, जब की नमाज़ के बाद की दुआएं मक़बूल होती हैं। क्योंकि नमाज़ मज़लूम हैं और नमाज़ी ज़ालिम, तो मज़लूम की बद-दुआ और अल्लाह के बीच कोई पर्दा नहीं है। और ज़ालिम के और अल्लाह के दर्मियान दुआओं में रूकावट है, कि दुआ की कुबूलियत के लिए सबसे बड़ा ज़ुल्म यह है कि उसने अल्लाह के हक़ को बिगाड़ा है।

दोबारा नमाज़ पढ़! तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी

इसलिए मेरे बुज़ुर्गों, दोस्तों और अज़ीज़ो! आज से यह तैय कर लो कि इनशाअल्लाह अपनी नमाज़ों को क़ायम करेंगे, हां, यह नहीं है कि कौन-सी नमाज़ पढ़ेंगे। नमाज़ तो एक ही है। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने सामने अपनी मस्जिद में जल्दी-जल्दी नमाज़ पढ़ने वाले को देखकर बार-बार यह फ़रमा रहे हैं, "दोबारा नमाज़ पढ़! तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी"।

तो मेरे अज़ीज़ो! इस ज़माने में कोई यह कैसे कह सकता है कि हां तुमने नमाज़ ठीक पढ़ ली है, जब तक वह नमाज़ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े के मुताबिक़ न हो। जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुद सहाबी को देख रहे हैं और बार-बार फ़रमा रहे हैं कि "जा नमाज़ पढ़! तुमने नमाज़ नहीं पढ़ी" इस हदीस की वजह से हज़रत आइशा रज़ि०, हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ि० और बहुत से सहाबा और बाज़ आलिमों का मज़हब यह है, कि जो नमाज़ जल्दी-जल्दी पढ़ेगा उसकी नमाज़ अदा नहीं होगी। उसको अपनी नमाज़ दोबारा पढ़नी पड़ेगी। बाज़ आलिमों के नज़दीक़ तो अगर एक दफ़ा जल्से में इस्तिग़फ़ार नहीं किया तो नमाज़ दोबारा पढ़नी पड़ेगी, नमाज़ फ़ासिद हो जाएगी और उसका कोई एहतिमाम नहीं है, कि दो सज्दों के दर्मियान जल्से में बैठकर इस्तिग़फ़ार का एहतिमाम हो। रूकूअ से उठने के बाद-

"رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ حَمْدًا كَثِيرًا طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيهِ"

इन कलिमात को कहने का लोगों को ख़बर भी नहीं है कि यह क्या कलिमात हैं।

मेरे बुज़ुर्गों, दोस्तों और अज़ीज़ो! सिर्फ़ साल का एक चिल्ला लग जाना, महीने के तीन दिन लग जाना, यह कोई चीज़ नहीं जब तक हम इस मेहनत के

ज़रिए नमाज़ के एक–एक हिस्से पर नमाज़ के एक–एक ज़िक्र पर क़ायम न हों। उस वक़्त तक हमें इस मेहनत से वह चीज़ हासिल नहीं होगी, जो अल्लाह ने उस मेहनत में रखी है, अब तो लोगों की आम आदत है, कि वे उन अज़्कार को अब पढ़ते भी नहीं और दूसरों को पढ़ने के लिए कहते भी नहीं हैं। हालांकि खुद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इन अज़्कार का नमाज़ में पढ़ना साबित है। इन अज़्कार के एहतिमाम करने की इसलिए ज़रूरत है कि नमाज़ के जिस हिस्से में नमाज़ के जिस अमल में, उस अमल का ज़िक्र नहीं होगा, उस अमल की दुआएं नहीं होंगी, तो वह अमल क़ायम नहीं होगा।

जल्सा क़ायम होगा, जल्से के ज़िक्र से,

क़ौमा क़ायम होगा, क़ौमा के ज़िक्र से,

जिस तरह सज्दा, सज्दे के ज़िक्र से हो रहा है, कि कम से कम तीन बार "सुब्हान रब्बीयल आला" की कम से कम तीन अल्लाह तआला की पाकी को बयान करते हुए।

उसको रब यक़ीन करते हुए,

उसको बाला व बरतर और आला यक़ीन करते हुए,

कम से कम तीन मर्तबा "सुब्हान रब्बीयल आला" कहे इस तरह सज्दे का अमल हो। मुझे यह अर्ज़ करना है, कि नमाज़ के जिस हैयत (शक्ल) का भी ज़िक्र छोड़ दिया जाएगा, नमाज़ का वह रुक्न ख़त्म हो जाएगा। इसलिए याद रखो! कि इन अज़्कार का एहतिमाम करना नमाज़ के क़ायम होने के लिए ज़रूरी है। लोग कहते हैं, यह अज़्कार ज़रूरी नहीं है। देखो! नमाज़ का क़ायम करना ज़रूरी है, नमाज़ क़ायम नहीं होगी जब तक अरकान के अंदर इन अज़्कार का एहतिमाम नहीं किया जाएगा। इसलिए जब सहाबी ने पीछे से यह कलिमात कहे।

"رَبَّنَا لَكَ الْحَمْدُ حَمْدًا كَثِيرًا طَيِّبًا مُّبَارَكًا فِيهِ"

तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ से सलाम फेरकर पूछा कि यह कलिमात किसने कहे थे? एक सहाबी ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मैंने कहे थे। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: तुम्हारे इन कलिमात के अज्र को लिखने के लिए 30 फ़रिश्ते दौड़े और हर फ़रिश्ता यह

चाहता था कि उन कलिमात के अज्र को मैं ही लिखूं, इस तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जो अज़्कार नमाज़ में बतलाए हैं, नमाज़ को क़ायम करने के लिए वह अज़्कार ज़रूरी हैं।

मेरे बुज़ुर्गों, दोस्तों और अज़ीज़ो! उन अज़्कार के एहतिमाम से ही नमाज़ क़ायम होगी। पहली नीयत अल्लाह के रास्ते में निकलकर हमें यह करनी है कि नमाज़ क़ायम हो अगर, नमाज़ क़ायम होगी तो सारा दीन नमाज़ से क़ायम हो जाएगा इसलिए पहली मश्क़ नमाज़ पर यह करो, दूसरी मश्क़ नमाज़ पर यह करो कि नमाज़ में अल्लाह को देखते हुए नमाज़ पढ़ने की कोशिश करो। कि अल्लाह को देखते हुए सिफ़ते एहसान पैदा करना मतलूब है कि अल्लाह को देखते हुए नमाज़ पढ़ने की कोशिश करो, इस तरह नमाज़ पढ़ो कि मैं अल्लाह को देख रहा हूं, अगर इतना नहीं होता है, तो इतनी बात तो यक़ीनी है कि अल्लाह मुझे देख रहा है। इससे नीचे कोई दर्जा नहीं है। यह नमाज़ पर दूसरी मश्क़ करनी है।

पहली मश्क़ नमाज़ का ज़ाहिर ठीक हो,
दूसरी मश्क़ नमाज़ में अल्लाह के ध्यान की हो। और
तीसरी मश्क़ यह करो कि नमाज़ से ही परेशानियों को हल कराओ।

गुब्बारे बिके, तो मसाइल (परेशानी) हल

मेरे बुज़ुर्गों, दोस्तों और अज़ीज़ो! दावत की मेहनत का मक़्सद ही है कि यक़ीन शक्लों से हुक्म की तरफ़ आए, जब कोई ज़रूरत पेश आए सबसे पहले हमारा ख़्याल नमाज़ की तरफ़ जाए, इस तरह इनशाअल्लाह करोगे। क्यों भाई! देखो एक सहाबी ने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मैं तिजारत के लिए बहरीन (जगह का नाम) जाना चाहता हूं आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः पहले दो रकआत नमाज़ पढ़ लो। तिजारत से नहीं रोका, फ़रमायाः पहले दो रकआत नमाज़ पढ़ लो, फिर करो तिजारत, लेकिन पहले दो रकआत नमाज़ पढ़ लो, जब तक नमाज़ पर जो वायदे हैं, उन वायदों का दिल से यक़ीन नहीं होगा, कि यक़ीन के बग़ैर कोई आमाल क़ायम नहीं होगा। देखो तो सही एक गुब्बारे बेचने वाला भी यह यक़ीन करता है कि अगर मेरे गुब्बारे बिके और बच्चों ने ख़रीदे, तो मेरे मसाइल इससे हल हो जाएंगे, इसलिए अपने गुब्बारों को

वह लिए–लिए फिरता है गली–गली बच्चों में बेचने के लिए मामूली चीज़ दो रूपये का, पांच रूपये का, कि बच्चे खरीद लेंगे। वह इन गुब्बारों को लिए–लिए फिर रहा है। इसे यक़ीन है, कि मेरी यह चीज़ मामूली नहीं है, कोई बच्चा हाथ लगाएगा तो गुस्सा आएगा और कोई गुब्बारा फूट जाएगा तो अपना नुक़सान समझेगा क्योंकि इससे अपने मसाइल का हल होने का यक़ीन है। हज़रत रह० फ़रमाते थे, कि नमाज़ को बिगाड़ने की वजह यह है कि सारी शक्लों से मसाइलों के हल होने का यक़ीन है, पर नमाज़ से मसाइल के हल होने का कोई यक़ीन नहीं है।

इसलिए मेरे बुज़ुर्गो, दोस्तों और अज़ीज़ो! नमाज़ को इस यक़ीन पर लाओ, कि नमाज़ के साथ जो वायदे अल्लाह ने लगाएं हैं। इन वायदों का यक़ीन पैदा करने के लिए तालीम है कि खूब समझ लो, कि तालीम का क्या मक़सद है?। तालीम का मक़सद है आमाल में एहतिसाब पैदा करना, कि अल्लाह तआला मुझे इस अमल पर क्या देने वाले हैं। यह फ़ज़ाइल ही अल्लाह के वायदे हैं, कि तालीम का मक़सद आमाल के अंदर एहतिसाब पैदा करना है। अल्लाह तआला इस अमल पर क्या देने वाले हैं। एक–एक अमल को वायदों के यक़ीन पर लाने के लिए तालीम है। यह तालीम का मक़सद है, कि आमाल अल्लाह के वायदों के यक़ीन पर आए।

तालीम कराने का तरीक़ा

अब तालीम का तरीक़ा क्या है?

तालीम का तरीक़ा यह है कि "फ़ज़ाइले आमाल" "मुन्तख़ब अहादीस" इन दोनों किताबों से बराबर तालीम होगी और जिस मस्जिद में दो वक़्त तालीम होती हो, तो वहां एक वक़्त फ़ज़ाइले आमाल और एक वक़्त मुन्तख़ब अहादीस की तालीम हो। दूसरे सूबों से आए हुए लोग भी इस बात को नोट कर लें। जिस मस्जिद में मस्जिद की जमाअत बनी हुई है और कम से कम आठ साथी मस्जिद की जमाअत में हैं, तो मैं शुरू में अर्ज़ कर चुका, कि मस्जिद की जमाअत मुलाक़ातें करके लोगों को मस्जिद में लाएं।

अल्लाह के रास्ते में निकलकर दो वक़्त तालीम होगी, शुबह और शाम। एक वक़्त फ़ज़ाइले आमाल एक वक़्त मुन्तख़ब अहादीस, दोनों किताबों से अल्लाह के

रास्ते में निकलकर तालीम का एहतिमाम किया जाए। एक किताब में से सुबह पढ़ लिया जाए, एक किताब में से शाम को पढ़ लिया जाए। एक–एक हदीस को पढ़ने वाला तीन–तीन बार पढ़े, यह तालीम का मसनून तरीक़ा है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब कोई बात फ़रमाते थे, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस बात को तीन बार दोहराते थे, ताकि बात अच्छी तरह समझ में आ जाए। इसलिए याद रखें! कि तालीम में एक–एक हदीस को तीन–तीन बार पढ़ लिया जाए और तालीम के दौरान मज्मे की तरफ़ देखते रहो, तालीम में ब–वुज़ू बैठने की कोशिश करो, तालीम में ऐसे बैठो, जैसे नमाज़ में, 'अत्तहियात' में बैठते हो, क्योंकि जितना अदब होगा, उतना ही हदीस का नूर आएगा। हदीस के नूर से ही अमल के करने की इस्तिदाद पैदा होगी।

तालीम में बैठने का तरीक़ा

ब–वुज़ू बैठो!
टेक न लगाओ!
मुवाज्जोह होकर बैठो!
आपस में बातें न करो!

इस तरह, अगर हम तालीम का अमल करेंगे, तो यह तालीम का अमल, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद का अमल है। इससे हमारे अंदर वही अमल की रग़बत और शौक पैदा होगा, जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वायदे सुनाने से आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ि० के दिलों में पैदा होता था। सिर्फ़ इतनी बात है, कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मौजूद नहीं हैं। वरना–

वही हल्क़ा है,
वही उम्मत है,
वही हदीसें हैं,
वही अल्लाह के वायदे हैं,

जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को सुनाया करते थे। इस तरह हमें जमकर तालीम के हल्कों में बैठना

है। सुबह–शाम ढाई घंटे, तीन घंटे जमकर तालीम होगी। लोग पूछते हैं तालीम कितनी देर हो? हज़रत रह० फ़रमाते थे कि मक़ाम पर भी तालीम कम से कम डेढ़ घंटे होनी चाहिए। हमारी मस्जिद की तालीम का हाल यह है, कि पांच मिनट और दस मिनट तालीम हो जाती है। देखो! मैं इसकी आसान शक्ल व तर्तीब बताता हूं, कि तालीम कराने वाला तालीम कराए, अगर लोग कुछ देर के बाद उठकर जाना चाहें, तो तालीम करने वाला यह कह दे कि आप अगर जाना चाहें तो जा सकते हैं, तालीम का अमल तो जारी रहेगा। यह कहकर तालीम शुरू कर दे। इतना सब तैय कर लो, तो इनशाअल्लाह कम से कम हर मस्जिद में आधा घंटा तालीम का अमल यक़ीनन होगा। एक दिन "फ़ज़ाइले आमाल" एक दिन "मुन्तख़ब अहादीस" अगर एक वक़्त तालीम होती है।

अगर दो वक़्त तालीम होती है, तो एक वक़्त "फ़ज़ाइले आमाल" और एक वक़्त "मुन्तख़ब अहादीस" की तालीम होगी। तालीम के साथ तालीमी गश्त भी होगा। जिस मस्जिद में दावत, तालीम और इस्तिक़बाल का अमल है, वहां मुलाक़ातें करके मस्जिद के माहौल में लोगों को लाओ। तालीम में जो जमाअत अल्लाह के रास्ते में निकल रही है, वह जमाअत में निकलकर भी तालीमी गश्त करें।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु जो सारे मुहद्दिसीन के इमाम हैं, वह मदीना के बाज़ार में गश्त कर रहे थे, लोगों को तालीम के हल्क़े में जोड़ने के लिए। इस तरह मेरे बुजुर्गों दोस्तों और अज़ीज़ो! हमें भी मुलाक़ातों के ज़रिए लोगों को तालीम के हल्क़ों में लाना है। बाज़ार में लोगों को एक–एक को जाकर दावत दो कि मस्जिद में अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की हदीसें सुनाई जा रही हैं, अल्लाह के फ़ायदे सुनाए जा रहे हैं, अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मीरास तक़सीम हो रही है। यानी इल्म सिखलाया जा रहा है। आप भी तशरीफ़ ले चलें। इस तरह मुलाक़ातें करके लोगों को मस्जिद के माहौल में ले आओ, चाहे आप अपने मक़ाम पर हो या अल्लाह के रास्ते में हों। हमें हर जगह तालीम का हल्क़ा क़ायम करना है। और इसके लिए तालीमी गश्त करना है, चाहे अपने मक़ाम पर हों, अल्लाह के रास्ते में निकलकर हो, हर जगह तालीमी गश्त के ज़रिए लोगों को मुलाक़ात करके मस्जिद लाना है। यह है तालीम के साथ मेहनत

और यह है तालीम का तरीक़ा।

इसी तरह मेरे बुजुर्गो, दोस्तों और अज़ीज़ो! मैंने अर्ज़ किया है कि तालीम के दौरान एक-एक हदीस को तीन-तीन बार पढ़ो, अगर पढ़ने वाला आलीम है, मौलवी है, अरबी अबारात (जुम्ले) पढ़ सकता है, तो ज़रूर एक दो हदीस अरबी अबारात (जुम्ले) की पढ़ लिया करे। जिससे सीधे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़ुबान मुबारक से निकले हुए अल्फ़ाज़ कानों में पड़ें। इनकी रूहानियत अलग ही है। वह रूहानियत तर्जुमा करके ज़बान में नहीं आ सकती, जो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़बान मुबारक से निकले हुए अलफ़ाज़ में है। इसलिए ऐसा शख़्स जो आलिम हो, अरबी अबारात (जुम्ले) पढ़ सकता हो, इसको चाहिए कि वह हदीस की अबारात (जुम्ले) अरबी में एक मर्तबा पढ़ लिया करे। जो उर्दू का तर्जुमा है इसको तीन मर्तबा पढ़े। इसकी कोशिश न करो, कि किताब ख़त्म हो जाए, इसकी कोशिश करो, जो बात कही जा रही है हदीस की वे लोगों के दिलों में उतर जाए। तालीम के दौरान मुतावज्जोह करते रहो और पूछते रहो, मज्मे से कहो, भाई! बात समझ में आ रही है? देखो! नमाज़ छोड़ने पर कितना बड़ा अज़ाब है, भाई आपको बात समझ में आ रही है, देखो नमाज़ पर कितना बड़ा वायदा है, इसी तरह तालीम के दौरान मज्मे से पूछते रहो, मुतावज्जोह करते रहो, इसी तरह हमें इनशाअल्लाह तालीम के ज़रिए अल्लाह के वायदों का यक़ीन सीखना है।

एक फ़ज़ाइल का इल्म है और एक मसाइल का इल्म है, मसाइल का इल्म उलमा से हासिल करो। जहां जाओ, वहां भी अपने मक़ाम पर रहते हुए भी उलमा की ज़ियारत को इबादत यक़ीन करो। हर-हर क़दम पर मसाइल उलमा से पूछो। हज़रत रह० फ़रमाते थे, कि उलमा से पूछकर चलना, यह इसके ईमान की दलील है, वरना जिसके पास ईमान न होगा, इसको इल्म से कोई रग़बत नहीं होगी। जी हां! हदीस में इल्म और ईमान को साथ जोड़ा गया है। एक हदीस में आता है, कि जो इल्म और ईमान चाहेगा, अल्लाह तआला उसको दीन देंगे। ईमान की अलामत है, उलमा से मुहब्बत और उलमा की सोहबत से इल्म का हासिल करना।

इसलिए मेरे बुज़ुर्गों, दोस्तों और अज़ीज़ो! उलमा से पूछ-पूछकर चलो, हज़रत फ़रमाते थे कि उलमा की ज़ियारत को इबादत यक़ीन करो। अपने बच्चों

को इल्मे इलाही पढ़ाओ। आप सारी मेहनत और कोशिश बच्चों को अंग्रेज़ी पढ़ाने पर है। देखो! इसका ताल्लुक़ एक ज़रूरत से है। हम इससे इंकार नहीं करते, पर यह ज़रूरत है, मक़्सद नहीं है। जो इल्म, मक़्सूद है, वह इल्मे इलाही है।

सबसे बड़ी जिहालत, हर चीज़ को इल्म समझ लेना

मेरे बुज़ुर्गो, दोस्तों और अज़ीज़ो! इस ज़माने की सबसे बड़ी जिहालत यह है, कि लोगों ने हर चीज़ को इल्म समझ लिया है। कि लोगों से पूछो कि क्या पढ़ रहे हो? जी,

साइंस का इल्म,
अंग्रेज़ी का इल्म,
डाक्टरी का इल्म,
इंजिनिरिंग का इल्म,

तौबा...तौबा....कितनी बड़ी जिहालत है, हर चीज़ को इल्म क़रार देना, कितनी बड़ी जिहालत है। आज सारी दुनिया के पढ़े लिखे मुसलमान भी इस फ़ित्ने में मुब्तला हो गए हैं कि इन्होंने हर चीज़ को इल्म क़रार दे दिया। नहीं मेरे बुज़ुर्गो, दोस्तों और अज़ीज़ो! आज दिल की गहराइयों से इस बात को निकाल दो, कि हर चीज़ इल्म है। "इल्म" सिर्फ़ वह है, जो मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े पर अल्लाह हम से चाहते हैं, वरना अब यह ज़ेहन बन गया है, कि हर चीज़ सीखना इल्म है, बिल्कुल यह बात नहीं है। इल्म सिर्फ़ वह है, जो हम से हमारा रब, मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े पर चाहता है।

मेरे बुज़ुर्गो, दोस्तों और अज़ीज़ो! असल में ख़ालिक की तहक़ीक़ करना "इल्म" है और मख़्लूक़ की तहक़ीक़ करना "फ़न" है। क़ब्र में जाते ही जब सवाल होगा "मन रब्बुका' तो जो रब से पलने का यक़ीन ले गया है, वह कहेगा "रब्बीयल लाहू" की मेरा रब अल्लाह है यहां से कामयाबी के दरवाज़े खुल जाएंगे। इसलिए ख़ूब समझ लो! कि हर चीज़ को इल्म क़रार देना, ज़माने की सबसे बड़ी जिहालत है इल्म सिर्फ़ वह जो हमसे हमारा रब चाहता है। इंतिहाई नादान और इंतिहाई ना-समझ है वे लोग जो ये समझते हैं कि दुनिया में हर सीखे जाने वाली चीज़ इल्म है, और इससे बड़ी हिमाक़त यह करते हैं, कि वह हदीस को जो इल्म से ताल्लुक़ रखती है, इन हदीसों को ये लोग ईमान वालों के अंदर दुनिया की अहमियत और दुनिया की रग़बत पैदा कराने के लिए

दुन्यावी फन (इल्म) के लिए इस्तेमाल करते हैं। मेरी बात बहुत ध्यान से सुननी पड़ेगी, कि वे हदीसें, जिनमें इल्मे इलाही के सीखने का हुक्म दिया गया है, इन हदीसों को दुन्यावी इल्म को सीखने के लिए इस्तेमाल करते हैं, यह शैतान का सबसे बड़ा धोखा है। यह उस वक़्त खुलेगा जब क़ब्र में जाकर सवाल होगा, सारे फन (इल्म) एक तरफ़ होंगे, वहां इल्म के बारे में सवाल होगा कि बताओ किससे पलने का यक़ीन लाए हो।

इसलिए मेरे बुज़ुर्गो, दोस्तों और अज़ीज़ो! आज की मज्लिस में यह फ़ैसला कर लो कि इल्म किसे कहते हैं। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के यहां से जो शरीअत का इल्म लेकर आए हैं। सिर्फ़ उसे ही इल्म कहते हैं, उस शरीअत के इल्म पर अमल करना, उसको हासिल करना, यही इल्म है। क़ुरआन, हदीस, कि सिवा जो कुछ है वह सब दुनिया के फन (इल्म) हैं। याद रखो! अब रही बात यह कि जिसका ताल्लुक़ ज़रूरत से है, हम उससे नहीं रोकते, सीखो। लेकिन उसको इल्म समझना और उस पर सलाहियतों का खपाना और इतना ही नहीं उस पर अज्र की उम्मीद करना यह धोखा है। मेरे बुज़ुर्गो, दोस्तों और अज़ीज़ो! अगर ज़रा सी अक़्ल का इस्तेमाल करो, तो यह बात समझ में आ सकती है, कि इल्म किसे कहते हैं। "इल्म" कहते हैं मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाह की तरफ़ से जो कामयाबी का तरीक़ा लेकर आए हैं। उस तरीक़े की तहक़ीक़ करना, उसको इल्म कहते हैं इसलिए सारा इल्म क़ब्र के तीन सवालों में महदूद है।

रब को जानना यानी ईमान।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े को जानना यानी शरीअत को जानना।

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जानना यानी सुन्नत को जानना।

इन तीनों चीज़ों की तहक़ीक़ करना, ही इल्म है, इसके अलावा जो इल्म है वह जिहालत है, इसलिए यह सारे इल्म का ख़ुलासा, क़ब्र के तीन सवाल है। क़ब्र में यह कोई सवाल नहीं होगा, कि–

आपने डाक्टरी कितनी पढ़ी है?

साइंस कहां तक पढ़ी है?

इंजिनियारिंग में क्या पास किया है?

क़ब्र में इनसे मुताल्लिक़ कोई सवाल नहीं होगा।

मेरे बुज़ुर्गों, दोस्तों और अज़ीज़ो! हज़रत उमर रज़ि० एक दिन तौरात की कुछ बातें सीखकर आए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आकर अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मैं तौरात का इल्म सीखकर आया हूं, ताकि मेरे इल्म में और इज़ाफ़ा हो, यह सुनकर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हज़रत उमर रज़ि० पर इतना गुस्सा आया कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मिम्बर पर बैठ गए और सारे सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु जमा हो गए, अंसार आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के गुस्से को देखकर तलवारें लेकर आ गए, कि किसने अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सताया है? सारा गुस्सा था हज़रत उमर रज़ि० पर कि हज़रत उमर रज़ि० ने तौरात का इल्म क्यों पढ़ा है? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि उमर (रज़ि०) कि मूसा अलै० आज ज़िंदा होकर आ जाएं तो उनके लिए भी निजात का कोई रास्ता नहीं है सिवाए मेरे तरीक़े के और अगर तुमने मूसा अलै० के तरीक़े पर अमल किया, तो तुम गुमराह हो जाओगे, हिदायत नहीं पाओगे।

क्योंकि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के आने पर सारे नबियों के आने का दरवाज़ा बंद कर दिया और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शरीअत ने सारी शरीअतों को ऐसा मंसूख कर दिया, जिस तरह हर ज़माने में बच्चा बढ़ा होता रहता है और इसके पिछले कपड़े बेकार और नाकारा होते रहते हैं। अगर वह इन कपड़ों को इस्तेमाल करेगा तो,

तंगी में पड़ेगा,

कपड़े फटेंगे,

जिस्म पर सही नहीं आएंगे,

यहां तक कि इंसान अपनी क़द व क़ामत से एक ऐसी उम्र में पहुंच जाता है, कि अब मरने तक उसके लिए यह लिबास तैय हो जाता है इसी तरह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शरीअत ने पिछली सारी शरीअतों को और सारे तरीक़ों को ऐसा ख़त्म कर दिया। जैसे बड़े हो जाने वाले नवजवान के लिए पिछले सारे बचपन के कपड़े बेकार हो जाते हैं इस बात को आप सामने रखकर सोचें और

अंदाज़ा करें कि जो चीज़ इल्म थी और मूसा अलै० की नुबूवत पर नाज़िल की गई थी इसको हज़रत उमर रज़ि० जैसे आलिम ने सीखा, जो सारे इल्मों के माहिर और इतना ही नहीं बल्कि इस उम्मत के मरहम जिसको अल्लाह की तरफ़ से सही बात हज़रत उमर रज़ि० को इल्हाम की जाती थी ग़ौर करो इस पर कि जो इस उम्मत का मरहम था, जिसको अल्लाह की तरफ़ से सही बात इल्हाम की जाती थी, वह हज़रत उमर रज़ि० जिनके बारे में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : अगर मेरे बाद कोई नबी हो सकते थे, तो हज़रत उमर रज़ि० हो सकते थे। इस दर्जा का आदमी, कि सारा कुर्आन व हदीस का इल्म हासिल करने के बाद, उन्होंने हज़रत मूसा अलै० पर नाज़िल होने वाला इल्म हासिल किया, उस पर अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इतना गुस्सा आया, कि जो चीज़ सिरे से इल्म ही नहीं है। इसको सीखना और अल्लाह के इल्म से जाहिल रहना। इस पर अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़ियामत के दिन कितना गुस्सा आएगा। इस बात को ज़रा सा तंहाई (अकेले) में बैठकर ग़ौर करना! सर पकड़कर सोचना! कि जब हज़रत उमर रज़ि० जैसे आलिम को तौरात पढ़ने का जो इल्म था उस पर अल्लाह के नबी को कितना गुस्सा और हम इल्मे दीन से जाहिल रहकर दुन्यावी फन (इल्म) को सीखे और उसको इल्म समझें, ऐसे लोगों पर क़ियामत में अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कितना गुस्सा आएगा?

इसलिए आप हज़रात से मेरी यह दरख़्वास्त है, कि अपने बच्चों को आप बेशक दुन्यावी किसी लाइन का फन (इल्म) सीखलाते हैं। लेकिन अपने बच्चों को कुर्आन और दीन के बुनियादी अहकामात सीख लाने का पूरा-पूरा एहतिमाम करें। वरना खुदा की क़सम! क़ियामत के दिन कोई शख़्स जाहिल होने की वजह से बख़्शा नहीं जाएगा, कि ऐ अल्लाह! मुझे ख़बर नहीं थी। अल्लाह तआला फ़रमाएंगे, कि हमने तुम्हें उम्र दी थी सीखने के लिए और नबी भेजे थे, सिखलाने के लिए, तो उसका कोई उज़्र अल्लाह के यहां क़बूल नहीं होगा। तुम्हारे पास बतलाने वाले भी आए और तुम्हें हमने उम्र भी दी सीखने के लिए।

इसलिए मेरे बुज़ुर्गों, दोस्तों और अज़ीज़ो! कोई मस्जिद ऐसी बाक़ी नहीं छोड़नी है जिसमें सुबह या शाम किसी भी वक़्त कुर्आन के मक्तब में मुहल्ले

के बच्चों को कुरआन सीखाने का एहतिमाम न किया जा रहा हो, हर मस्जिद में कुरआन की तालीम और दीन की बुनियादी चीज़ों को सीखलाने का एहतिमाम हर मुहल्ले वालों का काम है। यह हर मस्जिद के मुसल्ली की ज़िम्मेदारी है। लोग कहते हैं कि सर्दी आ गई है हमारी मस्जिद में गर्म पानी का इंतिज़ाम होना चाहिए कि गर्मी आ गई है पंखे का इंतिज़ाम होना चाहिए और सफ़ों का इंतिज़ाम होना चाहिए। जब मस्जिद अपनी जिस्मानी ज़रूरतों के सामान से भर रही है, तो क्या जो मस्जिद के तक़ाज़े हैं, जो मस्जिद इबादत के लिए बनी है, क्या उसकी ज़िम्मेदारी नहीं है, कि यह अपनी ज़िम्मेदारी पर अपने ख़र्च पर मस्जिद के अंदर मक्तब का इंतिज़ाम कर लें? ये सारा मज्मूआ नीयत करके जाए कि अपनी मस्जिद में मक्तब का एहतिमाम करेंगे और अपने बच्चों को अगर यह सुबह दुन्यावी कोई फ़न (इल्म) हासिल करने के लिए जाते हैं तो अव्वल उससे इस्तिग़फ़ार भी किया करो, कि ऐ अल्लाह! तूने हमें किस लिए पैदा किया था और हम इन्हें क्या पढ़ा रहे हैं।

ऐ अल्लाह! तू हमें माफ़ कर दे, कि हमने इस इल्म से हटकर, इन चीज़ों को पढ़ाया, जिसके लिए तूने हमें पैदा नहीं किया था।

हाए! अल्लाह ने तो हमें अपनी इबादत के लिए पैदा किया था, तुम बताओ तो सही जब अल्लाह ने इबादत के लिए पैदा किया था, तो हमने इस इबादत के लिए अपने जिस्म को कितना इस्तेमाल किया?। बस मेरे बुज़ुर्गों, दोस्तों और अज़ीज़ो! एक बात याद रखो, कि दुन्यावी क़ानून पर फ़ख़्र करना कुफ़्र का मिज़ाज है, अगर मुसलमान फ़ख़्र करे तो,

कुरआन पर करे,
हदीस पर करे,
फ़िक़्ह पर करे,

यह डाक्टर के मुक़ाबले में फ़ख़्र करेगा, कि मेरे पास अल्लाह का इल्म है, अगर तुमने ऐसा न किया, तो यह दुन्यावी फन (इल्म) हासिल करेगा और फ़ख़्र करेगा उलमा पर, कि मेरे पास फ़न (इल्म) है बस याद रखो! कि दुनिया का फ़न (इल्म) हासिल करके फ़ख़्र करना कुफ़्र का मिज़ाज है। अंबिया अलै० जब अल्लाह का इल्म लेकर आए, तो क़ौमों ने अपने फन (इल्म) के मुक़ाबले में नबियों के इल्म

का मज़ाक उड़ाया, तो अल्लाह ने नबियों के इल्म का मज़ाक़ उड़ाने की वजह से सबको हलाक कर दिया। बस आज से हम सब यह तैय कर लें कि इल्म सिर्फ़ वही है, जो हमारा रब चाहता है।

अपने बच्चों को कुरआन पढ़ाइये और दीनी मदरसों में दाख़िला कराइये। मैं कैसे समझाऊं, कि आज मुसलमान को अल्लाह वाले इल्म से पलने का यक़ीन नहीं है, अल्लाह जो सबका रब है, जिसकी ज़ात से इल्म निकलता है, उससे पलने का यक़ीन नहीं है। आज ग़ैरों के फ़नों (इल्मों) से पलने का यक़ीन है। हदीस में आता है "कि जो कुरआन को पढ़कर ग़नी (मालदार) न हो वे हम में से नहीं है कि कुरआन तो यक़ीनन ग़नी कर देगा।

मेरे दोस्तों, बुज़ुर्गों और अज़ीज़ो! इल्म दो क़िस्म का है।

फ़ज़ाइल का और

मसाइल का,

फ़ज़ाइल का इल्म तालीम के हल्क़ों में बैठ–बैठकर हासिल किया जाएगा और मसाइल का इल्म उलमा से पूछो, क़दम क़दम पर पूछकर चलो, कि–

मैं शादी कैसे करूं?

मैं तिजारत कैसे करूं?

मैं फ़लां मुलाज़मत करता हूं, हलाल है या हराम?

जाइज़ है, या ना–जाइज़?

हराम गिज़ाओ (खाने–पीने) का असर

अगर ऐसा न करोगे, तो इतने रास्ते ग़ैरों ने हराम के खोल दिए हैं, कि वे किसी भी तरफ़ से मुसलमानों को हलाल खाने की फ़ुर्सत नहीं देना चाहते हैं। वे यह जानते हैं कि इनके खाने–पीने को हराम कर दो वरना इनकी बद–दुआ हमें हलाक़ कर देगी। हां, अगर उनका खाना–पीना हराम होगा, तो उनकी बद–दुआ हमारा कुछ नहीं बिगड़ सकेगी। अगर खाना–पानी और कमाई हराम रही, तो खुद उनको अपनी दुआ से कोई फ़ायदा नहीं होगा, तो हमारा क्या नुक़्सान कर सकते हैं। इसलिए कि तब उनको अपनी दुआओं से और बद–दुआओं से कोई उम्मीद बाक़ी नहीं रहेगी, क्योंकि हराम खाने वाले की दुआएं अल्लाह की तरफ़ से मरदूद

की जाती है।

इसलिए मेरे दोस्तों, बुजुर्गो और अज़ीज़ो! उलमा से मुहब्बत किया करो और उलमा की ज़ियारत को इबादत यक़ीन किया करो और क़दम–क़दम पर उनसे यह पूछना फ़र्ज़ और मोमिन का ज़िम्मा है, कि वह उलमा से पूछ–पूछकर चलें, कि उलमा से हर चीज़ पूछना ज़रूरी समझो इसकी कोशिश करो।

मौलाना इलयास साहब रह० फ़रमाते थे, "कि अल्लाह के ध्यान के बग़ैर, ज़िक्र करना बिदअत है"। बाज़ उलमा के नज़दीक़ अल्लाह के ध्यान के बग़ैर ज़िक्र करना हराम है। अल्लाह के ध्यान के बग़ैर ज़िक्र करना बदन में सुस्ती पैदा करता है और अल्लाह के ध्यान के बग़ैर ज़िक्र करना अल्लाह की तौहीन है। अब तो इधर सांथी हाथ में तसबीह लेकर बैठता है उसे नींद आने लगती है। हालांकि ज़िक्र, अंदर की गफ़लत को तोड़ने के लिए है। लेकिन देखने में यह आ रहा है कि गफ़लत के साथ अल्लाह का ज़िक्र कर रहा है। इसलिए हज़रत ईसा अलै० फ़रमाते थे, कि जब ज़िक्र करो तो ज़बान को दिल के ताबेअ करो क्योंकि अल्लाह के ज़िक्र से अल्लाह का ध्यान पैदा करना मक़्सूद है।

मेरे दोस्तों, बुजुर्गो और अज़ीज़ो! ज़बान की हरकत से या तस्बीह के दानों का शुमार असल नहीं है। बल्कि असल ज़िक्र अल्लाह का ध्यान है, ज़बान तो दिल की तर्जुमा करने वाली है। देखो! कोई आदमी डाक्टर के पास गया, तो ज़बान से अपने हाल बयान करता है, यह ज़बान ही तर्जुमा करने वाली है, कि आपके अंदर क्या है? आप डाक्टर से अपने अंदर की बात ज़बान से कहते हैं। इसलिए दोस्तों और अज़ीज़ो! अल्लाह के ध्यान के साथ ज़िक्र करने की मश्क़ किया करो। ज़िक्र के लिए वुज़ू करो, लोग तो आपसे यह कहे, कि बग़ैर वुज़ू के भी ज़िक्र हो जाता है। नहीं मेरे दोस्तो! मैं जो कह रहा हूं उसे ध्यान से सुनो, कि मैं आपसे सारी की सारी हज़रत रह० की बातें नक़ल कर रहा हूं कि हज़रत फ़रमाते थे, ज़िक्र के लिए वुज़ू करो और तंहाई का कौना तलाश करो, अल्लाह का ज़िक्र तंहाई में करो कि अल्लाह का ज़िक्र अल्लाह के ग़ैर से कटकर होता है, कि अल्लाह के ग़ैर से कटकर अल्लाह के होकर अल्लाह को याद करो, तो तवस्सुल (अल्लाह से मिलना) उसी को कहते हैं। इसलिए तंहाई का कौना तलाश करो, एक तस्बीह तीसरे कलिमे

की, एक तस्बीह दुरूद शरीफ़ की, एक तस्बीह इस्तिग़्फ़ार की एहतिमाम के साथ इन तीन तस्बीहात का सुबह व शाम अल्लाह के ध्यान के साथ करो।

अल्लाह का कुर्ब पाने का तेज़ रफ़्तार रास्ता

एक बात यह है, कि अल्लाह तौफ़िक़ दे तो सुबह सादिक़ से पहले कुरआन देखकर पढ़ लिया करो, चाहे तीन आयतें ही क्यों न पढ़ो। मौलाना इल्यास साहब रह० फ़रमाते थे कि मैंने सारे बुज़ुर्गों को और औराद व वज़ाइफ़ करते हुए देखा, मगर जितना तेज़ रफ़्तार से अल्लाह का कुर्ब सुबह सादिक़ से पहले कुरआन देखकर पढ़ने का महसूस किया इतना किसी वज़ीफ़े में और किसी विर्द में और किसी अमल में नहीं किया। अब तो लोगों की यह आदत है, कि वे चाहते हैं कि लम्बे-लम्बे ज़िक्र करें, हालांकि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुख़्तसर और मुतादिल (दर्मियानी, आसान) अज़्कार अपनी उम्मत को फ़रमाए हैं। देखो भाई! सुन्नत में जो एतिदाल है, वह सुन्नत की वजह से है, बाज़ हमारे साथी जमाअतों में निकलते हैं, वे बीमार होकर आते हैं, होता यह है, कि कोई हफ़्तों सोता नहीं है और पागलपने की बातें करता है, दिमाग़ में खुश्की हो गई कि अल्लाह के रास्ते से बड़े-बड़े बीमार होकर आते हैं। लोग पूछते हैं, कि क्या पढ़ा? तो पता यह चलता है, कि जमाअतों में निकलकर किसी किताब में से किसी बुज़ुर्ग का वज़ीफ़ा पढ़ लिया, या किसी से किसी बुज़ुर्ग का वज़ीफ़ा सुन लिया और खुद से पढ़ने लगें। मेरे दोस्तो! यह हैरत की बात है, कि सुन्नत के अमल में इसको वह बुज़ुर्गी नज़र नहीं आती जो एक बुज़ुर्ग की नक़ल उतारने में आती है। कोई कहता है, मैंने इतना कलिमा पढ़ लिया और कोई कहता है कि मैंने इतना कलिमा पढ़ लिया और कोई कहेगा, फ़लां वज़ीफ़े में इतना पढ़ लिया, आम आदत है हमारे साथियों की क्या वे यह समझते हैं, कि अज़्कार मसनूना आम चीज़ है। हालांकि जो चीज़, जो ज़िक्र, जो विर्द, जो अमल, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से साबित है, उसके अलावा कुछ और तुम सारी ज़िंदगी भी अगर ज़िक्र करते रहो, तो न वह अनवारात न और न वह अज्र हासिल कर सकते हो, जो अज्र और जो अनवारात सुन्नत की इक़्तदा में हासिल होगा। एक मर्तबा कुछ सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हु ने आपस में बात की, कि अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के अगले-पिछले सारे

गुनाह माफ़ हो चुके हैं और अल्लाह के आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पसंदीदा हैं। अल्लाह आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यूं ही नवाज़ देंगे। पर हम तो कुफ़्र से इस्लाम में आए हैं, हमारे लिए तो यह आमाल बहुत ही थोड़े हैं, चुनांचे सब ने बैठकर यह तैय किया,

एक ने कहा, मैं तो हमेशा रोज़ा रखूंगा, इफ़्तार नहीं करूंगा।

एक ने कहा, मैं तो रात को जागूंगा, और कभी नहीं सोऊंगा।

एक ने यह तै किया, कि मैं शादी नहीं करूंगा।

ताकि इबादत के लिए फ़ारिग़ रहूं, न बीवी हो न बच्चे हों, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को जब उनके इस इरादे का इल्म हुआ, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इस बात पर बहुत ज़्यादा गुस्सा आया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सबको जमा किया और उन्हें ख़ास तौर पर बुलाया, जिन सहाबा ने यह फ़ैसला किया था, कि मैं रोज़ा रखूं हमेशा और मैं जागूंगा हमेशा और मैं शादी नहीं करूंगा, उनको जमा किया और जमा करके फ़रमाया,

"مَنْ رَغِبَ عَنْ سُنَّتِيْ فَلَيْسَ مِنِّيْ"

"जो मेरे तरीक़े से फिरेगा, वह मेरी जमाअत में नहीं है"। लोग इस हदीस को पढ़ते हैं और अक्सर को यह मालूम नहीं है कि–

مَنْ رَغِبَ عَنْ سُنَّتِيْ فَلَيْسَ مِنِّيْ

यह बात आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कब फ़रमाई थी? यह बात आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस वक़्त फ़रमाई थी, जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा रज़ि० को एतिदाल से और सुन्नत तरीक़े से हटता हुआ पाया था, क्योंकि उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के मामलात को कम समझा और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बढ़कर अमल करने का इरादा किया। मेरी बात समझ में आ रही है आप लोगों को क्यों भाई! इसलिए मैं अर्ज़ कर रहा हूं, कि सब के सब मसनून दुआओं का एहतिमाम किया करो! मसनून दुआ की किताब ले लो! सब मसनून दुआ ही पढ़ा करो उन्हें याद किया करो उन्हीं को मांगा करो।

हज़रत रह० फ़रमाते थे कि मसनून दुआओं में क़ुबूलियत के रास्ते देखे गए हैं

बस मुझे मुख़्तसर अर्ज़ करना है, कि आप हज़रात उन अज़्कार का एहतिमाम किया करो, जो अज़्कार हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से साबित है उसमें एतिदाल। एक मर्तबा हज़रत जुवैरिया रज़ि० यह बहुत सारी गुठलियां जमा किए हुए पढ़ रहीं थीं। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम घर में दाख़िल हुए। तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने देखा कि वह गुठलियां पढ़ रही हैं और गुठलियों का ढेर लगा हुआ था आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछा कि क्या कर रही हो? कहा, अल्लाह का ज़िक्र कर रही हूं आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : कि मैंने यहां तेरे पास आकर खड़े होते ही ज़बान से ऐसे कलिमात कहे हैं अगर उन कलिमात का वज़न किया जाए, तो यह सारी गुठलियां ज़बान से जिन्हें तुम पढ़ी जा रही हो, उसके मुक़ाबले में जो मैंने पढ़ा, कोई वज़न नहीं है। जी हां, अज़्कारे मसनूना, अपने अंदर अल्लाह के सारे वायदे लिए हुए है।

इसलिए मेरे दोस्तों, बुज़ुर्गों और अज़ीज़ो! ज़रा अपने आप पर रहम करो, कि नुबूवत की इक़्तिदा, एतिदाल का रास्ता है यह नहीं कि मैं भी वह कर रहा हूं, जो फ़्लां बुज़ुर्ग ने किया, मैं भी वह पढ़ रहा हूं जो फ़्लां बुज़ुर्ग ने पढ़ा। मेरे दोस्तो! ज़िक्र में भी अल्लाह के नबी की इक़्तिदा करो, एक मज्लिस में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने 100 मर्तबा इस्तिग़्फ़ार किया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा रज़ि० से फ़रमाया : कि तुम लोग भी इस्तिग़्फ़ार करो, कि अज़्कारे मसनूना के अंदर एतिदाल है। हमारे साथी इसका एहतिमाम नहीं करते और यह चाहते कि मुझे कोई वज़ीफ़ा मिल जाए। हां, मुख़्तसर सा वज़ीफ़ा सुन्नत का वज़ीफ़ा है। इस तरह हमें अल्लाह के रास्ते में निकलकर ज़िक्र का एहतिमाम करना है ब-वुज़ू होकर, अल्लाह के ध्यान के साथ, अल्लाह का ज़िक्र करना है।

मेरे बुज़ुर्गों, अज़ीज़ों और दोस्तो! अगर दुआओं के ज़रिए अल्लाह की ज़ात से ताल्लुक़ पैदा हो गया तो यक़ीनी बात है, कि अल्लाह हमारे और बंदों के दर्मियान के हालात को ठीक कर देंगे। जो अपने और अल्लाह के दर्मियान के मामलात को ठीक कर लेगा, तो अल्लाह उसके और बंदे के दर्मियान के मामलात को ठीक कर देंगे। अल्लाह से मामलात ठीक करना यह है, कि दुआओं के रास्तों से अपने मसाइल को अल्लाह से हल कराया जा रहा हो। इसलिए कि जो शख़्स अल्लाह

से अपने मसाइल का हल न करा पाएगा, वह बंदों के हक़ मारेगा, उनके हक़ूक़ दबाएगा, इसलिए बंदों के हक़ूक़ वह मारता है जो अल्लाह के हक़ूक़ ख़ूब मार रहा हो और दुआ अल्लाह का हक़ है। जिसको अल्लाह के हक़ की परवाह नहीं है वह बंदों के हक़ूक़ की परवाह क्या करेगा, इसके लिए इकरामे मुस्लिम है, कि अल्लाह के रास्ते में निकलकर हमें इकराम की मश्क़ करनी है। अपने अंदर इकराम की सिफ़त पैदा करने के लिए इकराम की मश्क़ ख़िदमत से होती है, कि अल्लाह के रास्ते में निकलकर ख़िदमत करना, अपनी तर्बीयत के लिए है। ख़िदमत के लिए हर एक मुहताज होगा, जिस तरह तर्बीयत का हर एक मुहताज है, अल्लाह के रास्ते में निकलकर ख़िदमत में अपने आपको ख़ुद पेश करो, कि

लाओ खाना मैं बनाऊंगा,
लाओ लकड़ी मैं जलाऊंगा,
जंगल से लकड़ियां चुनकर मैं लाऊंगा।

जब अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जंगल से लकड़ियां चुनकर ला सकते हैं, तो मेरी और आपकी क्या हैसियत है। एक मर्तबा ये सारे काम सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हु पर बांट दिए गए, कि

बकरी कौन काटेगा,
गोश्त कौन बनाएगा,
खाना कौन पकाएगा,

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : कि मैं क्या करूंगा? सहाबा रज़ि० ने अर्ज़ किया कि आप तो अल्लाह के नबी हैं, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : कि मैं जंगल से लकड़ी चुनकर लाऊंगा, तो फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ुद तशरीफ़ ले गए और जंगल से लकड़िया चुनकर उठा लाए। ख़िदमत में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सहाबा रज़ि० के साथ इस तरह लगे रहते थे, कि बाहर से नए आने वालों को पूछना पड़ता था,

"أَيُّكُمْ مُحَمَّدٌ!"

कि तुममें से "मुहम्मद" कौन हैं? बाहर से आने वाला पूछता था, कि तुममें "मुहम्मद" कौन है? कोई इम्तियाज़ी (अलग) शान नहीं थी कि अमीर साहब है।

अमीर साहब सबसे आगे ख़िदमत में लगे हुए हैं।

इसलिए मेरे दोस्तो! ख़िदमत में लगना अपनी तर्बीयत के लिए है, वरना यह तो मुम्किन ही नहीं है, इंसान हो और ख़िदमत करने से उसकी तर्बीयत न हो? और ईमान वाला हो और उसके अंदर तवाज़ोह न हो। इसलिए हमें अल्लाह के रास्ते में निकलकर ख़ूब मश्क़ करनी है। ख़िदमत के ज़रिए अपने अंदर तवाज़ोह पैदा करने के लिए ख़िदमत में ख़ूब लगो और देखो। ये सारे काम, अल्लाह की रज़ा के लिए हों। उसके अलावा हमारी कोई ग़रज़ न हो, यह सब काम अल्लाह के लिए हो, क्योंकि हदीस में आता हैं, कि थोड़ी सी रिया (कोई अमल अल्लाह के अलावा दूसरों के लिए करना) भी शिर्क है। अल्लाह के ग़ैर का थोड़ा सा ख़्याल भी शिर्क है। ये सब काम महज़ अल्लाह की रज़ा के लिए हो इसके अलावा हमारी कोई ग़रज़ न हो। एक सहाबी रज़ि० ने आकर अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! एक आदमी नेक अमल करता है और उसका दिल यह चाहता है कि उसके अमल को कोई देख ले, आप उसके बारे में क्या फ़रमाते हैं? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : उसको कुछ नहीं मिलेगा। जी हां ! एक सहाबी ने आकर अर्ज़ किया, कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक आदमी कोई नेक अमल करता है और यह बात उसे ख़ुश करती है कि उसके अमल को कोई देख ले, आप उसके बारे में क्या फ़रमाते हैं? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ख़ामोश रहे, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर अल्लाह की तरफ़ से आयत नाज़िल हुई, कि जो शख़्स अपने अमल के ज़रिए अल्लाह से मिलना चाहता हो, उसको चाहिए कि अपने अमल को अल्लाह के लिए ख़ालिस कर ले, अल्लाह की इबादत में दूसरों को शरीक न करे, कि अल्लाह की इबादत का शिर्क यह है, कि बंदा अपने अमल से अल्लाह के ग़ैर को ख़ुश करना चाहे।

देखो मेरे दोस्तो! यह बहुत अहम मसअला है, यहां से आप जमाअत में निकलेंगे, तो वहां जब आप तहज्जुद पढ़ रहे होंगे, तो दिल में ख़्याल पैदा होगा कि काश अमीर साहब देख लेते, कि सब सो रहे हैं और मैं तहज्जुद पढ़ रहा हूं। गश्त में अल्लाह आपसे अच्छी बात करवा देगा, तो मस्जिद में आते ही अंदर जज़्बा यह होगा, कि काश!.......मेरे साथियों में से कोई मेरी बात अमीर साहब को बता दे,

कि अमीर साहब! उसने गश्त में बहुत अच्छी बात की है। हज़रत रह० फ़रमाते थे कि यह नीरा शिर्क है, नीरा शिर्क (खुला हुआ शिर्क) है कि दुनिया में तो अल्लाह उसको उम्दा जगह देंगे और आख़िरत में उसको कोई हिस्सा नहीं होगा, हां यह अंदर का जज़्बा होता है, कि शैतान अंदर यह ख़्याल पैदा करेगा, कि तुमने गश्त में बात बहुत अच्छी की थी, अगर अमीर साहब को मालूम हो जाएगा, तो फिर अमीर साहब तुमसे बात करवाएंगे, ऐसे आदमी के साथ अल्लाह की कोई मदद नहीं होगी।

मेरे दोस्तों, बुज़ुर्गों और अज़ीज़ो! जिस तरह हमें बुतों की शिर्क से हमें पनाह मांगनी है उसी तरह अमल के शिर्क से भी अल्लाह की पनाह मांगनी है। क्योंकि एक बुतों का शिर्क है और एक अमल का शिर्क है, बुतों का शिर्क यह है कि अल्लाह के ग़ैर की इबादत की जाए और अमल का शिर्क यह है, कि अमल को अल्लाह के ग़ैर के लिए किया जाए, ये दोनों शिर्क, जहन्नुम में ले जाएंगे। इसलिए अल्लाह से रो रोकर इख़्लास मांगो कि ऐ अल्लाह! तू हमारे अमल में इख़्लास पैदा फ़रमा दे, हमारे अमल को तो तू ही अपनी ज़ात के लिए ख़ालिस कर दे, वरना शैतान क़दम क़दम पर नीयत के अंदर फ़तूर पैदा करेगा और नीयत को बिगाड़ने की कोशिश करेगा, उसी तरह हमें अल्लाह के रास्ते में निकलकर इन छः सिफ़ात की मश्क़ करनी है। हमारा निकलना इसलिए हो रहा है ताकि यह बातें अपनी हक़ीक़त के साथ दिलों में उतार जाए, तो पूरे दिन पर चलने की इस्तिदाद यक़ीनन पैदा हो जाएगी।

इसलिए मेरे दोस्तों और अज़ीज़ो! पहली बात यह है निकलने में, कि हमारे दिलों में इस काम की अज़मत हो, इस काम की अज़मत और इस रास्ते में निकलने का एहतिमाम सहाबा रज़ि० के दिलों में था। क्योंकि उसमें कोई शक नहीं कि काम वही है, जो सहाबा किराम रज़ि० का था अल्लाह के रास्ते में निकलते हुए हमारे वह जज़्बात हो, जो जज़्बात सहाबा किराम रज़ि० के थे इस बात को दिल से यक़ीन करो कि अल्लाह के रास्ते कि एक सुबह और एक शाम दुनिया में और दुनिया में जो कुछ है उस सबसे बेहतर है, हमारा अगर ख़्याल यह है कि करने के काम और भी हैं ख़ैर के, क्या ज़रूरी है कि तब्लीग़ में निकल जाएं तो हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने रवाहा रज़ि० जब आदमी जमाअत से पीछे रह गए, तो क्यों पीछे रह गए,

दुकान के लिए?

भाई की शादी के लिए?

कारोबार के लिए?

बीवी बच्चों की ज़रूरतों के लिए या उनकी बीमारियों के लिए? नहीं, बल्कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ जुमा की नमाज़ पढ़ने के लिए, आपका ख़ुत्बा सुनने के लिए, आपकी मस्जिद की फ़ज़ीलत हासिल करने के लिए। कि मस्जिद नुबूवी की फ़ज़ीलत सारी मस्जिदों से ऊंची है सिर्फ़ उस फ़ज़ीलत को हासिल करने के लिए रुके, हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने रवाहा रज़ि० को ख़्याल हुआ कि जमाअत सुबह को रवाना हुई है मैं जुमे की नमाज़ पढ़कर चला जाऊंगा, मेरी बात ध्यान से सुनो! आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें देखकर फ़रमायाः कि अब्दुल्लाह! तुम गए नहीं?! अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह! मुझे तो यह ख़्याल हुआ कि मुझे यह फ़ज़ीलतें हासिल हों,

आपके पीछे नमाज़ पढ़ने की,

आपका ख़ुत्बा सुनने की,

कि मैं आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मस्जिद में यह फ़ज़ीलत हासिल कर लूं फिर जमाअत में जाकर मिल जाऊंगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः कि ऐ अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ि० अगर सारी दुनिया का माल तुम ख़ैर की राह में ख़र्च कर दो, तो तुम सुबह निकलने वाली जमाअत की फ़ज़ीलत हासिल नहीं कर सकते। देखो मेरी बात ध्यान से सुनो! अगर हमारा ख़्याल यह है, कि ख़ैर के काम, दुनिया में बहुत से हो रहे हैं, क्या यही काम ज़रूरी है? कि जमाअत ही में निकला जाए, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने रवाहा, यह बतलाकर, यह ख़्याल साफ़ कर दिया, कि अल्लाह के रास्ते की नक़ल व हरकत का कोई अमल, उसका किसी अमल से मुक़ाबला नहीं हो सकता, कि शबे क़द्र में हिजरे अस्वद और मुलतज़म के सामने कोई सारी रात इबादत करे और कोई एक आदमी कुछ देर के लिए अल्लाह के रास्ते में हो, तो उसकी फ़ज़ीलत उसका दर्जा और उसका मक़ाम, और उसके लिए सवाब, अल्लाह के यहां कहीं ज़्यादा बढ़ा हुआ है।

यहां सब ही माशाअल्लाह पुराने हैं इस मजमे में, इनसे अर्ज़ कर रहा हूं, कि

उन फ़ज़ाइल को हदीस में देखकर बार–बार बयान किया करो, वरना मज्मूए के अंदर और उम्मत के अंदर से इस रास्ते की नक़ल व हरकत के फ़ज़ाइल ख़त्म होते चले जाएंगे, और फिर यह काम, तंज़िम बन जाएगा, तंज़िम होती है ना तंज़िम! कि यह काम कोई तंज़िम नहीं है जो सहाबा रज़ि० की नक़ल व हरकत के फ़ज़ाइल हैं, वह हमारी नक़ल व हरकत के फ़ज़ाइल है। मौलाना युसूफ़ इसे बार–बार फ़रमाते थे कि काम वही है, जो नबियों का काम था, काम वही है जो सहाबा रज़ि० का काम था। इसलिए सहाबा रज़ि० की नक़ल व हरकत के ख़ूब फ़ज़ाइल बयान करो! अब मैं कैसे अर्ज़ करूं आपसे कि सबसे बड़ी चूक हमसे यह हुई, कि हमने सहाबा रज़ि० की नक़ल व हरकत को महज़ क़िताल पर महमूल करके छोड़ दिया। हालांकि वह जिहाद के फ़ज़ाइल हैं, क़िताल तो एक आरज़ी है, जो कभी पेश न आया। कितने गज़वात ऐसे हैं, जहां से बग़ैर क़िताल किए हुए सहाबा वापस आ गए, क्योंकि हिदायत मतलूब है, हलाकत मतलूब नहीं है। जितने सहाबा के नक़ल व हरकत के फ़ज़ाइल हैं वह तमाम के तमाम, इस रास्ते की नक़ल व हरकत के हैं।

इसलिए मेरे बुज़ुर्गों दोस्तों और अज़ीज़ो! एक बार सहाबा रज़ि० ने यह तैय किया की, कि सिर्फ़ 6 महीने की छुट्टी ले लें।

जिसमें हम मक़ामी काम के साथ अपना कारोबार देख लें,
बीवी बच्चों को देख लें,
टूटे हुए मकान ठीक कर लें,
उजड़े हुए खेत दुरूस्त कर लें,

तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: कि अगर तुमने यह इरादा कर लिया है, तो अल्लाह की तरफ़ से आयत नाज़िल हो गई है।

﴿وَلَا تُلْقُوا بِأَيْدِيكُمْ إِلَى التَّهْلُكَةِ﴾

"कि आपने हाथ अपने को हलाकत में न डालो"

अगर तुमने छः महीने के लिए भी यह तैय कर लिया कि छः महीने तक निकलना नहीं है। हज़रत रह० फ़रमाते थे कि सहाबा ने छः महीने मदीने में ठहरना,

मकामी काम के साथ तैय किया था. फ़ौरन अल्लाह ने आयत नाज़िल कर दी कि "अपने हाथ अपने को हलाकत में न डालो।" जैसे ही बाद वालों ने इस आयत का इस्तेमाल, इस काम के अलावा में किया तो फ़ौरन हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि० बोल पड़े, कि तुम ग़लत कहते हो, यह आयत हमारे बारे में नाज़िल हुई है, कि हम अंसार ने एक बार यह सोचा था, कि छः महीने मदीने में क़ियाम कर लें, तो आयत नाज़िल हो गई–

"कि अपने हाथों अपने को हलाकत में न डालो"

हाए!!.......हमें इस नक़्ल व हरकत का अंदाज़ा नहीं है इसलिए हम सहाबा रज़ि० की नक़्ल व हरकत को अपने इस काम की नक़्ल व हरकत से कम समझते हैं।

"हयातुस्सहाबा" (हज़रत मौलाना यूसुफ़ रह० ने किताब लिखी है जिसमें सहाबा रज़ि० की ज़िंदगी के बारे में पूरी तफ़्सील से लिखा हुआ है) ख़ूब पढ़ा करो

इसलिए मेरे बुज़ुर्गों दोस्तों और अज़ीज़ो! "हयातुस्सहाबा" ख़ूब पढ़ा करो, कोई रात ऐसी बाक़ी न रहे जिसमें "हयातुस्सहाबा" न पढ़ी जाए, बशर्तेकि साल लगाया हुआ आलिम हो। आम तौर पर मैं सारे मज्मा से कह रहा हूं जितने जमाअत में जाने वाले और वापस जाने वाले, ये सब यह तैय करें कि "हयातुस्सहाबा" हम में से हर एक के इंफ़िरादी मुताले (खुद पढ़ना) में रहेगी, हमें पता तो चले, हम क्या कर रहे हैं और सहाबा ने क्या किया है? अगर ऐसा न किया तो हमारा रास्ता अलग होगा, उनका रास्ता अलग होगा। यह तो सहाबा किराम रज़ि० खुद डरते थे, कि अगर हमने ऐसा न किया, तो हम पिछलों के रास्ते पर नहीं जा सकते, हम उनसे नहीं मिल सकते। जी हां! इसलिए मेरे बुज़ुर्गों दोस्तों और अज़ीज़ो! इस रास्ते के नक़्ल व हरकत के वही फ़ज़ाइल है जो सहाबा रज़ि० के नक़्ल व हरकत के फ़ज़ाइल हैं, इस रास्ते की एक सुबह और एक शाम दुनिया और माफ़िहा से बेहतर है। आधा दिन अल्लाह के रास्ते का 500 साल के बराबर है।

कि अल्लाह ने फिरने वालों को, मक़ाम पर बैठने वालों के मुक़ाबले में बड़ी फ़ज़ीलत दी है, वे सारे फ़ज़ाइल उस रास्ते में फिरने वालों के लिए है, जो सहाबा

रज़ि० के लिए थे। अल्लाह के रास्ते में पैदल चलना, सबसे ज़्यादा अल्लाह के गुस्से को ठंडा करने वाला अमल है, क्योंकि इसमें कोई शक नहीं, कि अल्लाह के गज़ब का सबसे बड़ा मज़हर जहन्नम है और यह बात हदीस से साबित है सही रिवायतों से कि अल्लाह के रास्ते का गुबार (धूल–मिट्टी) और जहन्नम की आग यह कभी जमा नहीं हो सकती। अल्लाह के रास्ते में जागना या फेरा देना। ख़ूब समझ लो, ऐसी आंख जहन्नम की आग को देखेगी नहीं जो अल्लाह के रास्ते में जागी हो।

इसलिए मेरे बुज़ुर्गों दोस्तों और अज़ीज़ो! हाए!!.....मैं कैसे अर्ज़ करूं.....जितने भी यहां बैठे हुए हैं, जो इस वक़्त नहीं जा रहे हैं जमाअत में, वे सोच रहे होंगे, कि भाई ठीक है अल्लाह के रास्ते में निकलना चाहिए, पर अभी हमारा मौक़ा नहीं है जाने का। हाए!!.......हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने रवाहा रज़ि० आधे दिन पीछे रह गए, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: कि 500 साल पीछे रह गए हो। जो अभी नहीं जा रहे हैं, वे अब ज़रा बैठकर सोचें, उन्हें अंदाज़ा नहीं है, कि यह काम कितनी तेज़ रफ़्तारी से अल्लाह के क़रीब होने को है। मौलाना इलयास साहब रह० फ़रमाते थे कि इस काम से बढ़कर अल्लाह के क़रीब होने का, तेज़ रफ़्तारी का कोई अमल नहीं है। यह जज़्बात हमारे अल्लाह के रास्ते में निकलने के है और जहां तक हो सके पैदल चलियो, जितने अल्लाह के रास्ते में निकल रहे हैं, और वे जो इस वक़्त नहीं जा रहे हैं वापस घरों को जा रहे हैं और आस–पास के इलाक़ों से आए हुए लोग भी, उन सबसे मेरी दरख़्वास्त है कि यहां से पैदल काम करते हुए जाओ!

तालीम का,
गश्त का,
नमाज़ों का,
ज़िक्र का,
तिलावत का,
घर–घर मुलाक़तों का,
दावत का,

माहौल क़ायम करते हुए जाओ और जितने लोग यहां से अल्लाह के रास्ते में निकल रहे हैं, इस सूबे में या सूबे से बाहर अगर यहां से दुनिया की बातें करते

हुए गए, तो वे सारे अनवारात ज़ाया करके जाओगे, जो यहां तीन दिन के माहौल में हासिल हुए हैं आपस में यही बात करते हुए जाओ जो बातें यहां अर्ज़ की गई हैं, आमाल करते हुए जाओ जो अल्लाह के रास्ते में निकलने वाले हैं, वह अपनी जमाअत में मुज्तमआ होकर चले, अमीर की इताअत के साथ चलें, ट्रेन में या बस में, जिस गाड़ी में सफ़र करें, सफ़र में हर एक को दावत दें, हर एक से मुलाक़ात करें, यह न देखेंगे कि हमारी जमाअत का आदमी है, या कौन है?

सबसे बड़ी दावत और हिक्मत इकराम है।

देखो मेरे दोस्तों और अज़ीज़ो! हर एक को सलाम करो, हर एक को दावत दो वरना हदीस में आता है, कि जान–पहचान की वजह से सलाम करना, क़ियामत की निशानियों में से है लोग सलाम करते हैं ना! वे भी उन्हें सलाम करते हैं, जिनसे जान–पहचान है, वरना कितने मुसलमानों से इनका सुबह–शाम मिलना होता है, पर कोई सलाम का एहतिमाम नहीं करता, इसलिए हर एक को सलाम करो, हर एक को दावत दो, दावत अल्लाह की तरफ़ है! और देखो! सबसे बड़ी दावत और हिक्मत इकराम है। तुम ट्रेन में बैठोगे, या बस में बैठोगे, अमीर साहब कहेंगे जाओ, दस आदमी की जमाअत है दस चाय ले आओ, तौबा.......तौबा......यह बख़ीलों की जमाअत है। हज़रत रह० फ़रमाते थे तुम्हारी नक़ल व हरकत इस्लाम को फैलाने के लिए है, इस्लाम, इकराम से फैला है, ख़ूब ख़र्च करो, तुमसे कहेंगे यह तश्कील वाले कि हां, तुम्हारा रूख़ हमने फ़लां इलाक़े का बना दिया है, यहां से तुम्हारी जमाअत फ़लां जगह जाएगी, 500 रूपये काफ़ी है तुम्हारे ख़र्च के लिए। नहीं बल्कि इनसे कहो! हम अल्लाह के रास्ते में निकल रहे हैं, ज़्यादा लेकर जाएंगे। सबका इकराम करेंगे, खिलाएंगे–पिलाएंगे। वह तो हज़रत रह० फ़रमाते थे, कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ग़ैर को भी इस्लाम की तरफ़ राग़िब किया है, अपनी ज़ात से ख़ूब ख़र्च करके किया है। भरी हुई वादी बकरियों की एक मुश्रिक को दे दी कि वह आंखें घुमा–घुमाकर देख रहा था, वादी जो बकरियों से भरी हुई थी। वह वहीं इस्लाम में दाख़िल हुए, लेकिन मज़ेदार बात यह थी कि जैसे ही वह इस्लाम में दाख़िल होते थे, उसके साथ–साथ दिल में माल की नफ़रत भी दाख़िल हो जाती थी।

इसलिए मैं अर्ज़ कर रहा था, कि अल्लाह के रास्ते में शौक़ से ख़र्च किया

करो। दूसरों पर ख़र्च करना, ख़ुद एक अमल है, अल्लाह के रास्ते में ख़ूब ख़र्च किया करो, अमीर साहब से कहो, आप सबके लिए चाय मंगा लो, सबके लिए बिस्किट मंगा लो, पैसे मैं देता हूं! ग़ैर बैठे हुए होंगे ट्रेनों, में बसों में, इनका भी इकराम करो, इनसे भी मुलाक़ात करो, आपस में ख़ूब अल्लाह की बड़ाई को बोलो, वे भी सुन रहे होंगे, अल्लाह की अज़मत को, उसकी क़ुदरत को, अल्लाह का तारुफ़ उन्हें भी कराओ।

देखो मेरे दोस्तों और अज़ीज़ों! बात साफ़-साफ़ यह है, कि हम तो अल्लाह की तरफ़ बुला रहे हैं, हमारा बुलाना किसी ख़ास तरीक़े की तरफ़, किसी ख़ास जमाअत की तरफ़, या किसी की ज़ात की तरफ़ बुलाना नहीं है, न ही हमें लोगों को तब्लीग़ी जमाअत में दाख़िल होने की दावत देनी है, बल्कि हम तो अल्लाह की तरफ़ बुला रहे हैं, बस यह ही उम्मत के बनने का रास्ता है, कि तुम उम्मती बनकर दावत दो।

"जमाअत" ख़ुद तफ़रीक़ (इंतिशार) का लफ़्ज़ है

हज़रत मौलाना इलयास साहब रह० फ़रमाते थे, "कि जमाअत" ख़ुद "तफ़रीक़" का लफ़्ज़ है, अगर हम लोगों से कहे कि हमारी जमाअत में आ जाओ, तो यह कहकर हमने मुक़ाबला खड़ा कर दिया हम जमाअत बन गए। देखो! जमाअत से जमाअत बनती है, फ़िरक़े से फ़िरक़े बनते हैं। उम्मत का सबसे बड़ा नुक़सान यही है, जमाअत से जमाअत बनाई जाए और फ़िरक़े से फ़िरक़े बनाए जाए! बल्कि हम तो बुला रहे हैं अल्लाह की तरफ़, इसलिए हर एक को दावत दो, हम किसी फ़िरक़े किसी जमाअत, किसी ग्रुप की तरफ़ नहीं बुला रहे हैं।

इसलिए मेरे बुज़ुर्गों, दोस्तों और अज़ीज़ो! ट्रेनों में, बसों में, बैठे हुए लोगों को दावत देते हुए जाओ, मुलाक़ाते करते हुए जाओ, जिसको दावत दो, उसे भी दावत देने वाला बनाकर छोड़ो कि देखिये भाई! आपसे हमारी बात हो रही है, माशाअल्लाह आपने इरादा कर लिया है, अब आप भी दूसरों तक यह बात पहुंचा देना। जिससे दीन की बात करो, उसे दावत देने वाला बनाकर छोड़ो।

इस तरह हमें इनशाअल्लाह दावत देते हुए, इबादत करते हुए चलना है, अगर ट्रेन में बैठे हुए हो तो तालीम का हल्क़ा ट्रेन में न करो, तालीम के हल्क़े में यकसूई

होनी चाहिए। ट्रेन में साथी अलग–अलग जगह बैठे हैं, इधर–उधर, वहां तालीम का हल्का मुश्किल है। मेरी बात याद रखो! तालीम के लिए किताब हर साथी के पास अपनी अलग–अलग किताब होनी ज़रूरी है। दस आदमी हैं जमाअत में, दस के दस साथी की किताब अलग–अलग होनी चाहिए। यह नहीं है कि एक किताब सारी जमाअत के पास हो, बल्कि हर एक अपनी किताब ख़रीद ले, जब किताब लेकर बैठेगा, बस में या ट्रेन में, तो बराबर में कोई आदमी आकर बैठेगा, उससे नाम पूछो, तो उसे सलाम करो, कि भाई देखो! मेरे पास एक किताब है, मगर मैं पढ़ा नहीं हूं आप ज़रा पढ़कर सुना दीजिए, कि इसमें क्या लिखा हुआ है? हो गई तालीम, वह खुद भी सुनेगा, इसके लिए तब्लीग़ हो रही है, इसके लिए भी तालीम हो रही है, वह भी पढ़ रहा है, कोई कहेगा "अल्लाहु अक्बर" हमें तो खबर नहीं थी कि इस किताब में यह लिखा हुआ है। नमाज़ छोड़ने पर यह अज़ाब है, नमाज़ पढ़ने पर यह सवाब है। इस तरह ट्रेन में, बस में, हर एक के पास अपनी–अपनी अलग–अलग किताब होनी ज़रूरी है, ताकि अकेले में इसको पढ़ सकें।

"जमाअत" दिए हुए रुख़ पर पहुंचकर क्या करे

जहां का हमारा रुख़ बना है हमारे साथी इकट्ठे होकर ट्रेन, बस या जो भी सवारी हो, उससे उतरकर अपना सामान खुद उठाए और अपना सामान देख लें, अपने साथियों को भी देख लें कि सारे साथी हैं, या नहीं, फिर बस्ती में दाख़िल होने से पहले दुआ मांग लें। मसनून दुआ है, इसको याद कर लें, अल्लाह से उस बस्ती वालों की मुहब्बत भी मांग लें, और उस बस्ती की ख़ैर को भी मांग लें। अंबिया अलैहिस्सलाम दोनों की मुहब्बत अल्लाह से मांगते थे कि ऐ अल्लाह! उनकी मुहब्बत हमारे दिलों में और हमारी मुहब्बत उनके दिलों में डाल दे क्योंकि वे बात सुनेंगे नहीं, जब तक कि मुहब्बत नहीं होगी, इस तरह दुआ मांगकर बस्ती में दाख़िल हों।

हमारी शुरूआत मस्जिद से होगी, सबसे पहले जमाअत, मस्जिद में पहुंचे, यह न हो, कि बाज़ार से गुज़र रहे हैं क्यों न सामान ख़रीदते हुए चलें, कि चावल की ज़रूरत पड़ेगी ही, यहीं से ले लें। नहीं देखो! सबसे पहले मस्जिद की तरफ़ जाओ, जिस चीज़ पर तुम क़दम रखोगे, वही तुम्हारा मक़सद है, अगर खाने–पीने में सबसे पहले लग गए, तो यही मक़सद बन जाएगा। सबसे पहले मस्जिद में जाओ, सुन्नत

तरीक़े से मस्जिद में दाख़िल हो, सामान एक तरफ़ हो क़ुरैने (सलीक़े) से लगा दो। मस्जिद में सामान न बिखेरना, स्टोप या कोई बदबूदार चीज़ मस्जिद में न रखना। मस्जिद में लहसन, प्यास वग़ैरह खाकर न जाओ। हदीस में आता है कि जो प्याज लहसन खाए वह हमारी मस्जिद के क़रीब न आए, इसलिए सामान अपना मस्जिद के बाहर के हिस्से में रखो, ऐसे क़ुरैने (सलीक़े) से रखो, कि आने वाले लोगों को तक्लीफ़ न हो। मस्जिद का एहतिराम करो, मकरूह वक़्त न हो तो दो-दो रकआत "तहीयातुल मस्जिद" पढ़ लो, कि मस्जिद में दाख़िल होकर अल्लाह के घर में दाख़िल होने का मुंह बना लो। फिर सबको मश्विरे की तरफ़ मुतावज्जोह करो, अगर मक़ामी साथी मश्विरे में हो, तो अच्छी बात है, वह न हो, तो उनका इंतिज़ार न करो, अपना मश्विरा कर लो। 24 घंटे का नज़्म बना लो कि हमें यहां काम किस तरह करना है, मक़ामी लोगों को साथ ले लो उनसे पूछो यहां वक़्त लगाए हुए साथी कितने हैं? मुलाक़ातों का कौन-सा वक़्त मुनासिब है। मुक़ामी से इसका मश्विरा करो, घर-घर की मुलाक़ातों का नज़्म बना लो, हमें सबसे ज़्यादा उमूमी गश्त को, उमूमी काम को, आगे रखना होगा, थोड़ी-सी मुलाक़ातें, यह भी एक ज़रूरी काम है। कि यहां उलमा है यहां मालदार क़िस्म के बड़े लोग हैं, उनकी मुलाक़ात के लिए भी जाना है मालदारों के माल से अगर मुतासिर होकर दावत दी वह तुम्हारी बात से हरगिज़ मुतासिर न होंगे, जितना असर उनकी दुनिया का तुम्हारे दिलों पर होगा, उतनी ही हिकारत से वह तुम्हारे दीन की बात को सुनेंगे और जितनी नफ़रत तुम्हारे दिल में दुनिया की होगी उतनी ही मुहब्बत से वह तुम्हारी बात को सुनेंगे मगर उनकी चीज़ को बुरा मत कहना, उनकी चीज़ों की नफ़रत दिल में तो हो, पर ज़ुबान तक न आए।

याद रखो अगर तुम्हारे दिलों में उनकी चीज़ों की मुहब्बत हो, तो तुम यह बात उनके सामने कह नहीं सकोगे, तुम्हारी ज़ुबान नहीं उठेगी, क्योंकि तुम मदद की दुनिया से मुतासिर होकर दावत दे रहे हो, इस तरह हमें दोस्तो! हर एक से मुलाक़ात करनी है। उमूमी गश्त में एक-एक के पास जाओ, मस्जिद के लिए नक़द निकालकर मस्जिद के माहौल में ले आओ। यहां लाकर तैयार करो, चार-चार महीने की तश्कील करो, जो तैयार हो जाए उनसे कहो कि आप तैयारी करके

यहां आ जाएं, देखो! उन्हें छोड़ न देना, वरना यह हाथ नहीं आने के। इसलिए उन्हें फिर वसूल करना है, उसके लिए हमें वसूली गश्त भी करना है। मैं तालीमी गश्त बता चुका हूं, कि वह तालीम के दर्मियान होगा, इस तरह हमें पांच तरह के गश्त करना है, तालीमी गश्त, उमूमी गश्त, खसूसी गश्त, तश्कीली गश्त, वसूली गश्त। वसूली गश्त में उन्हें वसूल करके लाना है यहां उनको वसूल करके लाना है *मस्जिद के माहौल में लाना ही असल है।*

देखो मैंने शुरू ही में अर्ज़ किया था कि मस्जिद के माहौल में लाने ही असल है। इस तरह दावत देकर हर जगह से नक़द जमाअतें बनाकर अल्लाह के रास्ते में निकालनी है। जहां से जमाअत बनाओ, चार-चार महीने की, चिल्ले की, वहीं के मक़ामी वक़्त लगाए साथियों के मश्विरे से उनका ज़िम्मेदार बना दो और हर जगह से नक़द जमाअतें निकालना है हर मस्जिद में जब तक 5 काम उस मस्जिद का गश्त, मस्जिद की तालीम और घर की तालीम, तीन दिन की जमाअत का निकालना और मस्जिद का मश्विरा कम से कम ढाई घंटा मस्जिद में फ़ारिग़ करके मस्जिद की आबादी की मेहनत, यह जब तक शुरू न हो जाए उस वक़्त तक कोई जमाअत उस मस्जिद से आगे न बढ़े। देखो मेरी बात नोट कर लो! असल में हमारी जमाअतें इलाक़ों का सरवे करके आ जाती हैं। फिरना असल नहीं है, हर मस्जिद में 5 काम क़ायम करते हुए जमाअत को आगे ले जाओ, जमाअत की नक़ल व हरकत से तो हर इलाक़े का माहौल बदलना है, जहां आप यह देखेंगे कि आमाल ज़िंदा हो गए, तो अब वहां से आगे बढ़ जाओ। चाहे आपको इस इलाके में ही 4 महीने लगाने पड़ जाएं, चाहे एक इलाके में चिल्ला लगाना पड़ जाए। मेरे नज़दीक जमाअत को अपनी जगह से आगे बढ़ना उस वक़्त तक मुनासिब नहीं है जब तक वहां काम नज़र न आने लगे। इसी तरह करेंगे इनशाअल्लाह! कि इस तरह हमें हर जगह से नक़द जमाअतें निकालनी है।

यहां यह सारा जितना मज्मा इस वक़्त जमा है। यह तैय करके जाए, कि हम इनशाअल्लाह इस काम को मक़सद बनाकर करेंगे। इस तरह इनशाअल्लाह हम को दावत देते हुए चलना है, हर जगह से नक़द जमाअतें निकालनी है। और यह जितना मज्मा है, यह तो सारा यह तैय करके जाए कि इनशाअल्लाह किसी हालत

में नमाज़ नहीं छोड़ेंगे। देखो मेरे बुज़ुर्गों, दोस्तों और अज़ीज़ो! मुसलमान से यह कहना कि नमाज़ नहीं छोड़ोगे बड़ी ग़ैरत की बात है। बड़ी शर्म की बात है कि मुसलमान से कहना कि नमाज़ न छोड़ना। इसका तो कोई तसव्वुर ही नहीं कर सकता कि मुसलमान नमाज़ छोड़ दे, कि मुसलमान कुफ़्र करे, यह तो हो ही नहीं सकता, मुसलमान शराबी हो सकता, मुसलमान ज़ीना कर लें, यह हो सकता है, मुसलमान जुआ खेल ले, यह हो सकता है, मुसलमान सूद खा ले यह भी हो सकता है लेकिन मुसलमान नमाज़ छोड़ दे? इसका तो कोई तसव्वुर ही नहीं कर सकता, पिछले ज़माने में मुसलमान की पहचान नाम से या उसकी नसल से नहीं होती थी बल्कि मुसलमान की पहचान जो होती थी वह नमाज़ से होती थी कि वह नमाज़ी है यानी मुसलमान है।

इसलिए मेरे बुज़ुर्गों, दोस्तों और अज़ीज़ो! यह पूरा मज्मा तैय कर ले कि इनशाअल्लाह किसी हालत में नमाज़ नहीं छोड़ेंगे। अब दुआ का वक़्त है सारा मज्मा अल्लाह की तरफ़ मुतावज्जोह हो जाए, कोई उज़्र न हो तो ऐसे बैठते जैसे "अत्ताहियात" में बैठे हैं सारा मज्मा इस तरह बैठ जाए जिस तरह "अत्ताहियात" में बैठे हैं। अल्लाह की तरफ़ पूरी तरह मुतावज्जोह होकर सारी उम्मत के लिए और सारी इंसानियत के लिए अल्लाह से मांगना है।
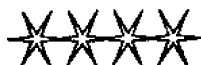
ईमान की

तक़्वीयत (मज़बूती)

के चार सबब

क़ुदरत

﴿وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَابِّ وَالْأَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهُ كَذَٰلِكَ إِنَّمَا يَخْشَى اللَّهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمَاءُ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ غَفُورٌ﴾

अल्लाह तआला का इर्शाद है : कि अल्लाह तआला से इसके वही बंदे डरते हैं, जो उसकी क़ुदरत का इल्म रखते हैं। (अल–फ़ातिर : 28)

﴿قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللَّهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ إِلَٰهٌ غَيْرُ اللَّهِ يَأْتِيكُمْ بِلَيْلٍ تَسْكُنُونَ فِيهِ أَفَلَا تُبْصِرُونَ وَمِنْ رَحْمَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَلِتَبْتَغُوا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ﴾

अल्लाह तआला का इर्शाद है : कि ऐ नबी! आप उनसे पूछिए, कि ज़रा यह तो बताओ! कि अगर अल्लाह तआला तुम पर हमेशा क़ियामत के दिन तक रात ही रहने दें, तो अल्लाह के सिवा कौन सा माबूद है, जो तुम्हारे लिए रोशनी ले आए क्या तुम लोग सुनते नहीं हो? आप उनसे यह भी पूछिए, कि यह बताओ अगर अल्लाह तआला तुम पर हमेशा क़ियामत के दिन तक दिन ही रहने दें तो अल्लाह तआला के सिवा कौन सा माबूद है जो तुम्हारे लिए रात ले आए? ताकि उसमें आराम करो, क्या तुम देखते नहीं?!! (सूरः क़सस, 63–64)

क़ुदरत चार चीज़ों के मज्मे को कहते हैं।

1. जब चाहे।
2. जहां चाहे।
3. जैसे चाहे।
4. जो चाहे।

जिसके अंदर ये चारों सिफ़ात मौजूद हो, वह क़ुदरत वाला कहलाने का हक़दार है और उसी को क़ुदरत वाला कहा जाएगा। जब इस बात पर ग़ौर किया जाएगा, तो पता यह चलेगा कि ये चारों सिफ़ात सिर्फ़ अल्लाह तआला की ज़ात के साथ ही वाबस्ता है। इसलिए हमें सबसे पहले इस बात को समझना है, कि–

1. कुदरत वाला कौन है?

2. किसके अंदर ये चारों सिफ़ात हैं?

3. कौन हर चीज़ के करने पर क़ादिर है?

4. किसने ऐसा करके दिखाया है और कौन ऐसा कर सकता है?

तो पता यह चलेगा कि हर चीज़ के करने पर सिर्फ़ अल्लाह तआला की ज़ात ही क़ादिर है। यह बात नीचे लिखे जा रहे चंद वाक़िआत से समझ में आती है, कि अल्लाह तआला ने–

बग़ैर मां और बाप के हज़रत आदम अलै० को बना दिया।

बग़ैर मां की कोख के हज़रत हव्वा अलै० को बना दिया।

बग़ैर ज़मीन के सात ज़मीनों को बना दिया।

बग़ैर सूरज के सूरज और बग़ैर चांद के चांद बना दिया।

बग़ैर तारों के तारे बना दिए।

इसी तरह ज़मीन पर शुरूआत के वक़्त यानी पहली बार: बग़ैर अंडों के परिंदों को बना दिया।

बग़ैर जानवर के इस ज़मीन पर जानवर बना दिया। हमें अपनी पहचान कराने के लिए अपनी मुआरफ़त (अल्लाह की कुदरत) देने के लिए, अब जानवरों के पेट में जानवरों को और अंडे के अंदर परिंदे बनाकर दिखाते हैं पर ईमान न सीखने की वजह से लोगों का यक़ीन बन गया कि चीज़ों से निकलने वाली चीज़ें, चीज़ों से बनती हैं। जबकि अल्लाह तआला ने खुद यह बात साफ़ कर दी है कि किसी मख़लूक़ में किसी चीज़ को बनाने की कुदरत नहीं है।

﴿وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ لَا يَخْلُقُونَ شَيْئًا وَهُمْ يُخْلَقُونَ﴾

अल्लाह तआला का इर्शाद है: कि इंसान जिन चीज़ों को अल्लाह के सिवा पुकारता है, यह सब मिलकर भी कोई चीज़ नहीं बना सकते हैं, बल्कि इन सबको खुद अल्लाह तआला ही ने बनाया है। (सूरः नह्ल)

﴿قُلْ مَنْ بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ يُجِيرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ
سَيَقُولُونَ لِلَّهِ قُلْ فَأَنَّىٰ تُسْحَرُونَ﴾

अल्लाह तआला का इर्शाद है: ऐ नबी! आप इनसे पूछिए कि ऐसा कौन है जिसके हाथ में हर चीज़ का तसरुफ़ व इख़्तियार है और वह पनाह देने वाला है? अगर तुम (लोग) जानते हो तो, बताओ? तो (ज़ुबान से) यहीं कहेंगे, कि अल्लाह है। तो आप उनसे कहिए कि फिर (अल्लाह के ग़ैर के) क्यों दीवाने बने फिर रहे हो। (सूरः मोमिन, 88–89)

इस बात को बतलाने के लिए और समझाने के लिए कुरआन ने वाक़िआत बयान किए हैं, कि हज़रत सालेह अलै० की क़ौम के लिए पहाड़ से ऊंटनी निकाल दी।

हज़रत मूसा अलै० के हाथ के अंगूठे से दूध और शहद निकाल दिया।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और हज़रत ईसा अलै० के लिए पका हुआ खाना बर्तन के साथ आसमान से उतार दिया।

कुंवारी मरयम की कोक से ईसा अलै० को पैदा कर दिया।

बनी इसराइल के लिए 40 चालीस साल तक के लिए हलवा और बटेर उतार कर खिला दिया।

उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा के लिए आसमान से रस्सी से बंधा पानी से भरा हुआ धोल उतार दिया।

हज़रत खुबैब रज़ि० के लिए बंद कमरे में आसमान से अंगूर का खोशा उतार दिया।

जिस तरह मरयम के लिए उनके कमरे में आसमान से फल उतारा करते थे।

मेरे दोस्तो! यह सारा का सारा निज़ाम अल्लाह तआला ने अपनी कुदरत से चलाया है और अल्लाह की यह कुदरत अल्लाह की ज़ात में है, कि कायनात की किसी भी शक्ल में चाहे वह शक्ल

चींटी की हो या जिब्रील की,
ज़मीन की हो या आसमान की,
ज़र्रा की हो या पहाड़ की,
क़तरे की हो या समुंद्र की,

यानी अर्श से लेकर फ़र्श (ज़मीन) के दर्मियान की शक्ल में अल्लाह की क़ुदरत नहीं है, अल्लाह की क़ुदरत सिर्फ़ अल्लाह की ज़ात में है।

हां! ये सारी शक्लें बनी तो हैं, उनकी क़ुदरत से लेकिन किसी शक्ल में कुछ बनाने और कुछ करने की क़ुदरत नहीं है, क़ुदरत तो अल्लाह की ज़ात में है।

सूरज में रोशनी बनाने की क़ुदरत नहीं है, वरना क़ियामत के दिन सूरज बे-नूर क्यों हो जाएगा?

खेत में ग़ल्ला और सब्ज़ी बनाने की क़ुदरत नहीं है, वरना ज़मीनें बंजर क्यों पड़ी रहती?!

पेड़ों में फल और मेवे बनाने की क़ुदरत नहीं है, वरना हमेशा फल क्यों नहीं देते?!

बादलों में पानी बनाने की क़ुदरत नहीं है। वरना हर बादल पानी बरसाता?

जानवरों और औरतों में दूध बनाने की क़ुदरत नहीं है वरना हर औरत और जानवर से हमेशा दूध आता?!

शहद की मक्खी में शहद बनाने की क़ुदरत नहीं है, वरना हर छत्ते से हमेशा शहद निकलता?!

पहाड़ों के अंदर सोना, चांदी बनाने की क़ुदरत नहीं है वरना हर पहाड़ से सोना, चांदी निकलता?!

ज़मीनों में कोयला, सीसा, तांबा, पीतल, लोहा, पैट्रोल, गैस और पानी बनाने की क़ुदरत नहीं है, वरना हर जगह की ज़मीन से ये चीज़ें निकलती?!

ये जो कुछ इन शक्लों के अंदर से निकलकर हमें मिल रहा है। जैसे–

जानवरों की शक्लों से दूध,
पेड़ों की शक्लों से ग़ल्ला और सब्ज़ियां,
शहद की मक्खियों के छत्ते से शहद,
बादल की शक्ल से पानी और,
सूरज की शक्ल से रोशनी वग़ैरह,

ये सारी चीज़ें आसमानों में मौजूद, अल्लाह के ग़ैबी ख़ज़ानों से, फ़रिश्तों के ज़रिए उन शक्लों में भेजी जा रही हैं, जो हमें आते हुए नज़र तो नहीं आते, पर

निकलते हुए नज़र आ रहे हैं।

यह बात नीचे लिखी हुई कुरआन की आयतों और हदीसों से समझी जा सकती है।

﴿وَفِي السَّمَاءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوعَدُونَ ۝ فَوَرَبِّ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ إِنَّهُ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَا أَنَّكُمْ تَنطِقُونَ﴾

अल्लाह तआला का इर्शाद है: कि तुम्हारी रोज़ी और जिस चीज़ का तुमसे वायदा किया जाता है, वह सारे आसमान में है। तो आसमानों और ज़मीनों के मालिक की क़सम! यह बात उसी तरह यक़ीन के क़ाबिल है, जिस तरह तुम्हारा एक–दूसरे से बात करना यक़ीनी है। (सूरः ज़ारियात, 22–23)

﴿يَا أَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوا نِعْمَتَ اللَّهِ عَلَيْكُمْ ۚ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللَّهِ يَرْزُقُكُم مِّنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۚ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ﴾

अल्लाह तआला का इर्शाद है: लोगों! अल्लाह तआला के उन एहसानात को याद करो, जो अल्लाह तआला ने तुम पर किए हैं, ज़रा सोचो तो सही, कि अल्लाह तआला के अलावा कोई और है?! जिसने तुम्हें बनाया हो और जो तुम्हें आसमान व ज़मीन से रोज़ी पहुंचाता हो?! सच्ची बात यह है कि अल्लाह तआला के अलावा कोई और ज़रूरतों को पूरा करने वाला है ही नहीं, फिर अल्लाह तआला को छोड़कर किस पर भरोसा कर रहे हो। (सूरः फ़ातिर, 3)

﴿وَإِن مِّن شَيْءٍ إِلَّا عِندَنَا خَزَائِنُهُ وَمَا نُنَزِّلُهُ إِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُومٍ﴾

अल्लाह तआला का इर्शाद है: कि हमारे पास हर चीज़ के ख़ज़ाने भरे पड़े हैं, लेकिन हम हिक्मत के तहत हर चीज़ को तैयशुदा मिक़्दार से (आसमानों के ऊपर से) उतारते रहते हैं। (सूरः हिजर, 21)

﴿أَفَرَأَيْتُمُ الْمَاءَ الَّذِي تَشْرَبُونَ ۝ أَأَنتُمْ أَنزَلْتُمُوهُ مِنَ الْمُزْنِ أَمْ نَحْنُ الْمُنزِلُونَ ۝ لَوْ نَشَاءُ جَعَلْنَاهُ أُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُونَ﴾

अल्लाह तआला का इर्शाद है: अच्छा फिर यह बताओ! कि जो पानी तुम पीते

हो, उसको बादलों से तुमने बरसाया. या हम इसको बरसाने वाले हैं? अगर हम चाहें तो इस पानी को कड़वा कर दें, इस पर तुम शुक्र क्यों नहीं करते?!!!

(सूरः वाकिआ, 69–70)

﴿وَهُوَ الَّذِيْ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَاَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا﴾

अल्लाह तआला का इर्शाद है: और वह ही अल्लाह तआला जिन्होंने आसमान से पानी उतारा।

(सूरः अनआम, 99)

﴿وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْحُبُكِ﴾

अल्लाह तआला का इर्शाद है: आसमान की क़सम! जिसमें रास्ते हैं।

(सूरः ज़रियात)

हज़रत ज़ुबैर रज़ि० से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि ऐ ज़ुबैर! अल्लाह तआला ने जब अपने अर्श पर जलवा फ़रमाया, तो अपने बंदों की तरफ़ (करम की) नज़र डाली और इर्शाद फ़रमाया कि मेरे बंदों तुम मेरी मख़्लूक़ हो और मैं तुम्हारा परवरदिगार (ज़रूरत को पूरा करने वाला) हूं। तुम्हारी रोज़ियां हमारे क़ब्ज़े में हैं लिहाज़ा तुम अपने आपको ऐसी मेहनतों में न फंसाओ, जिसका ज़िम्मा मैंने ले रखा है। तुम लोग अपनी रोज़ियां मुझसे मांगो! क्योंकि रिज़्क़ का दरवाज़ा तो सातवें आसमान पर खुला हुआ है, जो ख़ज़ाना अर्श से मिला हुआ है, उसका दरवाज़ा न रात में बंद होता है, न दिन में। अल्लाह तआला इस दरवाज़े से हर शख़्स पर रोज़ी उतारता रहता है। लोगों के गुमान के बक़द्र उनके अता के बक़द्र, उनके सदक़े के बक़द्र और उनके ख़र्च के बक़द्र। जो शख़्स कम ख़र्च करता है उसके लिए कम उतारा जाता है और जो शख़्स ज़्यादा ख़र्च करता है उसके लिए ज़्यादा उतारा जाता है। (दुर्रे मंसूर)

हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इर्शाद फ़रमाया: इंसान तक उसकी रोज़ी पहुंचाने के लिए फ़रिश्ते पहले से तैय हैं अल्लाह तआला ने उनको हुक्म फ़रमा रखा है, कि जिस आदमी को तुम इस हालत में पाओ, जिसने (इस्लाम) को ही अपना ओढ़ना–बिछौना बना रखा है तो तुम उसको आसमानों और ज़मीन से रिज़्क़ पहुंचाओ और दीगर इंसानों को भी

रोज़ी पहुंचा दो। वह दीगर लोग अपने मुक़द्दर से ज़्यादा रोज़ी न पा सकेंगे।

(अबू अवाना)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया: अल्लाह की मख़्लूक़ में फ़रिश्तों से ज़्यादा कोई मख़्लूक़ नहीं है और ज़मीन पर कोई भी ऐसी चीज़ नहीं उगती जिसके साथ एक मुवक्कील फ़रिश्ता न हो। (अबू शैख़, हदीस न० 327)

हज़रत हकम बिन उतैबा रज़ि० फ़रमाते हैं, कि बारिश के साथ आदम की औलाद और इब्लीस की औलाद से ज़्यादा फ़रिश्ते उतरते हैं जो हर क़तरे को शुमार करते हैं कि वह पानी का क़तरा कहां गिरेगा और उस फल से किसे रिज़्क़ दिया जाएगा। (अबू शैख़, 483)

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया: अल्लाह तआला ने पानी के ख़ज़ाने पर एक फ़रिश्ता मुक़र्रर कर रखा है। इस फ़रिश्ते के हाथ में एक पैमाना है, इस पैमाने से गुज़र कर ही पानी की हर बूंद ज़मीन पर आती है लेकिन हज़रत नूह अलै० के तूफ़ान वाले दिन ऐसा न हुआ, बल्कि अल्लाह ने सीधे पानी को हुक्म दिया और पानी को संभालने वाले फ़रिश्तों को हुक्म न दिया, जिस पर वे फ़रिश्ते पानी को रोकते रह गए, लेकिन पानी न रूका। (कंज़ुल उम्माल, 273)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि (एक मर्तबा हम लोगों पर) बादल ने साया किया, तो हमने उससे (बारिश की) उम्मीद की, जिस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जो फ़रिश्ता बादलों को चलाता है, वह अभी हाज़िर हुआ था, उसने मुझे सलाम किया और बतलाया कि वह उस बादल को यमन की वादी की तरफ़ ले जा रहा है, जहां "ज़रा" नाम की जगह पर उसका पानी बरसेगा।

(अबू अवाना)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: कि हर आसमान पर हर इंसान के लिए दो दरवाज़े हैं एक दरवाज़े से उसके आमाल ऊपर जाते हैं और दूसरे दरवाज़े से उसकी रोज़ी उतरती है। (किताबुल जनाइज़)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया: कि इंसानों तक रोज़ी पहुचाने के लिए अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों

को तैय कर रखा है।
(इब्ने अबी शैबा)

इस हदीस से बात और साफ़ हो जाती है कि मलाकुल मौत जब किसी ईमान वाले की रूह निकालने के लिए 500 फ़रिश्तों के साथ आते हैं, तो उस वक़्त उनके हाथ में रिहान के फूलों का गुल–दस्ता होता है जिसकी हर टहनी में बीस–बीस रंग के फूल होते हैं और हर फूल में नई खुश्बू होती है। इसके साथ एक सफ़ेद रंग का रूमाल जिसमें मुश्क बंधी होती है, उसे मरने वाले की ठोड़ी के नीचे रखते हैं फिर जन्नत का वह कपड़ा जिसको कफ़न में इस्तेमाल करते हैं वह भी साथ होता है। इतनी सारी चीज़ों को मरने वाले के सिवा पास में बैठा हुआ कोई इंसान भी नहीं देख पाता। अब अगर ये सारी चीज़ें कायनात में फैली हुई शक्लों से निकलकर आती तो हर इंसान को ये चीज़ें नज़र आ जाती, लेकिन आसमान के ऊपर से इन चीज़ों को लाने वाले फ़रिश्ते इंसान को कभी नज़र नहीं आते। इसी तरह जब हज़रत हंज़ला रज़ि० को फ़रिश्तों ने गुस्ल दिया गुस्ल से पहले फ़रिश्तों का लाया हुआ पानी किसी को नज़र नहीं आया पर जब हज़रत हंज़ला रज़ि० के जिस्म पर पानी गुस्ल के लिए डाला तो हज़रत हंज़ला रज़ि० के जिस्म के बालों से पानी टपकना सहाबा रज़ि० को नज़र आया।

इसलिए मेरे मुहर्तम दोस्तों और बुज़ुर्गो! किसी शक्ल में अपने अंदर कुछ बनाने की कुदरत नहीं है।

कायनात में फैली हुई शक्लों के अंदर और अलग–अलग चीज़ों को निकालकर, अल्लाह तआला हम इंसानों को अपनी पहचान कराना चाहते हैं, कि अल्लाह तआला ने कायनात की सारी शक्लों को सिर्फ़ अपनी पहचान कराने के लिए बनाया है। कि–

जानवरों से दूध,
खेत से गल्ला और सब्ज़ियां,
पेड़ों से फल और मेवे,
शहद की मक्खि से शहद,
सूरज से रोशनी और
बादल से पानी

ये सारी की सारी शक्लों से निकलने वाली चीज़ें, आसमानों के ऊपर मौजूद अल्लाह के खज़ानों से भेजी जा रही हैं। जिस तरह टेलीविज़न के डब्बों के अंदर से, मोबाइल से, इंटरनेट (*internet*) वग़ैरह से कभी हमें खबरें कभी हॉकी या क्रिकेट का मैच या दीगर प्रोग्राम निकलते नज़र आते हैं यह नज़र आने वाले प्रोग्राम इन चीज़ों में बनते नहीं हैं, बल्कि ये प्रोग्राम इन चीज़ों के मरकज़ (*Studio*) से इनमें भेजे जा रहे हैं। पर किसी इंसान को यह प्रोग्राम हवा में आते हुए दिखते नहीं हैं। देखो आपने अपने मोबइल से या इंटरनेट (*internet*) से किसी को मैसेज (*Message*) या ई—मेल (*E-mail*) भेजा आपने जिसके पास भेजा है, उसके मोबइल या इंटरनेट को ढूंढकर उसमें दाख़िल हो जाता है। चाहे वह आदमी आंख से एक हज़ार किलोमिटर दूर रह रहा हो, पर सैकण्ड में वहां पहुंच जाता है और जो मैसेज या ई—मेल आपने भेजा है, उसका एक हुर्फ़ भी उसमें से कम नहीं होता। ज़रा बैठकर ग़ौर करो, कि हर वक़्त हवा में कितने मैसेज आते जाते रहते हैं। कितनी तस्वीरें मैसेज या ई—मेल से भेजते रहते हैं, पर जिसके पास जो भेजा जाता है, वही उसे मिलता है किसी दूसरे का मैसेज या किसी दूसरे का ई—मेल बदलता नहीं है। ठीक उसी तरह हमारी रोज़ियों का मामला है।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया: कोई इंसान चाहे क़िले और चूने के पहाड़ों में बंद हो जाए, मगर दो चीज़ें उसके पास पहुंचकर रहेंगी।

1. उसकी रोज़ी,
2. उसकी मौत,

यानी अगर कोई इंसान अपने आपको लोहे के संदूक़ में बंद करके अंदर से ताला लगा ले, फिर भी उसकी रोज़ी और उसके जिस्म से रूह निकालने वाला फ़रिश्ता उस संदूक़ के अंदर पहुंच जाएगा, जिस तरह अंडे के छिलके के अंदर रंग—बिरंगे पर, खून, गोश्त और रूह पहुंच जाती है।

मेरे दोस्तो! अल्लाह तआला इस ज़ाहिरी निज़ाम से हमें ग़ैबी निज़ाम समझाना चाह रहे हैं, अपनी ताक़त और अपनी क़ुदरत को समझाना चाह रहे हैं, कि हर मख़्लूक़ की रोज़ी आसमानों के ऊपर से भेजी जा रही है, पर हमारे इम्तिहान के

लिए, वे चीज़ें हमें आसमानों से आती हुई नज़र नहीं आ रही हैं। अल्लाह तआला
ने ज़ाहिरी निज़ाम, अपने बंदों के इम्तिहान के लिए बनाया है और गैबी निज़ाम
बंदों के इत्मिनान के लिए बनाया है। लेकिन गैबी निज़ाम से फ़ायदा वे उठा पाएंगे,
जिसने अपने अंदर गैब का यक़ीन पैदा किया होगा। जो इंसान अपने अंदर गैब
का यक़ीन पैदा कर लेता है तो फिर फ़रिश्तों के ज़रिए से चलाया जा रहा गैबी
निज़ाम उसके ताबेअ कर दिया जाता है। अब यह गैबी निज़ाम किसी के ताबेअ हो
जाए, तो सबसे पहले अहादीस की रोशनी में इस निज़ाम को समझा जाए।

हज़रत अबू उमामा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व
सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया: मोमिन के साथ 360 फ़रिश्ते होते है, जो मुसीबत उस
पर पड़नी नहीं होती, उसको इससे दूर करते रहते हैं।

सिर्फ़ आंख के लिए 7 फ़रिश्ते हैं। ये फ़रिश्ते बलाओं को उससे इस तरह
हटाते रहते हैं, जिस तरह गर्मी के दिनों में शहद के प्याले से मक्खियों को हटाया
जाता है। अगर उन फ़रिश्तों को तुम्हारे सामने ज़ाहिर कर दिया जाए, तो तुम
उनको मैदान और पहाड़ पर हाथों को खोले हुए देखोगे। (तबरानी)

जबकि आम इंसान के साथ 10 फ़रिश्ते होते हैं पर औरतों के साथ ग्यारह
फ़रिश्ते होते हैं।

हज़रत उस्मान ग़नी रज़ि० फ़रमाते हैं, कि मैंने एक मर्तबा रसूलुल्लाह
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व
सल्लम! हर इंसान के साथ कितने फ़रिश्ते होते हैं? तो आप सल्लल्लाहु अलैहि
व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया: कि एक फ़रिश्ता तेरे दाएं में है जो तेरी नेकियों पर
मामूर है तो एक फ़रिश्ता बाएं तेरा गुनाह लिखता है, यह दाएं वाला फ़रिश्ता बाएं
वाले फ़रिश्ते का सरदार है।

दो फ़रिश्ते तेरे सामने और पीछे हैं, ये दोनों बलाओं और मुसीबतों से तेरी
हिफ़ाज़त करते रहते हैं।

एक फ़रिश्ते ने तेरी पेशानी को थामा हुआ है जो तवाज़ोह करने पर तेरा सर
को बुलंद कर देता है और तकब्बुर करने पर पस्त कर देता है।

दो फ़रिश्ते तेरे होंठों पर है, जो दुरूद व सलाम को पहुंचाते हैं।

एक फ़रिश्ता तेरे मुंह पर है, जो सांप और दूसरे कीड़े को तेरे मुंह में घुसने नहीं देता और दो फ़रिश्ते तेरी आंखों पर है। (इब्ने जरीर)

देखो! नीचे लिखी जा रही हदीस पर ग़ौर करो कि किस तरह से फ़रिश्तों के ज़रिए से चलाया जा रहा ग़ैबी निज़ाम, मोमिन की हिमायत में आ जाता है।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है, कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जो लोग कसरत से मस्जिदों में जमा रहते हैं, वही लोग मस्जिद के खूटें हैं। इन लोगों के साथ फ़रिश्ते भी बैठे रहते हैं, अगर वे लोग मस्जिदों में किसी वजह से मौजूद न हो, तो फ़रिश्ते उन लोगों को ढूंढते हैं। जब कभी वह बीमार हो जाते हैं, तो फ़रिश्ते उनके घर जाकर उनकी बीमार पुर्सी करते हैं और जब वह लोग अपनी किसी ज़रूरत के लिए घर से बाहर आते हैं तो फ़रिश्ते उनकी मदद करते हैं। (मुस्नद अहमद)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है, कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जुम्आ के दिन फ़रिश्ते मस्जिद के दरवाज़े पर खड़े होकर मस्जिद में आने वालों का नाम लिखते रहते हैं। लेकिन जब खुत्बा शुरू होता है, तब, फ़रिश्ते नाम लिखना बंद करके खुत्बा सुनने में मश्गूल हो जाते हैं। (बुखारी)

हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जब कोई मुसलमान जंगल में इक़ामत कहकर नमाज़ पढ़ता है तो दोनों फ़रिश्ते (क़रामन कातिबीन) उसके साथ नमाज़ पढ़ते हैं। अगर कोई मुसलमान जंगल में आज़ान दे और फिर इक़ामत कहकर नमाज़ शुरू करे, तो उसके पीछे फ़रिश्तों की इतनी बड़ी तायदाद नमाज़ पढ़ती है, जिनके दोनों किनारे देखे नहीं जा सकते। (मुस्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़)

हज़रत औस अंसारी से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया ईद की सुबह अल्लाह तआला फ़रिश्तों को दुनिया के तमाम शहरों में भेजते हैं वे ज़मीन पर उतरकर तमाम गलियों और रास्तों में खड़े हो जाते हैं और आवाज़ देकर कहते हैं, जिसे इंसान और जिन्नात के सिवा सारी मख़्लूक़ सुनती है कि ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत! इस करीम रब की बारगाह की तरफ़ चलो, जो ज़्यादा अता करने वाला है। फिर लोग ईदगाह की तरफ़ जाने

लगते हैं। (तबरानी)

हज़रत शद्दाद बिन औस से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जो मुसलमान क़ुरआन की कोई सूरः बिस्तर पर जाकर पढ़ लेता है, तो अल्लाह पाक उसकी हिफ़ाज़त के लिए एक फ़रिश्ता मुक़र्रर फ़रमा देते हैं, जो उसके जागने तक उसकी हिफ़ाज़त करता रहता है। (तिर्मिज़ी)

हज़रत माकूल बिन यसार रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि सूरः बक़र की तिलावत करने पर उसकी हर आयत के साथ 80 फ़रिश्ते आसमान से उतरते हैं (मुस्नद अहमद)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है की आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जो मुसलमान रात को ब–वुज़ू सोता है तो एक फ़रिश्ता उसके जिस्म के साथ लगकर रात गुज़ारता है। रात में जब भी वह नींद से बेदार होता है, तो वह फ़रिश्ता उसे दुआ देता है-कि ऐ अल्लाह! अपने इस बंदे की मग़फ़िरत फ़रमा दे क्योंकि ब–वुज़ू सोया था। (इब्ने हब्बान)

हज़रत अली रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि रहमत के फ़रिश्ते उस घर में दाख़िल नहीं होते, जिस घर में कुत्ता या तस्वीरें हों। (इब्ने माजा)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: कि रहमत के फ़रिश्ते उन लोगों के पास भी नहीं रहते, जिनके पास कुत्ता या घंटी हो। (मुस्लिम शरीफ़)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया दुश्मन के ख़िलाफ़ मुक़ाबला करते वक़्त फ़रिश्ते घुड़ सवारी और तीरअंदाज़ी में तुम्हारे साथ होते हैं। (तबरानी)

हज़रत आइशा रज़ि० फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जो हाजी सवारी से हज करने जाते हैं, फ़रिश्ते उनसे मुसाफ़ा करते हैं और जो लोग पैदल हज करने जाते हैं फ़रिश्ते उनसे गले मिलते हैं। (बैहक़ी)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० फ़रमाते हैं कि फ़रिश्ते जुम्अ के दिन पगड़ियां बांधकर (जुम्आ की नमाज़ में) हाज़िर होते हैं और पगड़ी वालों को सूरज के छिपने तक

सलाम करते हैं (तारीखे इब्ने असाकिर)

देखो मेरे दोस्तो! एक है, ग़ैब का इल्म होना और एक है ग़ैब का यक़ीन होना कि ग़ैब का इल्म किताबों के ज़रिए से या किसी से सुनकर हासिल हो जाता है, पर ग़ैब का यक़ीन, कि उसे सीखकर अपने दिल में पैदा करना पड़ता है। इसलिए सहाबा रज़ि० कहते हैं, कि हमने पहले ईमान सीखा, फिर कुरआन सीखा, यानी पहले ग़ैब का यक़ीन दिल में पैदा किया।

कि हज़रत अबूबक्र रज़ि० जब बैतुलखला में दाख़िल होने का इरादा करते, तो अपनी चादर बिछा देते और फ़रमाते, ऐ मुहाफ़िज़ फ़रिश्तो! तुम लोग यहां इस चादर पर तशरीफ़ रखो, क्योंकि मैंने अल्लाह तआला से अहद किया है, कि मैं बैतुलखला में कोई बात नहीं करूंगा। (मुक़दमा अबू लैस)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० ने फ़रमाया, गुनाह करने के बाद कुछ बातें ऐसी होती हैं जो गुनाह से भी बड़ी होती हैं, कि अगर गुनाह करते हुए तुम्हें अपने दाएं, बाएं के फ़रिश्तों से शर्म न आई, यह उस किए हुए गुनाह से भी बड़ा गुनाह है। (कंज़ुल उम्माल, 8, 422)

ग़ैब का यक़ीन

(1) एक ईमान– (آمَنَ بِاللّٰهِ)

यानी इस हक़ीक़त का पूरा यक़ीन के सब कुछ अल्लाह की ज़ात से बनता है और होता है, अल्लाह के सिवा किसी से कुछ नहीं बनता और होता है, इसलिए बस इसी को राज़ी करने की फ़िक्र करनी चाहिए इसी के लिए मरना-मिटना चाहिए।

(2) दूसरा ईमान– (وَالْيَوْمِ الْآخِرِ)

यानी इस हक़ीक़त का पूरा यक़ीन, कि यह ज़िंदगी असल ज़िंदगी नहीं है, बल्कि इस ज़िंदगी के पूरा होने के बाद एक दूसरी ज़िंदगी और दूसरा आलम है। और असल ज़िंदगी वही है, यह चंद रोज़ा ज़िंदगी बस उसकी तैयारी के लिए है और इंसानों की कामयाबी और नाकामी का दारोमदार उसी हमेशा वाली ज़िंदगी और कामयाबी और नाकामी पर है।

(3) तीसरा ईमान– (وَمَلٰئِكَتِه)

यानी इस बात का यक़ीन कि यह आलम जिन ज़ाहिरी असबाब से चलता हुआ

नज़र आ रहा है, दरअसल इन अस्बाब से नहीं चल रहा है, बल्कि अल्लाह पाक फ़रिश्तों के बातिनी निज़ाम के ज़रिए से ज़ाहिर निज़ाम को चला रहे हैं। मिसाल के तौर पर हमें नज़र आता है कि बारिश बादलों और हवाओं से होती है और ज़मीन की चीज़ें बारिश के पानी से उगती हैं। फ़रिश्तों पर ईमान का मतलब यह है, कि हम इस बात का यक़ीन करें कि अल्लाह पाक ये सारे काम दरअसल फ़रिश्तों से करा रहे हैं। गोया उन ज़ाहिरी अस्बाब के पीछे फ़रिश्तों का नज़र न आने वाला निज़ाम है और उसके पीछे अल्लाह की ज़ात और उसका हुक्म और उसकी मुशय्यत है।

(4) चौथा ईमान– (وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ)

यानी अल्लाह की नाज़िल की हुई किताबें और उसके भेजे हुए नबियों के बारे में यक़ीन, कि हक़ीक़ी इल्म वही है, जो अल्लाह की किताबों में है और नबियों के ज़रिए इंसानों को मिला है। उसके सिवा जो कुछ है, वह ग़ैर–हक़ीक़ी और नाक़िस है मिसाल के तौर पर इंसानों की फ़लाह और कामयाबियों का रास्ता वहीं है जो अल्लाह के नबियों ने और अल्लाह की नाज़िल की हुई किताबों ने बताया है। अगर दुनिया भर के फ़लोसफ़र (*philospher*) दानिशमंद, अक़्लमंद लोग और लीडर उसके ख़िलाफ़ कहते हैं और सोचते हैं तो ग़लत है उनका जहल है।

हज़रत मौलाना यूसुफ़ साहब रह० फ़रमाते हैं कि सारे हुक्म बाद में आए हैं सबसे पहला हुक्म, अल्लाह की ज़ात पर यक़ीन क़ायम करने का आया। कि "आमना बिल्लाहि" कि अल्लाह की ज़ात का अपने दिलों में यक़ीन क़ायम करना, वह ईमान की जड़ और बुनियाद है। क्योंकि अल्लाह की ज़ात तो ग़ैब में है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सिवा अल्लाह की ज़ात को किसी मख़्लूक़ ने नहीं देखा, ख़ुद हज़रत जिब्रील ने भी नहीं। इसलिए जिब्रील बताते हैं, कि मेरे और अल्लाह के बीच नूर के 70 पर्दों की आड़ है। अगर उनमें से एक पर्दा भी हटा दिया जाए, तो अल्लाह की नूर की तजल्ली से मैं जलकर राख हो जाऊं तो अल्लाह की ज़ात को लेकर कहीं शक में न पड़ जाएं कि अल्लाह की ज़ात का ही इंकार न कर बैठे कि पता नहीं कि अल्लाह की ज़ात का वजूद है भी नहीं। इसलिए कि अब क़ियामत तक कोई नबी नहीं आने वाला। (हां, हज़रत ईसा अलै० दूसरे आसमान से उतरकर आना, ब–हैसियत हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के उम्मती का होगा) और यह एक मुस्तक़िल सवाल, इंसान के बीच रहता कि अल्लाह

की ज़ात है या नहीं बस इसी सवाल को ख़त्म करने के लिए ही अल्लाह ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अर्श पर बुलाकर अपना दीदार कराया, कि अल्लाह की ज़ात हक़ है।

अल्लाह तआला ने अपने बंदों को ख़ुद यह दावत दी है, कि वह अल्लाह पर ईमान लाएं, ताकि अल्लाह तआला उन्हें अपनी हिमायत और हिफ़ाज़त में ले ले। (हैसमी, 5, 232)

मेरे दोस्तो! जो ज़ात हमेशा से थी और हमेशा रहेगी, उसने सबसे पहले हुक्म, अपने बंदों के मुताल्लिक़ जो नाज़िल फ़रमाया, वह यह है कि 'आमन्ना बिल्लाहि' अल्लाह की ज़ात का यक़ीन, अपने दिल में पैदा करो, अब सवाल यह पैदा होता है, कि किस तरह से अल्लाह की ज़ात का यक़ीन पैदा हो? तो अल्लाह की ज़ात का यक़ीन तभी पैदा होगा, जब हम अपनी ज़ात में ग़ौर व फ़िक्र करेंगे।

हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया कि कोई शख़्स उस वक़्त तक अल्लाह तआला को नहीं जान सकता, जब तक कि वह अपने आपको नहीं पहचान लें, कि–

(1) हम 500 साल पहले कहां थे।
(2) इस दुनिया में हम कहां से आए।
(3) हमारे जिस्म को किसने बनाया।
(4) कैसे बनाया।
(5) 100 साल बाद हम कहां होंगे, वग़ैरह, वग़ैरह इसलिए हमें कुरआन व हदीस की रोशनी में अपने आपको पहचानना है, कि हमें किसने बनाया? क्यों बनाया? कहां बनाया? और कैसे बनाया?

इंसान की पैदाइश

﴿وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِنْ بَنِيٓ آدَمَ مِنْ ظُهُورِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ عَلَىٰٓ أَنْفُسِهِمْ أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ قَالُوا بَلَىٰ شَهِدْنَا أَنْ تَقُولُوا يَوْمَ الْقِيَامَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ هَٰذَا غَافِلِينَ﴾

अल्लाह तआला का इर्शाद है: जब आपके रब ने आदम की पीठ से इसकी औलाद को पैदा किया फिर उनसे सवाल किया, क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं? सबने जवाब दिया बेशक! फिर हमने गवाह बनाया (फ़रिश्तों को) हमने यह इक़रार

(इंसानों से) इसलिए कराया, कि कियामत के दिन यह न कहने लगें, कि हमें पता नहीं था। (कि आप हमारे रब हैं)

(सूरः एहराफ़, 271)

हज़रत उबई बिन काब रज़ि० इस आयत की तफ़्सीर में बयान फ़रमाते हैं, कि अल्लाह तआला ने हज़रत आदम अलै० के पीठ से इंसानों की रूह को निकाला और उन्हें एक जगह जमा किया, फिर

उन्हें जोड़ा-जोड़ा बनाया,
उसकी शक्लें बनाई,
उन्हें बोलने की ताक़त दी,
फिर सबसे सवाल किया कि मैं क्या तुम्हारा रब नहीं हूं?
सबने जवाब दिया, बेशक! आप ही हमारे रब हैं।

फिर इस इक़रार पर अल्लाह ने फ़रिश्तों को गवाह बनाया, ताकि कियामत के दिन इसमें से कोई यह न कहे, कि?

हमें पता नहीं था।

यक़ीन मानो "मेरे सिवा कोई माबूद और रब नहीं है" इसीलिए मेरी रबूबियत में किसी चीज़ को शरीक न करना। मैं तुम्हारे पास नबी और रसूल भेजता रहूंगा, जो तुम्हें वह अहद और पैमान याद दिलाएंगे और तुम पर अपनी किताबें उतारूंगा।

तो सबने जवाब दिया कि हम इक़रार कर चुके हैं, कि आप ही हमारे रब हैं, आप के सिवा हमारा कोई रब नहीं है।

(मुस्नद अहमद)

﴿هَلْ أَتَىٰ عَلَى الْإِنسَانِ حِينٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُن شَيْئًا مَّذْكُورًا، إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنسَانَ مِن نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ نَّبْتَلِيهِ فَجَعَلْنَاهُ سَمِيعًا بَصِيرًا﴾

अल्लाह तआला का इर्शाद है: बेशक इंसान पर ज़माने में ऐसे वक़्त आ चुका है, कि वे भी क़ाबिले ज़िक्र न था, कि इससे पहले मनी था और उससे पहले वह भी न था। हमने इसको मख़्लूत नुत्फ़े से पैदा किया, ताकि हम इसका इम्तिहान लें, फिर हमने इसे सुनता, देखता बनाया।

(सूरः अल-दहर)

मेरे दोस्तो! अल्लाह तआला जब किसी इंसान को इम्तिहान के लिए आलमे बरज़ख़ से इस दुनिया में मुंतक़िल करना चाहते हैं, तो मुंतक़िल करने से चार महीने पहले, एक मख़्सूस तरीक़े से उसकी मां के पेट में उसका जिस्म बनाना शुरू करते

हैं।

﴿مِنْ أَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهُ ۝ مِنْ نُطْفَةٍ خَلَقَهُ فَقَدَّرَهُ ۝ ثُمَّ السَّبِيلَ يَسَّرَهُ ۝ ثُمَّ أَمَاتَهُ فَأَقْبَرَهُ﴾

हमने इंसान के जिस्म को किस चीज़ से बनाया? मनी की एक बूंद से. एक खास अंदाज़ में। फिर इसके लिए रास्ता आसान कर दिया। फिर उसे मौत देकर बर्ज़क में पहुंचा दिया। (सूरः अबास)

﴿لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِي أَحْسَنِ تَقْوِيمٍ﴾

हमने इंसान को बहतरीन अंदाज़ में ज़ाहिर किया। (सूरः तीन)

﴿مِنْهَا خَلَقْنَاكُمْ وَفِيهَا نُعِيدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً أُخْرَىٰ﴾

इसी मिट्टी से जिस्म बनाकर हमने तुम्हें (दुनिया) में ज़ाहिर किया और फिर इसी में लौटाएंगे और इसी से दूसरी बार ज़ाहिर करेंगे। (सूरः ताहा)

अल्लाह तआला जिस मिट्टी से इसका जिस्म बनाते हैं, इस मिट्टी के ज़र्रे ज़मीन से लेकर आसमान तक फैले हुए होते हैं। अल्लाह तआला अपनी कुदरत से इन ज़र्रों को इकट्ठा करके मां–बाप की गिज़ा के साथ उनके पेट में पहुंचाते हैं। मां–बाप के जिस्म में पहुंच चुके, उन ज़र्रों को फिर खून में पहुंचाते हैं, खून से मनी में मुंतक़ील करते हैं फिर मनी की इस बूंद को मां के पेट में मौजूद बच्चेदानी में पहुंचाते हैं।

﴿فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ۝ خُلِقَ مِنْ مَاءٍ دَافِقٍ ۝ يَخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَائِبِ﴾

इंसान को देखना (सोचना) चाहिए कि इसका जिस्म किस चीज़ से बना है? इसका जिस्म उछलते हुए पानी से बना है, जो पीठ और सीने के बीच से निकलता है। (सूरः तारीक़)

﴿أَفَرَأَيْتُمْ مَا تُمْنُونَ ۝ أَأَنْتُمْ تَخْلُقُونَهُ أَمْ نَحْنُ الْخَالِقُونَ﴾

अल्लाह तआला का इर्शाद हैः अच्छा यह तो बताओ, जो मनी जो तुम औरतों के रहम में पहुंचाते हो क्या तुम मनी से इंसान का जिस्म बनाते हो, या हम इस

जिस्म को बनाने वाले हैं?

(सूरः वाक़िआ)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि० फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः नुत्फ़ा (मनी क बूंद) 40 दिन तक रहम में अपनी हालत में रहता है जब 40 दिन पूरे हो जाते हैं, तो वह जमा हुआ ख़ून बन जाता है, फिर उसी तरह 40 दिन के बाद गोश्त की बोटी में तब्दील हो जाता है, फिर उसमें हड्डियां पैदा होती हैं फिर अल्लाह तआला जिस्म के सारे हिस्से बना देते हैं।

(मुस्नद अहमद)

﴿أَلَمْ نَجْعَل لَّهُ عَيْنَيْنِ وَلِسَانًا وَشَفَتَيْنِ﴾

अल्लाह का इर्शाद हैः भला हमने उसको दो आंखें नहीं दी?! और ज़ुबान और दो होंठ नहीं दिए।

(सूरः बलद)

﴿إِن كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ﴾

अल्लाह तआला का इर्शाद है कि कोई इंसानी जिस्म ऐसा नहीं जिस पर हमने निगरानी करने वाला फ़रिश्ता मुक़र्रर न कर रखा हो,

(सूरः तारीक़)

हज़रत अनस रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः अल्लाह तआला ने औरत की बच्चे दानी पर एक फ़रिश्ता मुक़र्रर कर रखा है, जो बच्चे के बनने की अलग-अलग शक्लें अल्लाह से बताता रहता है। कि-

ऐ अल्लाह! अब यह नुत्फ़ा,
ऐ अल्लाह! अब यह जमा हुआ ख़ून है,
ऐ अल्लाह! अब यह गोश्त का लोथड़ा है।

फिर जब अल्लाह उस बच्चे को पैदा करना चाहते हैं, तो फ़रिश्ता पूछता है कि ऐ अल्लाह! इसके बारे में क्या लिखूं?

लड़का या लड़की?
बद-बख़्त या नेक-बख़्त?
रोज़ी कितनी? और
उम्र कितनी। यानी यह रूह इस तरह जिस्म में कितने दिन रहेगी।

(बुख़ारी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि औरत की बच्चे दानी पर मुक़र्रर फ़रिश्ते का यह काम होता है, कि जब बच्चे की मां सोती है, या लेटती है, तो वह फ़रिश्ता उस बच्चे का सर ऊपर उठा देता है। अगर वह ऐसा न करे, तो बच्चा खून में गर्क़ हो जाए। (अबू शैख़)

हज़रत अनस रज़ि० फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब लड़की पैदा होती है तो अल्लाह तआला उस लड़की के पास एक फ़रिश्ता भेजता है, जो उस पर बहुत ज़्यादा बरकत उतारता है और कहता है, तू कमज़ोर है क्योंकि कमज़ोर से पैदा हुई है, उस लड़की की किफ़ालत (परवरिश) करने वाले की क़ियामत तक मदद की जाती है, और जब लड़का पैदा होता है, तो अल्लाह तआला उसके पास भी एक फ़रिश्ता भेजते हैं, जो उसके आंख के बीच बोसा लेता है और कहता कि अल्लाह तआला तुझको सलाम कहते हैं। (तबरानी)

मेरे दोस्तो! नुत्फ़ा (मनी का क़तरा) जब बच्चे दानी के अंदर पहुंच जाता है, तो बच्चे दानी का मुंह बंद हो जाता है, जिस तरह गुब्बारे के अंदर किसी चीज़ को डालकर फिर उसमें हवा भरकर, गुब्बारे का मुंह बंद कर दिया जाता है, पर बच्चे दानी में सिर्फ़ नुत्फ़ा डाला जाता है, हवा नहीं भरी जाती, जैसे जैसे बच्चे का जिस्म बनकर बढ़ता जाता है, बच्चे दानी बग़ैर हवा के, गुब्बारे की तरह फूलती जाती है, जिसकी वजह से मां का पेट फूलकर बड़ा होता रहता है। 40 दिन के बाद सफ़ेद रंग का नुत्फ़ा सुर्ख़ रंग का जमा हुआ खून बन जाता है।

जिस तरह फ़िरऔन के पीते हुए पानी को ख़ून में बदल दिया था।

जिस तरह 40 दिन के बाद इस जमे हुए ख़ून को अल्लाह तआला गोश्त के लोथड़े में बदल देते हैं। जिस तरह फ़िरऔन के हाथ में पकड़े हुए रोटी के टुकड़े को मेंढक में बदल दिया था।

या जिस तरह उम्मूल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के यहां प्याले में रखे हुए गोश्त को पत्थर में बदल दिया था।

और हज़रत मूसा अलै० का मशहूर वाक़िआ है कि जिसे अल्लाह तआल ने क़ुरआन में बयान फ़रमाया है कि हज़रत मूसा अलै० की लाठी को सांप बना दिया और सांप को फिर लाठी बना दिया। कि नज़र तो वह लाठी आ रही थी, फिर न

वह लाठी थी और न ही सांप। कि असल के एतबार से न वह लाठी थी न वह सांप। इसलिए न लाठी सांप बन सकती है और न सांप लाठी बन सकता है, पर ऐसा हुआ। तो इससे पता चलता है, कि चाहे लाठी हो या सांप या कोई नज़र आने वाली या न नज़र आने वाली मख़्लूक़। वह मख़्लूक़ चाहे।

चींटी की हो या जिब्रील की,
ज़मीन की हो या आसमान की,
ज़र्रे की हो या पहाड़ की,
क़तरे की हो या समुंद्र की,

यानी अर्श से लेकर फ़र्श (ज़मीन) के बीच की कोई भी मख़्लूक़ हो, उन सब की हैसियत एक कठपुतली से ज़्यादा नहीं है। उन सबके लिए अल्लाह का जो अम्र काम कर रहा है, वह असल चीज़ है। अल्लाह तआला उन शक्लों से जब चाहेंगे, जहां चाहेंगे, जैसे चाहेंगे, जो चाहेंगे वह होगा।

जैसे मां के पेट में नुत्फ़ा का जमा हुआ ख़ून, जमे हुए ख़ून के गोश्त का लोथड़ा और इस गोश्त के लोथड़े पर जिस्म के हिस्से का बनना कि आधा इंच के गोश्त के लोथड़े के अंदर हड्डियों का ढांचा बनाकर दिल, गुर्दा, तिल्ली, फेफ़ड़ा वग़ैरह बनाकर नसों का जाल बिछा देते हैं। फिर गोश्त के लोथड़े के ऊपर आंख, नाक, कान, मुंह, हाथ, पैर वग़ैरह अपनी कुदरत से बनाते हैं। इंसानों के जिस्म बनाने की यह तर्तीब, अल्लाह तआला ने मुक़र्रर की है। हां तीन इंसान इस तर्तीब से बाहर है–

हज़रत आदम अलैहिस्सलाम,
हज़रत हव्वा अलैहिस्सलाम,
हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम।

जिस्म से ख़ून का आना जाना

हम सब अपने–अपने बारे में भी जान लें कि हम सबका जिस्म अल्लाह तआला ने उसी तर्तीब से बनाया है, जिस जिस्म को हम अपनी मल्कियत (अपनी चीज़) समझकर अपनी मर्ज़ी पर इस्तेमाल कर रहे हैं। हालांकि अल्लाह तआला ने यह जिस्म अपनी मर्ज़ी पर इस्तेमाल होने के लिए दिया था। वो जब इस अंदाज़ में

अल्लाह तआला इंसान का जिस्म बना देते हैं, तो जिस्म को सबसे पहले खून की ज़रूरत पड़ती है। अल्लाह तआला ने गैबी ख़ज़ाने से इस जिस्म में सीधे खून भेजते हैं, पर इंसानों को आसमानों के ऊपर से खून का आना नज़र नहीं आता। जिस तरह बुख़ार का इंसान के जिस्म से खून का ले जाना नज़र नहीं आता। कि हज़रत सलमान रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक दिन बुख़ार ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के घर के अंदर आने की इजाज़त चाही। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उससे पूछा, तुम कौन हो?

उसने कहा कि मैं बुख़ार हूं, मैं गोश्त को काटता हूं और खून चूसता हूं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उससे फ़रमाया: तुम "कुबा" (अरब की एक बस्ती का नाम) वालों के पास चले जाओ! चुनांचे बुख़ार कुबा वालों के पास चला गया और उन सबका इतना खून चूसा और गोश्त काटा कि उनके चेहरे पीले हो गए। तो उन्होंने आकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बुख़ार की शिकायत की।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन लोगों से फ़रमाया: कि तुम लोग क्या चाहते हो, अगर तुम चाहो, तो मैं अल्लाह तआला से दुआ कर दूं, तो अल्लाह तआला बुख़ार को वापस बुला लें और अगर तुम लोग चाहो, तो बुख़ार को रहने दो, जिससे तुम लोगों के सारे गुनाह माफ़ हो जाएं।

कुबा वालो ने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! आप बुख़ार को रहने दें। (बिदाया 6, 160)

इस रिवायत से यह पता चलता है कि जिस तरह बुख़ार का इंसान के जिस्म से खून का ले जाना नज़र नहीं आता, उसी तरह अल्लाह तआला अपने गैबी ख़ज़ाने से जब जिस्म में खून भेजते हैं, तो उस खून का आना भी किसी को नज़र नहीं आता। इस ज़माने में यह बात मोबाइल और कम्प्यूटर से समझी जा सकती है, कि आप जब मोबाइल पर मैसेज (*Message*) का आना या रिचार्ज (*Recharge coupon*) कराने पर पैसा का आना किसी को नज़र नहीं आता। उसी तरह कम्प्यूटर पर किसी किताब और चीज़ का डाउनलौड (*Download*) करना किसी को नज़र नहीं आता। इस बात को खुद अल्लाह तआला ने परिंदों के अन्दर से अंडों को

निकालकर समझाया है कि–

﴿وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ﴾

"तू ही बे–जान से जानदार पैदा करे और तू ही जानदार से बेजान पैदा करे, तो ही जिसे चाहे बे–शुमार रोज़ी दे।"

(सूरः आले इम्रान आयत न० 27)

इमाम अहमद बिन हंबल रह० फ़रमाते थे कि हमने तो अपने रब को मुर्गी के अंडे से पहचाना है, कि रब अल्लाह है।

मेरे दोस्तो! हमें यह धोखा लगा है, कि हम–

पैसे से पलते हैं।

दुकान से पलते हैं।

मेहनत से पलते हैं।

खेती से पलते हैं।

नौकरी से पलते हैं।

इससे बड़ी दुनिया में कोई झूठ नहीं कि हम चीज़ों से पलते हैं या अपनी मेहनत से पलते हैं। हज़रत मौलाना यूसुफ़ साहब रह० फ़रमाते थे कि जो इंसान, इनमें से किसी भी चीज़ से पलने का यक़ीन लेकर मरेगा, तो ख़ुदा की क़सम! वह क़ब्र के किसी भी सवाल का जवाब नहीं दे पाएगा।

(हज़रत जी की यादगार तक़रीरें?)

इसलिए हज़रत सुफ़ियान सूरी रह० और अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह० हमेशा यह बात एलानिया कहा करते थे, कि अगर ज़मीन तांबे की हो जाए और आसमान लोहे का हो जाए, दुनिया में कोई सामान और इंसान भी न हो, तब भी मुझे यह ख़्याल न आएगा कि मेरे खाने–पीने का क्या होगा।

हज़रत हसन बसरी रह० फ़रमाते थे कि अगर ज़मीन तांबे की हो जाए और आसमान लोहे का हो जाए, दुनिया में कोई सामान और इंसान भी न हो, फिर अगर किसी इंसान के दिल में यह ख़्याल आ जाए कि मेरे खाने–पीने का क्या होगा?

तो यह ख़्याल.....इसके अंदर के शिर्क की वजह से आया है, इसके अंदर ईमान नहीं है।

मेरे दोस्तो! हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमायाः कि ईमान सिर्फ़ ईमानी शक्ल बना लेने से नहीं मिलता। (कंज़ुल उम्माल, 8, 210)

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि० ने फ़रमायाः कोई बंदा उस वक़्त तक ईमान की हक़ीक़त तक नहीं पहुंच सकता, जब तक वह ईमान की चोटी तक नहीं पहुंच जाए और ईमान की चोटी पर उस वक़्त तक नहीं पहुंच सकता, जब तक उसके नज़दीक फ़क़ीरी, मालदारी से और छोटा बनना, बड़े बनने से ज़्यादा महबूब न हो जाए और उसकी तारीफ़ करने वाला उसकी बुराई करने वाला दोनों बराबर न हो जाएं। (हुलिया, 1, 132)

हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमायाः ऐ लोगो! अपने बातिन की इस्लाह कर लो, तुम्हारा ज़ाहिर ख़ुद ठीक हो जाएगा। तुम अपनी आख़िरत के लिए अमल करो, तुम्हारे दुनिया के काम अल्लाह तआला की तरफ़ से ख़ुद ब ख़ुद हो जाएंगे। (बिदाया, 7, 56)

बग़ैर कमाए कैसे पलेंगे?

एक साथी ने एक साथी के चार महीने की तश्कील की, कि ईमान को सीखने के लिए, आप भी अल्लाह के रास्ते में चलो! उसने कहा, कि मुझे भी इसका यक़ीन है कि अल्लाह पालते हैं, पर अगर मैं चार महीने के लिए जमाअत में चला गया, तो मेरे बूढ़े मां–बाप और मेरे बीवी–बच्चों का क्या होगा? अकेला मैं ही कमाने वाला हूं, और अगर मैं कमाकर नहीं लाऊंगा, तो ख़ुद क्या खाऊंगा और अपनी बीवी बच्चो और मां–बाप को क्या खिलाऊंगा? कि बेशक पालने वाला तो अल्लाह ही है पर बग़ैर कमाए हम लोग कैसे पलेंगे?!!!

उस साथी ने कहा कि भाई! यही चीज़ तो सीखने के लिए निकलना है कि आप दुकान से नहीं पल रहे हो, बल्कि आपको और आपके घरवालों को अल्लाह तआला सीधे अपनी क़ुदरत से पाल रहे हैं। हां, चूंकि इंसान को दुनिया में इम्तिहान के लिए भेजा गया है, इसलिए उसे चीज़ों से पलना नज़र आ रहा है, पर सारी मख़्लूक़ को अल्लाह तआला सीधे अपनी क़ुदरत से पाल रहे हैं। लेकिन वह इस बात को मानने पर राज़ी नहीं हुआ, कि अल्लाह अपनी क़ुदरत से पाल रहे हैं और उसके एतबार से उसकी बात भी ठीक है। क्योंकि 20 साल से वह कमा कर ही

पल रहा है। यही हाल सबका है, कि बेशक पालने वाले तो अल्लाह ही हैं, पर बग़ैर कमाए हम लोग कैसे पलेंगे? चूंकि कमा रहे हैं, तभी पल रहे हैं। तो उस साथी की तश्कील करने वाले ने कहा, कि जो तुम कह रहे हो, यह तुम्हारा ग़लत यक़ीन है और यह बात बिल्कुल झूठी बात है, कि कोई किसी सबब से पलता है, बल्कि हर एक को अल्लाह तआला अपनी क़ुदरत से पाल रहे हैं। अब रही यह बात कि कैसे पाल रहे हैं? तो मेरी बात सुनो! मैं तुम्हें बताता हूं कि तुम दुकान से नहीं पल रहे हो, बल्कि अल्लाह पाल रहे हैं।

देखो! मिसाल के तौर पर जब तुम दुकान जा रहे होगे, कि उस रास्ते में कार से हादसा (*accident*) हो जाए, लोग तुम्हें उठाकर वहां क़रीब के नरसिंग होम में ले जाएंगे, पर वहां के डाक्टर तुम्हारी हालत को देखकर तुम्हें मैडिकल कालेज भेज देंगे, मैडिकल कालेज पहुंचने पर वहां के डाक्टर तुम्हारी हालत देखकर तुम्हारे घरवालों से कहेंगे, कि इनके हाथ–पैर नीले पड़ गए हैं और इनके सारे जिस्म में ज़हर फैल रहा है। लिहाज़ा इनके दोनों हाथ और इनके दोनों पैर आप्रेशन करके काटने पड़ेंगे, तभी उनकी जान बचा पाएंगे। तो अब बताओ तुम्हारे घरवाले डाक्टर को क्या जवाब देंगे?

क्या यह जवाब देंगे, कि इनके हाथ, पैर न काटिए, हम लोग इनको इसी हालत में वापस ले जा रहे हैं?!!

तो इसने जवाब दिया, कि नहीं, बल्कि मेरे घरवाले कहेंगे, कि डाक्टर साहब इनका आप्रेशन कर दीजिए।

तश्कील करने वाले ने कहा, फिर आप्रेशन हो जाने के बाद जब आप्रेशन थिएटर से तुम्हें बाहर लाया गया, तो तुम्हारा पांच फिट का जिस्म अब ढाई फिट बचा अब फिर 3 महीने तक तुम्हें अस्पताल में रहना पड़ा, जब तुम्हारे ज़ख़्म वग़ैरह सूख गए तो तुम्हारे घरवाले तुम्हें अस्पताल से घर वापस ले आए, तो घर आने पर न अब तुम दुकान के क़ाबिल रहे और न दुकान तुम्हारे क़ाबिल रही। चूंकि तुम दुकान से पल रहे थे, और अपनी मेहनत से पल रहे थे, तो दो–चार दिन के बाद ही तुम्हारी मौत हो जाएगी, क्योंकि अब दुकान पर कमाने जा नहीं पाओगे और तुम्हारी मौत के दो चार दिन के बाद तुम्हारे घरवाले भी मर जाएंगे, क्योंकि इन

सबको तुम पालते थे !!!

यह सुनकर वह बोला, नहीं मैं मरूंगा नहीं।

तश्कील करने वाले ने पूछा, क्यों नहीं मरोगे? क्योंकि तुम दुकान से पलते थे।

उसने कहा, अल्लाह कोई दूसरा रास्ता खोल देंगे।

तश्कील करने वाले ने कहा, इसका मतलब यह हुआ कि तुम दुकान से नहीं पल रहे थे? तुम तो यह कह रहे थे, कि पालने वाले तो अल्लाह हैं, पर अगर मैं दुकान नहीं जाऊंगा तो कैसे पलूंगा? इसका मतलब यह हुआ कि तुम्हारे अंदर दुकान से पलने का जो यकीन था, वह गलत था? अच्छा अब बताओ, अल्लाह तआला तुम्हें कैसे पालेंगे?

इसने तश्कील करने वाले के इस सवाल का जब कोई जवाब न दिया। तो तश्कील करने वाले ने इससे कहा, कि मैं बताऊं तुम कैसे पलोगे?!

इसने कहा, हां, बताओ।

तश्कील करने वाले ने कहा, कि अब तुम्हारे ससूर दुबई से हर महीने 5000 हज़ार रूपये भेजेंगे, कि अब तुम तो अपाहिज हो गए। तो अपनी बेटी और नवासे की मुहब्बत में वह पैसे भेजेंगे। अब जब वहां से पैसा आएगा तो तुम्हारे अंदर ससूर से पलने का यक़ीन बनेगा और दुकान से पलने का यक़ीन निकलेगा। पर अब तुम यह कहोगे, कि पालने वाले तो अल्लाह हैं, मगर ससूर के बग़ैर कैसे पलेंगे? जबकि 20 साल से तुम अपने अंदर दुकान से पलने के यक़ीन के साथ ज़िंदगी गुज़ार रहे थे। अगर उसी हाल पर तुम्हारी मौत आ जाती तो अल्लाह की रबूबियत में दुकान को शरीक करके मरते कि जिस तरह पहले तुम दुकान से नहीं पल रहे थे जो बात खुद आज तुम्हारे सामने है। इसी तरह यह बात भी सच्ची है, कि तुम ससूर से नहीं पलोगे, बल्कि अल्लाह पालेंगे। चूंकि इंसान का, हर पल इस दुनिया में इम्तिहान लिया जा रह है। इसलिए दुनिया में इंसान को चीज़ों से, सामान से, माल से और लोगों से अपना पलना नज़र आएगा। पर खुदा की क़सम! सच्ची बात यह है कि हर एक को अल्लाह तआला अपनी क़ुदरत से पाल रहे हैं। अब ससूर के पैसे से पलोगे, तो दुकान से पलने का यक़ीन निकलकर ससूर से पलने का यक़ीन पैदा

होगा।

तश्कील करने वाले ने उससे फिर पूछा! कि अच्छा अब यह बताओ अगर तुम्हारे ससूर का अब दुबई में इंतिक़ाल हो जाए और वहां से पैसा आना बंद हो जाए, फिर तुम लोग कैसे पलोगे?

इस बार उसने जवाब दिया, कि अल्लाह तआला और किसी रास्ते से पालेंगे।

तश्कील करने वाले ने फिर उससे सवाल किया कि अच्छा यह बताओ अगर ज़मीन तांबे की हो जाए आसमान लोहे का हो जाए, दुनिया में कोई सामान और इंसान भी न हो, ज़मीन में सिर्फ़ तुम तुम्हारे बीवी–बच्चे और तुम्हारे मां–बाप यानी कुल पांच (5) लोग रह जाओ तुम सबकी मौत हो जाएगी?!! इसलिए कि–

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः इंसान के दिल में एक ख़्याल फ़रिश्ता डालता है और एक ख़्याल शैतान डालता है। शैतान की तरफ़ से आने वाला ख़्याल यह होता है, कि वह अल्लाह के ग़ैर से होने को और अल्लाह के करने से जो सब कुछ हो रहा है, इसके झुठलाने पर उभारता है। फ़रिश्ते की तरफ़ से आने वाला ख़्याल यह है, कि वह अल्लाह का कहना मान लेने और अल्लाह ही करेंगे की तस्दीक़ पर उभारता है। लिहाज़ा जो शख़्स अपने अंदर फ़रिश्ते का ख़्याल पाए, तो उसे अल्लाह का शुक्र अदा करते हुए इस ख़्याल पर जमना चाहिए और अगर अपने अंदर शैतान का लाया हुआ ख़्याल पाए, तो इसको शैतान से अल्लाह की पनाह मांगना चाहिए। (तिर्मिज़ी)

मुर्ग़ी के अंडे से रब की पहचान

इसलिए इस वक़्त शैतान तुम्हारे दिल में यह ख़्याल डाले, तो मुर्ग़ी के अंडे को सोचकर अपने आपको समझाना, कि अल्लाह तआला किस तरह उस छिलके के अंदर बच्चे को बनाते और उसकी परवरिश करते, कि मुर्ग़ी का अंडा चारों तरफ़ से बंद होता है और छिलके के नीचे एक वाटर परूफ़ झल्ली होती है जो छिलका फ़ोड़ने पर हमें नज़र आती है। मुर्ग़ी का अंडा उसे पानी में उबालकर या फिर उसे फोड़कर, फेटकर जिसका आमलेट बनाया जाता है, कि उसे उबालकर, या आमलेट बनाकर खाने में न तो मुर्ग़ी के रंग बिरंगे पर हमें नज़र आते हैं, और न ही आंख, पैर, ख़ून

वगैरह ही नज़र आते हैं। लेकिन अल्लाह अपनी कुदरत से इस छिलके के अंदर मुर्ग़ी की शक्ल बनाते हैं और शक्ल बनाकर फिर इसके अंदर वहां रिज़्क़ और रूह पहुंचाते हैं। तो जब यह मुर्ग़ी का बच्चा अल्लाह से मिली ताक़त का इस्तेमाल करके छिलके को फोड़कर बाहर आता है, अगर उसी वक़्त उस बच्चे को चाकू से जिब्ह करके देखा जाए तो उसके जिस्म के अंदर से ख़ून टपकता हुआ नज़र आएगा।

यह बात यहां पर इस वजह से लिख रहा हूं क्योंकि आज सारी दुनिया में इस बात को बोला जा रहा है कि फल और मेवों से, ग़ल्लों और सब्ज़ियों के खाने-पीने से जिस्म के अंदर ख़ून बढ़ता और बनता है और इससे भी दो क़दम आगे यह बात चल रही है कि इंजेक्शन, टेबलट, सिरप या टोनिक और हकीम के माजून, या वैद की पंखी और जड़ी बूटियों और भसम से भी, इंसान के जिस्म के अंदर ख़ून, बनता भी है और बढ़ता भी है। तो भला अंडे से निकलने वाले मुर्ग़ी के बच्चे के अंदर यह ख़ून कहां से आ गया?!! जबकि छिलका तो चारों तरफ़ से बंद था फिर यह खाने पीने की चीज़ें भला उसके अंदर कैसे पहुंच गईं? ये लोग जवाब देते हैं, कि अंडे के अंदर अल्लाह पाक अपनी कुदरत से ख़ून बनाते और बढ़ाते है। लेकिन इंसान के जिस्म में इन खाने-पीने की चीज़ों से ख़ून बनता और बढ़ता है और अल्लाह अपनी कुदरत से और ख़ून बनाते और बढ़ाते हैं।

मेरे दोस्तो! यह बोल ज़बान से निकालना यह तो दूर की बात है, बल्कि ऐसा सोचना भी शिर्क है, कि अल्लाह पाक की कुदरत में हमने शरीक बनाया हुआ है। ईमान को न सीखने की वजह से इस तरह के बोल, आज दुनिया में बोले जा रहे हैं। इसी बे-बुनियाद बोलों की वजह से उम्मत का कमाया हुआ माल उन चीज़ों के खरीदने पर खर्च हो रहा है। जबकि गोश्त और ख़ून से ताल्लुक़ रखने वाली हदीसे कुदसी पर भी ज़रा ग़ौर कर लिया जाए, जिसमें अल्लाह पाक का यह इर्शाद है कि:

जब मैं अपने मोमिन बंदे को किसी बीमारी में मुब्तला करता हूं, फिर यह अपनी इयादत (जो इससे बीमारी की हालत में मिलने आते हैं) करने वालों से मेरी शिकायत नहीं करता, तो मैं इसे अपनी क़ैद से आज़ाद कर देता हूं, यानी इसके गुनाहों को माफ़ कर देता हूं, फिर इसे इसके गोश्त से बेहतर गोश्त देता हूं और इसे इसके ख़ून से बेहतर ख़ून देता हूं।

नाफ़ के गंदे ख़ून से परवरिश

इसी तरह मेरे दोस्तो! आज दुनिया में यह बोला जा रहा है, कि मां के पेट के अंदर रह रहे बच्चे की परवरिश अल्लाह पाक नाफ़ के गंदे खून से करते हैं। अब यहां ज़रा इस बात पर भी गौर कर लिया जाए कि इंसान, जो सारी मख़्लूक़ में सबसे ज़्यादा अशरफ़ और फ़रिश्तों से भी जिस इंसान को सज्दा कराया जा चुका हो, तो उस इंसान की परवरिश नाफ़ के गंदे ख़ून से की जाए और जिस मुर्ग़ी को हमें पकाकर खाने की इजाज़त है उस मुर्ग़ी के बच्चे को अंडे के छिलके में बग़ैर नाफ़ के परवरिश की जाए। कि इंसान को नाऊज़ुबिल्लाह मां के पेट में गंदे खून से रोज़ी पहुंचाई जाए और मुर्ग़ी के बच्चे को अंडों के छिलकों के अंदर बग़ैर नाफ़ के सीधे अल्लाह से आने वाली रोज़ी हासिल हो। तो इस तरह रोज़ी के हासिल करने में मुर्ग़ी का बच्चा इंसान के बच्चे से ज़्यादा अफ़ज़ल हो गया। असल बात यह है कि जब मां के पेट में जब 4 महीने में बच्चे का जिस्म बन जाता है, तो अल्लाह तआला आलमे अरवा से उस जिस्म में रूह भेजते हैं। जिस्म के अंदर रूह आने के बाद जिस्म को गिज़ा की ज़रूरत पड़ती है। देखो! जब किसी के जिस्म से रूह निकल जाती है, तो उस जिस्म को किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं पड़ती है। लेकिन जब जिस्म में रूह होती है, तो जिस्म को गिज़ा की ज़रूरत पड़ती है मां के पेट में अल्लाह तआला अपनी क़ुदरत से बच्चे को गिज़ा पहुंचाते हैं, जिस्म को गिज़ा मिल जाने के बाद उसे पेशाब–पाख़ाने की जगह से पेशाब–पाख़ाना करता है। यहां पर यह बात बिल्कुल साफ़ हो गई कि बच्चे को मां के पेट में गिज़ा पहुंचाई जाती है। वरना इंसान अगर कुछ खाएगा पिएगा नहीं, तो उसे पेशाब–पाखाना नहीं होगा।

मेरे दोस्तो! रोज़ी का ताल्लुक़ सीधे अल्लाह की ज़ात से है। हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया कि बंदे के और उसकी रोज़ी के बीच एक पर्दा पड़ा हुआ है। अगर बंदा सब्र से काम लेता है, तो उसकी रोज़ी ख़ुद उसके पास आ जाती है और अगर वह बिना सोचे–समझे रोज़ी कमाने में घुस जाता है, तो वह इस पर्दे को फाड़ लेता है लेकिन अपने मुक़द्दर से ज़्यादा नहीं पाता है। (कंज़ुल उम्माल)

अल्लाह ने इस दुनिया में, इंसान की रोज़ी का हासिल होना कि इंसान के गुमान पर रखा है। ख़ुद अल्लाह तआला फ़रमाते हैं: कि

"मेरा बंदा मुझसे जैसा गुमान करेगा मैं उसके साथ वैसा ही मामला करूंगा" अब अगर इंसान के अंदर माल से होने का गुमान है, तो उसका काम माल से होगा और अगर दुनिया में फैली हुई चीज़ों और आसमानों से काम होने का गुमान है तो उस रास्ते से होगा। इस गुमान का नुक़्सान यह है कि आदमी के अंदर जिस चीज़ से होने का गुमान होगा, वह उसी चीज़ का मुहताज होगा।

शेर का कान मरोड़ दिया

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० एक मर्तबा कहीं जा रहे थे, रास्ते में उन्हें एक जगह पर कुछ लोग खड़े हुए मिले, उन्होंने उन लोगों से पूछा कि तुम लोग रास्ते में क्यों खड़े हो? लोगों ने बताया कि आगे रास्ते में एक शेर खड़ा है, जिसके डर की वजह से हम लोग यहां रूके हुए हैं, यह सुनकर हज़रत इब्ने उमर रज़ि० अपनी सवारी से नीचे उतरे और चलकर शेर के पास पहुंचे और उसके कान को पकड़कर मरोड़ा फिर उसकी गर्दन पर एक थप्पड़ मारकर उसे वहां से भगा दिया, फिर वापस आते हुए अपने आपसे फ़रमायाः ऐ इब्ने उमर!

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सच कहा था, कि इब्ने उमर आदम पर वहीं चीज़ मुसल्लत होती है इब्ने आदम जिस चीज़ से डरता है। अगर इब्ने आदम अगर अल्लाह के सिवा किसी और चीज़ से न डरें, तो अल्लाह तआला उस पर और कोई चीज़ मुसल्लत न होने दें। इब्ने आदम इसी चीज़ के हवाले कर दिया जाता है, जिस चीज़ से उसे नफ़ा या नुक़्सान होने का यक़ीन होता है। अगर इब्ने आदम अल्लाह के सिवा किसी और चीज़ से नफ़ा या नुक़्सान का यक़ीन न रखे, तो अल्लाह तआला उसे किसी और चीज़ के हवाले न करे।" (कुंज़ुल उम्माल 7, 59)

इस तरह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबा किराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के अंदर सिर्फ़ अल्लाह ही से होने का गुमान पैदा कराया था, जिसकी वजह से सहाबा रज़ि० के अंदर अल्लाह की मुहताजगी थी, कि हर वक़्त हर आन हर लम्हा वे अपने आपको अल्लाह का मुहताज समझते थे और जब किसी के साथ कोई मामला हो जाता था, तो वह अल्लाह ही से कहता था। अपनी हर ज़रूरत को वे लोग अल्लाह ही के सामने पेश करते थे। वे अपनी रोज़ियां उस रास्ते से हासिल करते थे, जिस रास्ते को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन्हें बतालाया था।

आज तो हम सिर्फ़ खाने पीने को ही रोज़ी समझते हैं। किसी से अगर पूछो कि रोज़ी किसे कहते हैं? तो वे इन्हीं चीज़ों को गिना देगा। हालांकि इंसान के जिस्म की हर ज़रूरत को रोज़ी कहते हैं। देखो! जिस्म के ख़ालिक़ और मालिक अल्लाह हैं, इस वक़्त दुनिया में रह रहे हम 7 अरब इंसानों में से 200 साल पहले किसी का भी जिस्म इस दुनिया में नहीं था। इस जिस्म को अल्लाह तआला ने अपनी क़ुदरत से इस दुनिया में इम्तिहान लेने के लिए बनाया है। कैसे बनाया? इसकी ख़बर क़ुरआन व हदीस के ज़रिए हमें दे दी गई है। कि मां के पेट में बग़ैर किसी ज़रिए के हमारी जिस्म की ज़रूरतों को पूरा किया। बच्चे दानी के अंदर ख़ून, फिर हवा और खाने पीने का इंतिज़ाम किया, कि जैसे ही मां के पेट से बाहर आए, जिस्म में ताक़त, आंखों को रोशनी, मुंह को बोल, कानों को आवाज़, दिमाग़ को सोचने की क़ुव्वत इन तमाम ज़रूरतों को पूरा किया, और आज भी इन तमाम ज़रूरतों को अल्लाह ही पूरा कर रहे हैं। अगर इन तमाम ज़रूरतों को पैसे देकर लेते, कि

एक पैसा सैकण्ड लेकर आंखों की रोशनी देते,
एक पैसा सैकण्ड लेकर ज़बान के बोल देते,
एक पैसा सैकण्ड लेकर कानों में आवाज़ देते,

जैसे मोबाइल पर एक पैसा सैकण्ड हमारे बोलने और सुनने का लेते हैं। अगर अल्लाह भी अपने बंदों से उसका चार्ज लेते, तो इंसान क्या करता?! आंखों की रोशनी, ज़बान के बोल, कानों की आवाज़, जिस्म में ताक़त वग़ैरह, ये वे चीज़ें हैं, जिसे इंसान कुछ भी क़ीमत देकर हासिल करना चाहेगा, पर अल्लाह तआला हैं, उन्होंने सारी मख़्लूक़ की रोज़ी का ज़िम्मा ख़ुद ले रखा है इसलिए हर एक की रोज़ी वह ख़ुद पहुंचा रहे हैं। हम ज़रा इस बात पर ग़ौर करें कि हमारे जिस्म की वे ज़रूरतें कि आंखों की रोशनी, ज़बान के बोल, कानों की आवाज़, जिस्म में ताक़त फिर जिन्हें अल्लाह के सिवा कोई नहीं दे सकता। वह बग़ैर पैसे और बग़ैर हमारी किसी मेहनत के हमें मिल रही है, तो रोटी, दाल, या बोटी या कपड़े वग़ैरह क्या हैं हमें पैसे से या हमारी मेहनत से हासिल हो रही है?!!

नहीं मेरे दोस्तो! ये चीज़ें भी अल्लाह हमें दे रहे हैं, पर दिख रहा है, चीज़ों से मिलते हुए। क्योंकि यही इंसान का इम्तिहान है कि अल्लाह ने इस दुनिया के

अन्दर रोज़ी का दारोमदार इंसान के गुमान पर रखा है। अगर इंसान के अंदर माल से होने का गुमान है, तो उसका काम माल से होगा और अगर दुनिया में फैली हुई चीज़ों और सामान से काम होने का गुमान है, तो इस रास्ते से होगा। इस गुमान का नुक़्सान यह है, कि आदमी के अंदर जिस चीज़ से होने का गुमान होगा वह उसी चीज़ से मुहताज होगा।

सहाबा वाली बात और सहाबा वाला गुमान हम मुसलमानों के अंदर पैदा हो जाए, इसके लिए हम मुसलमानों को सबसे पहले ईमान सीखना पड़ेगा। इसलिए कि अल्लाह ने क़ियामत तक आने वाले इंसानों के लिए सहाबा वाला ईमान और सहाबा वाले आमाल को नमूना बनाया है।

मेरे दोस्तो! आज ईमान को न सीखने की वजह से, इंसान इम्तिहान की चीज़ों से इत्मिनान हासिल करना चाहता है। जबकि इत्मिनान का हासिल होना, अल्लाह तआला ने जिस्म के सही इस्तेमाल पर रखा है। हमारे जिस्म के हिस्से अल्लाह तआला की मर्ज़ी पर, उनके हुक्मों पर इस्तेमाल होने लगें, कि आंख, कान, ज़बान, दिमाग़, हाथ-पैर, शर्मगाह हराम से बच जाए। इसके लिए मस्जिदों में ईमान के हल्के लगाकर, ईमान को सीखना और इतना ईमान सीखना है, कि हमारे जिस्म के हिस्से हराम से बच जाए। वरना आज मुसलमान हलाल कमाने के बावजूद और हलाल खाने के बावजूद और हलाल पहनने के बावजूद।

हराम बोल रहा है।
हराम देख रहा है।
हराम सुन रहा है, और
हराम सोच रहा है।

ईमान को न सीखने की वजह से आज मुसलमान अपने ईमान से बे-परवाह है अगर उसे अपने ईमान की परवाह होती तो यह हराम से बच रहा होता।

ईमान का नूर दिल से निकल कर सर पर

मुस्लिम शरीफ़ की हदीस है "कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जब किसी मोमिन से कबीरा गुनाह हो जाता है तो ईमान का नूर उसके दिल से निकलकर उसके सर पर साया कर लेता है, जब तक वह तौबा नहीं करता,

वह नूर उसके जिस्म से वापस नहीं आता, सोचो ज़रा! हमें अपने ईमान की कितनी फ़िक्र है?!! कि क्या हमने कभी उलमा किराम से यह जानने की ज़रूरत महसूस की है कि गुनाहे कबीरा क्या-क्या है? और उनकी तायदाद कितनी है? मेरे दोस्तो! ईमान को न सीखने की वजह से आज उम्मत ने इल्म को ईमान समझ लिया है और नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात को इस्लाम समझ लिया है। हालांकि ये इस्लाम की बुनियाद हैं इस्लाम नहीं है। दावत की इस मुबारक मेहनत से यही बात चाही जा रही है, कि मुसलमान अपने ईमान को लेकर फ़िक्रमंद हो जाए। इसी के लिए हज़रत मौलाना सअद साहब अपनी-अपनी मस्जिदों में ईमान के हल्के क़ायम करने के लिए बार-बार कह रहे हैं।

अब ईमान के सीखने में सबसे पहले अल्लाह की ज़ात का यक़ीन अपने दिल में पैदा करना है वह अल्लाह जिसके नाम के बोल से यह सारी क़ायनात क़ायम है। हदीस में आता है, कि जब तक इस दुनिया में अल्लाह का नाम का बोल ज़बान से बोलने वाला रहेगा, उस वक़्त यह दुनिया इसी तरह क़ायम रहेगी और जिस दिन किसी के मुंह से लफ्ज़ "अल्लाह" नहीं निकलेगा उस वक़्त चाहे ज़मीन पर 10 अरब इंसान आबाद हों।

उनमें से 1 अरब इंसान, उस वक़्त इंजिनियर हो।
1 अरब इंसान डाक्टर हो।
1 अरब इंसान प्रोफ़ेसर हो।
1 अरब इंसान साइंटिस हो।
हर इंसान, अरबपती हो।
हर इंसान के पास दस-दस किलों सोना हो।

गरज़ यह है कि इस दुनिया में इतना सब कुछ होने के बावजूद, जिस दिन इस ज़मीन किसी एक इंसान के भी मुंह से अगर लफ्ज़ अल्लाह नहीं निकलेगा, तो उसी दिन यह आसमान फट जाएगा, ज़मीन रेज़ा-रेज़ा हो जाएगी, सब कुछ खत्म कर दिया जाएगा। अब बैठकर सोचो! इस दुनिया के बारे में, जिसको पाने के लिए हम क्या कुछ नहीं कर रहे हैं, जबकि हर इंसान के लिए यह दुनिया मुक़द्दर हो चुकी है, इंसान अपने मुक़द्दर से लड़ाई लड़कर क्या हासिल कर लेगा?!!

जो दुनिया अल्लाह के नाम के बोल की वजह से क़ायम है, जी हां! सिर्फ़ मुंह

से निकले हुए बोल, कि आपने अमेरिका में रहने वाले अपने भाई को फोन किया, उसने आपके फोन को रिसिव (*Recieve*) किया तो आप से यहां बोले 'हेलो (*Hello*)' तो आपके मुंह से निकले हुए बोल 'हेलो (*Hello*)' यहां से 13554 किलोमीटर दूर, एक सैकण्ड में हवा में होते हुए हिन्दुस्तान से अमेरिका पहुंच गया, अगर मुंह निकले हुए इन बोलो को कोई आदमी पकड़ना चाहे तो टेप रिकार्डर में कैसिट लगाकर पकड़ सकता है, या मोबाइल (*Mobile*) से टेप करके पकड़ सकता है।

लफ्ज़ "अल्लाह" की ताक़त

मेरे दोस्तो! ईमान को न सीखने की वजह से हमें लफ्ज़ "अल्लाह" की ताक़त का अंदाज़ा नहीं है। एक चोर से लफ्ज़ "पुलीस" की ताक़त के बारे में पूछो, कि कोई चोर के सामने "पुलीस" कह दे तो उसका क्या हाल होता है, कि उसका जिस्म कांप उठता है। ज़रा सोचो! कि जिस अल्लाह के बोल पर सारी कायनात क़ायम है। और उस अल्लाह का यक़ीन कोई अपने दिल में पैदा कर ले तो आप खुद यह बतलाओ कि यह तमाम क़ायनात क्या उसके पीछे-पीछे नहीं चलेगी?! देखो! चोर के दिल में पुलीस की ज़ात उसकी ताक़त का यक़ीन होता है, इसी तरह मुसलमान के अंदर अल्लाह का यक़ीन और उसकी ताक़त का यक़ीन अल्लाह की ज़ात का यक़ीन होना चाहिए, जिसको हम मुसलमानों ने अपने अंदर पैदा नहीं किया, अगर पैदा किया होता, अल्लाह का नाम सुनकर हमारा भी जिस्म कांप उठता, अल्लाह का नाम सुन हमारा दिल न डरे, तो यह तो हमारे लिए रोने वाली बात है कि ईमान हो और दिल न डरे ऐसा कैसे हो सकता है। हां! यह कुरआन की बात है अल्लाह तआला ने कुरआन में ईमान की निशानी बयान फ़रमाई,

﴿إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ آيَاتُهُ زَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ﴾

"कि ईमान वाले तो वही है कि जब उनके सामने अल्लाह का नाम लिया जाता है तो उनके दिल डर जाते हैं, और जब अल्लाह तआला की ख़बर उनको सुनाई जाती है, तो उन ख़बरों को सुनकर उनके यक़ीन बढ़ जाते हैं, और वे लोग सिर्फ़ अपने रब पर ही तवक्कुल करते हैं। (सूरः अंफ़ाल)

अब अगर किसी शख़्स ने अपने दिल के अंदर अल्लाह की ज़ात का, सिफ़ाते ख़ूबियत के साथ यक़ीन पैदा कर लिया। तो जैसे ही उस शख़्स की ज़बान से कोई बोल निकलेंगे, वह बोल, सीधे आसमानों को पार करते हुए अर्श पर पहुंच जाएंगे। फिर सीधे अल्लाह अपनी कुदरत से उसका काम बनाएंगे, जिस तरह आज मोबाइल के सामने बोलकर काम बनाए जा रहे हैं, सहाबा रज़ि० ने इनसे बड़े–बड़े काम अल्लाह से आसमानों के ऊपर से करवाएं हैं।

एक मर्तबा अबू रिहाना रज़ि० नौव पर जा रहे थे, उस पर बैठे हुए वह सूई से अपनी कापी सी रहे थे, अचानक हवा के झोंके से उनके हाथ से सूई छूटकर समुंद्र में गिर गई, उन्होंने आसमान की तरफ़ देखकर दुआ की, ऐ अल्लाह! तुझे तेरी क़सम मुझे मेरी सूई वापस कर दे! इतना कहकर उन्होंने पानी में देखा तो उनकी सूई पानी के ऊपर पड़ी हुई थी, उन्होंने अपनी सूई उठाई और कापी सिलने लगे। (इसाबा, 2, 157)

हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने अपनी बांदी ज़नोरा रज़ि० को आज़ाद किया तो उनकी आंखों की रोशनी चली गई, इस पर कुरैश के सरदार ने कहा: तुम्हें लात व उज़्ज़ा (अरब के दो बुतों का नाम जिसे काफ़िर पूजते थे) ने अंधा कर दिया, यह सुनकर हज़रत ज़नोरा ने कहा: कि तुम लोग ग़लत कहते हो, बैतुल्लाह की क़सम! लात व उज़्ज़ा किसी के काम नहीं आ सकते, न ही ये किसी को नफ़ा पहुंचा सकते हैं और ना ही किसी को नुक़्सान पहुंचा सकते हैं, इतना कहना था, कि अल्लाह ने उनकी आंखों की रोशनी वापस कर दी। (इसाबा, 4, 314)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि एक बार हज़रत उमर रज़ि० ने हम लोगों से कहा कि चलो हम लोग अपनी क़ौम की ज़मीन पर चलते हैं, चुनांचे हम लोग चल पड़े मैं और उबई बिन काब रज़ि० जमाअत से कुछ पीछे रह गए थे इतने में एक बादल तेज़ी से आया और बरसने लगा तो उबई बिन काब रज़ि० ने कहा, ऐ अल्लाह! इस बारिश की तकलीफ़ को हमसे दूर कर दे। चुनांचे हम बारिश में चलते रहे लेकिन हमारी कोई चीज़ बारिश से न भीगी। जब हम दोनों हज़रत उमर रज़ि० और उनके साथियों के पास पहुंचे तो उन लोगों के जानवर, कजावे और सारा सामान भीगा हुआ था। हम लोगों को भीगा न देखकर हज़रत उमर

रज़ि० ने हमसे पूछा कि क्या तुम लोग किसी दूसरे रास्ते से आए हो? जिसकी वजह से बारिश से नहीं भीगे। मैंने उन्हें बताया कि हज़रत उबई बिन काब रज़ि० ने यह दुआ कर दी थी कि ऐ अल्लाह! हमसे इस बारिश की तक्लीफ़ को दूर कर दे। यह सुनकर हज़रत उमर रज़ि० ने फ़रमाया कि तुम लोगों ने अपने साथ हमारे लिए भी दुआ क्यों नहीं की?। (मुंतखब अल–कंज़, 4, 132)

हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि० के पास से एक आदमी मश्क लेकर गुज़रा, उन्होंने उससे पूछा, इस मश्क़ में क्या है? उसने कहा, शहद है। हज़रत ख़ालिद ने दुआ कि ऐ अल्लाह! इसे सिरका बना दे, जब वह आदमी अपने साथ वालों के पास पहुंचा तो उन लोगों से कहा कि आज मैं जो शराब लाया हूं वैसी शराब अरब वालों ने कभी पी न होगी, यह कहकर उसने मश्क़ का मुंह खोलकर शराब उंडेली, तो शराब की जगह उसमें सिरका निकलता देखकर उसने कहा, अल्लाह की क़सम ख़ालिद की दुआ लग गई। (बिदाया, 7, 114)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि० को यह ख़बर मिली कि ज़ियाद हिजाज़ का मुक़द्दस का वाली बनना चाहता है, उन्हें उसकी बादशाहत में रहना पसंद न आया, तो उन्होंने यह दुआ कि, ऐ अल्लाह! तू अपनी मख़्लूक़ में से जिसके बारे में चाहता है उसे क़त्ल करवाकर उसके गुनाहों के कफ़्फ़ारे की सूरत बना देता है। (ज़ियाद) इब्ने समया अपनी मौत मरे, क़त्ल न हो, चुनांचे ज़ियाद के अंगूठे में से उसी वक़्त ताऊन की गिल्टी निकल आई और जुम्आ आने से पहले ही मर गया।

(इब्ने असाकीर, मुंतख़बुल कंज़)

(करबला में) एक आदमी ने खड़े होकर पूछा कि क्या आप लोगों में हुसैन (रज़ि०) हैं? लोगों ने कहा हां, है। उस आदमी ने हज़रत हुसैन रज़ि० को गुस्ताख़ी के अंदाज़ में कहा, आपको जहन्नम की बशारत हो। हज़रत हुसैन रज़ि० ने फ़रमाया मुझे बशारतें हासिल हैं, एक तो निहायत मेहरबान रब वहां होंगे दूसरे वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वहां होंगे जो सिफ़ारिश करेंगे और उनकी सिफ़ारिश क़बूल की जाएगी, लोगों ने पूछा तू कौन है? उसने कहा, मैं इब्ने जुवैरिया इब्ने जुवैज़ा हूं। हज़रत हुसैन रज़ि० ने यह दुआ कि, "ऐ अल्लाह! इसके टुकड़े–टुकड़े करके इसे जहन्नम में डाल दे। चुनांचे इसकी सवारी ज़ोर से बिदकी जिससे वह

सवारी इस तरह नीचे गिरा, कि उसका पांव रिकाब (घोड़े पर बैठने के बाद पैर रखने की जगह को कहते हैं) में फंसा रह गया और वह सवारी तेज़ भागती रही और उसका जिस्म और सर ज़मीन पर घिसटता रहा, जिससे उसके जिस्म के टुकड़े गिरते रहे। अल्लाह की क़सम! आख़िर में सिर्फ़ उसकी टांग रिकाब में लटकी रह गई।

(हैसमी, 9, 183)

आसमान से अंगूर के टोकरे के साथ दो चादरें भी

हज़रत लैस बिन साद रह० कहते हैं कि मैं हज को गया, मक्का पहुंचकर मैं असर की नमाज़ के वक़्त अबू क़ुबैस पर चढ़ गया। वहां मैंने एक साहब को दुआ मांगते हुए देखा कि वह

फिर "يَارَبِّ يَارَبِّ"
फिर "يَارَبَّاهُ يَارَبَّاهُ"
फिर "يَاأَللّٰهُ يَاأَللّٰهُ"
फिर "يَاحَيُّ يَاحَيُّ"
फिर सात मर्तबा, "يَاقَيُّومُ يَاقَيُّومُ"

"يَاأَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ"

कहा और कहने लगा, कि ऐ अल्लाह! अंगूर खाने को दिल चाह रहा है अंगूर दे और मेरी चादरें पुरानी हो गई हैं वे भी दे।

हज़रत लैस रह० कहते हैं ख़ुदा की क़सम! उनकी ज़बान से ये लफ़्ज़ पूरे निकले भी नहीं थे कि एक टुकरा अंगूरों से भरा हुआ उनके सामने आसमान से उतरा, उसमें दो चादरें भी रखी हुई थीं। हालांकि उस वक़्त सारे अरब में कहीं अंगूर का नाम व निशान नहीं था। उन्होंने अंगूर का एक गुच्छा टोकरे से खाने के लिए निकाला तो मैंने आवाज़ देकर कहा कि इन अंगूरों में मेरा भी हिस्सा है। उन्होंने पीछे पलटकर देखा उनकी नज़र मुझ पर पड़ी मुझसे कहा इसमें तुम्हारा हिस्सा कैसे है मैंने कहा, जब आप दुआ कर रहे थे तो मैं आपकी दुआ पर आमीन कह रहा था यह सुनकर उन्होंने वह गुच्छा मुझे पकड़ा दिया और कहने लगे कि

इसे यहीं बैठकर खाओ, मैंने इसे यहीं पर खाने के लिए मांगा है। घर ले जाने के लिए नहीं। मैंने वह अंगूर लेकर खाए तो बग़ैर बीज के उन अंगूरों का उम्र भर मज़ा न भूला। (रोज़ुल रियाहीन)

एक मर्तबा इब्राहीम ख़्वास रह० जंगल से होकर जा रहे थे उन्हें रास्ते में एक ईसाई मिला, उसने उनसे कहा कि ऐ मुहम्मदी! मुझे भी अपने साथ लेते चलो, उन्होंने उसे अपने साथ चलने की इजाज़त दे दी, कि ठीक है चलो, सात दिन तक हम दोनों भूखे प्यासे चलते रहे, सातवें दिन उस ईसाई ने मुझसे कहा कि ऐ मुहम्मदी! आज कुछ खाने-पीने का इंतिज़ाम करो, तो मैंने अल्लाह तआला से दुआ की कि ऐ अल्लाह! इस काफ़िर के सामने आज मुझे ज़लील न कीजिएगा, हम लोगों के खाने-पीने का इंतिज़ाम कर दीजिए, उसी वक़्त आसमान से एक ख़्वान उतरा, जिसमें रोटियां, भूना हुआ गोश्त, ताज़ी खजूरें और साथ में पानी भरा हुआ लोटा भी रखा था। हम दोनों ने उसे खाया-पीया और चल दिए।

सात दिन तक हम लोग फिर भूखे-प्यासे चलते रहे। तो सातवें दिन मैंने उस ईसाई से कहा कि आज तुम खाने-पीने का इंतिज़ाम करो। यह सुनकर वह लकड़ी का सहारा लगाकर आसमान की तरफ़ देखने लगा। फिर उसने अपनी ज़बान से कुछ कहा बस उसी वक़्त आसमान से दो ख़्वान उतरे जिसमें हर चीज़ मेरे ख़्वान से दुगनी थी। यह देखकर मैं हैरान हो गया और रंज की वजह से मैंने खाना खाने से इंकार कर दिया। उस ईसाई ने मुझसे कहा कि आप खाना खा लीजिए, फिर मैं आपको दो खुशख़बरियां सुनाऊंगा, मैंने उससे कहा, कि पहले खुशख़बरी सुनाओ, फिर मैं खाना खाऊंगा, उसने मुझे बताया कि तुम्हारे लिए पहली खुशख़बरी यह है कि मैं मुसलमान हो गया हूं और दूसरी खुशख़बरी यह है, कि यह जो आसमान से खाना आया है, यह मैंने अल्लाह तआला से तुम्हारे सदके के तुफ़ैल में मांगा है।

(फ़ज़ाइले सदक़ात)

हज़रत अब्दुल्लाह फ़रमाते हैं कि मैं क़ाफ़िले के साथ जा रहा था रास्ते में मैंने एक औरत को देखा कि क़ाफ़िले से आगे-आगे जा रही थी मैंने ख़्याल किया कि यह ज़इफ़ा इसलिए आगे-आगे जा रही है कि कहीं क़ाफ़िला से छूट न जाए, मेरे पास चंद दिरहम थे, जिन्हें मैं अपनी जेब से निकालकर उसको देने लगा और मैंने

कहा जब काफ़िला मंज़िल पर ठहरे, तो मुझे तलाश करके मिल लेना मैं काफ़िले वालों से कुछ चंदा करके तुझको दे दूंगा, जिससे तुम अपने लिए किराए पर सवारी ले लेना। इसने मेरी बात सुनकर अपना हाथ ऊपर को उठाया, तो उसकी मुट्ठी किसी चीज़ से भर गई, जब उसने अपना हाथ खोला तो वह दिरहम से भरा हुआ था। ये दिरहम उसने मुझे दिए और मुझसे बोली कि तूने जेब से निकाले और मैंने ग़ैब से लिए। (फ़ज़ाइले सदक़ात)

जिस्म के सात आज़ा (हिस्से) कि हरकतों का नाम "अमल है"

मेरे दोस्तो! अल्लाह ने दुनिया का निज़ाम इंसान के अमल के साथ जोड़ा है कि इंसान के जिस्म से जैसा अमल होगा, अल्लाह की तरफ़ उसके साथ वैसा ही मामला होगा। क्योंकि ग़ैबी निज़ाम का ताल्लुक़ अमल से है सबब् से नहीं है। अब यहां पर सवाल यह पैदा होता है कि

अमल किसे कहते हैं?

जिस्म से निकलने वाली हरकत को अमल कहते हैं।

लोग तो बेचारे रोज़ा, नमाज़, हज और ज़कात वग़ैरह ही को अमल समझते हैं। देखो! जिस्म के सात हिस्से (आंख, कान, ज़बान, दिमाग़ हाथ, पैर और शर्मगाह) से जो भी हरकत होगी, उस हरकत का नाम अमल है। इंसान के जिस्म के ये हिस्से अगर अल्लाह के हुक्म पर उसकी मर्ज़ी पर इस्तेमाल होंगे, तो आसमानों के ऊपर से उसे कामयाबी दिलाने वाले फ़ैसले नाज़िल होंगे और ग़ैबी निज़ाम उसकी हिमायत में आ जाएगी और अगर हमने अपने जिस्म का इस्तेमाल अपने मर्ज़ी पर किया, तो ज़िल्लत, तंगी, परेशानियों और बीमारियों से हमें कोई बचा नहीं पाएगा। यह अल्लाह की तरफ़ से तैयशुदा बात है, दुनिया की चीज़ें माल और सामान हमारे पास चाहे जितना हो, फ़रिश्तों के ज़रिए चलाया जा रहा ग़ैबी निज़ाम हमारे खिलाफ़ हो जाएगा, देखो! एक आदमी ने अपनी ज़बान से सिर्फ़ दो बातें झूठ के बोले कि उसके घर पर एक आदमी ने आकर उसके बेटे को पूछा, उसका बेटा घर पर ही था, लेकिन उसने अपनी ज़बान से दो बोल निकाले वह घर पर नहीं है, तो उसकी ज़बान से निकले हुए उन बोल की वजह से वे फ़रिश्ते उनकी तरफ़ आने

वाली बलाओं और मुसीबतों को उनसे दूर करता था, उसके इस अमल की वजह से एक मील दूर चला जाता है, हज़रत अली रज़ि० ने फ़रमाया कि हर इंसान पर दो फ़रिश्ते मुक़र्रर किए जाते हैं जो बलाओं और मुसीबतों को उसकी तरफ़ आने से रोकते हैं लेकिन जब मुक़द्दर में लिखा हुआ फ़ैसला सामने आ जाता है तो ये दोनों फ़रिश्ते उसके पास से हट जाते हैं, (अबू दाऊद)

कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः कि जब इंसान झूठ बोलता है तो उसके झूठ की बदबू की वजह से फ़रिश्ता एक मील दूर चला जाता है। (तिर्मिज़ी)

इसी तरह हज़रत बिलाल मुज़नी से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः तुममें से कोई शख़्स अल्लाह तआला को खुश करने के लिए अपनी ज़बान से कोई ऐसा बोल निकाल देता है, जिन बोलों को वह ज़्यादा अहम नहीं समझता, लेकिन उन बोलों की वजह से अल्लाह तआला क़ियामत तक के लिए उससे राज़ी होने का फ़ैसला फ़रमा देते हैं। (तिर्मिज़ी)

अल्लाह करें हम सबको अपनी ज़बान से निकलने वाले बोलों की हक़ीक़त का इल्म हो जाए। जी! सिर्फ़ ज़बान से निकलने वाले बोलों की ताक़त का पता हो जाए कि हज़रत हिश्शाम बिन आस उमवी रज़ि० फ़रमाते हैं कि जब हम रूम के बादशाह हिरक़्ल के मुहल्ले में पहुंचे और वहां पहुंचकर अपने मुंह से 'ला इलाह इल्लल्लाहु, अल्लाहु अक्बर, के बोल निकाले तो अल्लाह ही जानता है कि उसके महल का बालाखाना ऐसे हिलने लगा कि जैसे पेड़ की टहनी को हवा हिलाती है। (बिदाया)

अगर अपनी ज़बान से निकलने वाले बोलों की ताक़त की बात अभी न समझ में आ रही हो तो, इस हदीस से समझने की कोशिश करो। कि हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः कि कोई शख़्स ऐसा नहीं कि वह अपनी ज़बान 'ला इलाह इल्लल्लाह' के बोल निकाले और उन बोलों के लिए आसमान के दरवाज़े न खुल जाएं, यहां तक कि वह बोल सीधा अर्श पर पहुंचता है बशर्तेकि वह गुनाह कबीरा से बचता हो।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः कि अगर तमाम आसमान व ज़मीन का एक घेरा हो

जाए, तो भी 'ला इलाह इल्लल्लाह' के बोल इस घेरे को तोड़कर अल्लाह तआला तक पहुंचकर रहेगा। (बज़ाज़)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कि जब कोई शख़्स 'ला इलाह इल्लल्लाह' के बोल बोलता है, तो इन बोलों के लिए आसमान के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं, कि यह बोल सीधे अर्श तक पहुंचते हैं, अर्श के ऊपर नूर का एक सुतून है, जो इन बोलों की वजह से हिलने लगता है, अल्लाह तआला सब कुछ जानने के बावजूद सुतून से पूछते हैं, कि तू क्यों हिल रहा है? सुतून अर्ज़ करता है कि इन बोलों को बोलने वाले की अभी मग़्फ़िरत नहीं हुई है, अल्लाह तआला सुतून से कहते हैं, तू ठहर जा! मैंने इसकी मग़्फ़िरत कर दी।

देखो! इस बात को यूं समझा जा सकता है कि आपने यहां हिन्दुस्तान से अमरिका में रहने वाले किसी आदमी को फोन लगाया, उसका फोन वाइबरेट (*vibrate*) पर लगा हुआ मेज़ पर रखा है वह 100 ग्राम का मोबाइल आपके फ़ोन मिलाने पर वहां अमरिका में मेज़ पर हिलने लगता है, अगर उसके मोबाइल पर आपका नाम फ़ीड (लिखा हुआ) है तो उसको मालूम हो जाता है कि उस शख़्स को मेरी ज़रूरत है, कौन मुझे फ़ोन कर रहा है।

मेरे दोस्तो! यह तो सिर्फ़ ज़बान से निकले हुए बोल की बात है आंख कान दिमाग़ हाथ पैर और शर्मगाह से होने वाली हरकतों की ताक़त का अभी हमें अंदाज़ा नहीं है। उसी के लिए फ़ज़ाइल की तालीम है, कि हमें पता तो चले कि हमारे जिस्म के सही इस्तेमाल पर आसमानों के ऊपर से क्या फ़ैसला आएगा और अगर हमने अपने जिस्म को अपनी मर्ज़ी पर इस्तेमाल किया तो आसमानों के ऊपर से क्या फ़ैसला आएगा। कि इस ज़माने में इस बात को मोबाइल या कम्पयूटर से समझा जा सकता है कि मोबाइल या कम्पयूटर का 'की बोर्ड (*keyboard*) कि इसके जिस बटन पर हाथ रखा जाएगा, उसका नतीजा स्क्रीन (*screen*) पर ज़ाहिर हो जाएगा, ऐसा नहीं है कि कोई अमीर आदमी उस बटन को दबाए, तो कुछ और नज़र आए और ग़रीब दबाए तो कुछ और, मोबाइल या कम्पूटर के किस बटन से स्क्रीन पर क्या ज़ाहिर होगा। यह बात मोबाइल और कम्पूटर बनाने वाले ने पहले ही बता दी थी, अगर इस तरीक़े से हटकर कोई आदमी मोबाइल या कम्पयूटर का

इस्तेमाल अपनी मर्ज़ी से करेगा, तो परेशानी में फंसेगा। हां यह पक्की बात है, अब इसका इस्तेमाल करने वाला चाहे–

अमीर हो, या ग़रीब,
पढ़ा लिखा हो या अनपढ़,
शहरी हो या देहाती,
मर्द हो या औरत,

ठीक इसी तरह अल्लाह ने भी इंसान के जिस्म को बनाकर नबियों के ज़रिए से इस्तेमाल करने का तरीक़ा बताया है जो इस तरीक़े पर इस्तेमाल होगा, दुनिया व आख़िरत में वही कामयाब होगा।

इंसान की रोज़ी–रोटी
कपड़ा और मकान
सेहत और बीमारी
इज़्ज़त और ज़िल्लत
कामयाबी और ना–कामियाबी

इन सारी चीज़ों का ताल्लुक़ अल्लाह तआला ने इंसान के जिस्म से ज़ाहिर होने वाली हरकतों से जोड़ा है जिस्म की इन्हीं हरकतों को अमल कहते हैं, इंसान जब ईमान को नहीं सीखता है तो यह अपनी हाजतों और ज़रूरतों को कायनात में फैली हुई चीज़ों से जोड़ लेता है, हालांकि जिब्रील से लेकर चींटी तक के सारी मख़्लूक़ की हर हाजत और हर ज़रूरत को अल्लाह तआला ही अपनी क़ुदरत से पैदा करते हैं और वही पूरी करते हैं।

﴿أَوْ كَالَّذِي مَرَّ عَلَىٰ قَرْيَةٍ وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا قَالَ أَنَّىٰ يُحْيِي هَٰذِهِ اللَّهُ
بَعْدَ مَوْتِهَا فَأَمَاتَهُ اللَّهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهُ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ قَالَ بَل
لَبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ فَانظُرْ إِلَىٰ طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ وَانظُرْ إِلَىٰ حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَكَ آيَةً
لِّلنَّاسِ وَانظُرْ إِلَى الْعِظَامِ كَيْفَ نُنشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوهَا لَحْمًا فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ قَالَ أَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ
عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ﴾ (البقرة:٢٥٩)

"या तुमको इस तरह का क़िस्सा भी मालूम है जैसे एक शख़्स था (उज़ैर अलैहिस्सलाम) कि, एक बस्ती पर ऐसी हालत में इसका गुज़र हुआ कि उसके मकानात अपनी छतों पर गिर गए थें, कहने लगा कि अल्लाह तआला इस बस्ती (के मुर्दों) को इसके मेरे पीछे किस कैफ़ियत से ज़िंदा करेंगे, सो अल्लाह तआ़ला ने उस शख़्स को सौ साल तक मुर्दा रखा फिर इसको ज़िंदा करके उठाया, और फिर पूछा कि कितनी मुद्दत इस हालत में रहा, उस शख़्स ने जवाब दिया कि एक दिन रहा हूंगा या एक दिन से भी कम, अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि नहीं बल्कि तू सौ साल रहा है, तो अपने खाने (की चीज़) और पीने (की चीज़) को देख ले कि नहीं सड़ी गली और (दूसरे) अपने गधे की तरफ़ नज़र कर और ताकि हम तुझको एक नज़ीर लोगों के लिए बना दें। और (इस गधे की) हड्डियों की तरफ़ नज़र कर कि हम उनको किस तरह तरकीब दिए देते हैं फिर उन पर गोश्त चढ़ा देते हैं फिर जब ये सब कैफ़ियत उस शख़्स को वाज़ेह हो गई तो कह उठा कि मैं यक़ीन रखता हूं कि बेशक अल्लाह तआला हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत रखता है।"

देखो! उज़ैर अलैहिस्सलाम की रूह को इनके जिस्म से सौ (100) साल तक निकाले रखा, तो उज़ैर अलैहिस्सलाम को सौ (100) साल तक खाने–पीने की ज़रूरत पड़ी और न ही पेशाब–पाखाने की हाजत हुई क्यों? क्योंकि जिस्म से रूह निकाल ली है।

﴿فَضَرَبْنَا عَلَىٰ آذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِينَ عَدَدًا، ثُمَّ بَعَثْنَاهُمْ لِنَعْلَمَ أَيُّ الْحِزْبَيْنِ أَحْصَىٰ لِمَا لَبِثُوا أَمَدًا﴾(الكهف:١٢-١٣)

इसी तरह अस्हाबे कहफ़ के चंद लोग जिन्होंने एक ग़ार में पनाह ली थी, अल्लाह तआला ने तीन सौ नौ (309) दिन तक उनकी रूह को उनके जिस्म से निकाले रखा उन्हें खाने–पीने की ज़रूरत न पड़ी और न ही पेशाब–पाख़ाने की हाजत की।

मेरे दोस्तो! अल्लाह तआला हर रोज़ इंसान के जिस्म से उसकी रूह को निकालते हैं और मुक़द्दर में लिखी जा चुकी ज़िंदगी पूरी करने के लिए फिर वापस

भेज देते हैं। हज़रत अली रज़ि० से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः जब इंसान गहरी नींद में सो जाता है तो उसकी रूह को अर्श पर चढ़ाया जाता है, जो रूह अर्श पर पहुंचकर जागती है, उसका ख़्वाब सच्चा होता है और जैसे पहले ही जाग जाती है उसका ख़्वाब झूठा होता है। (हैसमी)

कायनात वाला रास्ता, इम्तिहान वाला रास्ता है

इंसान की रूह जब उसके जिस्म में रहती है तो अल्लाह तआला इम्तिहान के लिए उसके जिस्म में हाजातें भेजते रहते हैं और देखना यह चाहते हैं कि मेरा बंदा इन हाजातों को किन रास्तों से पूरी करता है। शिर्क वाले रास्ते से, या तौहीद वाले रास्ते से। शिर्क वाला रास्ता यह है कि इंसान अपने पलने में चीज़ों को शरीक कर लेता है कि पालने वाले तो अल्लाह है मगर सब बग़ैर सबब कैसे पालेगा?! तौहीद वाला रास्ता यह है कि अल्लाह तआला अपनी कुदरत से पाल रहे हैं और वह ही अपनी कुदरत से पालेंगे, हां उनकी कुदरत से पलने के लिए उनके अहकामात (हुक्म) हैं नमूने के तौर पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का ज़िंदगी और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा है। देखो! अल्लाह तआला ने दुनिया के अंदर इंसान के पलने के लिए दो रास्ते अता फ़रमाए हैं। एक रास्ता क़ायनात वाला और एक रास्ता हुक्मों वाला। क़ायनात वाला रास्ता इम्तिहान वाला रास्ता है और अहकामात (हुक्मों) वाला रास्ता इनाम दिलाने वाला रास्ता है। इस ज़माने में अगर कोई इंसान चाहे तो मोबाइल या कम्पयूटर से समझ सकता है। देखो अगर आपको अपने कम्पयूटर पर उर्दू में कुछ लिखना है तो उसके लिए आपको अपने कम्पयूटर में उर्दू का सौफ़्टवेयर (*Software*) डालना पड़ेगा। इस सौफ़्टवेयर (*Software*) को हासिल करने के दो रास्ते हैं, एक रास्ता यह है कि आप इसे बाज़ार से खरीदकर लाओ यानी अपनीं जान, माल और वक्त लगाओ, दूसरा रास्ता यह है कि आप इंटरनेट (*Internet*) के ज़रिए सीधे अपने कम्पयूटर में डाउनलौड (*Download*) करो, तो सीधा फ़ायदा हासिल करने के लिए शर्त यह है कि आपने कम्पयूटर का इस्तेमाल करना सीखा हो। तो एक तरफ़ दुकान से ख़रीदकर लाना और एक तरफ़ हवा के रास्ते से आना। सहाबा किराम ने अल्लाह के हुक्मों पर अपने जिस्म को इस्तेमाल करना सीखा था। जिसकी वजह से सीधे

आसमानों के ऊपर से अपनी ज़रूरतों को पूरा कराते थे। जैसे हुजैर उबई इहाब की बांदी हज़रत मुआविया रज़ि० फ़रमाती हैं कि हज़रत खुबैब रज़ि० को मेरे घर की एक कोठरी में बंद करके रखा गया था, एक बार मैंने दरवाज़े के दराज़ से झांका तो उनके हाथ में इंसान के सर के बराबर अंगूर का एक खोशा था, जिसमें से वह अंगूर तोड़–तोड़कर खा रहे थे जबकि उस वक़्त पूरे अरब में कहीं भी अंगूर नहीं था। यह देखकर मैंने अपना जुन्नार काट डाला और मुसलमान हो गई। कि बेशक अल्लाह तआला ज़रूरतों को पूरा करने में किसी के मुहताज नहीं हैं।

(इसाबा, 1, 419)

हज़रत मौलाना यूसुफ़ साहब रह० का आख़िरी ख़िताब

इन रास्तों और इन बातों को हज़रत मौलना यूसुफ़ साहब रह० ने अपने इंतिक़ाल से बीस दिन पहले पाकिस्तान के सफ़र में बयान फ़रमाया था जिसे नीचे लिखा जा रहा है।

हज़रत मौलाना यूसुफ़ साहब रह० ने फ़रमाया: भाइयों और दोस्तो! अपनी ज़िंदगी में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वे तरीक़े लाओ जो अल्लाह ने अपनी ज़ात से पलने के लिए किए हैं क्योंकि नुबूवत मिलने के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इंसानों से लेने का कोई रास्ता इख़्तियार नहीं फ़रमाया है, आपने ताईफ़, तबूक, यमन, हज़र मौत और नजद (ये सब मदीना के आस–पास के बसे शहरों के नाम थे) वालों को नमाज़ बतलाई कि जो कलिमा पढ़े नमाज़ बनाने की मेहनत करे। जब यह यक़ीन बने कि अल्लाह हैं और रास्ता नमाज़ है और उसी बात की दावत भी दी जा रही हो। तो दुनिया की तर्तीब बदलेगी। इसलिए नमाज़ को अंदर से बनाओ। क्योंकि मसअले का ताल्लुक़ अंदर से है, जब यह बना लो, तो नमाज़ की बुनियाद पर तीन लाइन ठीक करो,

घर,
कारोबार,
और मुआशरत,

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के रास्ते में भी कमाई और घर हैं और इंसान के रास्तों में भी कमाई और घर के नक़्शे हैं। कमाई से परवरिश नहीं होती,

बल्कि अल्लाह से परवरिश तो अल्लाह का हुक्म मानकर लेंगे। जब यह बात है कि कमाई से परवरिश नहीं हो रही है, तो फिर क्यों कमाया जाए, तो पहले नमाज़ से परवरिश लो, लेकिन नमाज़ के बाद दो रास्ते हैं।

कमाना

और न–कमाना

अगर कोई न कमाए और सिर्फ़ नमाज़ पढ़कर अल्लाह से लें, तो भी ठीक है। पर उस पर शर्त सिर्फ़ यह है, कि अगर न कमाओ, तो–

किसी मख़लूक़ का माल न दबाना,
किसी के सामने अपने हाल का इज़्हार न करना,
किसी से सवाल न करना,
इशराफ़ न करना,
तक्लीफ़ पहुंचे तो जज़ा फ़ज़ा न करना,
हर हाल में अल्लाह से राज़ी रहना,

अगर ये बातें अंदर पैदा हो जाए, तो कमाई की ज़रूरत नहीं है। इसकी मिसाल के लिए चारों सिलसिले के औलिया अल्लाह हैं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं,
हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम है,
अस्हाबे सूफ़ा (मदीने के वे ग़रीब मुसलमान जिनके पास कुछ नहीं था)

इसी तरह लाखों मिसालें हैं जिन्होंने सिर्फ़ नमाज़ से अपनी परवरिश का काम चलाया है। इसलिए अगर न कमाना हो तो, ग़सब, इशराफ़, सवाल, जज़ा फ़ज़ा और घबराहट न हो, हां अगर कमाते हो तो इसकी बुनियाद यह है कि कमाई से परवरिश नहीं होगी। अल्लाह सब कुछ नमाज़ से देंगे। मैं परवरिश के लिए नहीं कमाऊंगा बल्कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़ा कमाई में चलाना है। हम कमाई के शोब्हों में अल्लाह के हुक्मों को पूरा करने जा रहे हैं, हमें यह यक़ीन सीखना है कि अल्लाह पाल रहे हैं इसलिए अल्लाह के हुक्म को तोड़कर नहीं कमाना है, अब जो चीज़ें हलाल हैं उनसे कमाने के दो तरीक़े हैं उनमें एक तरीक़ा हलाल है और एक तरीक़ा हराम है। कि सूअर, कुत्ता, बिल्ली वग़ैरह का

खाना हराम है, और बकरी, गाय, मुर्ग़ी और हिरन खाना हलाल है। इन हलाल में भी हलाल और हराम बनेगा। अगर 'बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर' कहकर ज़िब्ह किया है, तो यह हलाल है और अगर 'बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर' नहीं कहा है तो यह हराम है, अगर 'बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर' कहा, पर बजाए गर्दन पर छुरी फेरने के पेट से काटा तो हराम, क्योंकि तरीक़ा ग़लत था, इसलिए अगर कमाना है तो मसाइल की पाबंदी के साथ कमाओ, इसलिए जो बात नमाज़ में कही, वही कमाई में कहो कि 'अल–हम्दु लिल्लाहि रब्बील आलामीन' कि जब इस तरह से हमारी कमाई होगी, तो दुनिया में चमकना और फलना फूलना होगा। ज़लज़ला, सैलाब, बमबारी हो, पर हमारी दुकान और घर का बाल भी बाका न होगा, क्योंकि अल्लाह के महबूब मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा है। चाहे दुकान मिट्टी की हो, अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा है, तो ऐटम बम से ज़्यादा ताक़तवर है।

(हज़रत जी की यादगार तक़रीरें)

"बिलाल पार्क लाहौर" से सदाए ईमान

इसी तरीक़े अपने इंतिक़ाल से 18 घंटे पहले यानी एक अप्रैल 1965 ई० "बिलाल पार्क लाहौर" में मग़्रिब की नमाज़ के बाद हज़रत मौलाना यूसुफ़ साहब ने जो बयान फ़रमाया, इसे भी नीचे लिखा जा रहा है ताकि किसी तरह ये बातें हमारी समझ में आ जाए, हज़रत ने फ़रमाया–

﴿إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا وَلَا
تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ نَحْنُ أَوْلِيَاؤُكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ وَلَكُمْ
فِيهَا مَا تَشْتَهِي أَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُونَ نُزُلًا مِنْ غَفُورٍ رَحِيمٍ﴾ (حم سجدہ: ۳۰-۳۲)

जिन लोगों ने (दिल से) इक़रार कर लिया कि हमारा रब अल्लाह है, फिर (उस पर) मुस्तक़ीम रहे, उन पर फ़रिश्ते उतरेंगे कि तुम न अंदेशा करो और न रंज करो और तुम जन्नत (के मिलने) पर ख़ुश रहो जिसका तुमसे (पैग़म्बरों की मारफ़त) वायदा किया जाया करता था और हम तुम्हारे रफ़ीक़ थे दुन्यावी ज़िंदगी में भी और आख़िरत में भी रहेंगे। तुम्हारे लिए इस (जन्नत में) जिस चीज़ का तुम्हारा जी चाहेगा मौजूद है। और नीज़ तुम्हारे लिए इसमें जो मांगोगे मौजूद है।

यह बतौर मेहमानी के होगा गफ़ूर्रहीम की तरफ़ से।

अल्लाह रब है यह लफ़्ज नहीं बल्कि एक मेहनत है, जिस तरह कोई शख़्स अगर यह कहे, कि मैं दुकान से पलता हूं, या खेती से, मुलाज़मत से, या हुकूमत से पलता हूं, तो यह कहना लफ़्ज़ नहीं है बल्कि मेहनत है, इतना कहने के बाद मेहनत शुरू हो जाती है, कि ज़मीन ख़रीदता है हल चलाता है बीच डालता है, पानी लगाता है। ग़रज़ इस लफ़्ज के पीछे एक लम्बी-चौड़ी मेहनत की ज़िंदगी है। ठीक उसी तरह जब कोई यह कहे कि हमारे रब अल्लाह हैं, तो सिर्फ़ यह कहकर बात ख़त्म नहीं हुई, बल्कि शुरू हुई कि जब अल्लाह पालने वाले हैं तो ग़ैरों से पलने का यक़ीन दिल से निकालें, यह पहली मेहनत हुई कि मैं ज़मीन आसमान और उसके अंदर की चीज़ों से नहीं पलता बल्कि अल्लाह से पलता हूं। उनको मेहनत करके दिल का यक़ीन बनाना है। उस यक़ीन को रग व रेशा (पूरी तरह अपनी ज़िंदगी में लाने) के लिए मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी और आपका सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तरीक़ा है।

'अल्लाह से पलता हूं' इस बोल की हक़ीक़त दिल में उतारने के लिए मुल्क और माल, तिजारत और खेती की मेहनत नहीं है, बल्कि इस लफ़्ज़ पर नबियों वाली मेहनत और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वाली मेहनत करनी होगी, यानी मेहनत करके इस हक़ीक़त तक पहुंचो, कि हमें सीधे-सीधे अल्लाह से पलना हैं, अल्लाह को पालने में खेती और दुकान की ज़रूरत नहीं है, वह अपने हुक्मों से पालते हैं। अगर यह हक़ीक़त दिल में पैदा हो जाए, तो अमरिका और रूस भी तुम्हारी जूतियों में होगा। बस शर्त इतनी है कि यह सिर्फ़ ज़बान के बोल न हो, बल्कि दिल के अंदर की हक़ीक़त हो, इसके लिए हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े पर मेहनत करो। अल्लाह तर्बीयत करने वाले हैं अल्लाह को माबूद बनाकर अल्लाह की इबादत करके पलना है। अगर इबादत से पलने पर मेहनत करोगे तब दिल में उतरेगा, इबादत नमाज़ है नमाज़ तुम्हारे इस्तेमाल का अपना तरीक़ा है। ज़मीन या मोटर या जानवरों के तरीक़े का नाम नमाज़ नहीं है। बल्कि अपनी आंख, ज़बान, हाथ, पैर, कान, और दिमाग़ को इस तरह इस्तेमाल करना सीखो, जिस तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस्तेमाल किए हैं। नमाज़ क्या है? नमाज़ कायनात से नहीं बल्कि अल्लाह से दोनों दुनिया में लेने के वास्ते

हमारे अपने जिस्म के इस्तेमाल का तरीक़ा है। यह नमाज़ है कि सिर्फ़ अल्लाह हम को पालेगा, बस हमारे अपने जिस्म का इस्तेमाल हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के तरीक़े पर हो जाए।

(हज़रत जी की यादगार तक़रीरें)

एक मौक़े पर हज़रत मौलाना यूसुफ़ साहब रह० ने यह भी फ़रमाया: कि लोगों को यह धोखा लगा है, कि मैं चीज़ों से पलता हूं अल्लाह चीज़ों से नहीं पालते हैं बल्कि हर एक को अपनी क़ुदरत से पाल रहे हैं। अल्लाह की क़ुदरत से फ़ायदा उठाने के लिए इबादत है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबा को ज़ाहिर के ख़िलाफ़, अमल करके दुआ मांगकर अल्लाह की क़ुदरत के ज़रिए अपने सारे मसअलों को हल करना सिखलाया था। अल्लाह की क़ुदरत से फ़ायदा हासिल करने के लिए अल्लाह की ज़ात व सिफ़ात का यक़ीन, अल्लाह की इबादत और अल्लाह के बंदों से हमदर्दी, ख़िदमते ख़ल्क़ और इख़्लास वाले अमल के ज़रिए सहाबा को दुआ की क़ुव्वत हासिल हो गई थी। दुआ एक ऐसी बुनियाद है कि माल से तो तुम नाकाम हो सकते हो, लेकिन तुम—

मालदार हो या मुफ़लीस
अमीर हो या फ़क़ीर
हाकिम हो या महकूम
बीमार हो या तंदरुस्त

हर सूरत में अल्लाह तआला तुमको दुआ के ज़रिए ज़रूर कामियाब करेगा। चुनांचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने अपने सहाबा रज़ि० को दुआ के रास्ते अपनी ज़रूरतों का पूरा कराना ख़ूब अच्छी तरह सिखलाया था। इंफ़िरादी और इज्तिमाई दोनों मसअलों में इनकी दुआएं ख़ूब चला करती थी।

(हज़रत जी की यादगार तक़रीरें)

मेरे दोस्तो! आज हमें ईमान के सीखने की ज़रूरत इसलिए नहीं है और हम ईमान को इसलिए नहीं सीख रहे हैं क्योंकि हमारे सारे काम पैसे से हो रहे हैं। इसलिए माल को कमाना, सीखना और फिर माल का कमाना, यह हमारी ज़िंदगी का मक़सद बन गया है।

बुखारी शरीफ़ की हदीस है जिसमें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया: कि खुदा की कसम! मुझे तुम्हारे ऊपर फ़कर व फ़ाके (बहुत ज़्यादा ग़रीबी) का खौफ़ नहीं है बल्कि इसका खौफ़ है कि तुम पर दुनिया की वुसअत (फैलाव) हो जाए, जैसा कि तुमसे पहली उम्मतों पर हो चुकी है फिर तुम्हारा भी उसमें दिल लगने लगे जैसा कि उनका लगने लगा था, बस यह चीज़ तुम्हें भी हलाक कर देगी, जैसा कि पहली उम्मतों को कर चुकी है।

बड़े शर्म की बात है, कि जिस चीज़ को हमारे प्यारे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस उम्मत का फ़ित्ना बतलाया हो, उसी चीज़ को आज हम मुसलमानों ने अपना रब और माबूद बनाया हुआ है। अब हमें कैसे पता चले कि हमने माल को माबूद बनाया हुआ है? तो इस बात को जानना बहुत आसान है। कैसे? तो वह इस तरह से कि जब तुम अपने घर में दाख़िल हो और तुम्हारे घर वाले तुमसे कहें कि घर में आटा ख़त्म हो गया, जाओ आटा लेकर आओ। तुम्हें फ़ौरन पैसे का ख़्याल आएगा, जिस जेब में है उस जेब का ख़्याल आएगा, जेब में नहीं है अलमारी में है तो अलमारी का ख़्याल आएगा अगर अलमारी में नहीं है, बैंक में है तो बैंक का ख़्याल आएगा। ग़र्ज़ यह है कि हर चीज़ का तो ख़्याल आएगा पर रब का ख़्याल न आएगा। अब फ़ैसला करो कि हमने किसे अपना रब बनाया हुआ है?!! तो पता यह चलेगा कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की बात सच्ची, कि हमने माल ही को अपना रब बनाया हुआ है और उसी को हासिल करने के लिए हमारा जीना और मरना है अपनी ज़बानों से तो यह कहते हैं–

चींटी से लेकर जिब्रील तक,
ज़मीन से लेकर आसमान तक,
ज़र्रे से लेकर पहाड़ तक,
क़तरे से लेकर समुंद तक,

किसी से कुछ नहीं होता, पर दिलों के अंदर माल का यक़ीन बैठा हुआ है, कि करने वाली ज़ात तो अल्लाह ही है पर माल के बग़ैर कुछ नहीं होगा इसलिए माल से चीज़ें और सामान मिलेगा और चीज़ों और सामान से काम बनेगा। हालांकि ये सारी दुनिया मुर्दार है तो भला मुर्दे से क्या होगा? यह सोचने वाली बात है कि

ख़बर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दी है कि ये सारी दुनिया मुर्दार है और–

इसको चाहने वाले,
इसको पाने वाले,
इसको हासिल करने वाले,
और इसकी तलब रखने वाले,

कुत्ते हैं इसलिए मुर्दार को कुत्तों के अलावा और कोई पसंद नहीं करता।

मेरे दोस्तो! जिस कायनात को बनाने के बाद अल्लाह ने फिर दोबारा इसे देखा न हो, आज ईमान न सीखने के वजह से हमने इसी से अपने मसख़लों को जोड़ लिया।

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि कोई बंदा अल्लाह के यहां चाहे जितनी इज़्ज़त और शरफ़ वाला हो, लेकिन दुनिया की कोई चीज़ या सामान उसको मिलता है तो उस चीज़ को लेने की वजह से अल्लाह के यहां उसका दर्जा कम हो जाता है।

(हुलीया, 1, 304)

तुम्हारे साथ वह होगा जो अंबिया और सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के साथ हुआ

मेरे दोस्तो! जब हम ईमान को सीखते हुए दावत के आलिमी तक़ाज़ों को पूरा करते हुए, अपने जिस्म के हिस्सों को अल्लाह की मर्ज़ी पर इस्तेमाल करेंगे, जिस तरह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस्तेमाल करके दिखलाया है, तो फिर वह होगा, जो अंबिया और सहाबा किराम के साथ हुआ है। कि–

बनी इसराइल को 40 साल तक मन व सलवा आसमान से उतारकर दिखलाया।

हज़रत मरयम बिन इम्रान अलैहिस्सलाम को इनके कमरे में आसमान से फल उतारकर खिलाया।

बनी इसराइल को पत्थर से बारह चश्में निकालकर पानी पिलाया।

हज़रत मूसा अलै० को जब उनकी मां ने लकड़ी के संदूक़ में बंद करके दरिया

नील में बहा दिया तो तीन दिन और तीन रात तक उन्हीं के हाथों से दूध और शहद निकालकर पिलाया।

हज़रत ईसा अलै० ने हव्वारीन को थाल में रखकर आसमान से पका हुआ खाना उतारकर खिलाया।

हज़रत इब्राहीम अलै० को जब नमरूद ने आग में फेंका तो आग को बाग़ बनाकर 40 दिन बाहर से नज़र आने वाली उस आग के अंदर ही आसमान से खाना उतारकर खिलाया। हज़रत इब्राहीम के मुक़ाबले पर आए हुए नमरूद और उसकी फ़ौज को मच्छरों से हलाक कराया।

अबरहा (हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के दादा के वक़्त यह अपने लश्कर के साथ बैतुल्लाह को ढाने आया था) के लश्कर को चिड़ियों से कंकरियां फिकवाकर तबाह करके दिखाया।

बनी इसराइल को दरिया–ए–नील में रास्ता बनाकर निकाला।

हज़रत यूसुफ़ अलै० को गुलाम से बादशाह बनाया।

हज़रत इसमाइल अलै० के लिए ज़म–ज़म निकाला।

हज़रत अय्यूब अलै० के सड़े हुए जिस्म को सही सालिम बनाया।

हज़रत ईसा अलै० को दुश्मन से बचाकर आसमान पर उठाया।

हज़रत सालेह अलै० की क़ौम के लिए पहाड़ से ऊंटनी को निकाला।

हज़रत यूनुस अलै० को 40 दिन मछली के पेट में रखकर बाहर निकाला।

हज़रत दाऊद अलै० के हाथों में लोहे को मोम बनाया।

हज़रत सुलैमान अलै० को तमाम मख़लूक़ पर बादशाह बनाया।

हज़रत ज़िक्रिया अलै० को बुढ़ापे में औलाद अता फ़रमाई।

हज़रत मूसा अलै० की लाठी को जादूगरों के सामने सांप बनाया।

हज़रत इब्राहीम अलै० की बीवी हज़रत सारा अलै० की इज़्ज़त बचाने के वास्ते *फ़िरऔन का जिस्म को पत्थर बनाया।*

बनी इसराइल के चेहरे को सूअर और बंदर बनाया।

हज़रत नूह अलै० की क़ौम को सैलाब में ग़र्क़ करके दिखलाया।

मेरे दोस्तो! अगर हम लोग भी अल्लाह के हुक्मों को मज़बूती से पकड़ लें तो

अल्लाह ज़ाहिर के खिलाफ़ अपनी कुदरत से तुम्हारी ज़रूरतों को भी पूरा करेंगे। कि

कभी तुम्हारी ज़रूरत की चीज़ों को दूसरों से हदिया (तोहफ़ा) दिलाकर पूरा कराएगा।

कभी हज़रत मिक्दाद रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह चूहे से सोना (अशर्फ़ी) भिजवाएगा।

कभी हज़रत उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा की तरह आसमान से पानी का भरा डोल उतारेगा।

कभी हज़रत ख़ुबैब रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह बंद कमरे में आसमान से उतारकर अंगूर खिलाएगा।

कभी तुम्हारी चक्की से आंटा निकालकर खिलाएगा।

कभी हज़रत उम्मे साइब रज़ियल्लाहु अन्हा की तरह तुम्हारे मुर्दा बच्चे को ज़िंदा करेगा।

कभी हज़रत अब्दुल्लाह बिन जहश रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह हाथ में पकड़ी हुई टहनी को तलवार बनाएगा।

कभी हज़रत तुफ़ैल बिन अम्र दौसी रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह तुम्हारे कोड़े में रोशनी दाख़िल करेगा।

कभी हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह तुम्हारे लिए दरिया को मुस्ख़र (ताबेदार, फ़रमांबरदार) करेगा।

कभी हज़रत तमीम दारी रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह तुम्हारे लिए आग को मुस्ख़र (ताबेदार, फ़रमांबरदार) करेगा।

कभी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह तुम्हारी भी आवाज़ 300 मील दूर पहुंचाएगा।

कभी हज़रत आला हज़रमी रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह तुम्हारे लिए समुंद को मुस्ख़र (ताबेदार, फ़रमांबरदार) करेगा।

कभी हज़रत हमज़ा बिन अम्र अस्लमी रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह तुम्हारे हाथ की उंगलियों से टार्च की तरह रोशनी निकालेगा।

कभी हज़रत सफ़ीना रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह शेर से रहबरी (रास्ता दिखाना) कराएगा।

कभी सहाबा रज़ियल्लाहु तआला अन्हुम समुंद से गुबर (बहुत बड़ी मच्छली) भेजेगे।

कभी हज़रत अबू मुअल्लिक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह तुम्हारे दुश्मन को हलाक करने के लिए चौथे आसमान के फ़रिश्तों को भेजेगा।

कभी हज़रत ज़ैद बिन हारिस रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह तुम्हारे लिए भी सातवें आसमान से फ़रिश्तों को उतारकर तुम्हारी मदद के लिए भेजेगा।

कभी उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह तुम्हारे कमरे में 300 अशरफ़ी (सोने के सिक्के) उतारेगा।

कभी बद्र और उहुद (इस्लाम की मशहूर जंगें) की तरह तुम्हारे लिए भी आसमानों से फ़रिश्तों को उतारेगा।

कभी हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह तुम्हारे भी तोशेदान (उनका एक थैला जिसमें उन्होंने कुछ खजूरें रखी, जिसमें बहुत ज़्यादा बरकत हो गई थी) से 25 साल तक निकालकर खिलाएगा।

कभी उकाशा बिन मुहसिन रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह तुम्हारी भी लकड़ी को तलवार बना देगा।

- कभी रात के अंधेरे में एक सहाबी रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह तुम्हारी लाठी से रोशनी निकालकर टार्च की कमी को पूरा करेगा।

कभी हज़रत उबई बिन काब रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह बारिश के पानी से सफ़र के दौरान भीगने से बचाएगा।

कभी हज़रत खालिद बिन वलीद रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह तुम्हारे कहने पर शराब को सिरका बना देगा।

कभी हज़रत औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह तुम्हें दुश्मन की क़ैद से रस्सी को खोलकर आज़ाद कराएगा।

कभी हिशाम बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु की तरह दुश्मन के हमले में 'ला इलाह इल्लल्लाहु अल्लाहु अक्बर' कहने पर इसका बालाख़ाना टूटकर गिर जाएगा।

ग़ैबी (अल्लाह की मदद) निज़ाम

﴿وَمَا يَعْلَمُ جُنُودَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكْرَىٰ لِلْبَشَرِ﴾

"तुम्हारे रब के लश्करों (फ़रिश्तों) को तुम्हारे रब की सिवा कोई नहीं जानता।

(सूरः मुद्दसिर)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है: अल्लाह तआला ने जो फ़रिश्ते पैदा फ़रमाए हैं, उनमें ग़ौर व फ़िक्र करो।

(तफ़सीर कश्शाफ़, हदीस 1193)

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: सातों आसमानों में एक बालिश्त के बराबर कोई ऐसी जगह नहीं है, जहां पर फ़रिश्ते न हों, कोई क़ियाम में कोई रुकूअ में, कोई सज्दे में। पस जब क़ियामत का दिन होगा, तो सब मिलकर अर्ज़ करेंगे (ऐ अल्लाह!) आपकी ज़ात पाक है, हमने आपकी इबादत इस तरह नहीं की जिस तरह आपकी इबादत करने का हक़ था। हां, यह ज़रूर है कि हमने आपके साथ किसी को शरीक नहीं ठहराया।

(इब्ने अबी हातिम)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह की मख़्लूक़ में फ़रिश्तों से ज़्यादा कोई मख़्लूक़ नहीं है। ज़मीन पर कोई चीज़ ऐसी नहीं उगती जिसके साथ एक मौकिल फ़रिश्ता न होता हो।

(अबू शैख़)

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने फ़रिश्तों को नूर से पैदा किया, फिर उसमें रूह डाली। पस फ़रिश्ते पैदाइश के एतबार से

मक्खी से भी छोटे हैं, पर उनकी तायदाद गिनती के एतबार से हर चीज़ से ज़्यादा है।

(मुस्नद बज़्ज़ार)

हज़रत अबू सईद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः मेराज में जब मैं (मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और जिब्रील अलै० पहले आसमान पर पहुंचे तो वहां इस्माइल नाम का एक फ़रिश्ता मिला, जो पहले आसमान के फ़रिश्तों का सरदार है। उसके सामने सत्तर हज़ार फ़रिश्ते हैं। उनमें से एक के साथ में एक-एक लाख फ़रिश्तों की जमाअत है।

(इब्ने अबी हातिम)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः

फ़रिश्तों को नूर से पैदा किया गया।
जिन्नात को भड़कती हुई आग से पैदा किया गया।
आदम को उस चीज़ से पैदा किया जिसकी सिफ़त अल्लाह तआला तुममें बयान फ़रमाई है। (यानी मिट्टी से)

(मुस्लिम किताबुल-ज़ाहिद)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि (मलाकुल मौत) को इंसानों की रूह निकालने का काम सौंपा गया है। जिन्नात के लिए और फ़रिश्ते मुक़र्रर है। शैतानों, परिंदों, मछलियों और चींटियों की रूह निकालने के लिए दूसरे फ़रिश्ते मुक़र्रर है।

(जवेबरफ़ी तफ़सीर मा)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि (एक बार हम लोगों पर) बादल ने साया किया, तो हमने उससे (बारिश की) उम्मीद की तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जो फ़रिश्ता बादलों को चलाता है वह अभी हाज़िर हुआ था, उसने मुझे सलाम किया और बतलाया कि वह इस बादल को यमन की वादी की तरफ़ ले जा रहा हूं, उस जगह का नाम ज़राह है। जहां

इसका पानी बरसेगा।

(अबू उवाना)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं यहूदी लोग रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आए तो और कहने लगे ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)! हमें बतलाइये यह 'रअद' क्या है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः "रअद" अल्लाह के फ़रिश्तों में एक फ़रिश्ता है, जो बादलों की निगरानी करता है उसके हाथ में आग का कोड़ा है, जिससे बादलों को तंबीह करता है। और जहां का अल्लाह तआला उसको हुक्म देते हैं, वहां (बादलों को) ले जाता है। "बरक़" इस फ़रिश्ते का बादल को कोड़ा मारना है। यहूदियों ने कहा, आपने सच फ़रमाया।

(अहमद, तिर्मिज़ी)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु कि 'रअद' वह फ़रिश्ता है, जो बादलों को तंबीह से चलाता है, जिस तरह ऊंटों को गा कर हाकने वाला हकाता है। उसी तरह वह बादलों को डांटता है, जिस तरह चरवाहा अपनी बकरियों को डांटता है।

(इब्ने मुन्ज़िर, इब्ने अबी दुनिया)

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से "रअद" के बारे में सवाल किया गया तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमायाः अल्लाह तआला ने 'रअद' बादलों को चलाने की ज़िम्मेदेरी सुपुर्द की है। पस जब अल्लाह तआला इरादा फ़रमाते हैं कि किसी बादल को किसी जगह भेजें तो रअद को हुक्म फ़रमाते हैं और वह बादलों को चलाकर वहां ले जाता है और जब बादल बिखरता है तो वह अपनी आवाज़ से डांटता है, यहां तक कि वह फिर मिल जाता है, जिस तरह तुममें से कोई आदमी अपनी रकाबों को जमा करता है।

(अबू शैख़)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मलाकुल मौत जो सारे ज़िंदा इंसानों की रूह निकालता है वह सारे ज़मीन वालों पर इस तरह मुसल्लत है, जिस तरह से तुममें से हर एक आदमी अपनी हथेली पर मुसल्लत होता है

मलाकुल मौत के साथ रहमत और अज़ाब दोनों किस्म के फ़रिश्ते होते हैं, जब किसी पाकीज़ा नफ़्स की वफ़ात देता है तो उसके पास रहमत वाले फ़रिश्ते भेजता है और ना-फ़रमान की रूह निकालने के लिए उसकी तरफ़ अज़ाब के फ़रिश्ते भेजता है।

(जुवैबर)

हज़रत काब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि इंसान उस वक़्त तक नहीं रोता, जब तक कि उसके पास एक फ़रिश्ता नहीं भेजा जाता। वह फ़रिश्ता आकर उसके दिल पर अपना पर रगड़ता है, उसके पर रगड़ने से इंसान रोने लगता है।

(इब्ने असाकिर)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि कुछ फ़रिश्ते ऐसे भी हैं, जो पेड़ों से गिरने वाले पत्ते तक को लिखते रहते हैं। सो! तुममें से जब कोई किसी इलाक़े में रास्ता भटक जाए और कोई मददगार न मिले तो उसके चाहिए कि बुलंद आवाज़ से यह कहे-

'ऐ अल्लाह के बंदो! हमारी मदद करो!।

अल्लाह तुम पर रहम फ़रमाए'।

तो उसकी मदद की जाएगी।

(तबरानी)

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, कि समुंद्र एक फ़रिश्ते की गिरफ़्त में है। अगर वह इससे ग़ाफ़िल हो जाए, तो उसकी मौजें ज़मीन पर टूट पड़ें।

(इब्ने अबी हातिम)

हज़रत ज़मरा बिन हबीब रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल करते हैं, कि किसी बंदे के अमल को लेकर जब फ़रिश्ते आसमान पर पहुंचते हैं, जिसे वह बड़ा और पाकीज़ा समझते हैं, तो अल्लाह तआला उनकी तरफ़ वही फ़रमाते हैं कि तुम मेरे बंदों के अमल के निगरां हो, लेकिन उनके दिलों में क्या है, यह सिर्फ़ मैं जानता हूं। मेरे बंदे ने यह अमल मेरे लिए नहीं किया। इसलिए यह अमल सज्जीन (सातों के ज़मीन के नीचे एक आलम है) में फेंक दो।

इसी तरह किसी और बंदे का अमल लेकर जब फ़रिश्ते आसमान पर पहुंचते हैं। तो अल्लाह तआला उनकी तरफ़ वही फ़रमाते। कि तुम अमल के निगरां हो, लेकिन उसके दिल में क्या है? यह मैं जानता हूं। इस अमल को कई गुना कर दो और इसे अलय्यीन में इसके लिए रख दो।

(दुर्रे मंसूर, 2, 325)

हज़रत हंज़ला रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत हंज़ला रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमायाः अगर तुम्हारा हाल वैसे रहे, जैसा मेरे पास रहने पर होता है, या हर वक़्त तुम अल्लाह के ज़िक्र में मश्गूल रहो, तो फ़रिश्ते तुम्हारे बिस्तरों पर और तुम्हारे रास्तों में तुम्हारे पास जाकर तुमसे मुसाफ़ा करने लगें, लेकिन ऐ हंज़ला! यह कैफ़ियत धीरे-धीरे पैदा होती है।

(मुस्लिम)

हज़रत उम्मे औसिया रज़ियल्लाहु अन्हा से रिवायत हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः कोई मुसलमान जब गुनाह करता है, गुनाह लिखने वाला फ़रिश्ता जो उसके कंधे पर मौजूद है, वह गुनाह को लिखने से तीन घड़ी ठहर जाता है, ताकि गुनाह करने वाला शायद उस बीच तौबा कर ले।

(मुस्तदरक हाकिम)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब तुम मुर्ग़ की आवाज़ सुनों तो अल्लाह तआला से उसके फ़ज़्ल का सवाल करो, क्योंकि मुर्ग़ फ़रिश्ते को देखकर आवाज़ देते हैं और जब तुम गधों की आवाज़ सुनो तो शैतान से अल्लाह की पनाह मांगो, क्योंकि गधे शैतान को देखकर बोलते हैं।

(बुख़ारी)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः जब तुममें से कोई सोने के लिए बिस्तर पर जाता है तो एक फ़रिश्ता और एक शैतान उसके पास आता है। शैतान कहता है कि अपने जागने के वक़्त को बुराई पर ख़त्म कर, और फ़रिश्ता कहता है कि उसे भलाई पर ख़त्म कर।

अब अगर वह अल्लाह का ज़िक्र करके सोया है, तो शैतान उसके पास से चला जाता है और एक फ़रिश्ता रात भर उसकी हिफ़ाज़त करता रहता है। फिर जब वह सोकर उठता है, तो फिर से एक फ़रिश्ता और शैतान उसके पास आते है। शैतान उससे कहता है कि अपने जागने को बुराई से शुरू कर और फ़रिश्ता कहता है कि अपने दिन को भलाई से शुरू कर।

(मुस्नद अहमद)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: 'सूर' फूकने वाला फ़रिश्ता इसराफ़ील अलै० 'सूर' को अपने मुंह में रखे हुए पेशानी झुका कर इस बात का इंतिज़ार कर रहा है कि कब इसे सूर के फूंकने का हुक्म मिले और वह सूर को फूंक दे।

(कंज़ुल उम्माल: 7 270)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: अल्लाह तआला ने पानी के ख़ज़ाने पर एक फ़रिश्ता मुक़र्रर कर रखा है। उस फ़रिश्ते के हाथों में एक पैमाना है, उस पैमाने से गुज़र कर ही पानी की हर बूंद ज़मीन पर आती है। लेकिन हज़रत नूह अलै० के तौफ़ान वाले दिन ऐसा न हुआ बल्कि अल्लाह ने सीधे पानी को हुक्म दिया और पानी को संभालने वाले फ़रिश्ते को हुक्म न दिया। जिस पर वह फ़रिश्ते पानी को रोकते रह गए, लेकिन पानी न रुका।

(कंज़ुल उम्माल: 1, 273)

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया शबे क़द्र की रात को अल्लाह तआला हज़रत जिब्रील अलै० को हुक्म फ़रमाते हैं कि ज़मीन पर जाओ!

हज़रत जिब्रील अलै० फ़रिश्तों की एक बहुत बड़ी जमाअत के साथ ज़मीन पर उतरते हैं। उनके साथ हरे रंग का झंडा होता है, जिसको यह काबा शरीफ़ के ऊपर लगाते हैं। फिर अपने साथ आए हुए फ़रिश्तों के साथ कहते हैं, कि तुम लोग सारी दुनिया में फैल जाओ और जहां पर भी जो मुसलमान आज की रात में खड़ा हो या बैठा, नमाज़ पढ़ रहा हो या ज़िक्र कर रहा हो, तो उसको सलाम करो और मुसाफ़ा करो और उनकी दुआओं पर आमीन कहो। सुबह तक यह सिलसिला

जारी रहता है। फिर जब सुबह हो जाती है तो हज़रत जिब्रील अलै० आवाज़ देते हैं 'ऐ फ़रिश्तों की जमाअत अब वापस आसमान की तरफ़ चलो, तो सारे फ़रिश्ते हज़रत जिब्रील अलै० से साथ आसमान पर वापस चले जाते हैं।

(मिश्कात शरीफ़, 206)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जुम्आ के दिन फ़रिश्ते मस्जिद के दरवाज़े पर खड़े होकर, मस्जिद में आने वालों के नाम लिखते रहते हैं। लेकिन जब खुत्बा शुरू होता है, तब फ़रिश्ते नाम लिखना बंद करके खुत्बा सुनने में मश़गूल हो जाते हैं।

(बुख़ारी)

हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया जब नमाज़ की सफ़ें खड़ी हो जाती हैं, तो आसमानों के, जन्नत के और जहन्नम के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं। जन्नत की सजी हूरें ज़मीन पर झांकती है।

(हैसमी, 5, 284)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स नमाज़ के इंतिज़ार में रहता है, फ़रिश्ते इसके लिए दुआ करते रहते हैं।

(बुख़ारी)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब नमाज़ का वक़्त होता है। उस वक़्त एक फ़रिश्ता ऐलान करता है कि 'ऐ आदम की औलाद! उठो और जहन्नुम की जिस आग को तुमने अपने गुनाहों कि वजह से जला रखा है इसे बुझा लो।

(तबरानी)

हज़रत उस्मान गनी रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जो शख़्स नमाज़ की हिफ़ाज़त करे और वक़्त की पाबंदी के साथ इसका एहतिमाम करे। तो फ़रिश्ते उस शख़्स की हिफ़ाज़त करते हैं।

(मुनब्बेहात)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम ने फ़रमाया जब बंदा मिस्वाक करके नमाज़ के लिए खड़ा होता है, तो एक फ़रिश्ता इसके पीछे आकर खड़ा हो जाता है, और उसकी क़िरात खूब ध्यान से सुनता है, फिर उसके बहुत क़रीब हो जाता है, यहां तक कि उसके मुंह पर अपना मुंह रख देता है। क़ुरआन का जो भी लफ़्ज़ उस नमाज़ी के मुंह से निकलता है, सीधा फ़रिश्ते के पेट में पहुंचता है।

(बज़्ज़ार)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जब नमाज़ के लिए आज़ान दी जाती है, तो शैतान ऊंची आवाज़ में रीहा ख़ारिज करते हुए पीठ फेरकर भाग जाता है। आज़ान के ख़त्म होने पर वापस आ जाता है। जब इक़ामत कही जाती हो फिर भाग जाता है। इक़ामत हो जाने पर फिर वापस आ जाता है, ताकि नमाज़ी के दिल में वसवसे डाले। नमाज़ी को कभी कोई बात याद कराता है, तो कभी कोई बात, ऐसी-ऐसी बातें याद दिलाता है, जो बातें नमाज़ी के नमाज़ से पहले याद न थीं, यहां तक कि नमाज़ी को यह भी ख़्याल नहीं रहता, कि कितनी रकअतें हुई हैं।

(मुस्लिम)

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया नमाज़ की सफ़ों को सीधा रखा करो, कंधों को कंधों की सीध में रखा करो, सफ़ों को सीधा रखने में अपने भाइयों के लिए नर्म बन जाया करो और सफ़ों के बीच पड़ी खाली जगहों को भर लिया करो, क्योंकि शैतान सफ़ों में ख़ाली जगह देखकर भेड़ के बच्चे की तरह बीच में घुस जाता है।

(तबरानी)

हज़रत अबूदर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिस गांव या जंगल में तीन आदमी हों और वहां जमाअत से नमाज़ न होती हो, तो उन लोगों पर शैतान ग़ालिब हो जाता है, इसलिए जमाअत से नमाज़ पढ़ने को ज़रूरी समझो, भेड़िया अकेले बकरी को खा जाता है। (और आदमियों का भेड़िया शैतान है)।

(अबूदाऊद)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया तुममें से जब कोई शख़्स सोता है, तो शैतान उनकी गद्दी पर तीन गिरहें लगा देता है और हर गिराह पर यह फूंक देता है 'सोते रहो,' अभी रात बहुत पड़ी है। अगर इंसान जागकर अल्लाह का नाम लेता है। तो एक गिराह खुल जाती है। अगर वुज़ू कर लेता है, तो दूसरी गिराह खुल जाती है फिर अगर तहज्जुद पढ़ लेता है, तो तमाम गिरहें खुल जाती हैं।

(अबूदाऊद)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि नमाज़ में इधर-उधर देखना कैसा है? इर्शाद फ़रमाया यह शैतान का आदमी को नमाज़ से उचक लेना है।

(तिर्मिज़ी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जब तुममें से कोई सूरः फ़ातिहा के आख़िर में आमीन कहता है तो उसी वक़्त फ़रिश्ते आसमान पर से आमीन कहते हैं जिस शख़्स की आमीन फ़रिश्तों की आमीन के साथ मिल जाती है तो उसके पिछले तमाम गुनाह माफ़ हो जाते हैं।

(बुख़ारी)

हज़रत उवैस अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि ईद की सुबह अल्लाह तआला फ़रिश्तों को दुनिया के तमाम शहरों में भेजते हैं। वह ज़मीन पर उतरकर तमाम गलियों और रास्तों में खड़े हो जाते हैं और आवाज़ देकर कहते हैं, जिसे इंसान और जिन्नात के अलावा सारी मख़लूक़ सुनती है कि 'ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! की उम्मत इस करीम रब की बारगाह की तरफ़ चलो, जो ज़्यादा अता करने वाला है। फिर लोग ईदगाह की तरफ़ जाने लगते हैं। ।

(तबरानी)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया नमाज़ पढ़ने वाले के दाएं और बाएं एक-एक फ़रिश्ता होता

है। पस अगर वह (नमाज़ी) अपनी नमाज़ ईमान और एहतिसाब के साथ अदा किया तो वह फ़रिश्ता नमाज़ को लेकर आसमानों के ऊपर चले जाते हैं और अगर ना–मुकम्मल अदा किया, तो नमाज़ को उसके मुंह पर मार देते है।

(तर्ग़ीब व तरहीब, 1, 338)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाह अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया तुम्हारे पास रात के फ़रिश्ते और दिन के फ़रिश्ते आते रहते हैं। यह फजर और असर की नमाज़ के वक़्त जमा होते हैं। फिर जिन्होंने तुम्हारे साथ रात गुज़ारी थी, वह ऊपर चले जाते हैं।

(बुख़ारी शरीफ़)

हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मुबारक हो, वुज़ू में ख़लाल करने वाले को, मुबारक हो, खाने में खलाल करने वाले को।

वुज़ू में ख़लाल–
कुल्ली करना,
नाक में पानी चढ़ाना,
और (हाथ, पांव की) उंगलियों के दरमियान ख़लाल करना।

और खाने में ख़लाल यह है कि कोई चीज़ खाने की दांतों में रह जाए, तो उसको साफ़ करना, क्योंकि यह इन दोनों फ़रिश्तों के लिए ज़्यादा तक्लीफ़ दे है, कि वह अपने साथी के दांतों में खाने की कोई चीज देखें, जब वह नमाज़ पढ़ रहा हो।

(मुसन्नफ़ अब्दुर्रज़्ज़ाक़)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़्ल करते हैं कि दिन के करामन कातीबीन अलग हैं और रात के अलग। चूंकि दिन के फ़रिश्ते मग़्रिब की नमाज़ को पूरे तौर पर अदा करने के बाद ही आसमान पर वापस जाते हैं। इसलिए अगर मग़्रिब की दो रकआत सुन्नत में देर की गई, तो यह इन फ़रिश्तों पर भारी हो जाती है। लिहाज़ा मग़्रिब की फ़र्ज़ अदा करने

के बाद इन सुन्नतों की अदाएगी में देर न किया करो।

(देलमी)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो आदमी बग़ैर इल्म के फ़तवे देता है। इस पर आसमान और ज़मीन के फ़रिश्ते लानत करते हैं।

(इब्ने असाकिर)

हज़रत सफ़वान रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया इल्म सीखने वाले को मुबारकबाद दो, क्योंकि इल्म सीखने वाले को फ़रिश्ते अपने परों से घेर लेते हैं। इतना ही नहीं बल्कि ऊपर तले जमा होते होते आसमान तक पहुंच जाते हैं।

(तबरानी)

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह तआला ने मलाकुल मौत को सारे इंसानों की रूह निकालने के लिए मुक़र्रर फ़रमाया है, सिवाए समुंद्र में शहीद होने वालों की रूहों को अल्लाह तआला अपने हुक्म से निकालते हैं।

(इब्ने माजा, 2668)

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अगर तुम मौत और उसके फ़ैसले को जान लो, तो उम्मीद और उसके धोखे से नफ़रत करने लगो, किसी भी घर के लोग ऐसे नहीं हैं, कि जिन पर मलाकुल मौत रोज़ाना तंबीह न करता हो। जब किसी की उम्र पूरी हो चुकी होती है, तो मलाकुल मौत उसकी रूह निकाल लेते हैं, जब उसके रिश्तेदार रोते हैं, तो वह कहता है तुम लोग क्यों रो रहे हो?

अल्लाह की क़सम न तो मैंने उसकी उम्र में से कुछ कम किया है, और न ही रिज़्क़ में से मेरा कोई क़ुसूर नहीं है, मुझे तो तुम लोगों के पास भी आना है यहां तक कि तुममें से किसी को भी नहीं छोडूंगा।

(देलमी)

हज़रत ज़ुबैर इब्ने अवाम रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, हर सुबह जब सोकर लोग उठते हैं उस वक़्त एक फ़रिश्ता आवाज़ देता है, कि ऐ मख़्लूक़ात! तुम सब अल्लाह तआला की तस्बीह करना शुरू करो।

(मुस्नद अबू याला)

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह तआला फ़रिश्तों से फ़रमाते हैं, कि मेरे फ़लां बंदे के पास जाओ और उस पर यह सख़्त मुसीबत पलट दो, तो उसके पास आते हैं और उस पर मुसीबत डालते हैं। वह बंदा जब अल्लाह तआला की तारीफ़ बयान करता है, तो वह फ़रिश्ते लौट जाते हैं और अल्लाह तआला से अर्ज़ करते हैं कि हम ने उस पर मुसीबत डाल दी थी, जिस तरह आपने हुक्म दिया था।

तो अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमाते हैं, वापस लौट जाओ और उससे मुसीबत हटा दो, क्योंकि मैं पसंद करता था कि उसकी आवाज़ सुनो, कि वह इस मुसीबत के हाल में मुझे किस तरह याद करता है? हालांकि अल्लाह तआला सब कुछ जानते हैं, कि वह मेरी तारीफ़ ही करेगा, लेकिन इस हालत में इस ज़ुबान से शुक्र का कलिमा कहलाना और उसका सुनना मक़सूद है।

(तबरानी)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, रात के आख़िरी हिस्से में क़ुरआन की तिलावत करने पर फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं।

(तिर्मिज़ी)

हज़रत माक़िल बिन यसार रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, सूर: बक़र की तिलावत करने पर उसकी हर आयत के साथ अस्सी फ़रिश्ते आसमान से उतरते हैं।

(मुस्नद अहमद)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, फ़रिश्तों की एक ऐसी जमाअत है, जो सिर्फ़ ज़िक्र के हल्क़ों की तलाश में रहती है, जब वह ज़िक्र करने वाले हल्क़ों को पा लेती है, तो उन्हें

अपने परों से ढांपकर अपना एक कासिद आसमान पर अल्लाह तआला के पास भेजते हैं। वह फ़रिश्ता उन सब की तरफ़ से अर्ज़ करता है। ऐ हमारे रब! हम आपके इन बंदों के पास आए हैं, जो आपकी नेमतों की बड़ाई कर रहे हैं।

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं, उनको मेरी रहमत से ढांप दो फ़रिश्ता कहता है ऐ हमारे रब उनके साथ एक गुनाहगार बंदा भी बैठा है, अल्लाह तआला फ़रमाते हैं, उसको भी मेरी रहमत से ढांप दो, क्योंकि यह ऐसी मज्लिस है कि इनमें बैठने वाला कोई भी हो, वह महरूम नहीं होता।

(बज़्ज़ार)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो शख़्स अपने घर से निकलते वक़्त,

"بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ"

कह कर निकलता है, तो फ़रिश्ते उससे कहते हैं, कि तुम्हारे काम बना दिए गए और हर शर से तुम्हारी हिफ़ाज़त की गई। फिर शैतान उससे दूर हो जाता है।

(तिर्मिज़ी)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो शख़्स अपने बिस्तर पर पहुंचकर आयतुल कुर्सी पढ़कर सो जाता है, अल्लाह तआला उसकी हिफ़ाज़त के लिए फ़रिश्ते मुक़र्रर फ़रमा देते है। जो रात भर उसकी हिफ़ाज़त करता रहता है।

(बुख़ारी)

हज़रत माक़िल बिन यसार रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो शख़्स सुबह को तीन बार

"اَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ"

पढ़ कर सूरः हश्र की तीन आयतें पढ़ ले,

هُوَ اللّٰهُ الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عٰلِمُ الْغَيْبِ
وَالشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ هُوَ اللّٰهُ
الَّذِىْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ
الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ
سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ
الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى يُسَبِّحُ
لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ۝

तो अल्लाह तआला उसके लिए सत्तर हज़ार (70,000) फ़रिश्ते मुक़र्रर कर देते हैं, जो शाम तक रहमत भेजते रहते हैं।

(तिर्मिज़ी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, घर में जैसे ही आयतुल कुर्सी पढ़ी जाती है, फ़ौरन उस घर से शैतान निकल जाता है।

(तर्ग़ीब)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जो शख़्स घर से निकलकर-

"بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ"

कह ले, तो शैतान उन बोल को सुनकर उसके पास से चला जाता है।

(तिर्मिज़ी)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिस शख़्स ने खाना-खाने पर 'बिस्मिल्लाह' न कहा तो शैतान को उसके साथ खाने का मौक़ा मिल जाता है।

(मिश्कात शरीफ़)

हज़रत अबू अय्यूब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो शख़्स सुबह दस मर्तबा चौथा कलिमा पढ़ लेता है, तो शाम तक शैतान से उसकी हिफ़ाज़त होती है और अगर शाम को पढ़ लेता है, तो सुबह तक शैतान से उसकी हिफ़ाज़त होती है।

(इब्ने हब्बान)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो लोग अल्लाह के ज़िक्र के लिए किसी जगह पर जमा हों और उनके जमा होने की ग़रज़ अल्लाह को ख़ुश करना है, तो एक फ़रिश्ता आसमान से पुकार कर कहता है, कि तुम लोग बख़्श दिए गए और तुम्हारे गुनाहों को नेकियों में बदल दिया गया है।

(तबरानी)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, रमज़ान की हर रात को एक फ़रिश्ता आवाज़ देकर कहता है, कि 'ऐ ख़ैर की तलाश करने वालो! मुतावज्जेह हो और आगे बढ़ो और ऐ बुराई के तलबगार! बस करो और आंखें खोलो'।

इसके बाद वह फ़रिश्ता कहता है, कि है कोई माफ़ी मांगने वाला, जिसको माफ़ किया जाए और है कोई मांगने वाला जिसका सवाल पूरा किया जाए।

(तर्ग़ीब)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब कोई अपनी बीवी के पास आए और—

"اَللّٰهُمَّ جَنِّبْنَا الشَّيْطَانَ وَجَنِّبِ الشَّيْطَانَ مَا رَزَقْتَنَا"

पढ़कर हमबिस्तरी करे, तो अगर उस रात की सोहबत से बच्चा पैदा हुआ, तो शैतान कभी नुक़सान नहीं पहुंचा सकेगा।

(बुख़ारी)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब तुममें से कोई छिंकता है और छिंक कर—

"اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ"

कहता है, तो फ़रिश्ते–

"رَبِّ الْعَالَمِيْنَ"

कहते हैं। लेकिन जब छिंकने वाला–

(اَلْحَمْدُ)

को

"رَبِّ الْعَالَمِيْنَ"

समेत कहता है, तो फ़रिश्ते कहते हैं–

"يَرْحَمُكَ اللهُ"

यानी अल्लाह तआला तुझ पर रहमत फ़रमाए।

(बुख़ारी शरीफ़)

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब बंदा क़ुरआन मजीद ख़त्म करता है, तो ख़त्म के वक़्त उसके लिए साठ (60,000) फ़रिश्ते रहमत व मग़फ़िरत के लिए दुआ करते हैं।

(दैलमी)

हज़रत अबूदर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जुम्आ के दिन ख़ूब कसरत से दुरूद पढ़ा करो, क्योंकि वह हाज़िरी का दिन है, उसमें फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं, लिहाज़ा जो कोई मुझ पर दुरूद भेजता है, उसका दुरूद मुझ तक पहुंचा दिया जाता है।

(इब्ने माजा शरीफ़)

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, सुबह के वक़्त एक फ़रिश्ता सारी मख़्लूक़ से जब तस्बीह पढ़ने को कहता है, तो परिंदे उसकी आवाज़ सुनकर अपने परों को फड़फड़ाने लगते हैं।

(अबू शैख़ हदीस, 530)

हज़रत नूह बिन अज़ा से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, रात के वक़्त घर में पेशाब को किसी चीज़ में करके न रखा जाए,

क्योंकि रहमत के फ़रिश्ते उस घर में दाख़िल नहीं होते, जिस घर में पेशाब रखा हो।

(मोजम औसत तबरानी)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, उस क़ौम में फ़रिश्ते नाज़िल नहीं होते, जिस क़ौम में कोई क़तअ-रहमी (रिश्तेदारी को ख़त्म करने वाला) करना वाला हो।

(तबरानी)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिस घर में नापाकी की हालत वाला इंसान हो, वहां रहमत के फ़रिश्ते नहीं आते।

(अबू दाऊद)

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब तक तुममें से किसी का दस्तरख़्वान मेहमान के आने जाने की वजह से सामने रखा रहता है। तो तुम पर उस वक़्त तक फ़रिश्ते लगातार रहमत और बरकत की दुआ करते रहते हैं।

(जामेअ सग़ीर, 2928)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिसने लहसन प्याज़ खाया हो, वह हमारी मस्जिद में हरगिज़ न आए, क्योंकि फ़रिश्तों को भी इस चीज़ की बू से तक्लीफ़ होती है, जिससे इंसान को तक्लीफ़ होती है।

(बुख़ारी शरीफ़)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, हर इंसान के सर पर पोशीदा (छुपी हुई) तौर पर एक लगाम है, जिस लगाम को एक फ़रिश्ते ने पकड़ा हुआ है जब इंसान तवाज़ोह करता है तो फ़रिश्ते उस लगाम को बुलंद कर देता है और जब इंसान तकब्बुर करता है, तो फ़रिश्ते उस लगाम को पस्त कर देता है।

(तबरानी)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब लड़की पैदा होती है, तो अल्लाह तआला उस लड़की के पास एक फ़रिश्ता भेजता है, जो उस पर बहुत ज़्यादा बरकत उतारता है और कहता है, तू कमज़ोर है, क्योंकि कमज़ोर से पैदा हुई है। उस लड़की की किफ़ालत (परवरिश) करने वाले की क़ियामत तक मदद की जाती है और जब लड़का पैदा होता है तो अल्लाह तआला उसके पास एक फ़रिश्ता भेजते हैं जो उसकी आंखों के बीच बोसा लेता है और कहता है कि 'अल्लाह तुझे सलाम कहते हैं'।

(मोजम औसत तबरानी)

हज़रत इम्रान बिन हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हर मुसलमान क़ाज़ी के साथ दो ऐसे फ़रिश्ते होते हैं, जो उस क़ाज़ी को हक़ की रहनुमाई करते हैं, जब तक वह ख़िलाफ़े हक़ का इरादा न करे। अगर उसने जानबूझकर ख़िलाफ़े हक़ का इरादा किया और ज़ुल्म व ज़्यादती की, तो ये दोनों फ़रिश्ते उस क़ाज़ी को उसके नफ़्स के सुपुर्द करके उससे दूर हो जाते हैं।

(तबरानी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब कोई औरत अपने शोहर का बिस्तर छोड़कर नाफ़रमानी करते हुए अलग सोती है तो फ़रिश्ते उस पर उस वक़्त तक लानत करते रहते हैं, जब तक वह वापस शोहर के बिस्तर पर न आ जाए।

(बुख़ारी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अपने जूते अपने पावं के दर्मियान रखो, या अपने सामने रखो, अपने दाहिने न रखो, क्योंकि एक फ़रिश्ता तुम्हारे दाहिने है और बाहिने भी न रखो, क्योंकि वह जूते, तेरे भाई मुसलमान के दाएं होंगे।

(सईद बिन मंसूर)

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल करते हैं कि जब मुसलमान के जिस्म में कोई बीमारी भेजी जाती है, तो

अल्लाह तआला किरामन कातीबीन को हुक्म फ़रमाते हैं कि मेरे बंदे के लिए हर दिन और हर रात इतने नेक अमल लिखो, जितना वह बीमारी से पहले किया करता था। जब तक यह मेरी गिराह में बंधा हुआ है।

(इब्ने अबी शैबा)

हज़रत मकहूल रहमतुल्लाहि अलैहि फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब कोई इंसान बीमार होता है, तो बाएं तरफ़ के गुनाह लिखने वाले फ़रिश्ते को अल्लाह तआला यह हुक्म देते हैं, कि अपना क़लम उठा ले और दाहिने तरफ़ वाले फ़रिश्ते से यह कहा जाता है, कि इस बंदे के अच्छे आमाल लिखते रहो, जो यह तंदुरूस्ती की हालत में किया करता था। क्योंकि इसकी आने वाली हालत को मैं जानता हूं मैंने ही उसे इस हाल में मुब्तला किया है।

(इब्ने असाकीर)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, तुममें से जब कोई अपनी बीवी के पास जाए, तो उसे चाहिए कि पर्दा कर ले अगर वह हमबिस्तरी के वक़्त पर्दा नहीं करेगा, तो फ़रिश्ते हया करते हैं और घर से निकल जाते हैं, फिर शैतान आ जाता है, पस अगर उन दोनों के लिए उस दिन की सोहबत से कोई औलाद लिखी है तो उसमें शैतान का भी हिस्सा हो जाता है।

(शैबुल ईमान)

हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, क्या मैंने तुम लोगों से कपड़े हटाने को मना नहीं किया है? तुम्हारे साथ ये दोनों फ़रिश्ते जो तुमसे अलग नहीं होते हैं, न नींद में, न बेदारी में। याद रखो! जब भी तुममें से कोई अपनी बीवी के पास जाए या पेशाब पाख़ाना जाए तो उन दोनों से शर्म करे। ख़बरदार!! इन दोनों की इज़्ज़त करो।

(बैहक़ी)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, ऐ लोगो! अल्लाह तआला तुम्हें कपड़े उतार

देने से मना फ़रमाते हैं। तुम अल्लाह के उन फ़रिश्तों से हया करो, जो करामन कातिबीन तुम्हारे साथ रहते हैं। वे तुमसे अलग नहीं होते, सिवाए तीन वक़्तों के, जो तुम्हारी ज़रूरत है,

1. पेशाब, पाख़ाने के वक़्त,
2. बीवी से सोहबत के वक़्त,
3. गुस्ल करते वक़्त,

(मुस्नद बज़्ज़ार)

हज़रत अली बिन अबी तालिब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं जिसने अपना शर्म का हिस्सा खोला, उससे फ़रिश्ते अलग हो जाते हैं।

(मुसन्नफ़ इब्ने अबी शैबा)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, जो आदमी गुस्लख़ाने में बग़ैर तहबंद के दाख़िल होता है तो करामन कातिबीन उस पर लानत करते हैं।

(दैलमी)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, एक फ़रिश्ता क़ुरआन के सुपुर्द है, पस जो शख़्स क़ुरआन की तिलावत तो करता है, लेकिन सही तरीक़े से तिलावत नहीं करता। उसको यह फ़रिश्ता दुरुस्त करके अल्लाह की बारगाह में पेश करता है।

(फ़ैज़ुल कबीर हदीस)

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, एक फ़रिश्ता–

कहने वाले आदमी के सुपुर्द किया गया, जब वह इस कलिमे को तीन बार कहता है, तो फ़रिश्ता उससे कहता है, ऐ इंसान!

यानी अल्ला तआला तेरी तरफ़ मुतवज्जोह है जो चाहे उससे मांग तेरी दुआ क़बूल होगी।

(मुस्तदरक हाकिम)

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि जब कोई आदमी तिजारत या सरदारी का मामला तलब करता है, फिर उस पर क़ादिर हो जाता है, तो अल्लाह तआला सातों आसमानों के ऊपर इसका ज़िक्र करते हैं और इसके पास एक फ़रिश्ता भेजते हैं, कि मेरे बंदे के पास जाओ और उसे इस काम से रोको, अगर मैंने इसके लिए उसे अता कर दिया, तो इसकी वजह से जहन्नम में डाल दूंगा। तो वह उसे उससे अलग कर देता है। (शुऐबुल ईमान, बैहक़ी)

हज़रत काब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जब रोज़ेदार के सामने खाना खाया जाता है, तो खाने से फ़ारिग़ होने तक, उस रोज़ेदार के लिए फ़रिश्ते रहमत की दुआ करते रहते हैं।

(तिर्मिज़ी)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो मुसलमान किसी मुसलमान की सुबह को अयादत (अल्लाह की रज़ा के लिए एक–दूसरे से मुलाक़ात करना) करता, तो शाम तक सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उसके लिए दुआ करते हैं। इसी तरह जो शाम को अयादत करता है तो सुबह तक सत्तर हजार फ़रिश्ते उसके लिए दुआ करते हैं। (तिर्मिज़ी)

हज़रत अबूदर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया मुसलमान की दुआ, अपने मुसलमान भाई के लिए अपने पीठ पीछे क़बूल होती है। दुआ करने वाले के सर के पास एक फ़रिश्ता मुक़र्रर है, जब भी वह दुआ करने वाला अपने भाई के लिए दुआ करता है, तो फ़रिश्ता उसकी दुआ पर आमीन कहता है। (मुस्लिम)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया जो मुसलमान अल्लाह को खुश करने की नीयत से किसी मुसलमान से मुलाक़ात करने जाता है, तो आसमान से एक फ़रिश्ता पुकारकर कहता है, कि तुम खुशहाली की ज़िदंगी बसर करो और तुम्हे जन्नत मुबारक हो और अल्लाह तआला अर्श वालों से फ़रमाते हैं, मेरे बंदे ने मेरे ख़ातिर मुलाक़त की, इसलिए मेरे ज़िम्मे है, कि मैं इसकी मेहमानी करूं। (अबू याला)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि

व सल्लम ने फ़रमाया जो मुसलमान दूसरे मुसलमान की तरफ़ हथियार से इशारा करता है, तो उस पर उस वक़्त तक फ़रिश्ते लानत करते रहते हैं, जब तक वह अपना हथियार नीचे नहीं कर लेता।

(मुस्लिम)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, दो फ़रिश्ते रोज़ाना सुबह के वक़्त आसमान से उतरते हैं, इनमें से एक फ़रिश्ता यह दुआ करता है कि 'ऐ अल्लाह!' ख़र्च करने वाले को बदल अता फ़रमा और दूसरा फ़रिश्ता यह दुआ करता है कि 'ऐ अल्लाह' रोककर रखने वाले का माल बर्बाद कर।

(मिश्कात)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब मुसलमान घर में दाख़िल होकर अल्लाह का ज़िक्र करता है, फिर दुआ पढ़कर खाना खाता है, तो शैतान अपने साथ वालों से कहता है, कि अब न तो यहां ठहरा जा सकता है और न तो खाना ही मिल सकता है। लेकिन जब मुसलमान घर में दाखिल होकर अल्लाह का ज़िक्र नहीं करता, तो शैतान अपने साथियों से कहता है, कि तुम्हें यहां रात में रहने का मौक़ा मिल गया।

(मिश्कात)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि जब कपड़े उतारो, तो 'बिस्मिल्लाह' कहकर उतारो। ऐसा करने से शैतान, तुम्हारी शर्मगाह न देख सकेगा।

(हिस्ने हसीन)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया गुस्सा शैतान होता है, क्योंकि शैतान की पैदाइश आग से हुई है और आग पानी से बुझाई जाती है, लिहाज़ा जब तुम में से किसी को गुस्सा आए, तो उसको चाहिए कि वुज़ू कर ले।

(अबू दाऊद)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, कि अल्लाह तआला छींक को पसंद फ़रमाते हैं और जमाई को ना–पसंद करते हैं। क्यों जमाई शैतान की तरफ़

से होती है, लिहाज़ा जब तुममें से किसी को जमाई आए, तो जितना हो सके, उसको रोके रखो, क्योंकि जब तुम में से जब कोई जमाई लेता है, तो शैतान हंसता है।

(बुखारी)

हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जिन लोगों के साथ कोई यतीम उनके बर्तन में खाने के लिए बैठता है। तो शैतान उनके बर्तन के क़रीब नहीं आता।

(तबरानी)

हज़रत अयाज़ बिन हम्माम रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, आपस में गाली गलोच करने वाले दो शख़्स, असल में दो शैतान है, जो फ़हश गोई करते हैं और एक दूसरे को झूठा कहते हैं।

(इब्ने हब्बान)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया तुममें से कोई शख़्स अपने मुसलमान भाई की तरफ़ हथियार से इशारा न करे, इसलिए कि उसको मालूम नहीं, कि कहीं शैतान उसके हाथ से हथियार खींच न ले और वह हथियार उस मुसलमान भाई को जा लगे, फिर उसकी सज़ा में उसे जहन्नम में डाल दिया जाए।

(बुखारी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, कोई मुसलमान जब बीमार होता है, तो अल्लाह तआला उसके साथ दो फ़रिश्ते लगा देते हैं, जो उस वक़्त तक साथ में रहते हैं, जब तक अल्लाह तआला दो अच्छाइयों में से एक का फ़ैसला न कर दे 'मौत' का या 'ज़िंदगी' का।

(शुऐबुल ईमान, बैहक़ी)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल करते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अल्लाह तआला करामन कातिबीन की तरफ़ अपना पैग़ाम भेजते हैं, कि मेरे बंदे के आमाल नामे में रंज व

ग़म के वक़्त कोई अमल न लिखे।

(दैलमी)

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रूकने यमानी पर दो फ़रिश्ते मुक़र्रर हैं, जो शख़्स वहां से गुज़रता है, तो उसकी दुआ पर आमीन कहते हैं, और हिज्रे अस्वद पर इतने फ़रिश्ते हैं, जिनकी गिनती नहीं की जा सकती।

(तारीख़े मक्का इमाम रज़्क़)

हज़रत तमीम दारी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मदीना तैयबा की शान यह है कि अल्लाह तआला ने मदीना के हर घर पर एक–एक फ़रिश्ता मुक़र्रर कर रखा है, जो अपनी तलवार को लहराते रहते हैं। इसलिए मदीना तैयबा में दज्जाल दाख़िल न हो सकेगा।

(तबरानी)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, कि मोमिन फ़ुक़रा (ग़रीब) पर, जो सर्दी की तकलीफ़ होती है, फ़रिश्ते उन पर तरस खाते हैं और जब सर्दी चली जाती है, तो फ़रिश्ते सर्दी के जाने पर ख़ुश होते हैं।

(तबरानी)

हज़रत अबूदर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला के कुछ फ़रिश्ते ऐसे हैं, जो रात के वक़्त ज़मीन पर उतरते हैं और जिहाद के जानवरों और सवारियों की थकावट दूर करते हैं, मगर उन जानवरों की थकावट दूर नहीं करते, जिनकी गर्दन में घंटी बंधी होती है।

(तबरानी)

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया अल्लाह तआला का एक फ़रिश्ता वह है, जो रोज़ाना रात दिन यह पुकारता रहता है:

'ऐ चालीस साल की उम्र वाले!' तुम अमल की खेती तैयार कर चुके हो, जिसकी कटाई का वक़्त क़रीब आ गया है।

'ऐ साठ साल वालो!' हिसाब की तरफ़ मुतवज्जोह हो जाओ। तुमने अपने लिए क्या आगे भेजा और कौन से अमल किए?।

'ऐ सत्तर साल की उम्र वालो!' काश मख़्लूक़ात पैदा न की जाती और काश वह पैदा कर दी गई, तो यह भी जान लेती कि किस लिए पैदा की गई है?!

(दैलमी)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नें फ़रमाया जनाज़े के साथ चलते हुए फ़रिश्ते यह कहते हैं कि पाक है वह ज़ात, जो नज़र नहीं आती और अपने बंदों पर मौत के ज़रिए क़हार है।

(तारीखे रफ़ाइ)

हज़रत उक्बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है, कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, सफ़र में जो शख़्स दुन्यावी बातों से अपना दिल हटाकर, अल्लाह की तरफ़ अपना ध्यान रखता है, तो एक फ़रिश्ता उसके साथ हो जाता है।

(तबरानी)

हज़रत यज़ीद बिन शिजरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि जब कोई शख़्स अल्लाह के रास्ते में शहीद किया जाता है, तो खून का पहला क़तरा ज़मीन पर गिरते ही, दो मोटी आंखों वाली सजी हुई हूरें आसमान से उतरकर उसके पास आती है और उसके चेहरे से धूल–मिट्टी साफ़ करती है।

(हाकिम, 3, 394)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जो मुसाफ़िर सफ़र में फ़िज़ूल बातों और फ़िज़ूल कामों में लगा रहता है, तो शैतान भी उसके साथ हो जाता है।

(हिस्ने हसीन)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया अल्लाह की ख़ास मदद, जमाअत के साथ होती है लिहाज़ा जो शख़्स जमाअत से अलग हो जाता है, शैतान उसके साथ रहकर उसको उकसाता

है।

(नसाई)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, शैतान अकेले आदमी और दो हो जाने पर भी नुक़सान पहुंचाता है लेकिन तीन आदमियों को नुक़सान नहीं पहुंचा पाता है क्योंकि तीन की जमाअत होती है।

(बज़्ज़ार)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, मस्जिद में दाख़िल होकर–

"أَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَوَجْهِهِ الْكَرِيْمِ وَسُلْطَانِهِ الْقَدِيْمِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ"

जब कोई दुआ पढ़ता है, तो शैतान कहता है यह शख़्स मुझसे पूरे दिन के लिए महफ़ूज़ हो गया।

(अबू दाऊद)

हज़रत मुआज़ बिन जबल रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, बकरियों के भेड़ की तरह, शैतान इंसान का भेड़िया है। भेड़िया, हर उस बकरी को पकड़ लेता है, जो रेवड़ से अलग–थलग हो। इसलिए अलग–अलग ठहरने से बचो, इज्तिमाइयत को आम लोगों के बीच रहने को और मस्जिद को लाज़िम पकड़ो।

(मुस्नद अहमद)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, इंसान तक रोज़ी पहुंचाने के लिए फ़रिश्ते तैय हैं अल्लाह तआला ने उनको हुक्म फ़रमा रखा है, कि जिस आदमी को तुम इस हालत में पाओ, जिसने (इस्लाम) को ही अपना ओढ़ना बिछौना बना रखा है, तो तुम उसको आसमानों और ज़मीन से रिज़्क़ मुहय्या कर दो और दीगर इंसानों को भी रोज़ी पहुंचा दो। यह दीगर लोग अपने मुक़द्दर से ज़्यादा रोज़ी न पा सकेंगे।

(अबू उवाना)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, फ़रिश्तों की एक ऐसी जमाअत है जो रास्तों में अल्लाह तआला का ज़िक्र करने वाले की तलाश में घूमती रहती है, जब वह किसी ऐसी जमाअत को पा लेती है, जो अल्लाह के ज़िक्र में मसरूफ़ होती है। तो वह एक दूसरे को पुकार कर कहते हैं कि आओ! यहां तुम्हारी मतलूबा चीज़ है। इसके बाद वे सब फ़रिश्ते मिलकर, आसमान तक अपने परों से उनको घेर लेते हैं।

(बुखारी)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने रमी जुमेरात पर एक फ़रिश्ता मुक़र्रर कर रखा है, जो कंकरी मक़बूल हो जाती है, उसको उठा लेता है।

(तारीखे मक्का इमाम अज़रकी)

दुनिया की मुशक़्क़तों से राहत

हज़रत तमीम दारी रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह तआला मलाकुल मौत से फ़रमाता हैं, कि मेरे फ़्लां बंदे के पास जाओ और उसकी रूह निकाल ले आओ! मैंने ख़ुशी और ग़म के हालात में इसका इम्तिहान ले लिया है, वह ऐसा ही निकला जैसा कि मैं चाहता था। इसको ले आओ! ताकि दुनिया की मुशक़्क़तों से उसे राहत मिल जाए।

मलाकुल मौत पांच सौ (500) फ़रिश्तों की जमाअत के साथ इसके पास जाते हैं, उन सब के पास जन्नत के कफ़न होते हैं, उनके हाथों में रिहान के गुलदस्ते होते हैं, जिसमें बीस–बीस रंग के फूल होते हैं और हर फूल की ख़ुशबू अलग होती है और एक रेशमी रूमाल में महकता हुआ मुश्क होता है।

मलाकुल मौत उसके सर के पास और बाक़ी फ़रिश्ते उसको चारों तरफ़ से घेर लेते हैं, फिर मुश्क वाला रूमाल, उसकी थोड़ी के नीचे रखते हैं, जन्नत का दरवाज़ा उसके सामने खोल दिया जाता है। कभी सजी हुई हूरें उसके सामने आती

हैं। तो कभी वहां की नहरें और बाग़ात।

इन सबको देखकर इसकी रूह ख़ुशी से जिस्म से बाहर निकलने के लिए बेक़रार हो जाती है, मलाकुल मौत उससे कहते हैं, कि ऐ मुबारक रूह! चल ऐसी बेरियों की तरफ़ जिसमें कांटा नहीं है और कीलों की तरफ़, जो तले और ऊपर लगे हुए हैं मलाकुल मौत उससे ऐसी नर्मी से बात करते हैं जिस तरह मां अपने छोटे बच्चे से करती है।

फिर उसकी रूह बदन में से ऐसे निकलती है, जैसे कि आटे में से बाल। जब रूह बदन से निकलती है, तो सब फ़रिश्ते उसको सलाम करते हैं और जन्नत की ख़ुशख़बरी देते हैं। पस जिस वक़्त रूह बदन से निकलती है, तो वह बदन से कहती है, कि अल्लाह तुझे जज़ाए ख़ैर अता फ़रमाए, कि तू मुहताजगी के साथ अल्लाह तआला का कहना मानने में जल्दी करता था, उसकी नाफ़रमानी करने में सुस्ती करने वाला था, तुझे आज का दिन मुबारक हो! तुमने ख़ुद भी अज़ाब से निजात पाई और मुझे भी निजात दिला दी और यही बात, बदन, रूह से कहता है।

इसकी जुदाई पर ज़मीन के वे हिस्से रोते हैं, जिस ज़मीन के हिस्सों पर वह अल्लाह का कहना मानते हुए चलता था, आसमान के वह दरवाज़े रोते हैं, जिनसे उसके अमल ऊपर जाया करते थे और जिससे उसका रिज़्क़ उतरा करता था।

जब मलाकुल मौत उसकी रूह को लेकर आसमान पर जाते हैं, तो वहां हज़रत जिब्रील अलै० सत्तर हज़ार (70,000) फ़रिश्तों के साथ इसका इस्तिक़बाल करते हैं, ये फ़रिश्ते अल्लाह की तरफ़ से उसे ख़ुशख़बरी सुनाते हैं, फिर आसमानों पर होते हुए जब उसे लेकर अर्श पर पहुंचते हैं, तो वह अर्श पर पहुंचकर सज्दे में गिर जाते हैं। फिर अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि उसे अलीय्यीन में पहुंचा दो और यहां ज़मीन पर पांच सौ (500) फ़रिश्ते उसके जिस्म के पास जमा हो जाते हैं, जब नहलाने वाले उसके जिस्म को करवट देते हैं, तो यह फ़रिश्ते भी उसे करवट देने लगते हैं और जब वह कफ़न पहनाने लगते हैं, तो फ़रिश्ते उनके कफ़न से पहले अपने साथ लिए हुए कफ़न को पहना देते हैं, इसी तरह जब ख़ुशबू लगाते हैं, तो उनसे पहले ही फ़रिश्ते अपने साथ लाई हुई ख़ुशबू उसके बदन पर मल देते हैं।

फिर जब जनाज़ा घर से बाहर लाया जाता था, तो उसके घर के दरवाज़े से लेकर क़ब्रस्तान तक रास्ते के दोनों तरफ़ फ़रिश्ते क़तार (लाइन) लगाकर खड़े हो जाते हैं और उसके जनाज़े को, दुआ व इस्तिग़फ़ार के साथ इस्तक़बाल करते हैं।

ये सारे मंज़र देखकर, शैतान इतनी ज़ोर–ज़ोर से रोने लगता है, कि उसकी हड्डियां टूटने लगती हैं और अपने लश्करों से कहता है, कि तुम्हारा नास हो जाए, आख़िर यह तुमसे किस तरह छूट गया? वे कहते हैं, कि मासूम था। उधर क़ब्र में जब उसकी रूह जिस्म में डाली जाती है, तो

नमाज़ उसकी दाहिनी तरफ़,
रोज़ा उसकी बाहिनी तरफ़,
ज़िक्र और तिलावत उसके सर की तरफ़,
और बाक़ी आमाल पांव की तरफ़,

आकर खड़े हो जाते हैं, फिर अज़ाब उसकी क़ब्र में अपनी गर्दन निकालकर उस तक पहुंचना चाहता है, लेकिन हर तरफ़ से उसे घेरा हुआ पाकर अज़ाब वापस चला जाता है।

इसके बाद उसकी क़ब्र में दो फ़रिश्ते आते हैं, जिनकी आंखे बिजली की तरह चमक रही होती हैं और उनकी आवाज़ बादलों की गरज की तरह होती है, उनके मुंह वाली सांसों के साथ आग की लपट निकलती है, बालों की लम्बाई उनके पैर तक होती है, मेरहबानी और नर्मी ये दोनों जानते ही नहीं, उनको 'मुन्कर नकीर' कहा जाता है, इन दोनों के हाथ में एक इतना बड़ा और वज़नदार हथौड़ा होता है, कि उसे सारे मीना के रहने वाले मिलकर उठाना चाहें, तब भी उठा नहीं सकते। फिर वह उस इंसान से कहता है, कि बैठ जा, तो वह फ़ौरन उठकर बैठ जाता है, फिर वह उससे पूछते हैं, कि–

(ज़रूरतों को पूरा करने वाला कौन है?)
(ज़रूरतों को पूरा करने का तरीक़ा क्या है?)
(उनकी ख़बरें किसने दी थी?)

तो ये तीनों सवालों के जवाब में कहता है, कि

1. मेरा रब अल्लाह है।

2. मेरा दीन इस्लाम है।

3. मेरे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हैं।

जवाब सुनकर ये दोनों फ़रिश्ते कहते हैं कि तुमने सच कहा। इसके बाद वह क़ब्र की दीवारों को सब तरफ़ से हटा देते हैं, जिससे वह क़ब्र चारों तरफ़ फैल जाती है।

इसके बाद वह कहते हैं, कि ऊपर सर उठाओ! जब वह इंसान अपना सर उठाता है, तो उसको एक खुला हुआ दरवाज़ा नज़र आता है, जिसमें जन्नत के अंदर का नज़ारा नज़र आता है। वह कहते हैं कि ऐ अल्लाह के दोस्त! वह जगह तुम्हारे रहने की है, इस वजह से कि तुमने अल्लाह का कहना माना है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़रमाते हैं कि क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है, उसको उस वक़्त इतनी ख़ुशी होती है, कि जो उसे कभी न लौटेगी। उसके बाद फ़रिश्ते कहते हैं कि अपने पांव की तरफ़ देखो, जब अपने पावं की तरफ़ देखता है, तो उसके जहन्नम का एक दरवाज़ा नज़र आता है, वे फ़रिश्ते कहते हैं, कि ऐ अल्लाह के दोस्त! कि तुमने इस दरवाज़े से निजात पा ली, उस वक़्त भी उसे उतनी ही ख़ुशी होती है जो उसे कभी न लौटेगी।

उसके बाद उसकी क़ब्र में सत्तर (70) दरवाज़े जन्नत की तरफ़ खुल जाते हैं, जिनमें से वहां की ठंडी हवाएं और ख़ुशबूएं आती रहती हैं और क़ियामत तक ऐसा ही होता रहेगा।

बे ईमान की मौत का मंज़र

इसी तरह जब किसी बे-ईमान के लिए अल्लाह तआला मलाकुल मौत से फ़रमाते हैं, कि मेरे दुश्मन के पास जाओ और उसकी रूह निकाल लाओ, मैंने ... पर हर क़िस्म की फ़राग़ी दी, अपनी नेमतें उस पर लाद दी, मगर वह मेरी

नाफ़रमानी से बाज़ न आया, लाओ आज उसको सज़ा दूं।

तो मलाकुल मौत निहायत तक्लीफ़ दे सूरत में उसके पास आते हैं। उनके चेहरों पर 12 आंखें होती हैं, उनके पास जहन्नम के आग का एक गुरज (डंडा) होता है जिसमें कांटे होते हैं, उनके साथ 500 फ़रिश्तों की जमाअत होती है, जिनके साथ में आग के अंगारे और आग के कोड़े होते हैं, मलाकुल मौत आते ही उसे गुरज से मारते हैं और जिसकी वजह से गुरज के कांटे उसकी रग–रग में घुस जाते हैं, और बाक़ी फ़रिश्ते उसके मुंह और सुरीन पर कोड़े मारना शुरू करते हैं।

फिर उसकी रूह पांव की उंगलियों से निकालना शुरू करते हैं। रोक रोककर उसकी रूह निकाली जाती है, ताकि तक्लीफ़ पर तक्लीफ़ हो, फिर जहन्नम की आग के अंगारे उसकी पीठ के नीचे रखते हैं और मलाकुल मौत उससे कहते हैं, कि ऐ मलऊन रूह निकल! इस जहन्नम की तरफ़ चल, जिसके बारे में अल्लाह तआला ने खबरें भिजवाई थीं।

फिर जब उसकी रूह, बदन से रूख़्सत होती है, तो वह बदन से कहती है कि अल्लाह तआला तुझे बुरा बदला दें, तू मुझे अल्लाह की ना–फ़रमानी में जल्दी से ले जाता था और उसका कहना मानने में आना–कानी करता था, आज तू खुद भी हलाक हुआ और मुझे भी हलाक किया और यही मज़्मून बदन, रूह से कहता है।

ज़मीन के वे हिस्से जिन पर अल्लाह की ना–फ़रमानी करते हुए यह चलता था। वह इस पर लानत करते हैं और शैतान के लश्कर दौड़े–दौड़े अपने सरदार इबलीस के पास पहुंचकर उसे ख़ुशख़बरी सुनाते हैं, कि एक आदमी को जहन्नम पहुंचा दिया।

फिर जब बर्ज़ख़ में पहुंचता है तो वहां की ज़मीन उस पर इतनी तंग हो जाती है कि उसकी पसलियां एक दूसरे में घुस जाती हैं, और उस पर काले सांप मुसल्लत हो जाते हैं, जो उसकी नाक और पांव के अंगूठे से काटना शुरू करते हैं और दर्मियान में दोनों सांप आकर मिलते हैं। फिर उसके पास मुन्कर नकीर आते हैं और उससे पूछते हैं, कि

तेरा रब कौन है?

तेरा दीन क्या है?

तेरा नबी कौन है?

यह हर सवाल के जवाब में ला इल्मी ज़ाहिर करता है, उसके जवाब न देने पर इतने ज़ोर से उसे गुर्ज़ (डंडा) से मारा जाता है, कि उस गुर्ज़ की चिंगारियां क़ब्र में फैल जाती हैं। इसके बाद उससे कहा जाता है ऊपर देख, तो वह ऊपर की तरफ़ जन्नत का दरवाज़ा खुला हुआ देखता है, वे फ़रिश्ते उससे कहते हैं कि ऐ अल्लाह के दुश्मन! अगर तू अल्लाह का फ़रमांबरदार बनकर रहता, तो तेरा यह ठिकाना होता।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है उसको उस वक़्त ऐसी हसरत होती है, ऐसी हसरत कभी न होगी, फिर जहन्नम का दरवाज़ा खोला जाता है और वे फ़रिश्ते कहते हैं, कि ऐ अल्लाह के दुश्मन! अब तेरा यह ठिकाना है। इसलिए कि तुमने अल्लाह की नाफ़रमानी की। इसके बाद जहन्नम के सत्तर दरवाज़े उसकी क़ब्र में खोल दिए जाते हैं, जिनमें से क़ियामत तक गर्म हवाएं और धुआं वग़ैरह आता रहता है।

(किताबुल जनाइज़)

अंबिया अलैहिस्सलाम की ग़ैबी मददों के वाक़िआत

(नोटः क़ुरआन की आयतों के तर्जुमें बिल्कुल लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ नहीं हैं)

एक मर्तबा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से एक आदमी ने आकर पूछा, कि ऐ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! क्या कभी आपके लिए आसमान से खाना आया है?

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हां एक मर्तबा एक देगची में गर्म गर्म खाना आसमान से उतरा था।

उसने पूछा कि क्या आपने उसमें से खाया था?

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया हां, मैंने खाया था।

उसने पूछा कि क्या आपके खाने के बाद उसमें खाना कुछ बचा भी था?

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हां हमारे खाने के बाद उसमें कुछ खाना बच भी गया था।

उसने पूछा, कि फिर उस बचे हुए खाने का क्या हुआ?

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि वह देगची आसमान की तरफ़ ऊपर चली गई। लेकिन जब वह देगची ऊपर जा रही थी, तो उसमें से यह आवाज़ आ रही थी कि मैं आप लोगों में थोड़ा वक़्त ही रहूंगी। क्योंकि अलग-अलग जमाअतें बनाएंगे और फिर एक-दूसरे को क़त्ल करेंगे और क़ियामत से पहले बहुत ज़्यादा मौतें होने लगेंगे। फिर ज़मीन पर ख़ूब ज़्यादा ज़लज़ले आएंगे।

(हाकिम, 4, 1447-असाबा 2, 6, 8)

﴿فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُولٍ حَسَنٍ وَأَنْبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا وَكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا، كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا قَالَ يَا مَرْيَمُ أَنَّى لَكِ هٰذَا قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ إِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ﴾

हज़रत मरयम के लिए हज़रत ज़िक्रया अलै० ने मस्जिदे अक़्सा में एक हुजरा बनवाया था जिसमें दिनभर वह रहती थी और हर रोज़ शाम को उनके ख़ालू हज़रत ज़िक्रया अलै० उन्हें अपने साथ अपने घर ले जाते थे, जहां वह अपनी ख़ाला के साथ रात गुज़ारती थी। सुबह फिर ज़िक्रया अलै० हुजरे में छोड़ दिया करते थे इस हुजरे के क़रीब किसी मर्द या औरत का आना मना था। ख़ुद हज़रत ज़िक्रया भी शाम को उन्हें बाहर से आवाज़ देते तो वह बाहर आ जाती थी। एक दिन हज़रत ज़िक्रया अलै० हुजरे के अंदर चले गए, तो अंदर जाकर देखा कि हुजरे में हर क़िस्म के बे-मौसम फल रखे थे।

तो बड़े ताज्जुब से मरयम से पूछा कि ऐ मरयम! ये फल कहां से आए? मरयम ने फ़रमाया कि ऐ मेरे ख़ालू जान! ये फल तो रोज़ मेरे अल्लाह मुझे आसमानों से भेजकर खिलाते हैं।

(सूरः आले इमरान)

﴿هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهُ قَالَ رَبِّ هَبْ لِي مِن لَّدُنكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً إِنَّكَ سَمِيعُ
الدُّعَاءِ فَنَادَتْهُ الْمَلَائِكَةُ وَهُوَ قَائِمٌ يُصَلِّي فِي الْمِحْرَابِ أَنَّ اللَّهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيَىٰ مُصَدِّقًا
بِكَلِمَةٍ مِّنَ اللَّهِ وَسَيِّدًا وَحَصُورًا وَنَبِيًّا مِّنَ الصَّالِحِينَ﴾

इस पर ज़िक्रिया ने यह दुआ कि ऐ अल्लाह! जब आप बग़ैर पेड़ के बग़ैर मौसम के फल दे सकते हैं, तो क्या मुझे इस उम्र में एक औलाद नहीं दे सकते?! ऐ अल्लाह! मुझे एक औलाद अता फ़रमा। उसी वक़्त उनको यह बशारत हुई कि तुम्हें औलाद मिलेगी और उसका नाम यहया रखना।

(सूरः आले इमरान 38,39)

﴿إِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّونَ يَا عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيعُ رَبُّكَ أَن يُنَزِّلَ عَلَيْنَا
مَائِدَةً مِّنَ السَّمَاءِ قَالَ اتَّقُوا اللَّهَ إِن كُنتُم مُّؤْمِنِينَ قَالُوا نُرِيدُ أَن نَّأْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ
قُلُوبُنَا وَنَعْلَمَ أَن قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُونَ عَلَيْهَا مِنَ الشَّاهِدِينَ قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللَّهُمَّ
رَبَّنَا أَنزِلْ عَلَيْنَا مَائِدَةً مِّنَ السَّمَاءِ تَكُونُ لَنَا عِيدًا لِّأَوَّلِنَا وَآخِرِنَا وَآيَةً مِّنكَ وَارْزُقْنَا وَأَنتَ
خَيْرُ الرَّازِقِينَ قَالَ اللَّهُ إِنِّي مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ فَمَن يَكْفُرْ بَعْدُ مِنكُمْ فَإِنِّي أُعَذِّبُهُ عَذَابًا لَّا
أُعَذِّبُهُ أَحَدًا مِّنَ الْعَالَمِينَ﴾

हज़रत ईसा अलै० के लिए चालीस दिन तक आसमान से एक ख़्वान उतरता था। जिसमें रोटी और मछली का सालन होता था, यह खाना 'मायदा' के नाम से मशहूर हुआ।

(सूरः मायदा, 112–114)

﴿وَقَوْلِهِمْ إِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيحَ عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُولَ اللَّهِ وَمَا قَتَلُوهُ وَمَا صَلَبُوهُ
وَلَٰكِن شُبِّهَ لَهُمْ وَإِنَّ الَّذِينَ اخْتَلَفُوا فِيهِ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مَا لَهُم بِهِ مِنْ عِلْمٍ إِلَّا اتِّبَاعَ الظَّنِّ
وَمَا قَتَلُوهُ يَقِينًا بَلْ رَّفَعَهُ اللَّهُ إِلَيْهِ وَكَانَ اللَّهُ عَزِيزًا حَكِيمًا﴾ .

अल्लाह तआला ने हज़रत ईसा अलै० को इसी इंसानी जिस्म के साथ आज से तकरीबन 2000 हज़ार साल पहले ज़िंदा आसमानों के ऊपर उठा लिया।?

(सूर निसा, 157–158)

और क़ियामत आने से पहले दज्जाल को क़त्ल करने के लिए हज़रत ईसा अलै० को फिर ज़मीन पर उतारा जाएगा, कि सुर्ख जोड़े में दो फरिश्तों के परों पर हाथ रखे हुए दमिश्क़ की जामा मस्जिद की मीनार पर सुबह फजर की नमाज़ के वक़्त उनका उतरना होगा।

(बुखारी व मुस्लिम)

﴿وَاِذِ اسْتَسْقٰى مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ فَقُلْنَا اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا، قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ، كُلُوْا وَاشْرَبُوْا مِنْ رِّزْقِ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ﴾

हज़रत मूसा अलै० जब अपनी क़ौम बनी इसराइल को लेकर दरिय–ए–नील के पार पहुंच गए तो मैदाने तिया में उनकी क़ौम ने पीने के पानी की हाजत बताई तो अल्लाह ने हुक्म दिया कि पत्थर की चट्टान पर लाठी मारो। मूसा अलै० ने पत्थर की चट्टान पर लाठी मारी, तो चट्टान से 12 चश्में जारी हो गए, जिससे बनी इसराइल के 12 क़बीले, एक–एक चश्मे से अपनी–अपनी ज़रूरत का पानी लेने लगे।

(सूर बक़र 60)

﴿وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى، كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ﴾

फिर इन लोगों ने मूसा अलै० के सामने भूख की हाजत पेश की, तो अल्लाह ने उनके लिए भूनी हुई बटेरें आसमान से उतारीं, उसे खाकर ये लोग सो गए। जब ये लोग सुबह सोकर उठे तो, घास और झाड़ियों की पत्तियों पर उन्हें सफेद ओले की तरह कोई चीज़ बिछी हुई नज़र आई, जब उसको खाया तो उन्हें पता चला कि यह तो हलवा है।

फिर दोपहर के वक़्त जब सूरज सर पर आया, तो सूरज की गर्मी से बचने के लिए उस मैदान में उन्हें कोई पेड़ वग़ैरह नज़र न आया, गर्मी से ये परेशान हुए तो मूसा अलै० से उसकी शिकायत की। उसी वक़्त अल्लाह ने बादल के टुकड़े भेजे, जो हर क़बीलों के सरों के ऊपर सूरज के बीच आड़ बन गए।

इसी तरह चालीस साल तक ये लोग उसी-मैदान में रहे। हर रोज़ शाम के वक़्त बटेर और सुबह के वक़्त हलवा और दोपहर के वक़्त बादल से ये लोग फ़ायदा उठाते रहे। बग़ैर कमाए अल्लाह ने उनकी हाजत को अपनी क़ुदरत से पूरा किया।

(सूरः बक़र, 57)

﴿وَمَا تِلْكَ بِيَمِيْنِكَ يٰمُوْسٰى قَالَ هِيَ عَصَايَ اَتَوَكَّؤُا عَلَيْهَا وَاَهُشُّ بِهَا عَلٰى غَنَمِيْ وَلِيَ فِيْهَا مَاٰرِبُ اُخْرٰى قَالَ اَلْقِهَا يٰمُوْسٰى فَاَلْقٰهَا فَاِذَا هِيَ حَيَّةٌ تَسْعٰى قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ سَنُعِيْدُهَا سِيْرَتَهَا الْاُوْلٰى﴾

हज़रत मूसा अलै० से अल्लाह तआला ने जब पूछा कि ऐ मूसा अलै० तुम्हारे हाथ में क्या है? मूसा अलै० ने जवाब दिया कि लाठी है। फिर अल्लाह तआला ने उनसे कहा, कि यह लाठी ज़मीन पर डाल दो, जब मूसा अलै० ने उस लाठी को ज़मीन पर डाला, तो अल्लाह तआला ने उसे सांप में बदल दिया।

अब अल्लाह तआला ने मूसा अलै० से कहा, कि इसे पकड़ लो, जैसे ही मूसा अलै० ने सांप को पकड़ा, वह फिर लाठी बन गया।

(सूरः ताहा, 19-20)

﴿وَاِنَّ يُوْنُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ اِذْ اَبَقَ اِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِيْنَ فَالْتَقَمَهُ الْحُوْتُ وَهُوَ مُلِيْمٌ فَلَوْلَا اَنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِيْنَ لَلَبِثَ فِيْ بَطْنِهٖ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ فَنَبَذْنٰهُ بِالْعَرَاءِ وَهُوَ سَقِيْمٌ وَاَنْۢبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَّقْطِيْنٍ﴾

जब हज़रत यूनुस अलै० नाव पर बैठकर नदी पार कर रहे थे और नाव भवर (तूफ़ान) में फंसी तो सारे लोगों ने यह बात तैय की, कि आदमी ज़्यादा होने की

वजह से नाव फंसी हुई है, अगर इसमें कोई एक आदमी नाव से कूद जाए, तो सारे आदमी डूबने से बच जाएंगे।

इस बात पर यूनुस अलै० बोले कि मैं इसके लिए तैयार हूं। लोगों ने कहा, आप रहने दीजिए, फिर नाम लिखकर पर्ची डाली गई, कि जिसका नाम निकलेगा, वह पानी में कूदेगा, और अगर वह खुशी से नहीं कूदेगा, तो हम लोग उसको पानी में फेंक देंगे, सब लोग इस बात पर तैयार हो गए, तो जब पर्ची डाली गई तो उसमें यूनुस अलै० का नाम निकला, तो यूनुस अलै० ने अपने ऊपर के कपड़े उतारकर नाव में रखे और दरिया में कूद गए। जैसे ही यह कूदे तो एक बड़ी मछली ने उनको अपने पेट में निगल लिया। चालीस दिन तक यह मछली के पेट में रहे। फिर वहीं से उन्होंने दुआ की, तो मछली ने पानी के ऊपर आकर रेत पर उन्हें उगल दिया।

(सूरः सफ़्फ़ात, 139–146)

क़ौमे समूद ने हज़रत सालेह अलै० से अल्लाह पर ईमान लाने के लिए शर्त रखी, कि अगर तुम्हारा रब पहाड़ से एक हामिला ऊंटनी पैदा कर दे, तो हम लोग तुम्हें नबी मान लेंगे। जिस पर हज़रत सालेह अलै० ने अल्लाह से दुआ की तो अल्लाह ने पहाड़ को फाड़कर उसके अंदर से एक हामिला ऊंटनी पैदा कर दी, पहाड़ से बाहर आते ही उस ऊंटनी से एक बच्चा पैदा हुआ।

(क़ससुल अंबिया)

﴿وَوَهَبْنَا لِدَاوُدَ سُلَيْمٰنَ نِعْمَ الْعَبْدُ اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ اِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصّٰفِنٰتُ الْجِيَادُ فَقَالَ اِنِّيْٓ اَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّيْ حَتّٰى تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ رُدُّوْهَا عَلَيَّ فَطَفِقَ مَسْحًا بِالسُّوْقِ وَالْاَعْنَاقِ﴾

एक बार हज़रत सुलैमान अलै० ने घोड़ों का मुआएना कर रहे थे, उनके मुआएना करने में इतना मशगूल हो गए, कि असर की नमाज़ क़ज़ा हो गई। उनको जब नमाज़ का ख़्याल आया तो सूरज गुरूब हो चुका था, तो उन्होंने अल्लाह से दुआ की तो सूरज वापस आ गया, सूरज के वापस आने पर उन्होंने असर की

नमाज़ पढ़ी।

(सूरः साद, 30–33)

﴿وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ مِنَّا فَضْلًا يٰجِبَالُ اَوِّبِيْ مَعَهٗ وَالطَّيْرَ وَاَلَنَّا لَهُ الْحَدِيْدَ اَنِ اعْمَلْ سٰبِغٰتٍ وَّقَدِّرْ فِي السَّرْدِ —— وَاعْمَلُوْا صَالِحًا اِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ﴾

हज़रत दाऊद अलै० को अल्लाह ने लोहे की जिरहा बनाने का हुक्म दिया, हज़रत दाऊद जब लोहे को अपने हाथ में पकड़े तो लोहा उनके हाथ में आते ही मोम हो जाता था।

(सूरः सबा, 10, 11)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि० फ़रमाते हैं कि (एक मर्तबा हम लोगों पर) बादल ने साया किया, तो हमने उससे (बारिश की) उम्मीद की, जिस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः जो फ़रिश्ता बादलों को चलाता है, वह अभी हाज़िर हुआ था, उसने मुझे सलाम किया और बतलाया कि वह उस बादल को यमन की वादी की तरफ़ ले जा रहा है, जहां "ज़रा" नाम की जगह पर उसका पानी बरसेगा।

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हज़रत अय्यूब अलै० को जब अल्लाह तआला ने बीमारी से शिफ़ा दी तो वह अपनी बीवी के साथ अपने घर वापस होने लगे, तो इनके साथ रोज़ानाः के खाने का जो सामान था, जिसमें एक बोरी में गेहूं था, और एक बोरी में जौ था, अल्लाह तआला ने उनके गेहूं को सोने का और जौ को चांदी का बना दिया।

(कससुल अंबिया)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि हज़रत अय्यूब गुस्ल फ़रमा रहे थे, कि अल्लाह तआला सोने की टिड्डियां उन पर बरसाई तो हज़रत अय्यूब ने उन सोने की टिड्डियों को देखा तो मुट्ठी भर–भरकर कपड़े में रखने लगे, उस पर अल्लाह तआला ने उनसे कहाः कि क्या हमने तुमको ग़नी नहीं बना दिया है? जो तुम उनको उठा रहे हो? जिस पर हज़रत अय्यूब अलै० ने अर्ज़ किया, ऐ परवरदिगार! आपकी नेमतों और बरकतों से कब कोई बे–परवाह हो सकता है।

"وَلٰكِنْ لَا غِنٰى عَنْ بَرَكَتِكَ"

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि सुलैह हुदैबिया के दिन हुज़ूर (सही बुखारी)
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम प्याले से पानी लेकर वुज़ू कर रहे थे, कि आप
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की निगाह पास आए हुए सहाबा रज़ि० पर पड़ी,
सबके चेहरे पर परेशानी नज़र आ रही थी, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम
ने सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से पूछा क्या बात हो गई है?
सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने कहा या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम
हम लोगों के पास न वुज़ू के लिए पानी है और न पीने के लिए बस इस प्याले
में पानी है जिससे आप वुज़ू कर रहे हैं यह सुनकर आप सल्लल्लाहु अलैहि व
सल्लम ने उस प्याले में अपना हाथ रखा, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की
उंगलियों के बीच से पानी निकलकर प्याले से बाहर गिरने लगे, तो हम लोगों ने
उस पानी को लेकर पीया और वुज़ू किया। हम पानी पीने और वुज़ू करने वालों
की तादाद उस दिन 1400 थी।

(बिदाया, 6, 96, इब्ने साद, 1, 179)

हज़रत अरबाज़ रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, कि जब हम लोगों की जमाअत
तबूक में थी, तो एक रात हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास देर से
पहुंचे। उस वक़्त आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और आप सल्लल्लाहु अलैहि व
सल्लम के साथ वाले सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम रात का खाना खा चुके थे। इतने
में हज़रत जआल बिन सुराक़ा रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत अब्दुल्लाह बिन माक़िल
मुज़नी रज़ियल्लाहु अन्हु भी कहीं से आए। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हम
तीनों को खाने के लिए हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा, कुछ खाने को
है? हज़रत बिलाल रज़ि० ने एक थैले को झाड़ा जिसमें सात खजूरें निकल आईं।
हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन सातों खजूरों को एक प्याले में रखा और
प्याले पर अल्लाह का नाम लेते हुए हाथ फेरा, फिर हम लोगों से कहा, अल्लाह
का नाम लेकर खाओ, हम लोगों ने खजूरें खाना शुरू कीं, मैं गिनता जा रहा था

और गुठलियों को दूसरे हाथ में पकड़ता जा रहा था। मैंने 54 खजूरें खाईं, मेरे दोनों साथी भी मेरी ही तरह कर रहे थे, कि वे भी खजूरें गिन रहे थे, उन दोनों ने भी पचास–पचास खजूरें खाई थीं।

जब हम खा चुके, तो उस प्याले में वह सात खजूरें वैसी की वैसी ही बाक़ी थी, फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बिलाल रज़ि० से फ़रमाया, इन खजूरों को अपने थेले में रख दो, दूसरे दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फिर वह खजूरें प्याले में डाली और फ़रमायाः अल्लाह का नाम लेकर खाओ, हम दस आदमी पेट भरकर खजूरें खा गए, पर प्याले में उसी तरह सात खजूरें बची थीं।

फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया अगर मुझे अपने रब से हया न आती, तो मदीना पहुंचने तक ये खजूरे खाते रहते, फिर मदीना पहुंचकर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इन खजूरों को बच्चों में तक़्सीम कर दिया।

(बिदाया, 6, 118)

हज़रत बशीर बिन साद की बेटी ने बताया कि एक दिन मेरी मां ने मुट्ठी भर खजूरें थैली में डालकर दी और कहा उन्हें अपने अब्बा (बशीर) और मामू (अब्दुल्लाह बिन रवाहा रज़ियल्लाहु अन्हु) को दोपहर में खाने के लिए दे आओ।

मैं वे खजूरें लेकर मामूं और अब्बा को ढूंढते हुए, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के क़रीब से गुज़री। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे अपने पास बुलाया और पूछा इस थैली में क्या है? मैंने कहा कि खजूरें। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वे खजूरें मुझसे अपने दोनों हाथों में ली, जिससे आपके दोनों हाथ भी न भर पाए। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के कहने पर एक कपड़ा बिछाया गया, जिस पर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वे खजूरें बिखेर दी, फिर एक सहाबा रज़ि० से कहाः जाओ खंदक़ वालों को बुलाओ कि वे लोग आकर खजूरें खा लें, एलान पर सारे खंदक़ वाले जमा हो गए और खजूरें खाने लगे, वे खजूरें बढ़ती चली जा रही थीं, जब वे सारे लोग खाकर चले गए, तो खजूरें कपड़े से बाहर तक गिर रही थीं।

(दलाइल, सफ़ा, 180, बिदाया, 6, 116)

बद्र की लड़ाई में हज़रत उकाशा बिन मुहसिन रज़ियल्लाहु अन्हु की तलवार टूट गई, यह देखकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पेड़ की एक टहनी पकड़ा दी हज़रत उकाशा रज़ि० के टहनी पकड़ते ही अल्लाह तआला उस टहनी को तलवार में बदल दिया, जिसका लोहा बड़ा साफ़ और मज़बूत था।

(इब्ने साद, 1, 188)

हज़रत समरा बिन जुन्दब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि हम लोग सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास बैठे हुए थे, कि इतने में सरीद का एक प्याला आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में पेश किया गया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसमें से खाया और जो लोग वहां पर मौजूद थे उन सबने भी खाया, ज़ुहर तक लोग बारी–बारी आते रहे और इसमें से खाते रहे। एक आदमी ने हज़रत समरा रज़ि० से पूछा क्या इस प्याले में कोई आदमी और सरीद डाला जाता था? हज़रत समरा रज़ि० ने फ़रमाया ज़मीन से तो लाकर नहीं डाला जाता था, अलबत्ता आसमान से ज़रूर डाला जा रहा था।

(बिदाया, 2, 112, दलाइल सफ़ा 153)

हज़रत वासिला बिन अस्क़ा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं अस्हाबे सुफ़्फ़ा में से था, एक दिन हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझसे रोटी का टुकड़ा मंगवाया और उसके छोटे छोटे टुकड़े करके प्याले में डाल दिए फिर उस प्याले में गर्म पानी और चर्बी डालकर उसे अच्छी तरह मिलाया।

फिर उसकी ढेरी बनाकर बीच में ऊंचा करके मुझसे फ़रमाया, जाओ अपने समीत दस आदमियों को मेरे पास बुलाओ। मैं दस आदमियों को बुला लाया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमायाः खाओ! लेकिन अपने आगे से खाना, बीच से न खाना। क्योंकि बरकत ऊपर से बीच में उतरती है। चुनांचे हम सब ने इसमें से पेट भरकर खाया।

(हैसमी, 8, 305, दलाइल सफ़ा, 150)

हज़रत अब्बास बिन सहल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक सुबह लोगों के पास पानी बिल्कुल नहीं था। लोगों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह बात बतलाई। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुआ की, तो अल्लाह तआला

ने एक बादल उसी वक़्त भेजा जो ख़ूब ज़ोर से बरसा, लोग सेराब हो गए। फिर सबने अपनी ज़रूरतें पूरी कीं और बर्तनों में भी भर लिया।

(दलाइल सफ़ा, 190)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने किसी काम के लिए दो सहाबी रज़ि० को बाहर भेजा। जाते वक़्त उन दोनों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बताया कि हम लोगों के पास रास्ते के लिए कुछ नहीं है हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, एक मश्क़ ढूंढ कर लाओ। वह एक मश्क लेकर आए तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, इसे भर दो! उन्होंने उसे पानी से भर दिया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इस मश्क़ का मुंह रस्सी से बांधा और उन्हें देकर फ़रमाया, जब तुम लोग चलते चलते फ़्लां जगह पर पहुंचोगे तो वहां अल्लाह तआला तुम्हें ग़ैब से रोज़ी देंगे। चुनांचे वे दोनों चल पड़े, जब चलते–चलते ये दोनों उस जगह पहुंचे, जहां के बारे में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया था, तो उनके मश्क़ का मुंह अपने आप खुल गया उन्होंने देखा कि मश्क़ में पानी की जगह दूध और मक्खन भरा हुआ है, फिर इन लोगों ने पेट भरकर मक्खन खाया और दूध पीया। (इब्ने साद, 1, 174)

जन्नत और दोज़ख़ की सेर

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक सुबह इर्शाद फ़रमाया, पिछली रात मेरे अल्लाह ने मुझको ख़ास इज़्ज़त और बुज़ुर्गी से नवाज़ा, कि पिछली रात जब मैं सो रहा था, रात के एक हिस्से में जिब्रील आए और मुझको जगाया। मैं पूरी तरह जाग भी न पाया था, कि मुझको हरम काबा में उठा लाए। वहां जिब्रील ने मेरी सवारी के लिए खच्चर से कुछ छोटा जानवर बुराक़ पेश किया, जो सफ़ेद रंग का था।

जब मैं उस पर सवार होकर चला, तो उसकी धीरी रफ़्तार का हाल यह था, कि जहां तक मुझे नज़र आता था उसका पहला क़दम वहां पड़ता था अचानक हम लोग बैतुलमक़दस जा पहुंचे, यहां जिब्रील के इशारे पर हमने बुराक़ को उस जगह खड़ा कर दिया, जिस जगह बनी इसराइल के नबी अपनी सवारियां खड़ी किया

करते थे।

फिर मैं मस्जिद अक़्सा में दाख़िल हुआ और दो रकआत नमाज़ पढ़ी। फिर अर्श पर जाने की तैयारी शुरू हुई। उसके बाद अर्श का सफ़र शुरू हुई और जिब्रील के साथ बुराक़ ने आसमान की तरफ़ उड़ान भरी, जब हम पहले आसमान तक पहुंच गए तो जिब्रील ने आसमान का दरवाज़ा खोलने के लिए फ़रिश्ते से कहा।

दरवाज़े पर मुक़र्रर फ़रिश्ते ने पूछा, कौन है?

जिब्रील ने कहा, मैं जिब्रील हूं

फ़रिश्ते ने पूछा, तुम्हारे साथ कौन है?

जिब्रील ने जवाब दिया मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)।

फ़रिश्ते ने पूछा, क्या उन्हें ऊपर बुलाया गया है?

जिब्रील ने कहा, बेशक। फिर फ़रिश्ते ने दरवाज़ा खोला और दरवाज़ा खोलते हुए मुझसे कहा, कि आप जैसी हस्ती का यहां आना मुबारक हो। जब हम अंदर दाख़िल हुए तो, हज़रत आदम अलैहिस्सलाम से मुलाक़ात हुई। जिब्रील ने मेरी तरफ़ मुख़ातिब होकर कहा, यह आपके बाप आदम अलैहिस्सलाम हैं। आप इनको सलाम कीजिए। मैंने उनको सलाम किया और उन्होंने सलाम का जवाब देते हुए कहा कि 'मरहबा नेक बेटे और नेक नबी' इसके बाद दूसरे आसमान पर पहुंचे तो पहले आसमान की तरह सवालों का जवाब देकर दरवाज़े में दाख़िल हुए, तो वहां हज़रत यहया और ईसा अलै० से मुलाक़ात हुई। तो जिब्रील ने उनका तारूफ़ कराया कि सलाम में पहल कीजिए, मैंने सलाम किया और उन दोनों ने जवाब देते हुए फ़रमाया, मुबारक हो 'ऐ बुर्गज़ीदा नबी।

इसके बाद चौथे आसमान पर भी इन्हीं सवालों के बाद हज़रत इदरीस अलै० से मुलाक़ात हुई और पांचवे आसमान हज़रत हारून अलै० से और छठे आसमान पर मूसा अलै० से इसी तरह मुलाक़ात हुई।

लेकिन जब मैं वहां से सातवें आसमान की तरफ़ जाने लगा तो हज़रत मूसा अलै० रंजीदा हो गए। जब मैंने इसकी वजह पूछी तो फ़रमाया, मुझे यह रश्क हुआ कि अल्लाह तआला की ज़ोरदार हिक्मत ने ऐसी हस्ती को (जो मेरे बाद दुनिया में भेजी गई) यह शर्फ़ दे दिया, कि उसकी उम्मत मेरी उम्मत के मुक़ाबले में कई

गुना जन्नत का फ़ैज़ हासिल करेगी।

इसके बाद पिछले सवालों और जवाबों का सिलसिला तैय करके जब मैं सातवें आसमान पर पहुंचा, तो हज़रत इब्राहीम अलै० से मुलाक़ात हुई जो बैतुल मामूर से पीठ लगाए हुए बैठे थे। जिसमें हर दिन सत्तर हज़ार (70,000) नए फ़रिश्ते (इबादत के लिए) दाख़िल होते हैं। हज़रत इब्राहीम अलै० ने मेरे सलाम का जवाब देते हुए फ़रमाया 'मुबारक मेरे बेटे और बुर्गज़ीदा नबी' यहां से फिर मुझे 'सदरातुल मुन्तहा' तक पहुंचाया गया, जिसका फल झरबेर के गुठलियों के बराबर है और जिसके पत्ते हाथी के कान की तरह चौड़े हैं। इस पर अल्लाह के ला–तादाद फ़रिश्ते जूगनू की तरह चमक रहे थे और अल्लाह की ख़ास तजल्ली ने उनको हैरत नाक तौर पर रोशन और कैफ़ वाला बना दिया।

(मुस्लिम, बुख़ारी)

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के गैबी मददों के वाक़िआत

हज़रत आइशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि एक दिन, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम घर में तश्रीफ़ लाए, मैं आपके चेहरे के आसार देखकर समझ गई, कि आज कोई अहम बात पेश आई है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने घर में वुज़ू फ़रमाया और किसी से कोई बात किए बग़ैर मस्जिद में चले गए, मैं हुजरे की दीवार से कान लगाकर खड़ी हो गई, कि सुनूं! आप क्या इर्शाद फ़रमाते हैं? आप मिम्बर पर तश्रीफ़ फ़रमा हुए और बयान फ़रमाया: ऐ लोगो! अल्लाह तआला का इर्शाद है, कि अमल बिल मारूफ़ (अच्छी बातों का हुक्म) और नहीं अनिल मुन्कर (बुरी बातों से रोकना) करते रहो। (अल्लाह की पहचान कराते रहो और अल्लाह के ग़ैर से कुछ नहीं होता है, इसे समझते रहो) अगर तुमने ऐसा न किया,

1. तो, मैं तुम्हारी दुआओं को कबूल नहीं करूंगा।
2. तुम मुझसे सवाल करोगे, तो मैं तुम्हारे सवालों को पूरा नहीं करूंगा।

3. तुम अपने दुश्मनों के खिलाफ़ मुझसे मदद तलब करोगे, तो मैं तुम्हारी मदद न करूंगा।

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह बयान फ़रमा कर मिम्बर से नीचे तश्रीफ़ ले आए।

(इब्ने माजा)

उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैं हिजरत करके मदीना जा रही थी मनसरफ़ नाम की जगह पर पहुंची तो शाम हो गई थी, रोज़े से थी लेकिन हमारे पास पानी नहीं था और प्यास के मारे बुरा हाल था, तो आसमान से सफ़ेद रस्सी में पानी से भरा हुआ डोल उतरा, उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि मैंने उस डोल से खूब पानी पिया, फिर उस दिन के बाद से मुझे कभी प्यास नहीं लगी। हालांकि मैं तेज़ गर्मियों में रोज़े रखती थी ताकि मुझे प्यास लगे। लेकिन मुझे प्यास नहीं लगती थी।

(इसाबा, 4, 432, तब्क़ात इब्ने साद, 8, 224)

हज़रत अला बिन हज़रमी रज़ियल्लाहु अन्हु की जमाअत बहरीन गई हुई थी सफ़र में पानी नहीं था। जिसकी वजह से ऊंट भी प्यास के मारे क़ाफ़िले से भाग गए और उन पर जो सामान और खाना बंधा हुआ था, उससे भी सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम महरूम हो गए। सारी जमाअत प्यास से परेशान हो गई, तो तयम्मुम करके सब ने नमाज़ पढ़ी और नमाज़ पढ़कर अल्लाह से पानी का इंतिज़ाम करने की दुआ की, ये लोग दुआ कर ही रहे थे, कि पीछे से पानी उबलने की आवाज़ सुनी। जब पीछे पलट कर देखा, तो ज़मीन से एक चश्मा फूटकर पानी की धार बह रही थी और जो जानवर सामान लेकर चले गए थे, वे सब भी एक साथ वापस आ रहे थे, जैसे उन्हें कोई पकड़ कर ला रहा हो।

(बैहक़ी, बुख़ारी)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफ़र रज़ियल्लाहु अन्हु को दस लाख (10,00,000) दिरहम के बदले में एक ज़मीन मिली, जो बंजर थी, उन्होंने अपने गुलाम से मुसल्ला लेकर उस ज़मीन पर चलने को कहा। ज़मीन पर पहुंचकर गुलाम से मुसल्ला बिछाने को कहा। फिर मुसल्ले पर खड़े होकर दो रक्अत नमाज़ पढ़ी, सज्दे में

बहुत देर तक पड़े रहे, फिर नमाज़ से फ़ारिग़ होकर, गुलाम से कहा, कि मुतस्सा उठाकर वहां की ज़मीन खोदो। जब गुलाम ने वहां की ज़मीन खोदी, तो पानी का एक चश्मा वहां से उबलने लगा।

(फ़ज़ाइले आमाल)

एक मर्तबा हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु के गुलाम ने हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से बाग़ और खेत में पानी न होने की शिकायत की। तो हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु ने उससे पानी मांगा और वुज़ू किया, फिर दो रक्अत नमाज़ पढ़ी और गुलाम से कहा, कि बाहर जाकर देखो, क्या आसमान से बादल आया? उसने बाहर देखकर बताया कि बादल तो नहीं है। जिस पर हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु ने दोबारा, तीसरी, और चौथी मर्तबा नमाज़ पढ़कर गुलाम से कहा कि अब जाकर देखो। इस बार गुलाम ने आकर बताया, कि हां चिड़िया के पर के बराबर एक बादल नज़र आ रहा है। यह सुनकर उन्होंने फिर नमाज़ पढ़ी और खूब देर तक दुआ करते रहे, फिर गुलाम ने बताया कि खूब बारिश हो रही है। तो आपने उसे अपना घोड़ा देकर कहा, कि जा देखकर आ, कहां तक बारिश हुई? वह गया और वापस आकर उसने बताया, कि अपने बाग़ और खेत के अलावा कहीं बारिश नहीं हुई है।

(तबक़ात इब्ने साद)

चूहे के बिल से रिज़्क़

एक दिन हज़रत मिक़दार रज़ियल्लाहु अन्हु ज़रूरत पूरी करने के लिए अपने घर से चले और एक बे-आबाद जगह पर ज़रूरत पूरी करने के लिए बैठ गए, इतने में एक बड़ा सा चूहा एक दीनार अपने मुंह में दबाए हुए आया और उनके सामने उसे डालकर वापस चला गया। एक-एक करके उस चूहे ने सत्तर (70) दीनार उनके सामने लाकर रखे।

हज़रत मिक़दार रज़ियल्लाहु अन्हु वे दीनार लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए और पूरा वाक़िया बताया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे पूछा, कि तुमने चूहे के बिल में अपना हाथ तो नहीं

डाला था?

हज़रत मिक्दार रज़ि० ने जवाब दिया, या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मैंने उसके बिल में अपना हाथ नहीं डाला था।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, उसे ले लो, ये अल्लाह की तरफ़ से तुम्हें रोज़ी भेजी गई है, जिसका तुमसे वायदा किया गया है, कि तुम्हें ऐसी जगह से रोज़ी दूंगा, जहां से तुम्हें गुमान भी न होगा।

उनकी बीवी हज़रत ज़बाआ रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं, कि अल्लाह तआला ने उन दीनारों में बहुत बरकत फ़रमाई, यह उस वक़्त तक ख़त्म नहीं हुए, जब तक कि हमारे घर में चांदियों के दिरहम बोरियों में भरकर नहीं रखे जाने लगे।

(दलाइल, सफ़ा, 165)

तीन दीनार का माल, वह भी सदक़ा कर दिया

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु दूसरों पर ख़र्च करने के लिए घर पर पैसे रखते थे। कभी किसी मांगने वाले को ख़ाली हाथ वापस नहीं करते थे। अगर पैसे नहीं होते, तो उसे एक प्याज़ या एक खजूर दे देते थे। एक दिन एक मांगने वाला उनके पास आया, उनके पास सिर्फ़ तीन दीनार थे, एक दीनार उसको दे दिया, कुछ देर बाद दूसरा मांगने वाला आया, एक दीनार उसको दे दिया, फिर थोड़ी देर बाद तीसरा आया उन्होंने वह भी उठाकर उसको दे दिया।

उनकी ईसाई बांदी ने जब आकर देखा तो उसे बहुत गुस्सा आया और उसने गुस्से में कहा कि तुमने हमारे खाने के लिए कुछ नहीं छोड़ा, उन्होंने उसकी बात सुनी और आकर लेट गए, जब ज़ुहर की आज़ान हुई, तो वह उठे और वुज़ू करके मस्जिद चले गए, वह रोज़े से थे। इसी वजह से उनकी बांदी को उन पर तरस आ गया और गुस्सा उतर गया, वह बांदी कहती है, मैंने उधार लेकर, उनके लिए रात का खाना पकाया और घर में चिराग़ जलाने के लिए उनके बिस्तर के पास गई, जब बिस्तर उठाया तो उसके नीचे सोने के दीनार रखे हुए थे। मैंने उन्हें गिना तो वे पूरे 300 थे। मैंने सोचा कि इतने दीनार वह अपने पास रखे हुए थे। इसलिए वे तीन दीनार मांगने वाले को दे दिए। जब इशा की नमाज़ के बाद वह घर वापस

आए तो चिराग़ की रोशनी में दस्तरख़्वान लगा देखा, उसे देखकर मुस्कराया और कहने लगे मालूम होता है कि अल्लाह के यहां से आया है? यह सुनकर मैं कुछ न बोली, उनको खाना खिलाया, फिर खाना खाने के बाद मैंने उनसे कहा, अल्लाह आप पर रहम फ़रमाए, आप अगर मुझे जाते वक़्त इन दीनारों के बारे में मुझे बता देते, तो मैं इन दीनारों को उठाकर रख लेती।

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा कौन से दीनार? मेरे पास तो कुछ नहीं था जिसे मैं छोड़कर जाता। तो मैंने बिस्तर उठाकर वे दीनार दिखाए। इन दीनारों को देखकर वह ख़ुश भी हुए और हैरान भी हुए। इनकी इस ख़ुशी और हैरानी को देखकर मुझ पर बड़ा असर हुआ, मैंने अपना ज़ुन्नार काट डाला और मुसलमान हो गई।

(हुलीया, 10, 149)

हज़रत साइब बिन अक़राअ़ रज़ियल्लाहु अन्हु को हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मदाइन का गवर्नर बनाया। एक बार वह किसरा के दरबार में बैठे हुए थे, जहां उनकी नज़र दीवार पर बनी हुई ऐक तस्वीर पर पड़ी, जो उंगली से एक तरफ़ इशारा कर रही थी।

हज़रत साइब बिन अक़राअ़ रज़ि० फ़रमाते हैं कि मेरे दिल में यह ख़्याल आया कि यह किसी ख़ज़ाने की तरफ़ इशारा कर रहे है, मैंने उस जगह को खोदा तो बहुत बड़ा ख़ज़ाना वहां से निकला। मैंने ख़त लिखकर हज़रत उमर रज़ि० को ख़ज़ाना मिलने की ख़बर की और यह भी लिखा कि यह ख़ज़ाना अल्लाह ने मुझे बग़ैर किसी मुसलमान की मदद के दिया है। तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जवाब में लिखा कि बेशक यह ख़ज़ाना तुम्हारा है, लेकिन तुम मुसलमानों के अमीर हो इसलिए इसे मुसलमानों में बांट दो।

(इसाबा, 2)

उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा के यहां एक दिन हदिया में एक प्याला गोश्त आया। उन्होंने उस गोश्त के प्याले को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के खाने के लिए, अपनी बांदी से रखवा दिया। उसी वक़्त बाहर मांगने वाला आया। तो उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा ने उसे आगे जाने को कहा, तो वह चला गया। इतने में

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम आ.गए, तो उम्मे सलमा ने अपनी बांदी से वह गोश्त का प्याला हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के खाने के लिए मांगा, बांदी जब प्याला लेकर आई, तो उन्होंने देखा, कि इस गोश्त को अल्लाह तआला ने पत्थर में बदल दिया था।

(फ़ज़ाइले सदक़ात)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक मर्तबा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ अल्लाह के रास्ते में गए, मुझ से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछा, ऐ अबू हुरैरा! तुम्हारे पास खाने को कुछ है? मैंने कहा, जी हां, कुछ खजूरें थैली में है। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कहा उन्हें ले आओ मैंने वे खजूरें ले जाकर आपको दे दी। फिर फ़रमायाः दस आदमियों को बुला लाओ, मैं दस आदमियों को बुला लाया। सब ने पेट भरकर खजूरें खाईं। इसी तरह दस आदमी आते रहे और खाते रहे। यहां तक कि सारे जमाअत ने वे खजूरें खाईं। फिर भी थैली में खजूरें बची रहीं। फिर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझसे फ़रमाया, एक अबू हुरैरा! जब तुम खजूरें खाना चाहो, तो थैली में हाथ डालकर निकाल लिया करना। पर इस थैली को कभी उलटना नहीं। हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सारी ज़िंदगी उस थैली से खजूरें निकालकर खाता रहा। फिर हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की सारी ज़िंदगी उस थैली से निकालकर खाता रहा, फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की सारी ज़िंदगी खाता रहा, आख़िर में हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु की सारी ज़िंदगी में इसी थैली से खजूरें खाता रहा। जिस दिन हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हु को शहीद किया गया, उस दिन की भगदड़ में मेरी थैली कहीं गुम हो गई। अपने शार्गिदों से फ़रमाया, कि तुम लोगों को बताओ मैंने (लगभग बीस साल में) इसमें से कितनी खजूरें खाई हैं? लोगों ने कहा बताइए, हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया दो सौ वसक़, यानी 1050 मन, (लगभग 425 कुँटल)

(बिदाया, 6, 117, दलाइल, सफ़ा, 155)

हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि एक आदमी ने हुज़ूर सल्लल्लाहु

अलैहि व सल्लम से गल्ला मांगा। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने आधा वसक़ (लगभग एक सौ-किलो) जौ उसे दे दिया। वह आदमी और उसकी बीवी और उसका गुलाम, वे तीनों बहुत दिनों तक उस जौ को खाते रहे। लेकिन एक दिन उसने उस गल्ले को तौल लिया। जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इसके जौ तौलने का इल्म हुआ, तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस आदमी को बुलाकर फ़रमाया, अगर तुम लोग उसे तौलते न, तो हमेशा खाते रहते, वह जौ कभी ख़त्म न होता।

(बिदाया, 6, 104)

हज़रत उम्मे शुरैक दौसिया रज़ियल्लाहु अन्हा ने हिजरत की, रास्ते में एक यहूदी का साथ हो गया, वह रोज़े से थीं और शाम हो चुकी थी, उनके पास खाने पीने को कुछ न था। उस यहूदी ने अपनी बीवी से कहा, कि तुम इस मुसलमान को पानी न देना, वरना तुम्हारी ख़ैरियत नहीं। उम्मे शरीक रज़ि० प्यासी ही सो गईं। तहज्जुद के वक़्त अल्लाह तआला ने एक पानी से भरा हुआ डोल और थैला आसमान से उतारा, जिस डोल से उन्होंने ख़ूब पानी पीया।

(इब्ने साद, 8, 157)

कुप्पी से घी पलटने के बाद भी कुप्पी भरी रही

एक मर्तबा हज़रत उम्मे शरीक रज़ियल्लाहु अन्हा अपनी बांदी को घी देकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के यहां भेजा, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस कुप्पी से अपने बर्तन में घी पलट लिया और उस ख़ाली कुप्पी को बांदी के हवाले करके फ़रमाया, इस कुप्पी को घर जाकर लटका देना और इसका मुंह बंद न करना।

कुछ देर बाद उम्मे शरीक रज़ि० ने देखा कि कुप्पी उसी तरह से भरी हुई लटक रही है, उन्होंने बांदी को बुलाकर डांटा, कि मैंने तुझसे यह कुप्पी हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के यहां ले जाने को कहा था, इसे क्यों नहीं पहुंचाया? बांदी ने कहा मैं इसका घी दे आई थी।

यह सुनकर उम्मे शरीक रज़ि० हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास

गई और जाकर सारी बात बताई, उनकी बात सुनकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: अल्लाह ने तुम्हें बहुत जल्द बदला दे दिया। उम्मे शरीक! इस कुप्पी का मुंह कभी बंद न करना।

चुनांचे बहुत दिनों तक उनके घर वाले उसका घी खाते रहे। एक बार भूल से उम्मे शरीक ने उस कुप्पी का मुंह बंद कर दिया। पस उसी रोज़ से उस कुप्पी का घी कम होने लगा और एक दिन खत्म हो गया।

(इब्ने साद, 8, 157)

एक मर्तबा हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत फ़ातिमा रज़ि० के घर तश्रीफ़ ले गए। हज़रत फ़ातिमा रज़ि० से पूछा क्या तुम्हारे यहां खाने को कुछ है? हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने कहा, कि मेरे यहां खाने को तो कुछ नहीं है।

यह सुनकर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वापस चले गए, कुछ देर बाद हज़रत फ़ातिमा रज़ि० की पड़ोसन ने दो रोटियां और एक टुकड़ा भुना हुआ गोश्त भेजा। हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने वह लेकर रख दिया और अपने बेटे से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बुलाने को कहा।

जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम दोबारा तश्रीफ़ लाए, तो हज़रत फ़ातिमा रज़ि० ने उनसे कहा, कि अल्लाह ने खाने को कुछ भेज दिया है, इसलिए मैंने आपको बुलाया है, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ले आओ, हज़रत फ़ातिमा रज़ि० फ़रमाती हैं, कि जब मैं इस प्याले को लाई और खोल कर देखा, तो मैं हैरान रह गई, क्योंकि सारा प्याला गोश्त और रोटियों से भरा हुआ था। मैं समझ गई, कि अल्लाह ने बरकत दी, मैंने वह सारा खाना हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने रख दिया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खाने को देखकर मुझसे पूछा ऐ बेटी! तुम्हें यह खाना कहां से मिला? मैंने कहा ऐ अब्बा जान! यह खाना ऊपर अल्लाह के यहां से आया है। यह जवाब सुनकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, ऐ बेटी! तमाम तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं, जिसने तुम्हें मरयम अलै० के मुशाबा बनाया है।

क्योंकि अल्लाह तआला जब उन्हें आसमानों से रोज़ी भेजते थे, फिर उनसे जब इस रोज़ी के बारे में पूछा जाता, तो वह भी यही जवाब देती थीं, कि अल्लाह

तआला ने आसमानों के ऊपर से भेजा है।

(तफ्सीरे इब्ने कसीर, 1, 360)

हज़रत उम्मे मालिक रज़ि० अपनी कुप्पी में घी रखकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हदिया में भेजा करती थीं। एक बार उनके बेटे ने सालन मांगा, उस वक़्त उनके घर में कुछ न था। वह अपनी उस कुप्पी के क़रीब गई, जिस कुप्पी में घी रखकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भिजवाती थीं। उस कुप्पी में उन्हें घी मिल गया। हालांकि उसे खाली करके लटकाया था। अपने बेटों को बहुत अर्से तक सालन की जगह उस कुप्पी से घी निकालकर खिलाती रहीं।

आख़िर एक बार उन्होंने उस कुप्पी को निचोड़ लिया फिर उसमें से घी निकलना बंद हो गया। उन्होंने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास जाकर सारा वाक़िआ बताया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे पूछा तुमने उसे निचोड़ा था? उन्होंने कहा, जी हां। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, अगर तुम उसे न निचोड़ती तो तुम्हें हमेशा उसमें से घी मिलता रहता।

(बिदाया, 6, 104)

हज़रत उम्मे ऐवस रज़ि० ने घी को पकाकर अपनी कुप्पी में डाला और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हदिए में दे दिया, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने वह घी अपने बर्तन में डालकर, उन्हें कुप्पी वापस करते हुए बरकत की दुआ दी।

उन्होंने घर जाकर देखा कि वह कुप्पी घी से भरी हुई है, वह समझी कि शायद हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरा हदिया क़बूल नहीं किया है। वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास वापस आई और अर्ज़ किया आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरा हदिया क़बूल क्यों नहीं किया? हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, कि मैंने तो हदिया क़बूल कर लिया था, यह तो अल्लाह ने बरकत फ़रमाई है कि तुम्हारी कुप्पी घी से भर गई।

चुनांचे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सारी ज़िंदगी वह इस कुप्पी से घी निकाल निकालकर खाती रहीं। फिर हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ि०, हज़रत उमर रज़ि० हज़रत उस्मान रज़ि० की ख़िलाफ़त तक वह उस कुप्पी से घी खाती रहीं।

फिर जब हज़रत अली रज़ि० और हज़रत मुआविया रज़ि० में इख़्तिलाफ़ पैदा हुआ, तो वक़्त वह उसी से घी खाती थीं। (लगभग 21 साल हो चुके थे पर घी कुप्पी से ख़त्म नहीं हुआ)

(इसाबा, 4, 431, हैसमी, 8, 310)

हज़रत उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अन्हा ने अपनी मुंह बोली बेटी के हाथ, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को घी भिजवाया। वह लड़की देकर आई और कुप्पी को घर में लाकर लटका दिया। उम्मे सुलैम रज़ि० उस वक़्त अपने घर में नहीं थी जब वह घर में लौटीं, तो कुप्पी से घी टपकता देखकर अपनी बेटी से कहा, मैंने तुम से हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को घी भिजवाया था, तो वापस क्यों ले आई? लड़की ने कहा, घी तो मैं दे आई हूं, अगर आपको मेरी बात पर इत्मिनान न हो, तो आप खुद जाकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछ लें। हज़रत उम्मे सुलैम रज़ि० उस लड़की को साथ लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास गईं और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कहा, या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मैंने इसके हाथ आपको घी भिजवाया था, यह कह रही है, कि इसने आपको घी दे दिया है, लेकिन कुप्पी घर में घी से भरी टपक रही है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, कि हां....यह मेरे पास आकर मुझे घी तो दे गई है, अब तुम ताज्जुब इस बात पर कर रही हो, कि वह खाली कुप्पी घी से कैसे भर गई?!!अरे......अल्लाह अब तुम्हें खिला रहे हैं, तो इसमें से अब तुम भी खाओ और दूसरों को भी खिलाओ।

हज़रत उम्मे सुलैम रज़ि० फ़रमाती हैं, कि मैं घर वापस आई और उस घी को थोड़ा सा अपने पास रखकर बाक़ी का सारा तक़्सीम कर दिया। हमने अपने बचे हुए घी को सालन की जगह पर एक या दो महीना इस्तेमाल किया।

(बिदाया, 6, 103, दलाइल, सफ़ 204, इसाबा, 4, 320)

एक दिन हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से कहा, मुझे आपकी वजह से लोगों को बुरा भला कहना पड़ता है। जब तब आप कोई ऐसी बात ज़बान से निकाल देते हैं। कि लोगों को बोलने का मौक़ा मिल जाता है। जैसे आज आपने ख़ुत्बा देते हुए ज़ोर से कहा, ऐ सारिया!

पहाड़ की तरफ़ हो जाओ। हज़रत उमर रज़ि० ने कहा, अल्लाह की क़सम! मैं अपने आपको क़ाबू में न रख सका, मैंने देखा, कि सारिया की जमाअत एक पहाड़ के पास लड़ रही है और हर तरफ़ से उन पर हमला हो रहा है, उस पर मैं अपने आपको न रोक सका और बोल पड़ा कि 'ऐ सारिया!' पहाड़ की तरफ़ हो जाओ। (ताकि सिर्फ़ सामने से लड़ना पड़े)।

कुछ दिन बाद हज़रत सारिया रज़ि० का क़ासिद ख़त लेकर आया, जिसमें लिखा था, कि जुम्आ के दिन हम लोगों को जब दुश्मन ने घेर लिया था, तो उस वक़्त मुझे यह आवाज़ सुनाई पड़ी कि 'सारिया!' पहाड़ की तरफ़ हो जाओ! मैं आवाज़ सुकर अपने साथियों समीत पहाड़ की तरफ़ हो गया। फिर हम लोगों ने दुश्मन को हरा भी दिया और उन्हें क़त्ल भी किया (सारिया रज़ि० की जमाअत मदीने से लगभग 500 किलोमीटर दूर दुश्मन से घरी थी, जहां यह आवाज़ पहुंची थी)

(दलाइल, सफ़ा, 210)

हज़रत उसैद बिन हुज़ैर और एक अंसारी सहाबी रज़ि० एक रात हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास थे, ये लोग अपनी किसी ज़रूरत के बारे में बातें कर रहे थे, जब वहां से उठकर अपने घर आने लगे, तो बहुत रात हो चुकी थी, बाहर बहुत अंधेरा था।

इन दोनों लोगों के हाथ में एक एक छोटी लाठी थी, तो इनमें से एक की लाठी से यकायक (टार्च की तरह) रोशनी निकलने लगी, जिसकी रोशनी में यह दोनों चलते हुए एक दोहराहे पर पहुंचे, जहां से दोनों को अलग होना था। तो दूसरे सहाबी की लाठी से भी रोशनी निकलने लगी और ये दोनों अपनी–अपनी लाठी की रोशनी में अपने घरों को पहुंच गए।

(बिदाया, 6, 152, इब्ने साद, 3, 606)

हज़रत हमज़ा बिन अम्र अस्लमी रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, कि हम एक सफ़र में हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ थे, सख़्त अंधेरी रात थी, इसमें हम लोग इधर–उधर बिखर गए, तो हमारी उंगलियों से रोशनी निकलने लगी, मेरी उंगलियों की उस रोशनी से लोगों ने अपनी–अपनी सवारी और गिरे हुए सामान

को जमा किया, जब कहीं जाकर मेरी उंगलियों से रोशनी ख़त्म हुई।

(बिदाया, 8, 213, हैसमी, 9, 413)

हज़रत अबू हफ़्ज़ फ़रमाते हैं, हम तमाम नमाज़ें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ पढ़ा करते थे। फिर अपने मुहल्ले बनू हारिस वापस हो जाते थे, एक रात सख़्त अंधेरा था और बारिश भी हो चुकी थी, हम लोग मस्जिद से निकले, तो मेरी लाठी से रोशनी निकलने लगी, उस रोशनी में चलकर हम अपने मुहल्ले में पहुंचे।

(हाकिम, 3, 350)

हज़रत अम्र बिन अबसा रज़ि० एक सफ़र में गए, वहां जब यह अपना ऊंट चराने जाते, तो दोपहर के वक़्त, बादल आकर उन पर साया कर लेता। यह जिधर जाते, बादल भी उधर चल देता।

(इसाबा, 3, 6)

हज़रत अब्बास बिन सहल रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, एक सुबह लोगों के पास पानी, बिल्कुल नहीं था, लोगों ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह बात बतलाई। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दुआ की, तो अल्लाह तआला ने एक बादल उसी वक़्त भेजा, जो ख़ूब ज़ोर से बरसा, लोग सैराब हो गए, फिर सबने अपनी ज़रूरतें पूरी कीं और बर्तनों में भी भर लिया।

(दलाइल, सफ़ा, 190)

एक क़बीला को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दुआ दी थी, कि जब भी इस क़बीले का कोई आदमी इंतिक़ाल करेगा, तो उसकी क़ब्र पर एक बादल आकर ज़रूर बरसेगा।

एक बार उस क़बीले के आज़ाद किया हुआ एक ग़ुलाम का इंतिक़ाल हुआ, तो मुसलमानों ने कहा, आज हम हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस फ़रमान को भी देख लेंगे, कि क़ौम का आज़ाद किया हुआ ग़ुलाम, क़ौम वालों में से ही गिना जाता है। चुनांचे जब इस ग़ुलाम को दफ़न किया गया, तो एक बादल आकर इसकी क़ब्र पर बरसा।

(कंज़, 7, 136)

हज़रत मालिक अशजओ रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अपने बेटे औफ़ के क़ैद हो जाने के बारे में बतलाया, तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, उसके पास यह ख़बर भेज दो–

"لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ"

को कसरत से पढ़ें।

चुनांचे क़ासिद ने जाकर हज़रत औफ़ रज़ि० को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह पैग़ाम पहुंचा दिया। हज़रत औफ़ रज़ि० ने ख़ूब कसरत से इसे पढ़ना शुरू कर दिया, तो काफ़िरों ने उनके हाथ की जिस चमड़े की डोरी से बांधा था, वह डोरी टूट कर गिर गई, हज़रत औफ़ रज़ि० क़ैद से बाहर निकल आए। बाहर आकर उन्होंने देखा, कि उन लोगों की एक ऊंटनी वहां मौजूद है हज़रत औफ़ रज़ि० उस पर सवार होकर चल दिए। आगे जाकर देखा, कि उन काफ़िरों के सारे जानवर एक जगह पर जमा हैं। उन्होंने जानवरों को आवाज़ लगाई, तो सारे जानवर उनके पीछे चल पड़े।

जब यह मदीना पहुंचे और अपने घर के सामने जाकर ऊंटनी से उतरे, तो सारा का सारा मैदान उनके साथ आए हुए ऊंटों से भर गया। उनके वालिद उनको लेकर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास पहुंचे और सारा वाक़िया बताया, जिस पर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनसे फ़रमाया, तुम्हारे साथ आए हुए सारे ऊंट तुम्हारे हैं, उनको जो चाहे करो– फिर यह आयत नाज़िल हुई–

﴿وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ

وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهُ إِنَّ اللّٰهَ بَالِغُ أَمْرِهِ قَدْ جَعَلَ اللّٰهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا﴾

'जो सिर्फ़ अल्लाह तआला से डरता है, अल्लाह तआला उसके लिए नुक़्सानों से निजात की शक्ल निकाल देते हैं। और उसको ऐसी जगह से रोज़ी पहुंचाते हैं, जहां से उसको गुमान भी नहीं होता और जो आदमी अल्लाह पर तवक्कुल (भरोसा) करेगा, अल्लाह तआला उसके लिए काफ़ी हैं।'

(सूरः तलाक़, 3) (कंज़. 7, 59)

हज़रत औफ़ बिन मालिक रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मैं 'रूहा' नाम की जगह के गिरजाघर (ईसाइयों की इबादत करने की जगह का नाम है) में सो रहा था, वह गिरजाघर अब मस्जिद बन चुकी है और उसमें नमाज़ भी पढ़ी जाती है। जब मेरी आंख खुली तो मैंने देखा कि एक शेर मेरी तरफ़ आ रहा था। मैं घबराकर अपने हथियारों की तरफ़ लपका, तो शेर ने मुझसे इंसान की आवाज़ में कहा, कि ठहर जाओ! मुझे तुम्हारे पास एक पैग़ाम देकर भेजा गया है, ताकि तुम उसे आगे पहुंचा दो। मैंने कहा, तुम्हें किसने भेजा है? उसने कहा, अल्लाह तआला ने मुझे आप के पास इसलिए भेजा है, ताकि आप हज़रत मुआविया रज़ि० को बता दें, वह जन्नत वालों में से हैं. मैंने कहा, यह मुआविया रज़ि० कौन हैं? उसने कहा हज़रत अबू सुफ़ियान रज़ि० के बेटे।

(हैसमी, 9, 357)

हज़रत सफ़ीना रज़ि० फ़रमाते हैं, कि मैं एक समुंद्र में सफ़र कर रहा था हमारी नाव टूट गई और हम बहते हुए जंगल में पहुंच गए हमें आगे रास्ता नहीं मिल रहा था, एक दम से मेरे सामने शेर आया, मैंने शेर से कहा, मैं हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का सहाबी सफ़ीना हूं, मैं रास्ता भटक गया हूं, मुझे रास्ता बताओ।

यह सुनकर वह मेरे आगे-आगे चल पड़ा और चलते-चलते हमें रास्ते पर पहुंचा दिया, फिर उसने मुझे ज़रा धक्का दिया गोया कि वह मुझे रास्ता दिखला रहा है।

(बिदाया, 67, 149)

जमाअत के लिए जंगल, दरिंदों से ख़ाली हो गया

हज़रत उक़्बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी जमाअत के साथ जंगल में सफ़र कर रहे थे, कि शाम हो गई, तो अपने साथियों से कहा, यहां ख़ेमा लगा लो! साथियों ने जंगल के जानवरों का उज़्र बताया, यह सुनकर वह एक ऊंची जगह पर खड़े हुए और जंगल के जानवरों और कीड़े मकोड़ों को मुख़ातिब करके एलान किया, कि हम लोग हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबी हैं। तुम लोगों

को यह हुक्म देते हैं, कि इस जंगल को तीन दिन के अंदर खाली कर दो, वरना तुम लोगों का शिकार कर लिया जाएगा।

हज़रत उक्बा बिन आमिर रज़ियल्लाहु अन्हु की यह आवाज़ सुनकर, जंगल के जानवरों ने क़तार से जंगल से बाहर जाना शुरू कर दिया। और तीन दिन से पहले ही सारा जंगल जानवरों और कीड़ों मकाड़ों से खाली हो गया।

(तब्क़ात इब्ने साद, 7, 325)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का ख़त दरिया के नाम

हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब मिस्र फ़त्ह कर लिया तो अजमी महीनों में से 'बोना' महीने के शुरू होने पर मिस्र वाले उनके पास आए और कहा, अमीर साहब! हमारे इस दरिय-ए-नील की एक आदत है, जिसके बग़ैर यह चलता नहीं, हज़रत अम्र रज़ि० ने पूछा वह आदत क्या है? उन्होंने कहा, जब इस महीने की बारह रातें गुज़र जाती हैं, तो हम ऐसी कुंवारी लड़की की तलाश करते हैं, जो अपने मां-बाप की इकलौती लड़की होती है। उसके मां-बाप को राज़ी करते हैं और उसे सब से अच्छे कपड़े और ज़ेवर पहनाकर उसमें डाल देते हैं, हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० ने कहा, यह क़ाम इस्लाम में तो हो नहीं सकता, क्योंकि इस्लाम अपने से पहले के तमाम (ग़लत) तरीक़े ख़त्म कर देता हैं चुनांचे मिस्र वाले बोना, अबीब, मिस्री तीन महीने ठहरे रहे और आहिस्ता-आहिस्ता दरिय-ए-नील का पानी बिल्कुल ख़त्म हो गया। यह देखकर मिस्र वालों ने मिस्र छोड़कर कहीं और जाने का इरादा कर लिया।

हज़रत अम्र बिन आस रज़ि० ने यह देखा, तो इन्होंने इस बारे में हज़रत उमर रज़ि० को ख़त लिखा, हज़रत उमर रज़ि० ने जवाब में लिखा, आपने बिल्कुल ठीक किया, बेशक इस्लाम अपने पहले के तमाम ग़लत तरीक़े ख़त्म कर देता है। मैं आपको एक पर्चा भेज रहा हूं, जब आपको मेरा ख़त मिले तो आप मेरा वह पर्चा दरिय-ए-नील में डाल दें। जब ख़त हज़रत अम्र रज़ि० के पास पहुंचा तो उन्होंने वह पर्चा खोला उसमें यह लिखा हुआ था। 'अल्लाह के बंदे अमीरुल मोमिनीन उमर की तरफ़ से मिस्र के दरिय-ए-नील के नाम। अम्मा बअद!

अगर तुम अपने पास से चलते हो तो मत चलो और तुम्हें अल्लाह वाहिद चलाते हैं, तो हम अल्लाह वाहिद से सवाल करते हैं कि वह तुझे चला दे 'चुनांचे सलीब के दिन से एक दिन पहले यह पर्चा दरिया-ए-नील में डाला, उधर मिस्र वाले मिस्र छोड़ने की तैयारी कर चुके थे, क्योंकि उनकी सारी माशियत और खेती-बाड़ी का इंहिसार दरिया-ए-नील के पानी पर था। सलीब के दिन सुबह लोगों ने देखा कि दरिया-ए-नील में सोलह (16) हाथ पानी चला आ रहा है, इसी तरह अल्लाह तआला ने मिस्र वालों की इस बुरी रस्म को खत्म कर दिया।

(कंज़, 4, 380)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अला बिन हज़रमी रज़ि० को बहरीन की तरफ़ भेजा, तो मैं भी उनके पीछे हो लिया। जब हम लोग समुंद के किनारे पर पहुंचे, तो हज़रत अला बिन हज़रमी रज़ि० ने हम लोगों से कहा कि 'बिस्मिल्लाह कह कर समुंदर में घुस जाओ' चुनांचे हम लोग बिस्मिल्लाह कह कर समुंद में घुस गए और हमने समुंद पार कर लिया और हमारे ऊंटों के पांव भी गीले नहीं हुए।

(दलाइल, सफ़ा, 208, हुलीया, 1-8)

ईमान की अलामत (निशानी)

﴿إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ آيَاتُهُ زَادَتْهُمْ إِيمَانًا وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ﴾

कि ईमान वाले तो वही हैं, जिनके सामने अल्लाह का नाम लिया जाता है तो उनके दिल डर जाते हैं और जब अल्लाह तआला की खबरें उन्हें सुनाई जाती हैं, तो उन खबरों को सुनकर उनके यक़ीन बढ़ जाते हैं और वे लोग सिर्फ़ अपने रब पर ही तवक्कुल (भरोसा) करते हैं

(सूर अंफ़ाल, 2)

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक शख़्स ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सवाल किया, कि ईमान क्या है?

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, जब तुमको अल्लाह का हुक्म पूरा करके खुशी हो और अल्लाह के किस एक भी हुक्म के छूट जाने पर ग़म हो, तो समझ लो, तुम मोमिन हो।

हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मैंने यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना है, कि ईमान का मज़ा उसने चखा, जो–

अल्लाह तआला को रब,
इस्लाम को ज़रूरतों के पूरा करने का तरीक़ा (दीन) और
मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रसूल मानने पर राज़ी हो जाए।

(मुस्लिम)

हज़रत अम्र बिन आस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दर्याफ़्त किया, कौन–सा ईमान अफ़ज़ल है?

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, वह ईमान जिसके साथ हिजरत हो।

मैंने पूछा, कि हिजरत क्या है?

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, हिजरत यह है, कि तुम बुराई को छोड़ दो।

(मुस्नद अहमद)

हज़रत अम्र बिन शुऐब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मैंने यह इर्शाद फ़रमाते हुए सुना है, कि कोई शख़्स उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता, जब तक हर अच्छी और बुरी तक़्दीर पर ईमान न लाए।

(मुस्नद अहमद)

हज़रत अबू उमामा रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम अजमईन ने एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने दुनिया का ज़िक्र किया, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, ग़ौर से सुनो! ध्यान दो यक़ीनन

सादगी, ईमान का हिस्सा है।

(अबू दाऊद)

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया, कि कोई शख़्स उस वक़्त तक मुसलमान नहीं हो सकता, जब तक कि उसकी तमाम ख़्वाहिशात इस तरीक़े (दीन) के ताबेअ न हो जाएं, जिसको मैं लेकर आया हूं।

(इब्ने माजा)

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, मैंने अपनी ज़िंदगी का बड़ा हिस्सा इस तरह से गुज़ारा है, कि हममें से हर एक क़ुरआन से पहले ईमान सीखता था और जो भी सूरः हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर नाज़िल होती थी, हर एक उसके हलाल और हराम को ऐसे सीखता था, जैसे तुम लोग क़ुरआन सीखते हो, और जहां वक़्फ़ करना मुनासिब होता था, उसको भी सीखता था, अब मैं ऐसे लोगों को देख रहा हूं जो ईमान से पहले क़ुरआन हासिल कर लेते हैं और सूरः फ़ातिहा शुरू से लेकर आख़िरी तक सारी पढ़ लेते हैं, और उन्हें पता नहीं चलता कि 'सूरः फ़ातिहा' किन कामों का हुक्म दे रही है और किन कामों से रोक रही है और इस सूरः में कौन-सी आयत ऐसी है, जहां जाकर रूक जाना चाहिए और सूरः फ़ातिहा को रद्दी खजूर की तरह बिखेर देता है, यानी जल्दी-जल्दी पढ़ता है।

(हैसमी, 1, 165)

हज़रत जुन्दुब बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते थे, हम नौ उम्र लड़के और हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हुआ करते थे, पहले हमने ईमान सीखा, जिससे हमारा ईमान और ज़्यादा हो गया।

(इब्ने माजा)

अनमोल मोती

अल्लाह तआला ने अपने बंदों को खुद यह दावत दी है, कि वह अल्लाह पर ईमान लाएं, ताकि अल्लाह तआला उन्हें अपनी हिमायत और हिफ़ाज़त में ले लें।

(हैसमी, 5, 232)

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, कोई बंदा उस वक़्त तक ईमान की हक़ीक़त तक नहीं पहुंच सकता, जब तक कि वह ईमान की चोटी तक न पहुंच जाए। और ईमान की चोटी पर उस वक़्त तक नहीं पहुंच सकता, जब तक उसके नज़दीक फ़कीरी, मालदारी से और छोटा बनना, बड़े बनने से ज़्यादा महबूब न हो जाए और उसकी तारीफ़ करने वाला और उसकी बुराई करने वाला बराबर न हो जाए।

(हुलीया, 1, 132)

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, कि बंदा उस वक़्त तक ईमान की हक़ीक़त तक नहीं पहुंच सकता, जब तक आख़िरत पर दुनिया को तर्जीह देने वाले लोगों को कम अक़्ल न समझे।

(हुलीया, 1, 306)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फ़रमाया: जो इल्म और ईमान चाहेगा अल्लाह तआला उसको ज़रूर देंगे, जैसे इब्राहीम अलै० को दिया, कि उस वक़्त इल्म और ईमान न था।

(हुलीया, 1, 325)

हज़रत अबूदर्दा रज़ि० से रिवायत है, कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, कि बंदे का अल्लाह से और अल्लाह का बंदे से उस वक़्त तक ताल्लुक़ रहता है, जब तक वह अपनी ख़िदमत दूसरों से न कराए। बल्कि अपने काम वह खुद करे, और जब वह अपनी ख़िदमत दूसरों से कराता है, तो उस पर हिसाब वाजिब हो जाता है।

(हुलया, 1, 214)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, कि बंदे के और उसकी रोज़ी के दर्मियान एक पर्दा पड़ा हुआ है, अगर बंदा सब्र से काम लेता है तो उसकी रोज़ी खुद उसके पास आ जाती है। और अगर वे बे-सोचे समझे रोज़ी कमाने में घुस जाता है, तो वह उस पर्दे को फाड़ लेता है लेकिन अपने मुक़द्दर से ज़्यादा नहीं पाता है।

(कंज़ुल उम्माल)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, कि ईमान सिर्फ़ ईमानी सूरत बना लेने से नहीं मिलता।

(कंज़ुल उम्माल, 8, 210)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, ऐ लोगो! अपने बातिन की इस्लाह कर लो, तुम्हारा ज़ाहिर ठीक हो जाएगा। तुम अपनी आख़िरत के लिए अमल करो, तुम्हारे दुनिया के काम अल्लाह तआला की तरफ़ से ख़ुब ब ख़ुद हो जाएंगे।

(बिदाया व नहाया, 7, 56)

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, कि कोई बंदा अल्लाह के यहां चाहे जितनी इज़्ज़त व शरफ़ वाला हो, लेकिन जब दुनिया की कोई चीज़ और सामान उसे मिलता है, तो उस चीज़ के लेने की वजह से अल्लाह के यहां उसका दर्जा कम हो जाता है।

(हुलीया, 1, 306)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, कि कुछ लोगों के जिस्म तो दुनिया में रहते हैं, लेकिन उनकी रूहों का ताल्लुक़ अल्लाह तआला से जुड़ा होता है, ऐसे ही लोग, इस ज़मीन पर अल्लाह तआला के ख़लीफ़ा हैं और यही लोग इसके दीन की दावत देने वाले हैं, हाए!! मुझे इन लोगों के देखने का कितना शौक़ है।

(कंज़ुल उम्माल, 5, 231)

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, इब्ने आदम पर वही चीज़ मुसल्लत होती है, इब्ने आदम जिस चीज़ से डरता है। अगर इब्ने आदम, अल्लाह के सिवा किसी चीज़ से न डरे, तो उस पर अल्लाह के सिवा कोई मुसल्लत न हो।

इब्ने आदम को उस चीज़ के हवाले कर दिया जाता है, जिस चीज़ से उसे नफ़ा या नुक़सान मिलने का यक़ीन होता है, अगर इब्ने आदम अल्लाह के सिवा किसी चीज़ से नफ़ा या नुक़सान का यक़ीन न रखे तो अल्लाह तआला उसे किसी चीज़ के हवाले न करे।

(कंजुल उम्माल, 7, 65)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, अल्लाह तआला ने लौहे महफ़ूज़ को सफ़ेद मोती से पैदा किया, जिसके दोनों किनारों के पट्ठे लाल याक़ूत के हैं।

(तफ़्सीरे इब्ने कसीर, 4, 267)

अल्लाह तआला ने मूसा अलै० की तरफ़ वही भेजी कि ऐ मूसा! फ़क़ीर वह है जो मुझे अपना कफ़ील और कारसाज़ न समझे और मरीज़ वह है जो मुझे तबीब न समझे और ग़रीब वह है जो मुझे देने वाला और हमदर्द न समझे।

(जवाहर सुन्नत 61)

हदीस क़ुदसी : ऐ मेरे बंदे! एक इरादा तू करता है, और एक इरादा मैं करता हूं, लेकिन होता वही है, जो मैं चाहता हूं। अगर तू अपनी चाहतों को मेरे ताबेअ नहीं करेगा, तो मैं तेरी ही चाहतों में तुझे थका दूंगा और दूंगा वही जो मैं चाहता हूं।

(कंजुल उम्माल, 54)

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, कि जो बंदा इस्लाम की हालत पर सुबह व शाम करता है, तो दुनिया की कोई चीज़ इसका नुक़सान नहीं कर सकती है।

(हुलीया, 1, 132)

हज़रत उबैदा रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मोमिन के दिल की मिसाल चिड़िया जैसी है। जो हर दिन न जाने कितनी बार इधर–उधर पलटता रहता है।

(हुलीया, 1, 102)

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, कि सुस्त आदमी की मुक़द्दर में जो लिखा है, वह उसे मिलकर रहेगा, कोई तेज़ आदमी उससे आगे बढ़कर उसके मुक़द्दर का नहीं ले सकता। इसी तरह ख़ूब ज़्यादा कोशीश करने वाला इंसान

वह चीज़ हासिल नहीं कर सकता, जो उसके मुक़द्दर में न लिखी हो।

(हुलीया, 1, 134)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, गुनाह करने के बाद कुछ बातें ऐसी होती हैं, जो गुनाह से भी बड़ी होती है, कि अगर गुनाह करते हुए तुम्हें अपने दाएं-बाएं के फ़रिश्तों से शर्म नहीं आती, तो यह इसके किए हुए गुनाह से भी बड़ा गुनाह है।

(कंज़ुल उम्माल, 8, 224)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, कि अपने लिए आसानी और रुख़्सत वाला रास्ता इख़्तियार न करो, वरना तुम गफ़लत में पड़ जाओगे और अगर तुम गफ़लत में पड़ जाओगे तो नुक़्सान उठाओगे।

(बिदाया व नहाया, 7, 307)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, कि तुम अल्लाह से यक़ीन मांगो और उसके सामने आफ़ियत का शौक़ ज़ाहिर करो और दिल की सबसे बेहतर कैफ़ियत दाईमी यक़ीन है।

(बिदाया व नहाया, 7, 307)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, जब इंसान गहरी नींद में सो जाता है, तो उसकी रूह को अर्श पर चढ़ाया जाता है। जो रूह अर्श पर पहुंचकर जागती है, उसका ख़्वाब सच्चा होता है और जो उससे पहले ही जाग जाती है उसका ख़्वाब झूठा होता है।

(हैसमी, 1, 164)

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ फ़रमाते, कि ऐ अल्लाह! मैं पनाह चाहता हूं इस नमाज़ से जो नफ़ा न पहुंचाती हो।

(अबू दाऊद शरीफ़, 1549)

हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जब नमाज़ की सफ़ें खड़ी होती हैं, तो

आसमानों के दरवाज़े,

जन्नत के दरवाज़े और

जहन्नम के दरवाज़े,

खोल दिए जाते हैं और सजी हुई हूरें ज़मीन की तरफ़ झांकती हैं।

(हाकिम, 3, 494)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, मुक़द्दर के झुठलाने वाले की अयादत न किया करो, और न ही उसकी नमाज़े जनाज़ा पढ़ा करो।

(तफ़्सीरे इब्ने कसीर, 4, 247)

हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, कि उम्मत का पहला शिर्क मुक़द्दर का झुठलाना है।

(अहमद)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, जिनके अमल इल्म के ख़िलाफ़ होंगे, वह अमल अल्लाह के पास ऊपर नहीं जाएंगे।

(कंज़ुल उम्माल, 5, 233)

हज़रत अबूदर्दा रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, तुम जितना चाहे इल्म हासिल कर लो, इल्म हासिल करने का सवाब तब मिलेगा, जब उस इल्म पर अमल करोगे।

(इब्ने अदी, ख़तीब)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, उस इबादत में ख़ैर नहीं, जिसका दीनी इल्म न हो और उस दीनी इल्म में ख़ैर नहीं, जिसे आदमी समझा न हो और कुरआन की उस तिलावत में कोई ख़ैर नहीं, जिसमें इंसान कुरआन की माइने और मतलब में ग़ौर व फ़िक्र न करे।

(हुलीया, 1, 177)

हज़रत मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं, कि सबसे ज़्यादा गुनाह करने वाला इंसान वह है, जो कुरआन पढ़ ले, लेकिन उसके माइने और मतलब को न समझे, फिर वह बच्चे, गुलाम, औरत और बांदी को कुरआन सिखाए, फिर ये सारे लोग मिलकर कुरआन के ज़रिए इल्म वालों से झगड़ा करें।

(जामेअ बयानुल इल्म, 2, 194)

हज़रत जुनेद बग़दादी रह० ने फ़रमाया, कि जिसका इल्म, यक़ीन तक, यक़ीन, डर तक, डर, अमल तक, अमल, तक़्वा तक, तक़्वा, इख़्लास तक, और इख़्लास मुशाहदे तक नहीं पहुंचता, तो वह शख़्स हलाक हो जाता है।

(पांच मिनट का मदरसा)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया, कि अल्लाह तआला से वही लोग डरते हैं, जो उसकी क़ुदरत का इल्म रखते है।

(सूरः फ़ातिर, 28)

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, उम्मत वह इंसान है, जो लोगों को भलाई और ख़ैर सिखलाए।

(इब्ने साद, 4, 165)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया, कि अय्यूब अलै० के सामने एक मिस्कीन पर जुल्म हो रहा था तो उस मिस्कीन ने हज़रत अय्यूब अलै० से मदद मांगी कि जुल्म को रोक दे, लेकिन उन्होंने उसकी मदद न की इतनी सी बात पर अल्लाह तआला ने उनको बीमारी में मुब्तला करके इनका सारा माल ख़त्म करकर आज़माइश में डाल दिया।

(कंजुल उम्माल, 2, 248)

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु को किसी तक़ाज़े पर भेजते थे, तो हज़रत जिब्रील अलै० उनको दाहिनी तरफ़ से और हज़रत मिकाइल अलै० बाईं तरफ़ से उनको अपने घेरे में ले लेते थे, जब तक वह वापस न आएं, तब तक ये दोनों इनके साथ रहते हैं।

(अहमद, 1, 199, इब्ने साद, 3, 38)

सत्ताइस (27) रमज़ान को हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु शहीद किए गए और सत्ताइस रमज़ान ही को हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को आसमानों पर उठाया गया।

(हुलीया, 1, 63)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत साद बिन अबी वक़्क़ास रज़ियल्लाहु अन्हु को नसीहत की ऐ साद! तुमने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को नबी

बनाए जाने से लेकर हम से जुदा होने तक जिस काम को करते हुए देखा है वह काम तुम्हारे सामने है। लिहाज़ा इस काम की पाबंदी करते रहना क्योंकि यही असल काम है। यह मेरी तुमको ख़ास नसीहत है। अगर तुमने इस काम को छोड़ दिया इस काम की तरफ़ तवज्जोह न दी तो तुम्हारे सारे अमल बर्बाद हो जाएंगे और तुम घाटा उठाने वाले बन जाओगे।

गुनाहे कबीरा

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जब किसी मोमिन से गुनाहे कबीरा सरज़द हो जाता है, तो ईमान का नूर उसके दिल से निकल कर उसके सर पर साया कर लेता है।

(मुस्लिम शरीफ़)

गुनाहे कबीरा (वह गुनाह जो बग़ैर तौबा के माफ़ नहीं होते) जिन पर वाइद आई हैं, जिनकी तायदाद इकहत्तर (71) है,

जो बग़ैर तौबा के माफ़ नहीं होते। एक गुनाह भी जहन्नम में ले जाने के लिए काफ़ी है।

1. अमल बिल मारूफ़ और नही अनिल मुन्कर को न करना।
2. सूद देना।
3. सूद लेना।
4. सूद लिखना।
5. सूद पर गवाह बनना
6. ज़ुल्म करना।

7. जुआ खेलना।
8. झूठ बोलना।
9. चोरी करना।
10. रिश्वत देना।
11. रिश्वत लेना।
12. रिश्वत के मामले में पड़ना।
13. चुग़ली करना।
14. डकैती डालना।
15. तकब्बुर करना।
16. बदकारी करना।
17. रियाकारी (दिखावे के लिए अमल) करना।
18. खुदकुशी करना।
19. तोहमत लगाना।
20. बद-गुमानी करना।
21. झूठी गवाही देना।
22. क़तअ रहमी (रिश्तेदारी तोड़ना) करना।
23. झूठी क़सम खाना।
24. धोखा देना।
25. नस्ब में ताअन करना।
26. वायदा ख़िलाफ़ी करना।
27. यतीम का माल खाना
28. फ़ख़ करना।
29. बुरे लक़ब से पुकारना।
30. शरओ़ पर्दा न करना।
31. किसी की ग़ीबत करना।
32. अमानत में ख़्यानत करना।

33. किसी की ज़मीन पर मिल्कीयत का दावा करना।
34. शराब पीना।
35. फ़र्ज़ अहकामात को छोड़ना।
36. बे–ख़ता जान को क़त्ल करना।
37. पड़ोसी को तक्लीफ़ पहुंचाना।
38. हट्टे–कट्टे होकर भीख मांगना।
39. किसी का ऐब तलाश करना।
40. हिकारत से किसी पर हंसना।
41. छोटों पर रहम न करना।
42. बड़ों की इज़्ज़त न करना।
43. जादू टोना करना या कराना।
44. माल को गुनाह के काम में ख़र्च करना।
45. किसी जानदार की तस्वीर बनाना।
46. किसी के नुक़्सान पर ख़ुश होना।
47. किसी के माल का नुक़्सान करना।
48. किसी जानदार को आग में जलाना।
49. मर्दों को औरतों का लिबास पहनना।
50. औरतों को मर्दों का लिबास पहनना।
51. किसी की आबरू को सदमा पहुंचाना।
52. पिछले गुनाह पर आर (शर्म) दिलाना।
53. अल्लाह की रहमत से ना–उम्मीद होना।
54. बिला वजह किसी को बुरा–भला कहना।
55. उजब यानी अपने आपको अच्छा समझना।
56. किसी की कोई चीज़ बिला इजाज़त लेना।
57. काफ़िरों का और फ़ासिक़ों का लिबास पहनना।
58. बग़ैर शरई उज़्र के जमाअत की नमाज़ छोड़ना।

59. दुनिया कमाने के लिए इल्मे दीन हासिल करना।
60. ज़रूरतमंद की बावजूद वुस्अत के मदद न करना।
61. ऊपर से पहने हुए कपड़ों से टख़ने को ढांकना।
62. दाढ़ी मूंढाना, या एक मुश्त से कम पर कुतरना।
63. शरीअ तरीक़े पर तरके को तक़सीम न करना, बिल-ख़ुसूस बहनों को मीरास से उनका हिस्सा न देना।
64. बुख़्ल यानी शरीअत में जहां-जहां ख़र्च करने का हुक्म दिया गया है वहां न करना।
65. मज़दूर से काम लेकर उसकी मज़दूरी न देना, या कम देना, या देर करना।
66. हिरस यानी माल जमा करने में हराम और ना-जाइज़ तरीक़ों से न बचना।
67. किसी से कीना रखना, यानी बदला लेने का जज़्बा दिल में रखना।
68. किसी दुन्यावी रंज से तीन दिन से ज़्यादा बोलना छोड़ देना।
69. पेशाब की छींटों से बदन और कपड़ों की हिफ़ाज़त न करना।
70. मां-बाप की नाफ़रमानी करना और उनको तक्लीफ़ देना।
71. भूखों और नंगों की हैसियत के मुवाफ़िक़ मदद न करना।

तौबा करने में 4 शर्तें हैं। जिन्हें उलमा इकराम से मालूम करके अमल में लाया जाए।

नमाज़ के बारे में हदीस

हाफ़िज़ इब्ने हजर रह० ने मुनब्बहात में हज़रत उस्मान गनी रज़ि० से नक़ल किया है कि जो शख़्स नमाज़ की मुहाफ़ज़त (हिफ़ाज़त) करे, औक़ात (वक़्त) की पाबंदी के साथ उसका एहतिमाम करे, हक़ तआला शानुहू नौ चीज़ों के साथ उसका इकराम फ़रमाते है-

1. अव्वल यह कि उसको खुद महबूब रखते हैं,
2. दूसरे तन्दुरुस्ती अता फ़रमाते हैं,
3. तीसरे फ़रिश्ते उसकी हिफ़ाज़त फ़रमाते हैं,
4. चौथे उसके घर में बरकत अता फ़रमाते हैं,
5. पांचवें उसके चेहरे पर सुलहा के अन्वार ज़ाहिर होते हैं,
6. छठे उसका दिल नर्म फ़रमाते हैं,
7. सातवें वह पुल सिरात पर बिजली की तरह गुज़र जाएगा,
8. आठवें जहन्नम से नजात फ़रमा देते हैं,
9. नवें जन्नत में ऐसे लोगों का पड़ोस नसीब होगा, जिनके बारे में 'ला ख़ौफ़ुन अलैहि व ला हुम यहज़नून' (आयत) वारिद हुई है। यानी 'कियामत में उनको न कोई ख़ौफ़ होगा, न वह ग़मगीन होंगे।'

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि नमाज़ दीन का स्तून है और इसमें दस ख़ूबियां हैं—

1. चेहरे की रौनक़ है, 2. दिल का नूर है, 3. बदन की राहत और तंदुरुस्ती का सबब है, 4. क़ब्र का उन्स (चाह) है, 5. अल्लाह की रहमत उतरने का ज़रिया है, 6. आसमान की कुंजी है, 7. आमालनामों की तराज़ू का वज़न है, (कि उसमें नेक आमाल का पलड़ा भारी हो जाता है) 8. अल्लाह की रिज़ा का सबब है, 9. जन्नत की क़ीमत है, और 10. दोज़ख़ की आड़ है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि नमाज़ छोड़ना आदमी को कुफ़्र से मिला देता है। एक जगह इर्शाद है कि बंदे और कुफ़्र को मिलाने वाली चीज़ सिर्फ़ नमाज़ छोड़ना है। एक जगह इर्शाद है कि ईमान और कुफ़्र के दर्मियान नमाज़ छोड़ने का फ़र्क़ है।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जिस शख़्स की एक नमाज़ भी फ़ौत हो गयी, वह ऐसा है कि गोया उसके घर के लोग और माल व दौलत सब छीन लिया गया हो।

एक और हदीस में भी यही क़िस्सा आया है। उसमें यह भी है कि ऐलान होगा, आज महशर वाले देखेंगे कि करीम लोग कौन हैं और एलान होगा कहां हैं वे लोग जिनको तिजारती मशाग़िल अल्लाह के ज़िक्र और नमाज़ से नहीं रोकते थे।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़्ल किया गया है कि जो शख़्स नमाज़ को क़ज़ा कर दे, गो वह बाद में पढ़ भी ले, फिर भी अपने वक़्त पर न पढ़ने की वजह से एक हुक़ुब जहन्नम में जलेगा और हुक़ुब की मिक़्दार 80 साल की होती है और एक साल 360 दिन का और क़ियामत का एक दिन एक हज़ार साल के बराबर होगा। इस हिसाब में एक हुक़ुब की मिक़्दार 2 करोड़ 88 लाख साल हुई।

एक हदीस में आया है कि जो शख़्स नमाज़ का एहतिमाम करता है, हक़ तआला शानुहू पांच तरह से उसका इक्राम व एज़ाज़ फ़रमाते हैं–

1. एक यह कि उस पर से रिज़्क़ की तंगी हटा दी जाती है।

2. दूसरे यह कि अज़ाबे क़ब्र हटा दिया जाता है।

3. तीसरे यह कि अज़ाबे क़ियामत को उसके आमालनामे दाएं हाथ में दिए जाएंगे (जिनका हाल सूरः अल–हाक़्क़ा में मुफ़स्सल मज़्कूर है कि जिन लोगों के नामए–आमाल दाहिने हाथ में दिए जाएंगे, वे निहायत ख़ुश व ख़ुर्रम हर शख़्स को दिखाते फिरेंगे)।

4. और चौथे यह कि पुलसिरात पर से बिजली की तरह गुज़र जाएंगे।

5. पांचवा यह कि हिसाब से महफ़ूज़ रहेंगे और जो शख़्स नमाज़ में सुस्ती करता है, उसको पंद्रह तरीक़े से अज़ाब होता है– पांच तरह दुनिया में और तीन तरह मौत के वक़्त और तीन तरह क़ब्र में और तीन तरह क़ब्र से निकलने के वक़्त। दुनिया के पांच तो यह हैं–

अव्वल यह कि उसकी ज़िंदगी में बरकत नहीं रहती।

दूसरे यह कि सुलहा (नेक लोग) का नूर उसके चेहरे से हटा दिया जाता है।

तीसरे यह कि उसके नेक कामों का अज्र हटा दिया जाता है।

चौथे उसकी दुआएं क़बूल नहीं होतीं।

पांचवें यह कि नेक बंदों की दुआओं में उसका इस्तिहक़ाक़ (हक़) नहीं रहता।

और मौत के वक़्त तीन अज़ाब ये हैं कि–

अव्वल ज़िल्लत से मरता है,

दूसरे भूखा मरता है,

तीसरे प्यास की शिद्दत (तेज़ी) में मौत आती है अगर समुंद्र भी पी ले तो प्यास नहीं बुझती।

क़ब्र के तीन अज़ाब ये हैं–

अव्वल, उस पर क़ब्र इतनी तंग हो जाती है कि पसलियां एक दूसरे में घुस जाती है।

दूसरे क़ब्र में आग जला दी जाती है।

तीसरे क़ब्र में एक सांप उस पर ऐसी शक्ल का मुसल्लत होता है जिसकी आंखें आग की होती है और नाख़ुन लोहे के इतने लम्बे कि एक दिन पूरा चलकर उनके ख़त्म तक पहुंचा जाए। उसकी आवाज़ बिजली की कड़क की तरह होती है। वह यह कहता है कि मुझे मेरे रब ने तुझ पर मुसल्लत किया है कि तुझे सुबह की नमाज़ ज़ाया करने की वजह से आफ़ताब के निकलने तक मारे जाऊं और ज़ुहर की नमाज़ ज़ाया करने की वजह से ग़ुरूब तक और मग़रिब की नमाज़ की वजह से इशा तक और इशा की नमाज़ की वजह से सुबह तक मारे जाऊं। जब वह एक दफ़ा उसको मारता है तो उसकी वजह से वह मुर्दा सत्तर हाथ ज़मीन में धंस जाता है। इसी तरह क़ियामत तक उसको अज़ाब होता रहेगा और क़ब्र से निकलने के बाद तीन अज़ाब ये हैं–

एक हिसाब सख़्ती से किया जाएगा,

दूसरा हक़ तआला शानुहू का उस पर गुस्सा होगा,

तीसरे जहन्नम में दाख़िल कर दिया जाएगा।

यह कुल मीज़ान (टोटल) चौदह हुई। मुम्किन है कि पंद्रहवां भूल से रह गया हो। और एक रिवायत में यह भी है कि उसके चेहरे पर तीन लाइनें लिखी हुई होती हैं–

पहली सतर, ओ अल्लाह के हक़ को ज़ाया करने वाले!

दूसरी सतर, ओ अल्लाह के गुस्से के साथ मख़्सूस!

तीसरी सतर, जैसा कि तूने दुनिया में अल्लाह के हक़ को ज़ाया किया, आज तू अल्लाह की रहमत से मायूस है।

(फ़ज़ाइले आमाल)

इसलिए पांचों वक़्त की बा–जमाअत नमाज़ की पाबंदी करें और कलामे पाक की तिलावत का एहतिमाम करें। आमीन। और इस सियाहकार (हिन्दी में इस किताब को लिखने वाले कि) मग़्फ़िरत के लिए दुआ करें।